पूज्य
श्री बाबूजी महाराज
के पत्र

(निजी उपयोग के लिए)

प्रकाशक:
श्री राघवेन्द्र प्रकाशन
रायचुर

I

प्रार्थना

ऐ मालिके कुल !

तू ही हमारी ज़िंदगी का मक़सद है |

हमारी ख़्वाहिशात हमारी तरक्क़ी में रखना-अंदाज हो रही है |

तू कादिरे-मुतलक़ और हमारा मा'बूद है |

बिला तेरी मदद के तुझ तक हमारी रसाई मुहाल है |

प्रकाशक की ओर से

यह पुस्तक परम पूज्य समर्थ सद्गुरु श्री रामचन्द्रजी महाराज, शाहजहाँपुर (उ. प्रदेश), जिन्हें उनके चहेते और सभी अभ्यासी प्रेमादर से "बाबूजी" कहते हैं, उनके द्वारा उनके सुयोग्य और अत्यंत संवेदनशील शिष्य तथा अनुयायी पूज्य श्री राघवेन्द्रराव जी, रायचुर को लिखे गये मूल उर्दू पत्रों का देवनागरी में लिप्यंतरण का संकलन है |

अपने एक पत्र में श्री बाबूजी महाराज ने श्री राघवेन्द्रराव जी को लिखा है कि, "मेरे सब खुतूत आप एहतियात से रखते ही होंगे, यह आपके और दूसरे लोगोंके भी काम के हैं |" पूज्य गुरु महाराज की इस अपेक्षा को `आदेश' मानकर, श्री राघवेन्द्रराव जी उन सभी बेशकीमती पत्रों को पूरी हिफ़ाज़त से क्रमानुसार जोड़ते गये | और इतना ही नहीं, श्री बाबूजी से अनुमति लेकर, उन सभी खतों को आसक्त साधकों को पढ़ने की और नकल कर लेने की खुली छूट दे दी थी |

उन दिनों में नकल करने लिए झेराक्स तकनीक उपलब्ध नहीं था, इसलिये अभ्यासी इन उर्दू पत्रों की हाथ से नकल / प्रतियाँ बनाकर दूसरे साधकों को पढ़ने के लिये देते थे | और सभी अभ्यासी उन खतोंमे निहित अध्यात्म विद्या का प्रायोगिक ज्ञान और मार्गदर्शन पाते थे |

धीरे धीरे अभ्यासीगण बढ़ने लगे | उनमें से कई लोग उर्दू को बोली भाषा में समझते और प्रयोग भी करते थे | लेकिन उर्दू लिपी पढना और लिख़ना नहीं जानते थे | उन लोगोंका परिचय देवनागरी लिपी से था | ऐसे सभी अभ्यासियों की आवश्यकता और बढ़ती हुई माँग को ध्यान में रखकर पू . श्री राघवेन्द्ररावजी से अनुमति लेकर गुलबर्गा केंद्र की हमारी बहन सौ . नलिनी श्यामराव और स्व. बन्धु दत्तराज कुलकर्णी इन्होने श्री बाबूजी के मूल उर्दू पत्रोंका देवनागरी में लिप्यंतरण करने

का कार्य बहुत निष्ठा और मेहनत से किया | हम उनके आभारी है |

यह देवनागरी लिप्यंतरण, पुस्तक रूप में सोलापुर केंद्र से प्रथम बार 1994 में प्रकाशित हुआ | प्रथम प्रकाशन में कठिन उर्दू शब्दोंका अर्थ
हिंदी भाषा में, पुस्तक के अंत में दिया था | इससे हिंदी जाननेवालों को भी अर्थ समझने में और किताब का लाभ उठाने में आसानी हुई | यह पुस्तक तब भी और अब द्वितीय संस्करण के प्रकाशन में भी सिर्फ निज़ी प्रयोग के लिए रखी गई है | बिक्री के लिए नहीं है |

आज पू. बाबूजी महाराज की कृपासे इस अनमोल पुस्तक का परिष्कृत द्वितीय संस्करण प्रकाशित करके, आपके हाथ में रखते हुअे, श्री राघवेन्द्र प्रकाशन अत्यंत संतोष और सार्थकता अनुभव कर रहा है | प्रथम संस्करण की त्रुटियाँ और मुद्रणदोषों को यथासंभव निवारण कर, तथा कठीन उर्दू शब्दोंका अर्थ साथ-साथ कोष्ठक (ब्रैकेट) में दिया गया है | इससे पाठकों को और भी आसानी होगी ऐसी आशा है | द्वितीय संस्करण को पाठकों के सामने प्रस्तुत करने में भाई श्री पुरुषोत्तम गायकवाड और डॉ. शशिकांत गायकवाड तथा उनके परिवारोंका योगदान उल्लेखनीय और सहारनीय है | इस पवित्र कार्य में प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूपमें हाथ बँटानेवाले सभी भाई, बहनों का श्री राघवेन्द्र प्रकाशन हार्दिक धन्यवाद करता है | सद्गुरु श्री बाबूजी महाराज की असीम कृपा इन सब पर हमेशा बनी रहे |

पूज्य श्री बाबूजी की असीम कृपा से ही हमारे श्री राघवेन्द्र प्रकाशन रायचुर के अबतक के सभी प्रकाशन प्रकाशित हो सकें हैं | उपरनिर्दिष्ट उर्दू पत्रोंके अबतक कन्नड़, अंग्रेजी और तेलुगु भाषामें अनुवाद प्रकाशित हो चुके हैं | इसके अलावा भी और आध्यात्मिक पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं | इन सबमें हमारे आदरणीय स्व. जस्टिस डी. आर. विठ्ठलरावजी, बेंगलोर, तथा श्री डी. बी. अण्णीगेरीजी, रायचुर, प्रेरणास्थान रहें हैं | उनके हम ऋणी हैं और आभार प्रकट करते हैं |

IV

यह पत्र सच्चे साधक के लिए बहुत प्रेरणादायी और उत्साहवर्धक हैं, क्योंकि इनसे पता चलता है कि हम एक साधारण गृहस्थ जीवन की ज़िम्मेदारियाँ बखूबी निभाते हुए अपने मानव जीवन के ध्येय को 'सहजमार्ग' साधना पद्धति द्वारा इसी जीवन में प्राप्त कर सकते हैं | आदरणीय श्री राघवेन्द्रराव जी की आध्यात्मिक यात्रा (1955-1980) का ब्यौरा इस बात का प्रमाण है कि 'ब्रह्म में लयअवस्था' और उससे आगे कैसे हम शरीर में रहते हुए प्राप्त कर सकते है | यह आश्चर्यकारक उपलब्धि सिर्फ श्री बाबूजी महाराज की अमर "विशिष्ट विभूति" के द्वारा ही संभव है और यह आज के दिन भी संभव है, इसका पाठक को इन पत्रोंका अध्ययन करने से पता चलेगा |

हमें आशा है कि सभी अभ्यासी भाई बहन उर्दू पत्रों के इस देवनागरी लिप्यंतरण का संपूर्ण लाभ उठायेंगे |

रायचुर
दि. 30.04.2018

श्री. राघवेन्द्र प्रकाशन

प्रस्तावना

यह पुस्तक परमपूज्य समर्थ सदगुरु श्री रामचन्द्रजी महाराज (श्री बाबूजी महाराज) शाहजहाँपुर, (उत्तर प्रदेश) के द्वारा उनके सुयोग्य शिष्य पूज्य श्री राघवेन्द्रराव जी, रायचुर, (कर्नाटक) को लिखे गये मूल उर्दू पत्रोंका देवनागरी में लिप्यंतरण है |

यह पत्रव्यवहार एक साधक की शुरुआत से लेकर अध्यात्मिक पूर्णता पाने तक की अनंत यात्रा का ब्यौरा है | सद्गुरु यदि ब्रह्म में स्थित हो और अपनी प्राणाहुति शक्ति से अभ्यासी की हर वक्त मदद करे, तो एक सच्चा मुमुक्षु बहुत अल्प समय में, कैसे अपने लक्ष्य तक सहजता से पहुँच सकता है, इसका यह एक उत्तम उदाहरण है | इस पत्र शृंखला को प्रकाशित करने का उद्देश्य यह है कि इसमें साधक के मनमें आनेवाली बहुत सी शंकाओं और अडचनों का निवारण किया गया है | मार्ग में आनेवाली बहुत सी अध्यात्मिक स्थितियों का विवरण भी दिया है | गृहस्थ जीवन की जिम्मेदारियों को निभाते हुए, अध्यात्मिक पथपर धैर्य से चलने के लिए उत्साह बढ़ानेवाले यह पत्र सभी सच्चे साधकों के काम के हैं |

इन मूल उर्दू पत्रों का लिप्यंतरण देवनागरी लिपी में 1994 में प्रथम बार हुआ | उसमें कठिन उर्दू शब्दों का अर्थ पुस्तक के अंत में दिया हुआ था | अलावा इसके, कुछ त्रुटियाँ और मुद्रण दोष भी थे | इसलिए, इस पुस्तक का परिष्कृत प्रकाशन करने का निर्णय लिया गया |

अब, कठिन उर्दू , फारसी शब्दोंके अर्थ (जहाँ तक हो सके) साथ ही साथ कोष्ठक (ब्रैकेट) में दिए गये हैं, जिससे पाठकों को समझने में और भी आसानी होगी | त्रुटियाँ तथा मुद्रण दोषों का भी यथासंभव निवारण किया गया है | पूज्य श्री रामचन्द्रजी (बाबूजी) महाराज, उर्दू और फारसी भाषा के प्रवीण थे | उन्होंने उर्दू तथा फारसी शेर मुहावरे तथा, कहावतों का, पत्रोंमें, अपनी बात

समझाने के लिए, प्रचुरता से इस्तेमाल किया है | चरम प्रयत्नों के बावजूद, इनका लिप्यंतरण करने में तथा अन्य कोई गलतियाँ या त्रुटियाँ, अनजाने में रह गई हो, तो मूल उर्दू पत्रों को ही प्रमाण माना जाये |

यह पत्र शृंखला सामान्य अध्यात्मिक पत्रों से विभिन्न और विशिष्ट है | इन पत्रों को कोई भी संवेदनशील अभ्यासी यदि गंभीरता से पढ़े तो निम्न बातों का स्वयं अनुभव कर सकता है |

1. यह पत्र वैसे तो, एक आदर्श अभ्यासी श्री राघवेन्द्रराव जी को
लिखे हुए हैं, लेकिन, इन पत्रों को पढ़नेवालों को ऐसा अनुभव
होता है कि यह सब हमारी जानकारी , मार्गदर्शन और प्रशिक्षण के
लिए ही लिखे गये हैं |

2. गुरु और शिष्य के एक अनोखे और अद्वितीय संबंध का एक उत्कृष्ट
उदाहरण है, यह पत्र शृंखला |

3. प्रकृति के बहुत सारे रहस्य इसमें उद्घाटित किये गये हैं | सन 1955
से वर्ष 1980 की अवधि में लिखे गये यह पत्र किसी भी साधक
में अध्यात्मिक ध्येय प्राप्ति के लिए बेचैनी, और तड़प अवश्य पैदा
करेंगे |

परमपूज्य श्री बाबूजी महाराज विशिष्ट विभूति हैं, और उनकी शिक्षा अभ्यासी को पवित्रता तथा सूक्ष्मता की ओर अल्पसमय में सहजता से बढ़ने का अभ्यास बताती है | उनकी प्राणाहुति शक्ति अभ्यासी के अध्यात्मिक पथ पर आनेवाली सभी अडचनों का निवारण करती है | “पतिंगे का शमा पर गिरने से पहिले शमा खुद खामोश जलती रहती है”, यह वाक्य सद्गुरु के त्याग और बलिदान का कुछ अंदाज ज़रूर देता है |

पूज्य श्री राघवेन्द्रराव जी के महान व्यक्तित्व के बारेमें जितना भी कहा जाए, कम है | बहुत ही अल्प

काल में उन्होंने अपनी बेचैनी, तड़प, सहज समर्पण और सद्गुरु पूज्य श्री बाबूजी, की कृपासे अपने जीवन के ध्येय को प्राप्त किया | उसके बाद गुरु महाराज की आज्ञानुसार 'उन' के अध्यात्मिक कामों में भरपूर योगदान, अपने जीवन के अंततक (सन 2006) दिया, जो एक इतिहास है | उनकी अध्यात्मिक यात्रा का बहुत ही संक्षिप्त विवरण इस पुस्तक के अंत में दिया हुआ है |

मैं सभी अभ्यासियों से आग्रह करता हूँ कि इन पत्रोंका अभ्यास करें, इसमें डूबने की कोशिश करें और अध्यात्मिक फ़ायदा उठाएँ |

अंत में मैं उन सभी भाई बहनों का आभार व्यक्त करना चाहता हूँ जिन्होंने इस पुस्तक को परिष्कृत रूप देने में भरपूर सहायता की है | श्री नितिन येमुल तथा परिवार व श्री श्रीनिवास गदगे व परिवार का योगदान विशेष उल्लेखनीय व सहारनीय रहा है | अलावा इसके, जिन सभी भाई बहनों ने प्रत्यक्ष व अप्रत्यक्ष रूप से, इस पुस्तक को मूर्त रूप देने में सहायता की है उन सबके हम आभारी हैं |

श्री राघवेन्द्र प्रकाशन ने हमेशा की तरह केवल हम सभी अभ्यासियों का अध्यात्मिक लाभ ध्यान में रखते हुए इस पुस्तक को निस्वार्थ भावना से प्रकाशित किया, उसके लिए उनको अगणित धन्यवाद |

ईश्वर प्रेम के प्यासे सभी भाई बहनों को पूज्य श्री बाबूजी महाराज अपनी कृपासे सराबोर करे |

पुणे — पुरुषोत्तम धोंडिबा गायकवाड

दि . 30.04.2018

एक अभ्यासी

VIII

मुझे कुछ कहना है

.....

प्रिय भाइयों और बहनों

प्रारंभ में ही प. पूज्य बाबूजी महाराज के चरणों में प्रणाम करती हूँ |

यह किताब आप लोगोंके हाथों में देते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता महसूस होती है | प. पूज्य बाबूजी महाराज का यह पत्रों का ख़जाना प. पूज्य राघवेन्द्रावजी की मेहेरबानी से प्राप्त हुआ है, जो आपने अपनी निजी मेहनत से पाया हुआ है | आप प. पूज्य बाबूजी महाराज के निकटवर्तीय शिष्योत्तम तथा परम प्रियजन है | पू. बाबूजी महाराज के इन ख़तोंको पढ़नेसे हम अभ्यासियोंके मनमें उठनेवाले प्रश्नोंका हल हो जाता है | हमारे प. पूज्य राघवेन्द्रावजी के हम निहायत एहसानमंद है कि आपने अपना यह पत्रों का ख़ज़ाना हम सबके लिए उपलब्ध करा दिया | यह किताब हम अभ्यासियोंके लिए अमुल्य ग्रंथ तथा अध्यात्मिक भंडार साबित होगी |

दिलमें यह ख़्वाहिश रखते हुए, यह किताब छपवाने का सोचा गया है कि, यह हमारे सहज मार्गीय अभ्यासियोंके लिए निहायत फ़ायदामंद, उपयुक्त और मार्गदर्शक सिद्ध होगी | जिन लोगोंको अध्यात्मिकता में अधिकतर लगाव है और जो ईश्वर में लयमान होने के लिए दिलोजान से प्रयत्नशील हैं, उन लोगोंके लिए यह बहुतही उपयुक्त सिद्ध होगी | इन पत्रोंमें से हर एक में अलग अलग प्रश्नोंका हल तथा शक - संदेह का निराकरण किया गया है | हमारे सहज मार्ग में आनेका मक़सद ईश्वरको पाना है और हम उसी मार्गपर चलनेकी कोशिश कर रहे हैं | ईश्वर की कृपासे हमें मानवजन्म प्राप्त हुआ है, हमारा फ़र्ज़ है कि हम ईश्वर प्राप्तिके लिए जीवन यापन करें | लेकिन पूज्य बाबूजी महाराजने कहा है “ लायक

गुरू के मार्गदर्शन के सिवा यह मुमकिन नहीं |" हमारी खुशकिस्मती से हमें पूज्य बाबूजी महाराज, गुरूके रूप में प्राप्त हुए हैं | हमें चाहिए कि हम इस मौके का अधिकाधिक लाभ उठाएँ |

पूज्य बाबूजी महाराज ने एक पत्रमें लिखा है भागवत का एक जडभरतका श्लोक –

रहूगणै तत तपसा न याती,
न विद्यया निर्वसंगा गृहाद् वा,
न छंद सा नैव जलादि सूर्यै,
विना महत्पाद रजोभिषेकम् ।

जिसका अर्थ है –

हे रहूगण, ये तपस्यासे मिलनेवाला नहीं है, विद्या से नहीं , घरद्वार छोड़ने से नहीं , न वेदके पठनसे, न उपासनासे मिलता है | यह महात्माओंके पदधुलीका अभिषेक पानेसे ही मिलता है |

इसका मतलब यह है कि महात्माओंकी संगती और कृपाही हमें ईश्वरतक पहुँचा देती है | अत: पूज्य बाबूजी महाराज ही वे है ; जो हमें सही राहपर ले जा रहे हैं, और प. पूज्य राघवेन्द्रावजी हमारी उंगली पकड़े हमें पूज्य बाबूजी के मार्गपर चला रहे हैं | हम उनका ऋण नहीं चुका सकते |

महात्मा कबीर ने एक जगह कहा है ,

गुरू गोविंद दोऊ खड़े, काके लागू पाय |
बलिहारी गुरू आपकी, जिन गोविंद दियो मिलाय |

अत: हम बड़े खुशक़िस्मत है कि हमने पूज्य बाबूजी को पाया है |

खैर, पूज्य बाबूजी महाराजके ये पत्र हम सबके लिए उपकारी हों | मैं यह भी ज़ाहिर करना चाहूँगी कि यह पत्रोंका ख़ज़ाना सिर्फ निजी तौर पर इस्तेमाल के लिए (For Private circulation Only) है | किसी द्रव्यार्जन के हेतू यह पत्रोंका भंडार खुलवाया नहीं गया है |

ख़ासकर ये पत्र सभी sincere अभ्यासियोंके लिए मार्गदर्शक बनेंगे | मैं यह भी सूचित करना चाहती हूँ कि ये पत्र फ़िजूल कालक्रमणा के लिए या मनोरंजन के

लिए नहीं है | अगर इसमें कुछ संदिग्धता हो तो original उर्दू में लिखे हुए पत्रोंको देखकर अपने शक संदेह और बाधाओंको मिटा सकते है |

इन पत्रोंको original उर्दूसे देवनागरी में लाने के लिए गुलबर्गा की अभ्यासी बहन Mrs. Nalini Shyamrao तथा स्वर्गीय भाई दत्तराज कुलकर्णी , इन लोगोंने बहुत मेहनत उठायी | मैं उनका शुक्रिया अदा करती हूँ | अन्य सब बन्धुजन जो इसमें सहायक हुए है , उन सब लोगोंका मैं ह्रदयपूर्वक अभिनंदन करती हूँ |

ईश्वर सबपर मेहेरनजर करे |

धन्यवाद |

सोलापुर एक अभ्यासी
तारीख़: 2-7-1994 सौ. गदगे
इंदिरा रामकृष्ण

OM TAT SAT

Serial No. 1 Shahjahanpur
No. 2043/SRCM Date 03.03.1955

Dear Brother,

Received your letter dated 21-02-1955. The books, as required, are sent by VPP. I perfectly agree with you that books are not of much avail to us in the matters of realisation. They only point to us something, which, it is for us alone to practise and follow. But to follow the practices given in the books is again a hard job and often dangerous too. It is only the personal help and support of a true and worthy guide that really counts. We have, therefore, to seek such a one, if we aim at success.

For the answer of all your questions, I refer you to the preface of the *Efficacy of Raja Yoga*. As regards the restlessness of mind, I recommend you to read minutely, the pages 36-42 of *Reality at Dawn*, which deal with this very topic.

I shall ever be exceedingly glad to help you on, as well as any and everybody, over the right path to realisation, if they are really earnest about it. Hoping to hear from you further in the matter.

Brotherly yours,
Ram Chandra

****

OM TAT SAT

Serial No. 2 Shahjahanpur
No. 2114/SRCM Date 11.04.1955

Dear Brother,

Thanks for the kind letter. I am glad to know that you are making a close study of the *Efficacy of Raja Yoga*. There is no branch or centre at present in Southern India. A few members that are there, are scattered at different places and it is not possible for them to meet at one place. But that offers no obstruction in the path of one craving for reality.

You can start the practice at your own, for which I can give you necessary instructions and be transmitting to you from this place but for the sake of proper training and rapid progress, personal contact is absolutely necessary. You are always welcome to my humble dwelling and it would be better, the earlier you find an opportunity for it, at least for about a week.

The Book *Commentary on the Ten Commandments of Sahaj Marg* is in Urdu. It deals with the dynamic relation between God and man. If you are acquainted with the language, it may be sent to you. The process to follow is as under :

Sit for meditation in the morning for, say, about half an hour in the beginning and think that Divine Light is present in your heart. Do this in a quite simple and natural way without forcing your mind to it. Never mind if you do not actually see the light there. Start with a mere supposition, so to say, and remain sitting in a meditative mood (in one posture as far as possible) with your inward eye turned towards the heart in the most natural way without trying to force yourself to concentrate.

In the evening, sit in the same manner for the same duration and think that all inner complexities and grossness are going out from your back in the form of smoke or vapours. Please write to me when you start the practice.

The book *Reality at Dawn* is available in Southern India from M/s. Higgin Bothams, Mount Road, Madras. Those who wish to purchase it, may demand it from them. They have their stalls at all important railway stations. When you leave for summer vacations, please intimate to me your home address.

Yours affectionately,

Ram Chandra

PS: Before going to bed, devote some time to prayer sitting in a supplicant mood.

O, Master!
Thou art the real goal of human life,
We are yet but slaves of wishes,
Putting bar to our advancement,
Thou art the only God and Power,
To bring me up to that stage.

Repeat the words once or twice in your mind then begin to meditate over its true sense and then try to get lost in it. This is the real method of prayer and greatly beneficial.

****

OM TAT SAT

Serial No. 3 Shahjahanpur
No. 2155/SRCM Date 08.05.1955

My Dear Brother,

Received your kind letter dated 25th April 1955. I thank you very much for the donation of Rs.50/- to the Mission. I think it would have been far better if you would have spared it for the journey from your place to Shahjahanpur.

Please try to be regular in abhyas and devote half an hour at least in the morning and in the evening as directed in my letter No. 2114/SRCM dated 11th April 1955. I forgot to write the *Prarthana* to be done at bedtime. I am giving it below.

Fickle-mindedness has become a part and parcel of our lives because we have directed the individual mind to adopt the same course. The case was not so with us when we came for the first time into the world. The surroundings, environment and the habits affected it very much. It is we, who have spoiled it. And now it rests upon us to bring it round to the proper form. For this very reason we meditate so that the individual mind may leave its wandering habits and come to righteousness.

As long as you do not find an opportunity to come here, please stick to your *abhyas* rigidly. I will be helping you from this place. Make it a point to inform your condition fortnightly. When you meditate on the heart, do not try to concentrate but meditate only. There is a philosophy behind it, which I am not going to write in this letter for want of time. Concentration is the result of meditation. I have discussed this thing in *Reality at Dawn*.

When you come to me, please intimate your arrival beforehand. I am also giving the address of the residence. My house is in Mohalla Dewan Jog Raj (near Carewgunj). Some of the *Tonga* and *Rickshaw* drivers do not know it by this name. For them the hint, that it is near Rang-Mohalla or Carewgunj, is sufficient. There is a police outpost and a public well by the roadside near the Carewgunj *Tonga* stand. From the stand, a road leads North just parallel to the railway line. The same lane after taking two turns will bring you to the front of the house, which faces West. It is about three miles from the railway station.

My father late Shri Badri Prasad (Rai Bahadur) was a pleader and special magistrate, I class. His name also can help you in finding out my house.

Prayer: Before going to bed devote some time to prayer, sitting in a suppliant mood.

O, Master!
Thou art the real goal of human life,
We are yet but slaves of wishes,
Putting bar to our advancement,
Thou art the only God and Power,
To bring me up to that stage.

Repeat the words once or twice in your mind and then begin to meditate over its true sense and then try to get absorbed into it. This is the real method of prayer and greatly beneficial. As you are acquainted with Urdu language, I am also giving its translation in Urdu.

With best wishes,

Yours affectionately,

Ram Chandra

प्रार्थना:

ऐ मालिके कुल !
तू ही हमारी ज़िंदगी का मक़सद है |
हमारी ख़्वाहिशात हमारी तरक्की में रखना-अंदाज हो रही है |
तू कादिरे-मुतलक़ और हमारा मा'बूद है |
बिला तेरी मदद के तुझ तक हमारी रसाई मुहाल है |

****

OM TAT SAT

Serial No. 4 Shahjahanpur
No. 2198/SRCM Date 04.06.1955

My dear Brother,

With reference to my letter No. 2155/SRCM dated 08-05-1955, I regret to say that no reply has yet been received. Please let me know whether you have received it or not.

With best wishes,

Yours affectionately,

Ram Chandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 5 शाहजहाँपुर
No. 2220/SRCM Date 15.06.1955

बिरादर अज़ीज़म (प्रिय भाई) ,
दुआ (आशिर्वाद) |

ख़त मिला | आपने अपने वाक़ियाते ज़िंदगी तहरीर फरमाते (जिन्दगी की घटनाएँ बताते) हुए लिखा है कि अगर फ़ुरसत (अवकाश) न हो तो इससे आगे पढ़नेकी ज़रुरत नहीं | फ़ुरसत (अवकाश) तो मुझे है ही, इसलिए कि मैं अपने आपसे भी फ़ुरसत (अवकाश) पा चुका हूँ | अब रहा वक्त का झमेला (झगड़ा) | यह सब मकलुके ख़ुदाकी बहबुदी (ईश्वर की सृष्टी के कल्याण) और बेहतरीके लिये है | तो यह सब वक्त आपही लोगोंका है | आपने जो वाक़ियात तहरीर फरमाये (घटनाएँ लिखी) है, यह तो हुवा ही करते है | मगर जब इन्सान इस नतीजेपर आ जावे कि जो हमारा मआले ज़िंदगी (जीवन का ध्येय) है तो फिर गुज़श्ता की (अतीत की) फ़िक्र न होना चाहिए बल्कि मक़सदके (उद्देश्य) तकमिलके (पूर्ती) लिये हमातन रुजू (पूर्णतया प्रवृत्त) रहना चाहिए | अब बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपासे) आपकी तबीयत इस तरफ है इसको इस्तहकाम (दृढता) देना चाहिये | और पिछले वाकियात (घटनाओं) से जो ठोकर मिली हो, इसको यह समझ लेना चाहिए के उस्ताद का बेद (बेंत) हमको ठिकानेपर लानेके लिए था और उसका शुक्रिया (धन्यवाद) अदा करना चाहिये |

अब मैं लिखूँ कि मैं आपको अच्छी रुहानी (आध्यात्मिक) ज़िंदगीमें ला सकता हूँ तो यूँ ग़लत होगा कि यहाँ लानेका सवाल नही, यहाँ तो हमको सिर्फ असलमें ठहरावकी ज़रुरत है और वह तो आप के ख़यालने इस हद तक मदद दी ही है | अब इसलिए आपने, जो असबाब (सामग्री) ज़रुर फ़राहम (एकत्र) कर लिये है, जो तोशा-ए-आख़िरत (अंतिम लक्ष्य मे काम आनेवाला कर्म) बनकर मंजिले मक़सूद (इच्छीत गंतव्य) तक पहुँचा सके | जब यह हाल है तो दूसरे मानोंमे आपने नखचीर (शिकार) अपने निगाहमें (दृष्टी) ले ही लिया | सिर्फ अब उस निशानेपर तीर लगाना बाक़ी है | इसके लिए ख़याल ख़ुद तीर बन जाता है और दिल कमान, बशर्त यह (शर्त ये है) कि पसे पुश्त (पीछे) ताकत तो आपने इस तरफ सहारे के लिये लगा लिया है और सहारा क्या बल्कि उसको रहनुमा (मार्गदर्शक) बना लिया है | अब आपको रहनुमा (मार्गदर्शक) की ख़बर है और ठिकानेकी; तो लाज़िमी है

कि सिवा उन दो चीज़ोंके और कोई चीज़ बाक़ी रहती सिवाय इसके कि ख़याल इसपर जाकर लग जावे और जब ऐसा लग जावे, यह पता न रहे कि क्या चीज़ लगी है और किस जगह लगी है | तब आपका यह एहसास जिस्मसे (देहभाव) छूट जावेगा और वही चीज़ रह जायेगी जिसको हम जान ही जान कह सकते है | इस वक्त आपको यह एहसास न रहेगा कि आप जिस्म (शरीर) है | उसका तरीका बस यही हो सकता है जो मैंने ऊपर लिखा है। मैं वाज़े (स्पष्ट) करना चाहूँ तो सिर्फ इतना कि आप ऐसा रहनुमा (मार्गदर्शक) बना लें कि जो आपके तीर को निशानेतक पहुँचा सके | फिर यह लाज़िम (ज़रुरी) हैं कि जिस्मके असरात (परिणाम) का impression आप अपने दिलपर न लेवें और जब यह हो गया तो आइन्दा (आगे) के लिए संस्कार बनना बन्द हो जाते हैं, और पिछले संस्कार बहुत कुछ जल भुनकर थोडासा असर अपना दिखा देते हैं | मैं समझता हूँ के यह मुख्तसर (संक्षिप्त) ख़त आपके कुल ख़तका तसल्लीबख्श (संतोषजनक) जवाब बनेगा | इन सब बातोंके हुसूलके (प्राप्ति) लिए सिर्फ यही नुस्खा (उपाय) है कि इधरसे तोड़ और उधरको जोड़; और उसके लिए meditation और ध्यान है जो मैं आपको लिख ही चुका हूँ और उम्मीद करता हूँ कि अब आप इसमें regular होने की कोशिश करेंगे। अब रहा मेरी खिदमत (सेवा) का सवाल, तो जो कुछ मैं कर सकता हूँ, इसके लिये तैयार हूँ | यह इल्तिजा (बिनती) ज़रुर है कि वह खिदमत आप मुझसे ले ही लें। नहीं, बल्कि ऐसी खिदमत (सेवा) करनेके लिये आप मुझे मजबूर (विवश) कर दें। दूसरे मानो में मेरे पास जो अमानत (धरोहर) है वह सब आपही लोगोंके लिये है। इसीलिए यह आसान भी होगा कि अपनी ही चीज़ आप मुझसे ले लें। वह अमानत (धरोहर) यह है कि जो कुछ मेरे पीर व दस्तगीर (गुरु व मार्गदर्शक) ने दिया है इसलिये कि मैं आप लोगों मे बाँट दूँ, इसीलिये यह चीज़ उन्होने बतौर अमानत (धरोहर के रुपमें) मेरे पास रख दी है। जब तक आपको मुझसे मिलनेका मौक़ा न मिले आप समझ लें की मैं आपही के पास मौजूद हूँ और फिर मशगूलियत (तल्लिनता) अपनेमें आप पैदा करें |

आपकी अलालत को (बीमारी) सुनकर मुझे फ़िक्र ज़रुर हुई, मगर क्या करुँ इससे कोई फर्द-ओ-बशर (व्यक्ति) खाली नहीं | यह ज़रुर है कि हमको इलाज करना चाहिये ताकि हम आरामसे रह सकें | मगर साथ ही साथ हमको ऐसे डॉक्टर का भी इलाज क़ायम रखना चाहिए कि जिससे इन बीमारीयोंसे अबद (हमेशा) तक छुटकारा रहे | अब रहा chronic appendicitis, इसका इलाज ऑपरेशन, डॉक्टर

ठीक बताते है - Homoeopathic दवासे भी मैंने यह अच्छा होते हुए सुना है | डॉ. P. Sen जो कलकत्ता के एक निहायत क़ाबिल (बहुत निपुण) डॉक्टर और medical college के प्रोफेसर और अपने सतसंगी है, इस वक्त यहाँ ठहरे हुये है, उनसे राय ली, ओ कहते है कि operation बिल्कुल खतरनाक नहीं होता । आप अगर Homoeopathic इलाज करना चाहे और वहाँ कोई क़ाबिल (निपुण) डॉक्टर ऐसा न मिल सके तो मेरे एक सतसंगी डॉक्टर मुखर्जी Homoeopath लखीमपुर खीरीमें हैं और एक होशियार डॉक्टर है, मैं उनसे Consult करुँ |

किताब सहजमार्गके दस उसूलों (नियमों) की शरह (व्याख्या) बज़रिये (द्वारा) parcel भेज रहा हूँ, क़ीमत भेजने की ज़रुरत नहीं | नियम जिनकी शरह (व्याख्या) की गई है उसकी एक हिंदी कॉपी भी भेजता हूँ | उनको बार-बार पढियेगा और अपने दोस्तोंको भी, जो इसमें Interested हो, दिखाइयेगा Constitution and Bye Laws की पाँच कापियाँ भेज रहा हूँ, ज़रुरतके लिहाज़से तकसीम (बाँटना) कर दीजिएगा।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 6 शाहजहाँपुर
No. 2266/SRCM Date 06.07.1955

बिरादर अज़ीज़म (प्रिय भाई) ,
दुआ (आशिर्वाद) |

मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला | पढकर खुशी हुई । यह भी क्या कम है कि इस हक़ीर (नाचीज़, तुच्छ) का किसी मजनूँ (प्रेमी) में ख़याल मोजज़न (प्रवाहित) हो जाता है | अब मेरी खिदमात (सेवाएँ) ही ऐसी हो सकती है कि जिससे आपका दिल कुछ टटोलमें (ढूँढनेमे) लग जावे और फ़िक्र (चिंतन) पैदा कर लें | इसका आप भी इंतज़ार (प्रतिक्षा) करें और मैं भी इंतज़ार (प्रतिक्षा) में रहूँ | दिलसे दिलको राहत (चैन) मिलती है | अगर आपने meditation शुरु नहीं किया है तो आप अब करेंगे और ईश्वर करे ऐसा ही हो | मैं कुछ अपने बारेमें कहना नहीं चाहता इसलिये कि पिछले ज़मानेमें सिर्फ कहनेही ने मन्सूरको सूली पर चढा दिया | अब चूँकी वह ज़माना नहीं रहा, तो इतना अब भी हो सकता है कि लोग मुझको उस निगाह (दृष्टी) से तौलने लगे जो निगाह (दृष्टी) वह अभी तक ऐसी न बना सके कि जिससे मेरी तौल हो सके | इस इबारत (लिखाई) को ज़रा गौर (ध्यान) से पढकर मुझे उम्मीद है कि आप अपने दिलकी मीज़ान (तराजू) से तौलकर हक़ीक़त (सच्चाई) का पता लगा सकेंगे | भाई, जब आपने मेरी ख़त (पत्र) व किताबत (किताबों) को जगह दी है तो यह बडे अफ़सोस (दु:ख) की बात होगी कि कातिब (लेखक) को ठुकरा दे | इरादा (संकल्प) बाँधने की देर है काम ख़ुद-ब-ख़ुद शुरु हो जावेगा | Ideo Motor Action. प्रार्थना कीजिये ज़रुर और इसमें इस क़दर मुस्तग्रक (तल्लीन) होनेकी कोशिश कीजिए कि जैसे कोई भिखारी कासए गदाई (भिक्षापात्र) लिये हुये है मगर माँगनेका होश नहीं | ऐसी हालत पैदा कीजिए तो दुआ (प्रार्थना) मुस्तजाब (मंजूर) होगी और काम बनकर ही रहेगा | मुहब्बतमें गिड़गिड़ानेकी कोशिश कीजिए और अगर सचमुच आँसू न निकले तो मसनुई (बनावटी) ही सही और फिर असर (प्रभाव) देखिये | इससे ज़ियादा मेरे लिये खुशी क्या हो सकती है कि आपके दिलमें इस मिशनकी खिदमत (सेवा) का ख़याल पैदा हुआ | यह ख़यालभी काम करेगा आपके रुहानी (आध्यात्मिक) इस्तेदाद (पात्रता) बढानेके लिये | आपके इस ख़यालने मुझे तकलीफ़ ज़रुर दी कि "हो

सकता है कि आखिर तक मैं आपसे बेफैज़याब (कृपासे वंचित) ही रह जाऊँ।" तो यह हो ही नहीं सकता कि आप दरिया (नदी) का तसव्वुर (ख्याल) बाँधे और दिलोदिमाग़में तरावत (ठंडक) पैदा न हो जावे | अब न सही, इतना भी रहा तो आपको बफज़लहू (ईश्वरकृपासे) ख़ुद अंदाज लग जावेगा |

अगर आप यह देखें के meditation नहीं कर सकते, जैसी कि मुझे उम्मीद नहीं, तो और भी तरकीबें (उपाय) हो सकती हैं । मैं अपनी कमज़ोरी समझता हूँ, आपकी नहीं, कि आप आकर चले जावें। आप जिस चीज़ को हासिल (प्राप्त) करना चाहते है ओ तो इतनी आसान है के मैं समझता हूँ के इससे आसान कोई चीज़ हो ही नहीं सकती | इसलिये भाई इस मैदानमें क़दम अब रखही दीजिये ताकी मेरे इस बयानकी (बातकी) तसदीक (पुष्टि) हो सके । कुछ न सही, तजरुबा (अनुभव) ही करके देखें | अगर आपसे कुछ न हो सके तो चलते फिरते या वक्ते फ़ुरसत (अवकाश के समय) यही तसव्वुर (ध्यान) बाँधकर देखिये कि, मैं ख़ुद आपके ख़यालमें मुस्तग्रक (तल्लीन) हूँ | यह तो कोई पूजा नहीं है, न इसमे कोई पाबंदी (प्रतिबंध) | आपने जो यह लिखा है कि जिस्म (शरीर) के असरात (परिणाम) का impression अपने दिलपर न लेने का तरीका और senses को उनके object से हटाकर अंदरकी तरफ withdraw करने का तरीका बताइये | यह बातें, जो आपको meditation बताया है इससे पैदा हो जाती है | और मेरा काम भी यही है कि मैं ऐसी हालत (स्थिति) बज़रिये (द्वारा) transmission पैदा कर दूँ | कुछ Points भी ऐसे है कि जिनपर ख़यालसे ज़ोर देनेपर यह हालत बहुत ही जल्द पैदा हो सकती है | मगर थोडीसी आप मेरी मदद तो करें, ताकि मैं इन तरीकों को इस्तेमाल कर सकूँ । इसलिये कि इससे पेश्तर (पहले) यह बहुत early कहे जावेंगे और जातेपाक (ईश्वर) से मुमकिन यह भी है कि मन और जुमला (सब) senses को दमज़दन (क्षणभर) में खामोश (शान्त) कर दे | मगर भाई, यह तरीका बहुतही ज़ियादा risky है | बहुत खास सूरत (हालत) में यह तरीका बहुत ही ज़ियादा तरक्कीयाफ्तापर (समुन्नतपर) किया जा सकता है । इससे इन्सानकी Originality दमज़दन (क्षणभर) में आ जाती है | खैर, यह तो तफ्रिहे तबअ (मन बहलाव) बात रही | उम्मीद तो यही है कि आइंदा (अगले) ख़तमें मुझको ऐसी खुशखबरी मिलेगी जो मेरी मोज्जीब तखवियते दिल (उत्साहवर्धक) होगी और इसमें सवाब (पुण्य) भी है

आपको | कहा है कि "अज़ हजारां काबा ए दिल बेहेतर अस्त " (हजारों काबा से एक दिल बेहतर है |)

मैंने जो उर्दू की किताब भेजी है यह बहुत higher sort of super-conscious state में लिखी है, जहाँ पर कि सिर्फ vibrations से ही असलियत की ख़बर मिलती है | और इसमें शुरुसे आख़िर तक सब originality मिलेगी और यह मेरा Masterpiece है | इसको बार बार मुताला (समीक्षा) कीजिये | एक एक लफ़्ज (शब्द) और एक एक जुमला (वाक्य) आपको काबिले तफ़सीर (भाष्य करने योग्य) मिलेगा और जब समझमें आने लगी तो यक़ीन (विश्वास) तो यही है कि आप बहुत मसरुर (आनंदित) होंगे | और लोगोंको भी दिखाईये और पढाइये और दोस्तों को भी मुताला कराईये | अगर और ज़रुरत हो तो यहाँ से भेजी जा सकती है । क़ीमत का ख़याल दिलसे निकाल डालिए | यह आपही की चीज़ है और आपने ही लिखी है | किताबसे फ़ायदा उठाना गोया (मानो) मुसन्निफ (लेखक) को इसकी क़ीमत दे देना है | सवाब (सुकृत) यही है कि ख़ुद बनें और दूसरोंको भी बनाने की कोशिश करें | बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: मिशन की किताबें Reality at Dawn और Efficacy of Raja Yoga जो अंग्रेजीमें है, अगर शायकीन (रसिकों) में से कोई खरीदना चाहें तो यहाँसे भेजी जा सकती है | या Higgin Bothams, Madras के यहाँ से, जिनका stall क़रीब क़रीब हर बडे station पर है, भी मिल सकती हैं | इसके लिए आप कोशाँ (प्रयत्नशील) रहें कि ज़ियादासे ज़ियादा लोगोंके निगाहसे यह किताबें गुजरें । यह भी एक तरह कि Mission की खिदमत (सेवा) है |

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 7 शाहजहाँपुर
No. 2288/SRCM Date 25.07.1955

बिरादर अज़ीज़म (प्रिय भाई) ,
दुआ (आशिर्वाद) |

आपका ख़त मोरखा (दिनांक) 13 जुलाई 1955 का मौसूल (प्राप्त) हुआ | मैंने आपको और आपके बच्चोंको जो दुआ दी है और उसका आपने शुक्रिया (धन्यवाद) भी अदा (दिया) किया है, यह मेरा फ़र्ज़ (कर्तव्य) है | मुझे तो अपना दुआगो (शुभचिंतक) ही समझते रहिए |

मालिक का शुक्र (धन्यवाद) है कि आप फ़ुरसत ही के वक्त इस नाचीज़ का ख़याल कर लेते हैं । जिससे ज़ाहिर होता है कि आप आदमी बामुहब्बत (प्रेमी) हैं | और यही एक ज़िन्दा शय (वस्तु) है। हर जगह उसी का करिश्मा (प्रभाव) है और ईश्वर मिलनेका यक़ीनी (निश्चीत) ज़रिया (मार्ग) यही है । इससे ज़ियादा और मुझे क्या चाहिये जब आप में यह बात है तो मुझे भी कुछ आपकी खिदमत (सेवा) ही करना चाहिए | चुनांचे, (अत:) भाई, मैंने थोडी बहुत आपकी रुहानी खिदमत (आध्यात्मिक सेवा) करना शुरु कर दी | पता इसका चलने लगता अगर आप इस खिदमत (सेवा) के एवज़ में थोडीसी कुर्बानी (त्याग) यह कर लेते कि अभ्यास में पाबंद (प्रतिबद्ध) हो जाते, और होंगे तो आप अभ्यासमें पाबंद ज़रुर, मगर जितनी जल्दी हो जाते उतना ही अच्छा होता |

आपको बडा अच्छा है कि, एहसास (ख़याल) रहता है, कि महापुरुषोंके दर्शन करुँ मगर मेरी आरज़ू (मनोकामना) तो यह थी कि आप अपने ही दर्शन में लग जाते | आपने यह तहरीर (लिखा) फरमाया है कि मैं originality दमज़दन (क्षणभर) में नहीं चाहता, इसलिए कि बरदाश्त (सहन) नहीं होगी | तो भाई, यह चीज़ मेरे ही उपर छोड दीजिए | कायदा (नियम) भी यही है कि रफ़्ता रफ़्ता (धीरे-धीरे) मंजिल ब मंजिल (पड़ाव-दर-पड़ाव) ही तय कराया जाता है । वरना अगर मैं आपकी capacity (क्षमता) ही नज़र-अंदाज (अनदेखी) कर दूँ तो मेरी training (प्रशिक्षण) ही क्या ? इससे आप परेशान न हों| न यहाँ पर घर छोडने का सवाल है और न कुछ ज़िंदगी का खतरा है । आपने लिखा है के अपने आपको surrender करता हूँ, और फिर लिखा है कि मुझे शुबहा (संदेह) भी है के मैं उसे पूरा कर सकूँगा या नहीं । शुबह (संदेह)को छोड दीजिए । surrender तो आप कर ही चुके है, अगर अभ्यासी के दिल में cooperation पैदा हो जाए तो गोया (मानो) वह surrender कि पहली सीढी पर आ गया । उसके

बाद और भी पहचानें हैं, जो ज़रुरत पर फिर लिखूँगा । बाक़ी किताब की इबारत (लेख) के quotations आपने दिये हैं, और बहुत परेशानी के साथ, तो surrender करने के बाद यह कोई सवाल पैदा नहीं होते । अभ्यास और मुहब्बत से जुमला (सब) मनाजिल (मंजिलें / पड़ाव) पार होते चले जाते है और अभ्यासी को कहीं ठेस भी नहीं लगती और यह मेरा तजरूबा (अनुभव) है । मैंने यह किताब जैसा कि मैं लिख चुका हूँ, खास हालत में जाकर लिखी है । इसलिए आप हिम्मत करें और ईश्वर मदद करे, कि आप भी उस हालत में जा सकें तो बहुत अच्छा, समझने में और यह कोई मुश्किल (कठीन) बात नहीं । ज़रा Realisation का पक्का इरादा करके रुहानियतके (आध्यात्मिकता के) मैदान में क़दम रख दीजिए, फिर देखें कि Realisation होता है कि नहीं । आपने जो sense of responsibility की आड़ लेकर यह लिखा है कि मुझे यही चीज़ रोक रही है; तो भाई हमारे यहाँ का उसूल (नियम) यह है कि दुनिया और उक़बा (परलोक) साथ ही साथ चलें और मेरे गुरु महाराज इसका नमूना (उदाहरण) थे और मैं भी जैसा, जो कुछ हूँ, मौजूद हूँ। बच्चोंको छोडकर जंगलमें बैठ जाना बैराग नहीं कहलाता बल्कि जुमला (सारी) ज़िम्मेदारीयोंपर निगाह रखते हुए, दिलको आलूदा (लिप्त) न करना ही वैराग्य है । आपने जो complex मुझसे समझने के लिये लिखा है, उसका जवाब मुख्तसर (संक्षेपमें) यह है कि या तो आपने किसीसे मुहब्बत नहीं की या आपको मुहब्बत करनेवाला नहीं मिला । इसलिए आँसू निकालनेमें शर्म आती है । दूसरी बात यह है के आप अभी दूसरोंको देख रहे है इसलिए आँसू निकालनेमें शर्म आती है । मगर क्या मैं आपसे पूछ सकता हूँ कि मुहब्बत करनेमें तो आपको शर्म नहीं आती ? ग़ालिबन (संभवत:) नहीं आती होगी। इसलिए कि यह दिल (हृदय) का सौदा (व्यापार) है और मुहब्बत दरहक़ीक़त (वास्तवमें) दिल बेचकर मिलती है। मैं बडा खुश हूँगा कि अगर आप मेरी खिदमत (सेवाएँ) कुबूल (स्वीकार) कर लेवें और मुझे बडी खुशी होगी जब मैं आपसे नियाज (दर्शन) हासिल (प्राप्त) कर सकूँगा । बच्चों को दुआ। फक्त (इति) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 8 शाहजहाँपुर
No. 2326/SRCM Date 11.08.1955

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशिर्वाद) ।

मुझे खतोंके जवाब लिखने में अक्सर (प्राय:) देर हो जाती है । वजह यह है कि बहुतसी मुरासिलात (पत्रव्यवहार) का जवाब देना पडता है । लिहाज़ा (इसलिए) जिस ख़त के जवाबमें तवक्कुफ (विलंब) हो और आपको देर में मिले आप समझ लीजिए कि लफ़्ज़ (शब्द) माज़िरत (क्षमा) इसके साथ ही साथ है।

इस निगारखाने (चित्रशाला) में हम कठपुतली बने और अपने आप नाच नाचा किये और ख़ुद ही खुश हुवे। तिलिस्म (माया, इंद्रजाल) में ऐसे फँसे कि इसके चक्कर में ही फँसे रह गये । अब अगर इससे निकलने का ख़याल भी पैदा हुआ तो इस जकड़न ने (बंधन) मजबूर (विवश)कर दिया । अब हम चाहते है कि इससे निकलें, मगर जकडन मजबूर करती है। हम इरादा करते है कि इससे सुबुकदोशी (आज़ादी) हासिल (प्राप्त) हो मगर कोशिश बेकार यूँ होती है कि तिलस्म (माया) नें होशरुबाने (होश उडानेवाले) दिल बहलाव की सूरत (हालत) ऐसी पैदा कर ली कि तबीयत इससे हटाये नहीं हटती ।

इससे निकलने की सूरत (उपाय) उस वक्त हो सकती है जब की हम उसकी हक़ीक़त (यथार्थता) को हक़ीक़त (परम सत्ता) का परतों (छाया,प्रतिबिंब) समझ लें और हम उस पर ख़याल ले जाये जो इसका कारण या सबब है । मतलब यह कि हमारी निगाह उसकी Originality (कारण) पर पहुँच जावे । निगाह (दृष्टी) उस वक्त पहुँच सकती है जब कि उसकी Originality को हम बार बार अपने ख़यालमें लावें । इसको constant remembrance कहते हैं । इस चीज़ को पैदा करनेके लिए ध्यान या meditation हो सकता है, और फिर जब हम इसको करना शुरु कर देते है, तो मदद अजख़ुद (अपने आप) उस गोशे (तरफ) से आना शुरु हो जाती है। अब जब इससे जोड़ने लगे तो यह तिस्लिम (माया) ख़ुद ब ख़ुद (स्वयं) टूटना शूरू हो जाता है |

अच्छा है कि आपने इरादा (निश्चय) कर लिया मगर अब इसकी तकमील (पूर्तता) भी आप ही के हाथ में है। अगर हम असलियत (वास्तविकता) और हक़ीक़त (सत्य) की अज़मत (महत्व) अपने दिलमें मन्कूश (अंकित) कर लिये है तो यह हो ही नहीं सकता कि उसका

ध्यान हम शुरु न कर दें । कुदरती चीज़ (स्वाभाविक बात) है कि आगमें जला हुआ इन्सान पानीको देखकर बेइख़्तियार (बेतहाशा, सहसा) उसमें गिर पडता है । बिला लिहाज़ इस अम्र के कि पानी के असरसे जिस्म में फफोले पड जावेंगे (इस बात का विचार किये बिना कि पानी के परिणामसे शरीरमें छाले पड जाएँगे) । बस यही चीज़ तबीयत (मन) में होनी चाहिये कि हम हक़ीक़त (सत्य) और असलियत (वास्तविकता) हासिल करनेके लिये ऐसे ही गिर पडे। मगर भाई, यह उस वक्त बिल्कुल मुमकिन (संभव) हो सकता है जब आगकी जलन हमारे एहसास (अनुभव) में आने लगती है। महाल (तात्पर्य) यह कि आप इरादे (निश्चय) में कामयाबी (यश) हासिल (प्राप्त) करें और ईश्वर करे ऐसा ही हो कि आपका ख़याल भी उस तरफ जमने लग जावे।

आप ज़रा इस तरफ क़दम रख कर तो देखें, मुहब्बत का complex ख़ुद-ब-ख़ुद (अपने आप) हल (सुलझ) हो जायेगा । क्या भगत सूरदास और मीराबाई की सवानह उमरी (जीवनी) आपके complex का खासी तौर पर (भली भांति) जवाब नहीं दे रहे है ? आँसू बहाते शर्म यूँ मालूम होती है कि मसनूई (बनावटी) जज़्बा (आवेश) के असरसे आपके आँसू निकल पडते है । अगर दिल इसका मज़ा ले चुका होता तो आप दूसरोंको भी यही तलक़ीन करते (समझाते) कि मुहब्बत में पिघल जाना ही सवाब (सुकृत) है।

मुझे बडी खुशी होगी कि आप मुझको अपनी मुलाक़ात का शरफ (सम्मान) बख्शें (दें) । घर का पता तो आपको किसी ख़तमें मैं दे ही चुका हूँ और मैं अपना पता तो हर ख़तमें देता ही रहता हूँ। बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 9 शाहजहाँपुर
No. 2366/SRCM Date 30.08.1955

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)

दुआ (आशीर्वाद) ।

आपके ख़ुतूत (पत्र), 15-16 ऑगस्ट के, एक ही दिन और एक ही वक्त मिले । एक ख़त में यह तहरीर (लिखा) था कि आप मुझे अपना बना लें और अपना ही समझें। तो मेरी तो यही कोशिश है कि आप मेरे बन जावे और मैं तो आपका हूँ ही । आप अपने तजरुबात (अनुभव) रुहानी (आध्यात्मिक) में वह बात लाना चाहते है जो हर activity का अंजाम (परिणाम) है । यह बात तो ऐसी हुअी कि जैसे एक बच्चा यह कहे कि मैं पहले Shakespeare और Milton के ख़यालात को समझूँ, इसके बाद मैं अबजद (A B C D) शुरु कर दूँगा । या मुतलाशी-ए-हक़ीक़त (सत्यान्वेषी) यह कह बैठे कि पहले जातेबारी (ईश्वर) के दीदार (दर्शन) से मैं मुशर्रफ (सम्मानित) हो लूँ, तब मैं उसकी इबादत (पूजा) करुँगा । जब यही चीज़ जिसकी तलाश (खोज) है, सामने खडी हो जावे तो फिर किस मुँहसे कोई इसके इबादत (पूजा) के लिये कह सकता है ! उरुज (प्रगती) की नर्दबान (सोपान, सीढी) पर वही चढ सकेगा जिसने अपने में तनज्जुल (विनम्रता) की हालत पैदा कर ली हो। आप अपने ख़यालसे सही लिखते हैं कि जब तक हक़ीक़ी (वास्तविक,यथार्थ) experience न हो उस वक्त तक मुझे full conviction नहीं कहा जा सकता । उसके लिये आप अपने में वह बातें पैदा कर लें कि हक़ीक़ी (यथार्थ) experience जिसके आप मुतलाशी (खोजी) हैं, हो जावें। Grace पर आपको ज़रुर भरोसा है। मगर भाई, इस भरोसे से तो असल नहीं हासिल (प्राप्त) कर सकते और न उसको असली मानोंमे Grace ही कहा जा सकता है। मैं तो यह समझता हूँ कि मालिके कौनोमकान (जगदीश्वर) की Grace यही हो सकती है कि कोई कामिल (साधू या फ़क़ीर) रास्ता दिखानेवाला (मार्गदर्शक) उसको मिला देवें। अब यह आपकी grace रही कि आप इसीसे काम लेवें। अब रहा उसकी बाबत, तो इसकी खोज भी कर लीजिए अगर उसकी (ईश्वर की) Grace अब तक मौजज़न (प्रवाहित) न हुई हो । बिला (बिना) अभ्यास के अगर उसकी मौज (लहर) को अपनी तरफ मब्जुल (आकृष्ट) करते रहे तो आपकी ही मौज (खयाल) आपकी तरफ मब्जुल (आकर्षित) होगी और आपके हिस्सेमें ख़यालातका हुजूम (भीड) और विचारोंकी फडक (छितराना/विक्षेप) ही रहेगी और मैं तो यही कहुँगा कि अगर आप इसी तरह पर रहें तो रुहानियतकी मरसियाखानी (आध्यात्मिकता की शोकान्जली) ही रहेगी।

आपने किसी ख़तमें यह भी तहरीर फरमाया (लिखा) हैं, जिसका मफ़हूम (आशय) यह है कि जब किसी हालत का एहसास

(अनुभव) मुझे ऐसा मिले कि शांती पैदा करें तो मैं यह समझूँ कि मैं कुछ खिदमत आपकी कर रहा हूँ, इसके लिये मैं भला क्या कहूँ ? ज़रा ध्यान करके ध्यानमें देखिये और कुछ अपने ख़यालका (विचार को) अटकाव भी (जोड़कर) उधर रखिए तब मुमकिन (संभव) है कि कुछ समझमें आवें। वरना यह तो वही मसल (उदाहरण) है कि फरहाद (प्रेमी) तो खोदते खोदते तंग है और शीरीं (प्रेमिका) ख्वाँबे गिराँ (गहरी नींद) में सो रही हो, जहाँ जूँ तक रेंगने का एहसास न होता हो। आपने वायदा (वचन) ज़रुर किया है कि आप पूजा शुरु ज़रुर करेंगे बस इस यक़ीन (विश्वास) पर और इस वायदे (वचन) पर मैं खुश हो लेता हूँ कि कभी तो आप शुरु ही करेंगे । इस पर मुझे एक क़िस्सा याद आ गया। एक बुजुर्ग (महात्मा) मशहूर व मारुफ (विख्यात) थे । एक चरवाह ने उनसे पूछा कि मुझे ईश्वर के दर्शन कब होंगे ? बुजुर्गने बताया कि एक हजार जनम के बाद । चरवाहा खुश हो गया कि चलो कभी होंगे तो सही ! बस मुझे ऐसा ही समझ लो कि मुझे इस वक्त यही खुशी है कि आप अपना वायदा (वचन) पूरा तो करेंगे ही, कभी भी सही।

आपने जो अंग्रेजी की इबारत (उध्दरण) तहरीर फरमाई (लिखा) है, यह मसला (विषय) फिलासफीका है। इसपर अगर अपने views लिखूँ तो वरक (पन्ने) के वरक (पन्ने) रंग जावेंगे । इसलिये इसको यहीं पर सिर्फ यह लिख कर छोडता हूँ, You will hardly find any stone lying on the street that is fit for the building purpose.

आप भले आदमी है यह मुझे यक़ीन (विश्वास) है। इस लिहाज़ से अगर कोई जायज़ (उचित) प्रार्थना आपसे करे, जिसमें आपका कोई नुकसान भी न हो, तो मेरी समझमें आप उसको ज़रुर करेंगे । फ़र्ज इन्सानी (मनुष्यधर्म) भी यही कहता है, इसलिये मैं आपसे यह इल्तिजा (प्रार्थना) करता हूँ कि और उम्मीद है कि मेरी यह दरख़्वास्त (अर्जी) आप मंजूर कर लेंगे। इससे मुझे फ़ायदा पहुँचेगा और आपका कोई नुकसान नहीं । वह यह है कि आप पूजा नहीं करते और मैं भी पूजा नहीं करता (जिस माने में मैं आपको बताता हूँ) इस लिहाज़ (ख़याल) से हम आप दोनों बराबर ख़तावार (अपराधी) है। आप मुझसे कहते है कि मुझे कोई चीज़ मालूम ऐसी हो कि मैं इबादत (पूजा) में लग जाऊँ। मैं आपसे कहूँगा, क्यूंकि पूजा तो मैं भी नहीं करता, लिहाज़ा आप निस्फ (आधा) घंटा मुसलसल (लगातार) यह ख़याल कर लिया करें कि मैं ईश्वरका ध्यान उसी तरीके में कर रहा हूँ जो मेरे गुरु महाराज का तरीका है और मैं आपको बता भी चुका हूँ । भाई, क्या आप मेरे

हक़ में इतना भी नहीं कर सकते ? कार-ए-खैर (नेक काम) है। मुझे उम्मीद है कि यह मेरी इल्तिजा (प्रार्थना) आप ज़रुर मानेंगे । चिढ़चिढ़ापन के बारे में जो आपने लिखा है यह तो समंदरके मद-व-जज़र (ज्वार भाटा) के उफान है जब पानी साकित (शान्त) हो जावेगा तो यह चीज़ें पैदा न होगी।

अपने मौजों (लहरों) में दिलेजार (दु:खी हृदय) ज़रा डूबके देख,

तूही तू होगा न दरिया (नदी) न किनारा होगा ।

बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 10 शाहजहाँपुर
No. 2406/SRCM Date 25.09.1955

बिरादर अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद)।

आपके खुतूत (पत्र) मोरखा (दिनांक) 12 सप्टेंबर, 19 सप्टेंबर के मौसूल (प्राप्त) हुए । पढकर बाग़-बाग़ (बहुत खुश) हो गया । भाई सच कहता हूँ अगर मुझको आपसे मुहब्बत पैदा नहीं हुई तो समझ लीजिए कि इश्क हक़ीक़ी (ईश्वरी प्रेम) का मुझमें अभी तक आगाज़ (आरंभ) ही नहीं हुआ । मैं इन ख़यालातसे खुश हुवा कि आपको महात्माओंके grace पर अकीदा (विश्वास) है। है भी ऐसा ही । भरोसा तब ही होता है जब उसकी तह (तल) में निसबतन (संबंधित) वही चीज़ मौजूद होती है। और यह चीज़ उसी वक्त ज़ोर भी मारती है जब अपनी कमज़ोरी (दुर्बलता) का एहसास (बोध) होने लगता है। इसका असर (परिणाम) भी यही है कि अपनी बनाई हुई चीज़ों की परागंदी (परेशानी) दिलको मुतहम्मिल (सहन) न हो सके । ईश्वरने हमको वही दिया जो उसके पास है और हमने वही रखा जिसको अपनी मशक्कत (मेहनत) से पैदा किया। हमारी मशक्कत (मेहनत) यही रही कि हम दुनियाकों देख देख कर ख़यालातमें पेचीदगी (जटिलता) पैदा करते रहे।

अब उसने उलझन (फँसाव) की शकल (रुप) इख़्तियार कर (अपनाया) ली। यहाँ तक की इसके पसे-पुश्त (पीछे) जो चीज़ हमको बख्शी (दी) हुई थी उसका ख़याल भी न रहा । और कहने यह लगे कि जो कुछ दिया है यह सब ईश्वरका ही तो दिया है। अगर ईश्वर यह सब चीज़ें हमको देता तो मैं समझता हूँ कि हममेंसे किसीका दिल यह न चाहता कि हम उसकी रहमत (कृपा) पर नज़र रखें। जितने मज़ाहिब (धर्म) हैं, सबकी उम्मीदें उसकी रहमत (कृपा) पर लगी हुअी है और मुसलमानों में तो इस क़िस्म की आयतें (कुरान के वाक्य) बहुतसी है, मसलन (उदाहरणार्थ)

"ला तकनतू मिन रहमतिल्लाह।"

(ईश्वर कृपा की आस कभी न छोडें।)

Bible भी इस अम्र (बात) की शहादत (गवाही) देती है ।

मद-व-जज़र (ज्वार-भाटा) की निस्बत (बारेमें) जो आपने दरियाफ़्त (पूछा) फरमाया उसका जवाब यह है कि यह तो लाज़िमी (ज़रूरी) है कि यह मद-व-जज़र फितरोही (स्वभावत:) है । इन चीज़ों में कमी उस वक्त हो जाती है जब आपकी फितरत (स्वभाव) बदलकर रुहानियत से नाता जोड लेती है। इस सवाल के जवाबमें कि, " क्या मैं आइंदा (भविष्य) के वाकिआत (घटनायें) बता सकता हूँ ? " मेरी यह गुज़ारिश (प्रार्थना) है कि जब मौज (इच्छा) मालिक की होती है और वह इस हक़ीर (तुच्छ) को कुछ बता देता है, तो मुझे आइंदा वाकिआत (भविष्य की घटनायें) का अंदाज कुछ लग जाता है और हमको उसकी मौज (इच्छा) पर काने (संतुष्ट) रहना चाहिये और यह शराफत इन्सानी (सज्जनता) के दायरेमें (क्षेत्र) आती है और भक्तिका उसूल (नियम) भी यही है। अब अगर मैं अपनी मौजसे (इच्छा) उससे किसी बातके लिए पूछूँ तो हम यह नहीं कह सकते कि हम मालिकके मौज (इच्छा) के ताबे (अधीन) है । अब आप ही बताइए कि मैं आपके सवालका क्या जवाब दूँ ? सिर्फ यही कि जब आपकी मौज (इच्छा) होगी और मुझमें कशिश (आकर्षण), और ओ भी आपके ही हाथ में है, तो बकौल शख्स के (किसी ने कहा है कि)

"कच्चे धागे में चले आयेंगे सरकार बंधे |"

आपने फरमाया है कि मैं आपकी सहायता करुँ तो क्या आपको यह यक़ीन (भरोसा) है कि मेरी प्रार्थना आपके बहबूदी (भलाई) के लिये नहीं होती ? मैं तो यही चाहता हूँ कि सब अपने को खोकर अपने बन जावे और यही मेरा मक़सद (उददेश्य) है । यह तो 12 सप्टेंबर के ख़त का ज़वाब है । अब 19 सप्टेंबर के ख़त का जवाब बस यही है कि

कलम ख़ुद लौह (तख्ती) पर सर रखकर झुकना चाहती है । मेरी क्या हक़ीक़त, भला क्या खुशखबरी है ! ईश्वर इसको इस्तकामत (दृढता) दे । जहाँ रोशनी है वहाँ परवाने बार (परवाने की तरह) मैं गिरता हूँ । जहाँ रोशनी की उम्मीद है वहाँ परवाना बनने की आरजूँ (इच्छा) । अब मेरी हालत आप ख़ुद समझ लीजिए ।

हमारे यहाँ पदमासन वगैरासे बैठकर पूजा करनेकी की ज़रुरत नहीं । यह तो हठयोग के आसन है । आप जिस आसन से आसानी से बैठ सके वही मुनासिब (ठीक) रहेगा । ध्यान की नज़र दिलपर रखना चाहिए । नाक और अब्रू (भौंह) पर देखने की ज़रुरत नहीं और आँखे बंद करके करना चाहिये । आराम कुर्सीपर लेटकर ध्यान करनेमें भी कोई हर्ज़ (हानि) नहीं, मगर मालिकके सामने मोअद्दिब (आदरपूर्वक) बैठनाही दलील बंदगी (भक्तिकी निशानी) है । पूजा के वक्त तो बैठकर ही करना ठीक है, जब तक कोई मजबूरी (विवशता) न हो । उसके बाद दिन में आप जब कभी भी ध्यान करना चाहे तो लेटकर या बैठकर कर सकते है। ध्यान करनेपर यह ज़रुरत नहीं कि उससे पेश्तर (पहिले) अस्नान (स्नान) कर ही लिया जाय, मगर पाकीजगी (शुध्दता) का ख़याल ज़रुर रखना चाहिये । अगर ज़रुरत नहानेकी है तो अस्नान (स्नान) करके ही बैठना चाहिये । आप दिलपर यह तसव्वुर (ध्यान) बाँध लीजिए कि दिलमें ईश्वरीय प्रकाश मौजूद है । इसकी ज़रुरत नहीं कि आप प्रकाश का इतना गहरा तसव्वुर (ध्यान) बाँधे कि उसकी चमक ही देखनेकी कोशिश करे । दिलपर निगाह इस तरह रखना चाहिये जैसे बिल्ली चूहे की ताक में बैठती है। और मुराकबा (ध्यान) के लुग्वी माने (सामान्य अर्थ) भी यही है । उससे इस्तगराक (तल्लीनता) भी पैदा होगा और रोशनी (प्रकाश) भी बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) आप देखेंगे । और यही सीधा-सादा तरीका सब कुछ कर दिखलायेगा । इसकी फिलासफी बिलकुल मेरी नज़रमें है । मगर इसके लिखनेमें यूँ बाज (छोड़ देता) हूँ कि जहाँ तक हो सके वक्त बचा लिया जावें और यह चीज़ें सिर्फ लज्जते दिमागी (बौध्दिक आनंद) ही बख्शेंगी (देगी) न कि मसरुरे दायमी (स्थायी आनंद)। आप इतमिनान (विश्वास) रखीए, मुझसे जो कुछ खिदमत (सेवा) के जनाब (महाशय) की हो सकती है, कर रहा हूँ । अब आप ख्वाँबे गिराँ (गहरी नींद) से बेदार (जागृत) हुए हैं । मुमकिन है कि फरहादके जाँ-फिशानी (दमतोड कोशिश)और कोहकनी (पहाड काटना)आपके दिलको एहसास हो मगर यह ज़रा आगे की बात है। अय के बनजा रफ्त दरख्वाँबी, मगर इ पंज रोजे दरयाबी । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 11 शाहजहाँपुर
No. 2434/SRCM Date 12.10.1955

बिरादरम तस्लीम (भाई, प्रणाम)

मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मो. 1-10-1955 सादर हुआ । हालात मुंदरिजा (लिखित) से आगाही (जानकारी) हुअी। मालिक का शुक्र (धन्यवाद) है कि आपने पूजा करना शुरु कर दी है । वरना मैं अपनी ही कमजोरी एहसास (समझता) करता और दिलमें यह ख़याल रहता कि हुनोज (अभी तक) बुलबुल के इश्क की बू मशामें गुल (फूल का मस्तिष्क) तक नहीं गयी है। जब ध्यान आपने शुरु ही कर दिया तो मुझे तो यक़ीन कामिल (पूरा विश्वास) है कि हबाब (बुलबुले) की आँख पानी का मुँह ज़रुर देखेगी । आमीन (ऐसा ही हो)। ईश्वर इस्तिकामत (दृढता) दे । आपने तो यह लिखा है कि इन कुव्वतों (शक्तीयों) को हटाकर दूसरी कुव्वत (शक्ती) मेरे जिस्म (शरीर) को अपने कबजे(ताबे)में ले लेती है । और मुझे अभ्यास करनेमें लगाती है । मालिक का शुक्र (धन्यवाद) है कि आप transmission या हक़ीर (नाचीज़) की दुवा का असर लेने लगे हैं और यह बात मेरी हिम्मत अफ़ज़ाई (बढाती) करती है और आप तरक्की (प्रगती) के लिये इसको फाले-नेक (शुभशकुन) समझें । जब यहाँ तक हो गया तो कोई वजह नहीं कि आप इस्तगराक (तल्लीनता) का मज़ा न चखें और रोशनी (प्रकाश) का एहसास (अनुभव) न होवें ।

आप इतमिनान (विश्वास) रखिए कि transmission से बीमारीयाँ disciple में दाख़िल (प्रवेश) नहीं होती । यह मेरा भी तजरुबा (अनुभव) है और मेरे गुरु महाराज का भी । बरख़िलाफ (विरुध्द) इसके, यह देखा गया है कि system की सफाई करनेसे अक्सर (प्राय:) बीमारीयाँ अभ्यासीकी सलब (नष्ट) हो जाती हैं।

आप मेरे ख़ुतूत (पत्र का बहुवचन) बडे शौकसे अपने दोस्तोंको दिखाइये और जो भी असाहब (साहब का बहुवचन) शुरु करना चाहे उनको अभ्यास बता दीजिए । और मुझे भी इत्तला (सूचना) दे दीजिए

और जो आपके दोस्त इस वक्त अभ्यास करने पर मायल (प्रवृत्त) है उनको तरीका आप बता ही देवें और वह शुरु कर दें । और जब वह ऐसा करने लग जावे तो मुझे इत्तला (सूचना) कर दें और उनका इस्म-ए-गिरामी (शुभ नाम) व पता लिखकर भेज देवें ।

आपने जो सवाल फलसफा का किया है उसका मुख्तसरन (संक्षेपमें) जवाब देता हूँ और वह जवाब काफ़ी न होवे तो आप तहरीर (लिख) फरमा दें । ताकी मैं आइंदा (अगली बार) शरह (व्याख्या, टिप्पणी) लिख दूँ । उसूल (नियम) है Every action whether of mind or body will produce some effect good or evil इसके माने यह हो गये कि हवासे खम्सा (पंचेंद्रिय) पर असर ज़रुर पडता है । अब जितनी हलकी लज्जत (आनंद) दिमागी (बौध्दिक) है उतना ही उसका असर कम और उसकी उसी मिकदार (प्रमाण) में बंदिश (बंधन) (मगर मेरी गुज़ारिश (प्रार्थना) है कि आप उस तरफ ख़याल न करें)

असल Realization की तारीफ़ यही है कि unchanging condition पैदा हो जावे और यह हालत ऐसी है कि हजारों बरस में कहीं किसी saint के हिस्से में आई है । मगर कहीं यहाँ तक का पहुँचा हुआ guide मिल जावे और अभ्यासी को काफ़ी शौक (रुची) और जुस्तजू (खोज) हो, तो यह चीज़ आसान हो जाती है । जहाँ तक के है का सवाल है, वहाँ complete realization मफ़कूद (अप्राप्य) । साबित यह होता है कि सुरुर (आनंद) भी एक कमी है । मगर भाई इस लिखे से आप घबरा न जावे । यह तो ऐसी उम्दा (श्रेष्ठ, बढिया) हालत है कि जिसको ईश्वर ने दे दी उसके अगर जिस्मके जोड़ जोड़ तराशे (काँट दिए) जावे तो उसे मंजूर होगा, मगर इस हालत से जुदा (अलग) होना पसन्द न करेगा । मैं समझता हूँ कि आपकी तशफ्फी (संतोष) के लिये इतना काफ़ी है ।

अब आपने कुछ मेरी ज़िंदगी के वाक़ियात (घटनाएँ) पूछे है। वह इतने ज़ियादा है कि इस वक्त अच्छी खासी (काफी अच्छी) किताब बन सकती है । मगर यह सब रुहानियतसे इलाका (संबंध) रखते है । दो तीन बातें लिखे देता हूँ । ईश्वर प्राप्तीका शौक (अभिरुचि) नौ (9) बरस के उम्र से हुआ । 14 बरस के उम्र में फलसफाका शौक चर आया (अभिरुचि निर्माण हुई) । किताबें इस लिये नहीं देखी कि borrowed ideas पैदा होंगे । 16 बरसके उम्र पर प्राणायाम शुरु की और दिलमें गुरु की तलाश रही और इसके लिये दुआ (प्रार्थना) भी करता रहा और अपने आपको इस क़ाबिल (योग्य) बनाता रहा और इस

मकूला (कथन) पर अमल किया कि deserve only and desire nothing. दिलमें यह भी इरादा (निश्चय) कर लिया कि जब गुरु की तलाशमें निकलूँगा तो गुरु की कशिश (आकर्षण) खुद कारफ़रमा (प्रभावकारी) होगी और जिसके पास पहुँच गया उसको गुरु कर लूँगा । क़िस्मत ने यावरी (मदद) की और वह दिन मुझे ईश्वर ने 22 साल की उम्र में दिखा दिया और जब गुरु मिल गया तो क़िताबें बाला-ए-ताक़ (अलग) रख दी और इरादा किया कि बिला (बिना) पढ़े हुवे जब मज़हबी (धार्मिक) गुत्थीयाँ साफ हो जावेगी और अज़ख़ुद (अपने आप) सब इल्मे रुहानी (आध्यात्मिक ज्ञान) आ जावेगा तो फिर उसके बाद तशरीह (व्याख्या, स्पष्टीकरण) खियालात के लिये किताबें देखूँगा । ईश्वरने इसमें भी मेरी मदद की । चुनांचे चंद (इसलिए कुछ) किताबें लिखने के बाद अब मैंने वक्त काटने के लिये और तर्ज़ेबयान (अभिव्यक्ति) के लिये पढ़ना शुरु किया है।

मैं 23 ऑक्टोबर 1955 से 28 ऑक्टोबर 55 तक इलाहाबाद रहूँगा। मेरा पता उस वक्त यह होगा , C/o Hon'able Mr. Justice M.L. Chaturvedi, 3, Tej Bahadur Sapru Road, Allabhad, U.P.

बच्चोंको दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

OM TAT SAT

Serial No. 12

शाहजहाँपुर
Date 30.10.1955

Message

Dear ones,

It is with the feeling of deep pleasure that I found an opportunity of sending my message to you through my associate, Raghavendra Rao. It may be the shortest message, but it has gushed out from the deep core of my heart with love and affection.

The soul is longing to feel its characteristic which has gone out of sight, and this insignificant being is seeking his fellow pilgrims to march on the path of freedom. My longing to get the fellow-travellers is only for the sake of rendering service, for the sake of their safe arrival at the destination. The idea may look foreign to you in the first sight. But if you pause a little to consider the problem or the destination, you will surely come to the conclusion that you are sailing towards your own home where from you have been snatched away by the irony of fate.

When we use the phrase "irony of fate" the idea of unbalance in character presents itself in our memory. As long as there was the balanced state we had no form of our own. We have simply to unfold ourselves and to restore the balance of our own which we had lost.

How simple it looks when we say that we have restored our balance; it is of course a very simple thing, but it becomes very difficult to follow; because with the unbalanced state, we have created the intricacies. We always like to seek our own way or to solve our problem of life through the difficult methods so prevalent in our country. That is why disappointment and frustration is the result. They draw oil from the fatty substance, that is, from those who are swelled in the material knowledge, but not from the bones where the phosphorous is present to illuminate the particles, however soiled they may be. The difficulty then becomes greater in the struggle.

Adopt easy means to get the easy things. The dogmas can do you no good. It is the practical thing which will weave your destiny under a guide who

has measured the distance and has found its original source.

There are such men in India who can very easily guide you to the destination so near and dear to us. But the selection you will have to make yourself, for which I give you a few words to guide you in the search. Where you find the idea of service with no selfish motive of the guide, there rests the real thing. One more thing to consider is that one who can foment you with the internal Divine power to make your task easy is the capable hand for the Divine knowledge. To get such a man is the sure sign that the problem of life will be solved without doubt. I must pray for you all, that the seekers may get such a guide. Amen.

I think, it remains now little on my part for the prayers for the high spiritual elevation provided you get such a man as your guide as said above, but as I am duty bound I must say, "May you all see the light of the day". All this message has bubbled up with love from the bottom of my heart for our most dear ones.

Ram Chandra.

****

ॐ तत् सत

Serial No. 13 शाहजहाँपुर
No. 2467/SRCM Date 01.11.1955

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशिर्वाद) ।

आप बफ़ज़लहू बख़ैरियत तमाम (ईश्वरकृपासे सकुशल) अपने वतन पहुँच गये होंगे। आपके मुसम्मम इरादे (दृढ निश्चय) ने आख़िरकार आपको पहुँचा ही दिया । बस अपने असली वतनमें पहुँचने के लिए

(यानी जहाँ से कि हम आये हैं) ऐसे ही इरादे (निश्चय) की ज़रुरत है फिर आप सफ़र कर ही लेंगे।

आप हमारे पास से गये मगर अपनी याद ज़रुर छोड़ गये। नहीं, नहीं, आप ऐसे मेहमान थे (अतिथी) कि मेज़बान (यजमान) को भी साथ लेते गये । आपने इस नाचीज़ (तुच्छ) का पैग़ाम (संदेश) अपने अहबाब (मित्रों) तक पहुँचा दिया होगा। अब यह मालिक के हाथमें है कि उसे वह उनके दिलतक पहुँचा दे । मेहेरबानगी होगी कि उस पैग़ाम (संदेश) की नक़ल अगर आप यहाँ फाइलमें रखने के लिये भेज सके । पुरसिंदाने हालको (हाल पुछनेवालोंको) आदाब अर्ज़ (प्रणाम) । बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 14 शाहजहाँपुर
No. 2470/SRCM Date 04.11.1955

बिरादर अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशिर्वाद) ।

आपका एक्कम (एक) नवम्बर 55 का लिखा हुआ ख़त मिला । मैंने एक पोस्टकार्ड No. 2467 / SRCM ता. 1-11-1955 रवाना किया था । मिल गया होगा । आप अपने ख़त का जवाब फ़ौरन (तुरंत) चाहते थे, वह आपको मिल गया । ज़रा पढ़कर देखिए कि आपके इसका जवाब उसमें मौज़ूद (उपलब्ध) है या नहीं । फिर भी मैं आपका ज़वाब लिख रहा हूँ ।

आपका ख़त प्रेम और मुहब्बतसे पुर (भरपूर) था । जब यह मुहब्बत है तो ज़ियादा करने धरने की ज़रुरत नहीं पडती और मुहब्बत की गालियाँ भी तो अच्छी, मालूम होती है । आप कहते है, "कि मैं आपसे लड़ा और झगड़ा।" तो भला यह तो मुहब्बत का करिश्मा (चमत्कार) है और मुहब्बत का सुबूत (प्रमाण) अपनी अगली लाइनमें दिया है वह यह है की जिस्म (शरीर) मन व दिल वगैरा सब मेरे हवाले (सूपूर्द) कर दिया । ज़रा ग़ौरसे देखना कि क्या मैं आपसे क़रीबतरीं (अत्यंत नज़दीक) नहीं हूँ ?

भाई, transmission (प्राणाहुति) की बात जो मैंने बतलाई थी वह तो उन लोगों के लिये है जो मुब्तदी (नौसिखिये) है और उसी हालत में ओ दूसरों को transmit करना चाहते है । इसलिये यह उसूल (नियम) general (सामान्य) बतला दिया गया । मैं चाहता हूँ कि कोई contagious (संसर्गजन्य / संक्रामक) बने । जहाँ बैठे, अपना ही नक्श (प्रभाव) जमा दे, और ताऊन (प्लेग, एक संक्रामक रोग) की बीमारी के तरह अज़ख़ुद (अपने आप) असर उसमें से निकले । चुनांचे (इसलिए) आप वही लिख रहे है के, "जिसे देखा ओ फरेफ्ता (मुग्ध, आसक्त) हो गया, जिसके मुतालक (बारेमें) ख़याल किया उसमे कशिश (आकर्षण) पैदा हो गयी, मुझे जिसने देख लिया ओ convert (बदल) हो गया ।" जब ऐसे मेंबर मुझे मिलने लगे तो मिशनमें ज़रुर चार चाँद लग जावेंगे । आप चाहते है कि, "मैं इस हक़ीर (तुच्छ) को न भुलूँ"; और मेरी भी यही ख़्वाहिश है कि आँ अज़ीज़ को न भूलूँ | फिर वरदान का सवाल ही क्या ? यह चीज़ तो आप मंजूर ही

समझें । आप में ego नहीं है, बल्की जो कुछ आपकी हालत है उसको ईश्वरकी तरफसे समझें । मैं आपकी हालत से बहुत ख़ुश हुआ । आप वाक़ई (सच्चे) पात्र है , वरना मेरे पास लोग आते है और चले जाते हैं । मुझे कोई साथ नहीं ले जाता । आप वाक़ई (सच ही) मुझे साथ ले गये ।

आप यह ज़रुर लिखें कि अगर मौज़ूदा हालत (वर्तमान स्थिति) से किसी क़िस्म (तरह) की काममें ख़ामी (कमी) आती हो या नाक़ाबिल बरदाश्त (असहनीय) हो तो मैं उसको शांत करुँ । कुछ शांती आपको बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपासे) ज़रुर मिलेगी और इससे आपको फ़ायदा ही होगा। मिशन ज़रुर तरक्की (उन्नति) करके रहेगा कि उस पाये (दर्जा, श्रेणी) के आदमी आ रहे हैं और आप मिशन की सेवा ख़ूब कर सकेंगे। और, मुझे भाई, जब याद करोगे तो मुमकिन है कि आप एहसास (अनुभव) कर सके कि मैं आपके क़रीब ही हूँ । ईश्वर आपको इस्तिकामत (दृढता) दे और आप लमहा-ब-लमहा (क्षण, प्रतिक्षण) तरक्की (प्रगती) करें और मिशन के लिये आप asset साबित हों, क्योंकी करना सब आप ही लोगोंको है। बीज तो मैं रुहनियत (आध्यात्मिकता) का बो चुका। अंकुर फुटने की देर है। फिर पानी देनेवाले आप लोग तो मौजूद ही होंगे। आप अपने दोस्तोंके लिये, शुक्र (धन्यवाद) है कि, जिन्दा message (संदेश) बन गये और यह चीज़ Mission की अहमियत (महत्व) समझने के लिये, मैं समझता हूँ, काफ़ी (पर्याप्त) है। बच्चोंको दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 15 शाहजहाँपुर
No. 2480/SRCM Date 16.11.1955

बिरादर-ए-अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद)।

आपने जितने ख़ुतूत (पत्र) लिफ़ाफ़ेमें भेजे थे , सब मिल गये। मैंने 12 नवम्बर से मुलाज़िमत (नौकरी) को ख़ैरबाद (बिदाई) कह दिया और बस उसी का मुलाज़िम (नौकर) हूँ जिसकी मुलाज़िमत (नौकरी) मिलकियत बक्श (पुरस्कार योग्य) हो सकती है । और चाहता भी यही हूँ कि आप लोग भी रिश्ता-ए-मुहब्बत उसी से जोड़ रखे। आपकी भी यही आरज़ू (इच्छा) है जो ठीक भी है। अब कहीं यह आरज़ू (इच्छा) खिसककर अपने असल में मिल गयी तो फिर हर आरज़ू (इच्छा) का ख़ातिमा (अंत) है। इसी रिश्तेको बढ़ाना है और इसीके लिये अभ्यास है । हमारी आरजूएँ (इच्छाएँ) जब दारेफ़ानी (नश्वर दुनिया) की तरफ रहीं तो उन्होंने हमको मिटा ही दिया । अब आख़िरत (परमार्थ) या उक़बा (परलोक) की तरफ जब उनकी रवानगी हुअी तो यह सुबूत (प्रमाण) है के हमको वह जिन्दा (हमारा उज्जीवन) करना शुरु कर ही देगी । आप दुआ इस्तिकामत (दृढता ले लिये आशिर्वाद) चाहते है जो जबाँ (मुंहसे) और तहरीर (लिखने) ही से आप तक पहुँच सकती है । मैं यह चाहता हूँ कि अपने संग सरापे दिलको अलमास आबदीदा से पिरोकर उसकी लडी आपतक पहुँचा दूँ (अपने साथ अपने संपूर्ण ह्रदय को अश्रुपूर्ण नेत्रों के रत्नोंसे पिरोकर उसकी माला आप तक पहुँचा दूँ |) और ईश्वर करे कि वह एक तूफ़ान बरपा (खड़ा) कर उठा दे । तूफ़ान से मेरा मतलब cyclone से नहीं है बल्कि उन मौजोंसे (लहरों) है जो हर तारसे एक दरिया (नदी) बहा देती है । दरिया (नदी) भी ऐसा बहे कि ईश्वर करे एक रोज़ समंदर ही बन जावे ।

आपने जो सवाल मेरी पिछली तहरीर (लिखने) का हवाला देते हुये किया है, उसका जवाब सुनिये। चूँकी आप साइन्सदां है इसलिए मानना पडेगा कि ज़िस्म के ज़र्रात (कण) भी बनते और बिगड़ते (नष्ट होते) रहते है । अब यह तो मानना पडेगा कि हमारे ज़र्रात (कण) नये बनते हैं । मगर जब हम हर चीज़को अपनी मुहब्बत की गरमीसे सेंकना शुरु कर देते है तो वही ज़र्रात (कण) उसका असर ले ले कर उसीके

मुताबिक (तरह) होते चले जाते है और एक वक्त वह आ जाता है कि अपनी बनावट (हमारा निर्माण) उन्हींके मुताबिक (तरह)हो जाती है इसके माने, ख्वाँ (चाहें) transfer के लीजिए या काया पलट के। नये बने ओ बेहत्तर, जो पुराने थे वह गये, और जो रहें उन्होंने प्रेम और मुहब्बत का असर लिया । गरजे (सारांश) यह कि मिल मिलाकर सब एक ही से हो गये । अब एक सवाल जो कहने और समझाने में मुश्क़िल (कठीन) है, रह जाता है, गो (यद्यपि) जानने में और हासिल (प्राप्त) करनेमें मुश्क़िल नहीं । वह यह कि जहाँ तक है का सवाल है Complete Realization (पूर्ण साक्षात्कार) मफ़क़ूद (अप्राप्य) । थोडे अल्फ़ाज़ (शब्दों) में यूँ समझिए कि भाई, ख़ुशनुमा (सुन्दर) पौधे इस ज़मीनपर उगते है जहाँ के ज़मीनपर ख़ाद वगैरा अच्छी पड़ी हो । जब हम अपने आपको मिटा देते है तो फिर वह ज़मीन ऐसी हो जाती है कि जहाँ ख़ुशनुमा (सुन्दर) सफेद फूल उग सकेगा। मिसरा (उक्ति)

"जल गया मज़अ: हस्ती तो उगा दाना ए दिल"

(जल गयी `अस्तित्व' की खेती तब बीज हृदय का अंकुरित हुआ)।

भाई, यह आपने ख़ूब लिख़ा है कि Hydraulics जब आप पढ़ाना चाहते थे तो लडकों की आँखोमें चमक़ आ गयी और जब Strength of Material आपने पढ़ाया था और कोई मज़मून (विषय), तो लडके उसको ख़ूब समझे । भाई, इनमें से मेरी समझमें कोई बात भी न आई । मैं तो यही समझता हूँ कि आप के इल्म (ज्ञान) की जिया (आभा) थी जो आँखोमें नुमायाँ (प्रदर्शित) हुई । वरना भाई, मैं इन बातोंको क्या जानूँ? ख़ैर मैं यही कहता हूँ कि आप ख़ूब सौदा बेचते है ।

जिन साहबने शुरु किया है, ग़ालिबन (शायद) दो साहिबान है उनके पते अंग्रेजीमें लिखकर मेरे पास भेज दीजिए और उनको मेरा पता बता दीजिए । मुरासिलात (पत्रव्यवहार) रखें ताकि हाल मालूम होता रहे । मोहब्बत रखें ताकि ताज़ा रुह फूँकी जा सके (नया जीवन संचारित किया जा सके)। अंग्रेजीका ख़त भी इसमें था और नवीसिंदा (लिखनेवाले) की तहरीर (लेख) । ईश्वर जाने क्या ख़्वाब था जिसके लिये उन्होनें लिख़ा है। "I was thrilled beyond description." यह तो उन्हींसे दरियाफ़्त (पूछ) करके मालूम हो सकेगा ।

क्या मेरा Message आप के दोस्तों तक पहुँच गया ? क्या उन्होंने मेरी सुन ली ? कोई ऐसे तो नहीं है जो मचल गये हो ? आपको यह पैगाम (संदेश) देना ही था , वह दे दिया है । यह भी है कि आप भीगे हुए अपने वतन (देश) में पहुँचे जिससे आपके दोस्तोंको

बहुत कुछ अंदाज़ा भी हो सकता है । भाई, यह सब ज़वाब आपके ख़तका बिल (सारा) तफ़सील (ब्यौरा) है । अब इसका मुख़्तसर (संक्षेप) दो सतरों (वाक्यों) का जवाब ही काफ़ी है और इससे आपको काफ़ी तसल्ली (संतोष) हो सकती है ।

---शेर---

आशिक़ी चीस्त बिगो बन्दा-ए-जाना बूदन,
दिल बदस्ते दिगरे दादन व हैराँ बूदन

[प्रेम क्या है? भक्त को यह जानना चाहिए कि अपना दिल (हृदय) किसी को सौंप कर विस्मित हो जाना (कि यह क्या हो गया)]

पंडीत रामदास चतुर्वेदी दिवाली की छुटटीमें यहाँ आये हुये हैं । कल वापिस जावेंगे । आपको दुआ (आशीर्वाद) कहते है । मुझे ख़त लिखाते वक्त आपके मौलवी साहब की बड़ी याद आ रही है । मेरा सलाम कह दीजिएगा और यह भी कि इनकी याद मुझे किसी वक्त आ ही जाती है और भाई, यह मैं उनका एहसान अपने ऊपर समझता हूँ । मुझे 21 या 22 नवम्बर को एक अज़ीज़ (प्रिय) की शादी में मथुरा जाना है । वापसी आख़िर नवम्बर में होगी । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

P.S. मैं गांधीधामसे आया हुआ ख़त वापिस भेज रहा हूँ । शायद आपको इसकी ज़रुरत होगी ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 16 शाहजहाँपुर
No. 2508/SRCM Date 08.12.1955

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशिर्वाद) |

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मोरखा (दिनांक) 21 नवम्बर 1955 मौसूल (प्राप्त) हुआ। आपने जो किताब तेलुगु सीखने के लिए भेजी है उसका शुक्रिया (धन्यवाद) । आप इतमिनान (विश्वास) रखिए मैं उसकी क़ीमत नहीं भेजूँगा । यह हो सकता है कि उसकी क़ीमत आपको ख़ुद-ब-ख़ुद (अपने आप) मिल चुकी हो। आपने वाक़ई (सच ही) चंद (कुछ) दिन इस हक़ीर (नाचीज़) के पास क़ियाम (निवास) करके ओ हालत पैदा कर ली कि जिसको आगे चलकर सरापा (सिर से पैर तक) मुहब्बत कहा जा सकेगा और यही वजह है कि जहाँ आप बैठते है अपना नक्श (असर, प्रभाव) जमा कर उठते है । आपने जो ख़िदमत (सेवा) मिशन की अबतक की है उससे मेरी तबीयत (मन) बहुत ख़ुश हुअी । और उम्मीद भी है कि आप इस हद (चरमसीमा) में कामयाब (सफ़ल) होकर रहेंगे । आमीन (तथास्तु)। जिन लोगों को आपने अभ्यास बताया है, आपकी राय (विचार) सही है, कि कुछ करने के बाद जब ओ मुस्तक़िल (दृढ) हो जाये तब आप उनके पतोंसे इत्तला (सूचना) देवें । देखा गया है कि लोग चंद यूम (कुछ दिन) करके अभ्यास से फ़ायदा महसूस (अनुभव) करते हए भी ख़ैरबाद (बिदाई) कह देते है और ऐसी हालत में मेरी मेहनत रायगाँ (बेकार, व्यर्थ) जाती है । यह ज़रुर है कि ओ कुछ न कुछ रोशनी अपने अंदर ज़रुर रख लेते हैं जो अगर ठीक तौर (आचरण) से चले जावे तो आइंदा (अगली) ज़िंदगी में मददगार हो सकेगी । मगर मेरा जज़्बा (भावना) तो यह है कि मैं लोगोंकी तरक्की (प्रगति) अपने आँखोंसे देखता चलूँ और वह फिर ऐसे बने कि दूसरों में भी रोशनी (प्रकाश) पहुँचा सके । जिन लोगों ने अभ्यास शुरु किया है और मुझको मालूम नहीं है कि ओ कौन असाहब (महोदय) है, मगर फिर भी ग़ायबाना (परोक्षत:, अनुपस्थितिमें) तौरपर (पध्दतीसे) उनके लिये मेरी निग़ाह (दृष्टि) घूम ही जाती है । अगर उनको अभ्यास की लग़न (प्रेम,रुचि) है, तो कुछ न कुछ फ़ायदा उनको पहुँचही जाता है। मिस्टर लक्ष्मीनरसिंहम का ख़त आया और वीना का ज़िक्र किया है, मगर उससे पहले ही मैं उनको जवाब दे चुका था । ख़त आपने देख ही लिया

होगा । मैं उनपर रुज़ू हो जाता (ध्यान देता) हूँ । ओ साहब ख़ुश अक़ीदत (अच्छे निष्ठावान) मालूम होते है। अगर लगे रहे तो बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपासे) अच्छे निकलेंगे ।

" जादू ओ जो सरपे चढ़के बोले " (प्रभाव वही जो सोच पर असर डाले) | आपका एहसास Captain Iyengar व दीगर असाहब (दूसरे महोदयोंके) के बारेमें सही है । आप वाक़ई contagious बन गये है और रुहानी वबा (आध्यात्मिक महामारी) ज़रुर आपसे फैलती है । यह लफ़्ज़ (शब्द) मेरे गुरु महाराज अक़सर (प्राय:) कहा करते थे कि contagious बनो । क्या Captain Iyengar दोस्त होकर ही चले गये या कुछ तबीयत (प्रकृति) अभ्यास की तरफ भी उनकी मायल हुअी (झुक गयी) ?

आप अपने आपको preceptor बनने के क़ाबिल (योग्य) नहीं समझते मगर जब यही हालत है, तो उसके बनने में देर नहीं लगेगी और यह काम बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपासे) दमज़दन (क्षणभर) में हो सकता है । ख़िदमत (सेवा) के लिये अगर ख़ादिम (सेवक) बना जाय तो ऐनराहत (वास्तविक सुख) है । ख़ैर, इस चीज़ को मेरे हाथमें छोड़ दीजिये । जब आप की मुहब्बत (प्रेम) की यह हालत (स्थिति) है तो यह कैसे हो सकता है कि मेरी पूरी कशिश (पूर्ण आकर्षण) आप तक न पहुँचती हो । मैं तो यह चाहता हूँ कि मैं आपको `मेरा राघवेंदर' कहकर पुकार करुँ । आप मुश्किल (कठिन) काम मुझसे पुछ रहे हैं, भाई, दुश्वार (कठीनाई) तो यही है के दुशवार भी (कुछ भी कठीन) नहीं और मैं तो आप को सहज ही सहज में कमाल (पूर्णता) तक पहुँचाना चाहता हूँ । ईश्वर मेरी मदद करे।

आप ब हैसियत मेंबर (मेंबर होने के नाते) एक resolution भेजना चाहते हैं। आप बड़ी खुशी से भेज सकते है और आपको इसका हक़ भी है | आपने मुझसे दरियाफ़्त किया (पूछा) है के आपको मेरा असली पता कैसे लग सकता है । शास्त्र की ज़बान में तो लोग यह जवाब देंगे कि ` जब अपने आपको आप पहचान लें ' मगर मेरा जवाब यह नहीं है । मैं तो यह कहूँगा कि जब आप ख़ुद मैं ही बन जावें | बस पता मिल गया और वाज़े (स्पष्ट) अगर करुँ, यह हो सकता है कि जब मुझको ख़ुद-ब-ख़ुद (स्वयं) आप अपने में देखने लगे । बिल ख़सद (जान बूझकर) नहीं, बल्कि हालत ही ऐसी पैदा हो जाय और यह सब आपके मौजूदा (वर्तमान) ध्यान से हो सकेगा । भाई, रुहानियत (आध्यात्मिकता) का पाना और perfection तक पहुँचना, आप ठीक समझे के, बिल्कुल मुश्किल नहीं है । सिर्फ़ अपने

आपको छोडकर किसी मिटे हुये के सुपुर्द कर देना है । फिर सब कुछ हो जाएगा ।

भाई, Divine Life की Commentary या किताबोंकी तसनीफ़ात (रचना करने) में कुछ हर्ज़ (नुकसान) नहीं, मगर मेरी राय यह है कि जब Super Conscious State खुल जावे तो फिर तसनीफ़ (पुस्तक लिखने) में भी मज़ा आवेगा और उसके लिए अभी वक्त है । गो (यदि) आपकी अगर यही हालत रही तो मेरी तबीयत (मन) यही चाहेगी कि मैं इसमें ज़ल्दी कर जाऊँ और इसलिये आप ज़ियादा वक्त न समझिए। मैं कोशिश कर रहा हूँ कि आप की दिल की सैर (यात्रा) शुरु हो जावे। उसके बाद दूसरे मुक़ामात की सैर, पिंड के हदतक शुरु कराऊँगा ताकि आपको जिन्दगी का मज़ा आ जावे । सैर (यात्रा) एक-एक, दो-दो मिनट में भी ख़त्म कराई जा सकती है और उसका मतलब (अर्थ) और नतीज़ा (परिणाम) भी वही हो जायेगा मगर आप ऐसी सैर (यात्रा) को इतनी जल्दी grasp न कर सकेंगे ।

चौबेजी भी जब मेरे यहाँ आये थे तो आप की याद करते थे। ख़त गुज़श्ता (पिछला) मैंने, बाबू ईश्वर सहाय preceptor लख़ीमपुर से, लिखवा दिया था। मैं आप को एक एक किताब हस्बे तहरीर (लेखनानुसार) भेज रहा हूँ। बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह के, श्रीलक्ष्मी नरसिंहम को चूँकि मैं ख़त पेश्तर (पहले) लिख चुका हूँ, इसलिये उनके मौजूदा (वर्तमान) ख़त के ज़वाब की कोई ज़रुरत नहीं मालूम होती और मैं माज़िरत (माफ़ी) चाहता हूँ। अब की जो ख़त आए, ज़वाब दे दूँगा।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 17 शाहजहाँपुर
No. 2552/SRCM Date 20.12.1955

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद) ।

मोहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मोरखा (दिनांक) 8 डिसेंबर 1955 मौसूल (प्राप्त) हुआ । इससे पेश्तर (पहिले) मैं ख़त गुज़श्ता (पिछले) का ज़वाब, किताबोंके साथ जो पार्सल से भेजी गयी, दे चुका हूँ । मिल गयी होगी, लिखिएगा । मेरी तब्रीयत बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) अच्छी है। आप फ़िक्र (चिन्ता) न कीजिये । उसका ज़वाब आने पर मुशर्रह (सटीक) दोनों ख़तोंका ज़वाब दूँगा । डॉ. कुलकर्णी का कोई ख़त नहीं आया। उनको ज़रा जम लेने (स्थिर होने) दीजिये फिर उनके केस को हाथमें ले लूँगा। एक मामूलीसी निग़ाह ज़रुर फेंक देता हूँ (सामान्य दृष्टीक्षेप ज़रुर करता हूँ) । मेहनत नहीं करता । उनका ख़त इस वक्त (अभी) तक नहीं आया। रफ़्ता रफ़्ता (धीरे धीरे) एक आसन से बैठने की आदत पड़ जायेगी ।

शकूक (शंकाएँ) तो आपके रफ़ा (दूर), ईश्वरने चाहा, हो ही जायेंगे । मगर हर क्यों का ज़वाब अब तक न कोई दे सका और न आगे उम्मीद (आशा) है । डॉक्टरसाहब को जो रोशनी मालूम हुई यह आप की नेक ख़यालो (शुभ चिंतन) और मुहब्बत (प्रेम) का नतीजा था । आप उस ख़याल को छोड दीजिये के meditation में आप एक क़दम भी आगे नहीं बढ़े । आप करते रहिये । Constant remembrance जैसा कि आप कर रहें हैं, उसको क़ायम रखें, और रहेगी क्योंकि आप आदमी बा मुहब्बत (प्रेमी) है । आप ने Matter, Mind and Spirit की natural हालत पूछी है । मुझे जब इनमेंसे किसीका एहसास (संवेदना) नहीं तो भला मैं क्या लिखूँ और साइन्सदां भी नहीं कि उस इल्म (ज्ञान) से ही मैं कुछ लिख सकूँ । यहाँ बंदा (भक्त), ख़ुदा (ईश्वर) और रसूल (ईशदूत) ही एहसास (अनुभव) में नहीं आते । गरज़े के (संक्षेपमें) तस्लीस (त्रयी, त्रिपुटी) ग़ायब है। फिर क्या लिखूँ। अब आप बताएँ सो मैं लिख दूँ। नासदीय सूक्त मिल गया। मैं उसपर गौर (विचार) करुँगा। आपने डॉ. वरदाचारी को जो कुछ भी लिखा, उसने उनपर जादुके सा असर किया और एतक़ाद (विश्वास) और यगानगत (अपनापन) उनमें बढ़ गई और इस क़िस्म (प्रकार) के दो ख़त आ चुके हैं और यह भी लिखा है कि आपका ख़त उनके पास पहुँचा । मैं जब दक्कनी हिंद (दक्षिण भारत) का दौरा करुँगा, यह हो ही नहीं सकता कि मैं आपके पास न पहुँचू । मेरी मेहमान नवाज़ी (आतिथ्य)तो आप मेरे बगैर पहुँचे हुए कर रहे है । और जब मैं पहुँच गया तो ख़ुद ही मेहमान (अतिथी) हुँगा और ख़ुद मेज़बान (अतिथेय) । दुआ (प्रार्थना), नेक ख़याल (शुभचिन्तन) और मुहब्बत (प्रेम) से ही अपने दोस्तोंको राहे रास्तपर (धर्म के मार्ग पर) ला सकेंगे । आज मौलवी साहब का

भी ख़त मौसूल (प्राप्त) हुआ । उनका ज़वाब दो तीन यूम (दिन) में दे दूँगा । आप दूसरों को मारफ़त (अध्यात्म) पर डालकर Mission की अच्छी ख़िदमत (सेवा) कर रहें हैं । ईश्वर आपको इसका अज़र (इनाम) (reward) दे । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 18 शाहजहाँपुर
No. A-4/SRCM Date 01.01.1956

मेरे राघवेन्द्रराव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मोरखा (दिनांक) 24 Dec मौसूल (प्राप्त) हुआ । मैं एक पोस्टकार्ड भी रवाना (भेज) कर चुका हूँ । मिल गया होगा । मैं खुश हूँ की मिशन के तरक्की (प्रगति) को आप ने अपना ईमान (धर्म, निष्ठा) बना लिया। और कुछ आदमी भी कर लिये। आपने जो मिशन के क़वायद (नियम) की किताबें मँगवाई हैं, मय (साथ) फार्म के रवाना करूँगा। मगर फार्म भरवाने से पहले, अभ्यास खास तौर (विशेष रुपसे) पर शुरू कर देना चाहिए। पता नहीं की मौलवी गुलाम सरवरखाँ साहबने मुझे अपने हुजूर-ए-दिल में वाक़ई (सच मुच) जगह दी है । अगर ऐसा है तो यह ख़याल (विचार) अज़ख़ुद (स्वत:) पैदा होता है कि मुझे उन्होंने मुक़ैयद (कैद) किया है या आज़ाद (स्वतंत्र) भी रखा है । अगर क़ैद किया है तो मैं पा-ब-जौलाँ (बंदी) हो चुका और अगर आज़ाद (स्वतंत्र) रखा है तो ज़रुर मैं उनके काम का हो सकता हूँ । इससे मतलब यह है कि उन्होंने मुझे मेरा हक़ देते हुये अपनाया है या मेरा हक़ बातिल (खंडित, रद्द) रखा है । अगर मेरा हक़ क़ायम रखा है तो मैं ज़रुर उनके काम का हूँ । आपने अपने भाँजेके लिए लिखा है । मैं तैयार हूँ । ओ बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) तरक्की (प्रगति) करेगा । डॉ. वरदाचारी के ख़त मेरे पास भी आते हैं । और मैं भी चाहता हूँ की वह तरक्की (प्रगति) करें। मगर बात यह है कि शकूक (शंकाएँ) और doubts की बुनियाद (नींव) पर, जो कि फिलासफी की

जान है, उसी रेत पर रुहानी (आध्यात्मिकता का) मंदिर बनाना चाहते हैं । और मैं अगर अपनी जाती राय (व्यक्तिगत मत) ज़ाहिर कर दूँ (बताऊँ) तो यह है कि रुहानी फिलासफी का आग़ाज़ (आरंभ) surprise से होना चाहिए । और मैं Plato के इस ख़याल से मुत्तफ़िक़ (सहमत) हूँ । हमारे यहाँ एक stage भी आता है जिसपर अभ्यासी को हैरत (आश्चर्य) पैदा होती है और मैं उस हालत में मुद्दतों (बहुत काल) रहा हूँ । जब यह हालत पैदा हो गई तो फिर रुहानियत का रुख (दिशा) कुछ और ही हो जाता है । मैंने ख़त दिखाने के लिए गणेशन् को मना कर दिया है कि उनमें सवालात के जवाब देते हुए कुछ saints का criticism भी हो गया है , गो (यद्यपि) बहुत मसलहत (सोच समझ) के साथ बचा बचा कर तहरीर किया (लिखा) है । उन खतोंको आप जैसे मुहब्बतवालोंको देखने में चंदा (कुछ भी) हर्ज़ (हानि) नहीं । उनकी ख़ास ख़ास बातें तो हर शख़्स (व्यक्ति) को बताई जा सकती हैं । अब रहा उन तजरुबात (अनुभवों) के बारे में जो गणेशन् को हुए, वह एक दूसरे से नहीं मिल सकते । आप अपना भी यही हाल समझें कि आपके तजरुबे (अनुभव) भी दूसरोंसे कम मिलेंगे । दौड़ तो सब की एक ही सी रहती है और जौलांनगाह (मैदान) भी एक ही है । मगर हालात (स्थिति) के पढ़ने में फ़रक ज़रुर हो जाता है । गणेशन् ने आपको इसी बात पर बहुत ज़ोर दी है के उर्दू किताब का अंग्रेजी तरज़ुमा (अनुवाद) हो जावे । मैं बड़ा ख़ुश हूँगा अगर आप ऐसा करना शुरु कर दें । बाद को मैं सही कर लूँगा । जो साहब तरज़ुमा करने को शुरु कर चुके थे उनसे पूछना है, मगर हर्ज़ (हानि) नहीं आप भी शुरु कर दें ।

आप के सवालात के जवाब पर आता हूँ । इस फिक़रे (वाक्य) पर कि `क्या ज़िंदगी के कोई माने भी है ?' किसीने कहा है, `ज़िन्दगी ज़िन्दा दिलीका नाम है, मुर्दा दिल क्या ख़ाक जिया करते हैं | ' शायराना माने (काव्यात्मक अर्थ) इसके कुछ भी हो, मगर जो माने (अर्थ) कि मैं कर रहा हूँ, उससे मेरा मतलब (उद्देश्य) सिध्द होता है । यह तो साबित (सिध्द) ही है कि जिंदा दिली (प्रसन्न चित्त) को ज़िंदगी (जीवन) कहते हैं। अब सवाल पैदा होता है के ज़िन्दा दिली क्या बात है ? दिलके साथ ज़िन्दा रहना । अब वह ज़िंदगी (जीवन) क्या हो सकती है के ज़िंदगी (ज़िन्दापन) आ जावे । बस् यही की दिल दूसरे को दे दें, तो फिर ज़िंदगी रह जावेगी । अब अगर ज़िंदगी पर गौर किया जावे तो ज़िंदगी वही है कि जो ज़िंदगीके साथ वाबस्ता (संबन्धित) रहें। उस कहनेसे मेरा मतलब साफ़ हो जाता है कि कोई ज़िंदगी ज़रुर है कि

जिसके साथ मैं ज़िंदा रहना कह चुका हूँ । यह भी इससे तरशा (तरश्शुह, स्पष्ट) हो गया है कि वह ज़िंदगी से ही ज़िंदगी वाबस्ता (संबंधित) रहना चाहती है । वह दवाम (नित्य) और क़ायम (स्थापित) है । अगर हम अपनी ज़िंदगी को इस ज़िंदगीमें शामिल करते हैं तो असल ज़िंदगी हो जाती है कि जहाँ न सरुर (आनंद) है न ग़म (दु:ख), न रास (विलास) न रंज (कष्ट) । बस वही एक बे पढ़े की इबारत (लेख) है और ,उसी तरफ मैं आप लोगोंको ले जाना चाहता हूँ । और यही ज़िंदगी, जिसको आप ज़िंदगी कहते हैं, इसका मआल (फल) है । मैंने तो ये भी कहा है कि दिल दूसरेको दे दें, इसके इश्कीया माने तो पढ़ने से जो कुछ समझेंगे ओ ठीक ही है, मगर आम-फहम इबारत (साधारण शब्दों) में अगर इसको लिखा जावे, तो यह ज़रुर है कि असलियत (वास्तविकता) का बयान (वर्णन) इन लफ्ज़ों (शब्दों) से न हो सकेगा मगर समझमें ज़रुर आ जावेगी । मतलब यह है कि हमारी तबीयत जो दुनिया में लगी हुई है, यानी जो दिल ख़ुराफत (व्यर्थ काममें) की तरफ रागिब (आकर्षित) है, उसका मूँह क़तैयन (पूर्णतय:) मोड लिया जावे । आप को इस ज़िंदगीमें बस यही करना है कि दिल उसका और आप अपने ।

दूसरी बात जो आपने पूछी कि इस ज़िंदगी से मुझे क्या मिलेगा ? तो भाई, मिलने का सवाल वहाँ पैदा होता है जहाँपर गरज़ होती है । अब दिल ही अपना न रहा तो गरज़ तो रुख़सत (विदा) हो ही गयी । तो अब आपको मिला क्या ? बस वही जो आप का था । हाँ, उससे पहले आपकी ज़िंदगी ज़रुर थी और इस ज़िंदगी का मज़ा यह है कि आप मौजूदा (वर्तमान) ज़िंदगी में आये । अब क्या इसके बाद भी मेरी कोई ज़िंदगी होगी ? अगर आप गुज़श्ता (पिछली) को फिर चाहे तो अब वह नामुमकिन (असंभव) है । इसलिये कि इस क़िस्म (प्रकार) की ज़िंदगी आप जैसे devotional mind के लिये मुमकिन (संभव) नहीं । अब इसके बाद जो ज़िंदगी होगी उसकी फ़िक्र मुझे होना चाहिये ! इसलिये के आपने ख़तमें लिखा है के मैं अपने दिल व दिमाग़ को कब का आप के हवाले (सूपूर्द) कर चुका हूँ । तफ़ावत (विषमता) ज़िंदगी है । अगर तफ़ावत (विषमता) न होता तो Eternity की तरफ कोई रागिब (आकर्षित) न होता । अब अगर तफ़ावत (विषमता) न होता तो फ़रमाईए, इसके लिये दूसरा लफ़्ज (शब्द) क्या हो सकता था और उसकी तारीफ़ (पहचान) क्या हो सकती थी ? वही जो ईश्वर । अब आप यह भी सवाल कर सकते है कि यह तफ़ावत (विषमता) क्यों पैदा हुआ? सही जवाब तो यह है की आपने अपने ख़याल को इस क़दर

सक़ील (भारी, बोझिल) किया कि सक़ील (भारी) करते करते असल चीज़ जिस पर सक़ील (भारी) की थी वह छुपा दी । चमक दमक तो आपने पैदा कर दी और इसी में (गाँव वालों की ज़बान में) आप लट्टू (मोहित) हो गये । अब जब आप लट्टू (गोल आकार का खिलौना) ही बने तो फिर नाचा कीजिए। ख़ुद भी नाचे और तमाशा देखनेवाले भी मिल गये और आप ख़ुश है । अब आप ख़ुद तसफ़िया (निर्णय) करें के कारखाना कुदरत (प्रकृति की कार्यशाला) में इसकी साख़्त (निर्मिती) में आप का क्या हिस्सा था और आप की कितनी ज़िम्मेदारी थी । यह सवालात के जो आपने किये हैं, उर्दू किताब में जमीलाकी मिसाल के साथ में लिखे है, पढ़ लीजिएगा ।

आपने कुछ इबारत (लिखाई) लिखते हुए आख़िर में लिखा है कि मुझे ठीक रास्ता दिखाइये । मुझे ताज्जुब (आश्चर्य) हुआ कि आपके कलम से जो जुमला (वाक्य) निकला है उसके माने यह है कि अभी तक मैंने आप को ठीक रास्ता नहीं दिखाया है । अगर मैं आपको अज़ख़ुद रफ़्ता (बेखुद,बेख़बर) समझ लेता तो उसके लिये फिर यह जवाब था " मंज़िल को हम पहुँच कर मंज़िल को ढुँढते है ।"

अच्छा है कि आप निस्फ़ (आधा) घंटा पूजा कर लेते हैं, और भी अच्छा होगा अगर आप एक घंटा पूजा करने लगें । Constant remembrance वाक़ई (सच ही) एक ऐसा अभ्यास है कि तमाम मनाज़िल (मंज़िलें) उसीसे तय हो जाते हैं । जुमला कैफ़ियत (सारी स्थितियाँ) जुमला अक्साम (सब प्रकार) की superconscious state इसीसे खुल जाती है और यही चीज़ असलमें वासिल करा (मिला) देती है। मैं मौलवी साहब को भी ख़त लिख रहा हूँ। पढ़कर उनको दीज़ियेगा।

बाद तहरीर (यह लिखने के बाद) आपका ख़त मोरखा (दिनांक) 27 डिसेंबर मिला । मेरी इस तहरीर (लिखने) पर कि हर क्यों का जवाब आज तक कोई न दे सका और न अब होने की उम्मीद है; आप मायूस (निराश) न हों और आप मेरे अल्फ़ाज (शब्द) के, ईश्वर का इल्म ख़ास (विशेष ज्ञान) हो जाने पर हर चीज़ का इल्म (ज्ञान) हो सकता है, अपने दिलमें क़ायम रखें और यह सही है । यह मसला (प्रश्न) आज तक हल नहीं हुआ कि पहले दरख़्त (पेड़) हुआ या बीज, मगर मैं कहता हूँ कि पहले बीज हुआ फिर दरख़्त (पेड़) । बीज ईश्वरी धारोंके तज़लज़ल (कम्पन) और झटकों का असर था । मगर आप यह सवाल करें कि ईश्वर ने दुनिया क्यों पैदा किया, ईश्वर कहाँसे आ गया और क्यों आ गया ? तो आप ही सोचें इसका क्या जवाब हो सकता है । मैं समझता हूँ कि अगर ख़ुदासे यह सवाल किया जाय कि आप आ

कहाँसे गये तो ओ भी इसका जवाब न दे सकेगा और अगर जवाब देता है तो वह ख़ुदा नहीं रहा । इसलिये कि ऐसा कहने में फ़ौरन limitation लग जाता है और लामहदूदीयत (असीमत्व) ग़ायब हो जाती है । इसलिये बहुतसी बातें हमको मान ही लेना पड़ती हैं । लोग अक्सर (प्राय:) सवाल करते हैं कि इतने मसाइब (विपत्तियाँ) और तक़लीफ (क्लेश) का सामना इन्सान को होता है, जिसकी ज़िम्मेदारी ईश्वर पर है कि हमको मुसीबत में डाल दिया, अगर यह देखकर वह ख़ुश होता है और उसका दिल नहीं पसीजता (द्रवित होता), तो ऐसे ज़ालीम (अत्याचारी) से दूर ही रहना चाहिये ।अब बताइए किन अल्फ़ाज (शब्दों) में यह समझाया जावे ताकि उनकी तसल्ली (समाधान) और तशफ्फी (सांत्वन) हो जावे । साइन्स और फ़िलासफ़ी इसका जवाब ज़रुर देती है मगर आख़िर में मुहरबलब (मौन) लग जाता है । ऐसी ही बहुत सी बातें है जिनको सोचकर तबीयत (मन को) परेशान (चिंतित) व परागंद (उव्दिग्न) न करना चाहिये । इसलिये कि चीजें सब Peace बढ़ाने के ख़िलाफ पडती है । हममें तो यह सौदा (प्रेमोन्माद) होना चाहिये कि किस तरह हम अपने को तलाश कर लें और यही रुहानियत है । अगर मैं आपसे यह कहूँ कि आपका नाम राघवेन्द्रराव क्यों रखा गया , आप यही कहेंगे कि मेरे वालिद माजिद (पिताजी) को पसंद आया । फिर बस यह सवाल करुँ कि उनको क्यों पसंद आया, तो मुमकिन है कुछ जवाबात देने के बाद हर क्यों का जवाब न दे सकें । जब मामूली बातोंका यह हाल है तो बड़ी बातोंको इस तरह समझ लेना चाहिये । मुझे ख़ुशी हुई कि आप इंजीनियरिंग मेम्बर बन गये । जब यह मक़सद (लक्ष्य) पूरा हो गया तो ईश्वर दूसरा भी पूरा कर देगा । मैं जब आपकी तारीफ़ करता हूँ तो यह लाजिमी है (निश्चीत) के आप को ख़ुश होने का मौक़ा मिलता है और मेरा मक़सद (उद्देश्य) भी यही होता है कि आपको एक गुना बढ़ने के लिये पानी देता रहूँ । मगर जब आप यह समझते है कि आप ऐसे लिखनेसे मगरूर (घमंडी) हो जाते है ; गो (मगर) ऐसा नहीं है। तो इस वक्त आप यह क्यों नहीं समझ लेते कि मैं अपनी तारीफ़ कर रहा हूँ । आपने जो पूछा कि ख़्वाहिशात (इच्छाओं) का पूरा न होना ही सज़ा तसव्वूर कर लूँ (समझलूँ) तो बेहत्तर तो ये है कि ख़्वाहिशात (इच्छाओंका) पैदा होने को ही आप ख़ुद अपनी सज़ा समझ लें।

Electrons वगैरा के बारे में जो मैंने आपको बताया था उसके लिये आपने किसी को लिखनेके लिये कहा था वह आपने लिख दिया

होगा। उसका जवाब आपको मिला या नहीं, मुझे भी इत्तला (सूचना) दीजिएगा।

Appendicitis के इलाज के लिये आप अपने सत्संगी मुखर्जी लखीमपुर से मशवरा (परामर्श) लीजिये । उनका पता हसब-ए-जैल (निम्नलिखित) है।

Shri. S.R Mukarji
No. 1/11 -D - Railway Qtrs. N.E. Railway.
Lakheempur Kheri (U.P.) (Northen India)

आपका दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 19 शाहजहाँपुर
No. A-37/SRCM Date 15.01.1956

मेरे राघवेन्द्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) |

आपका ख़त 10-1-1956 का मिला । आपके भाँजे का ख़त मौसूल (प्राप्त) हुआ । ताज्जुब (आश्चर्य) यह है कि आप उसके ख़त को देखकर क्यों परेशान (चिन्तित) हो गये ? उसमें कोई परेशानी की बात तो थी नहीं । मैंने उसका case पहले से ही हाथ में ले रखा है । आँ अज़ीज़ (आप) क्यों फ़िक्र कर रहे हैं ? वह तो सीधा-सादा लडका है । आपने यह भी लिखा है कि आप ख़त पढक़र देखें कि उसको क्या हो गया है। मुझको तो उसके ख़तमें एक भी ऐसी बात न मिली जिससे के आँ अज़ीज़ (आप) परेशान (चिन्तित) होते हैं। आपने इस ख़त में लिखा है कि मेरी capacity बढ़ाईए । इसको भी मैं करता चलूँगा । यहाँ तो अब बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) श्री गुरुजी महाराज की शक्ति ही काम करती है । नुक़सान होनेका तो कभी अंदेशा (भय) ही नहीं । अगर मुहब्बत मान लो नाकाबिले बरदाश्त (असहनीय) कहीं पर हो सकती है, तो वह गुरुजी महाराज की एक निगाह में सम्भल सकती है । अगर कहींपर कोई उलझन पैदा हो जावे तो आप मेरे गुरुजी महाराजसे सब अर्जे-हाल (स्थिति का निवेदन) कर दें । यानी प्रार्थना के तरीक़ेपर उनके सामने

रख दें, चीज़ फ़ौरन (उसी वक्त) होगी । इसमें अगर दिक्कत (कठिनाई) मालूम हो तो आप मुझसे भी इसी तरीके से वहाँ से कह सकते हैं । मुझको पता चले ख्वाह (या) न चले, आपका मतलब श्री गुरुजी महाराजकी कृपा से हल हो जावेगा । मैं आपके भाँजे को भी एक ख़त लिख रहा हूँ , ताकि उसका हिज़ाब (शर्म) मुझसे टूटे। आप यक़ीन रखे कि मैंने आपको सही रास्ते पर डाल दिया है और बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) आप ज़रुर मक़सद (ध्येय) पर पहुँचियेगा । इस्तक़लाल (दृढता) के साथ आप चले चलीये, कोई खटके की बात नहीं है।

अब मैं आप के 9 जनवरी 1956 के ख़त का जवाब देता हूँ; जो एक ही दिन मौसूल (प्राप्त) हुए थे। आपने यह लिखा है कि मुझको मंज़िल (ध्येय) और रास्ते में कोई फ़र्क महसूस नहीं होता। यह चीज़ एक अच्छा लगाव ज़ाहिर करती है और भाई, मेरा तो ख़याल यह है कि अगर अभ्यासी को मुहब्बत है और हुस्ने-इत्तफ़ाक़ (सुयोग) से कोई रहबर (मार्गदर्शक) ऐसा मिल जावे कि जो हर वक्त अभ्यासी को उसके वतन (ध्येय) की ख़बर देता रहे और ख़ुद भी उसमें ख़ियामपज़ीर (स्थित) हो, तो यक़ीन (नि:संदेह) समझीये कि अभ्यासी ज़रुर अपने कमाल (पूर्णता) को पहुँचेगा । आप तो ऐसे शख़्स (व्यक्ति), यानी मेरे गुरुजी महाराज के ज़ेरे-तालीम (प्रशिक्षणाधीन) है कि जिसकी रोशनी (आभा) अगर गौर (ध्यान) से देखा जावे तो कुल जहाँ (सारी दुनियाँ) में छा चुकी है और हर जगह अगर saint लोग गौर (ध्यान) से देखें तो रुहानियत (आध्यात्मिकता) चप्पे-चप्पेमें भरी मिलेगी । अब रही ख़्वाहिशात (इच्छायें) और शुकूक (संदेह) । रफ़्ता रफ़्ता (धीरे धीरे) यह भी ख़ैरबाद (विदा) कह देंगे । Rome एक दिन में बनाया नहीं जा सकता । मुझे तो वह चीज़ें साफ़ करना है और कर भी रहा हूँ कि जो ख़्वाहिशात (इच्छाएँ) और शुकूक (शंकाओं) की बुनियाद (नींव) हैं। आप को मै-ए-मारिफ़त (आध्यात्मिकता की शराब) भी पिलाता जाता हूँ और इस मुतबर्रक (पवित्र) शराब (मदिरा) के रखने की जगह भी वैसे ही बनाते जाता हूँ । और आप को क्या चाहिये ?

आप ने ये भी लिखा है कि right thinking नहीं पैदा हुअी। क्या आप यह समझते है कि, यह चीज़ आपमें पैदा नहीं होगी । मगर भाई, " निगार सुबह दुल्हन को ज़रा सँवरने दो ।"

आप को लोग साइन्सदाँ समझते हैं । भाई, ये उनका फेल (काम) है । इससे आपको परेशानी क्या ? ख़ैर, आपको कुछ समझते तो हैं । और मुझको तो लोगोंने हमेशा बेवकूफ़ समझा, और मेरे लिये आम राय (सामान्यत:) बुज़र्गान (बडे) और रिश्तेदार जो मुझको जानते थे,

यही थी | बुरा तो मुझे मानना चाहिये था के ओ मुझको ऐसा समझते थे । मगर अफ़सोस (दु:ख) तो यह है कि लोग आपको अच्छा समझते हैं और फिर आप बुरा मानते हैं । आप इसके जवाब में यह कह सकते हैं कि चूँकि मैं ऐसा नहीं हूँ इसलिए बुरा मानता हूँ । तो भाई, इस तरह मैं भी कह सकता हूँ के चूँकि मैं ऐसा नहीं था मगर लोगोंने मुझको बेवकूफ़ ही समझा, तो मुझे भी बुरा मानना चाहिये था । मगर जब मैंने एक ख़राब बात को सुनकर लोगोंके कहने का कुछ एहसास न किया (बुरा नहीं माना) तो आपको अच्छी बात पर तो बुरा मानने का कोई हक़ (अधिकार) ही नहीं ।

आप इतमिनान (विश्वास) रखिये कि मैं आप का इम्तिहान (परीक्षा) नहीं ले रहा हूँ । आपका इम्तिहान (परीक्षा) लेना गोया (मानों) वह मेरा ही इम्तिहान (परीक्षा) होगा । इम्तिहान (परीक्षा) तो वहाँ होता है जहाँ शक है और मेरे दिलमें आपकी तरफ़से कोई शक़की गुँजाईश (जगह) ही नहीं। आप यह भी यक़ीन (विश्वास) रखिये कि electrons तो क्या चीज़ है, आप की यही हालत रही तो हर गुत्थी आप की समझ में आवेगी ।

मैं वाक़ई (सच ही) पिछले ख़त में हस्बे-मामूल (हमेशा की तरह) बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) लिखना भूल गया और यह मेरी गलती थी कि मुझे ख़याल ही न रहा। आप के बच्चोंके लिये जब तक मैं जिन्दा हूँ हमेशा ही दुआ रहेगी कि ख़ुश-ओ-ख़ुर्रम (आनंदित) रहे और रुहानियतमें भी चमके।

मौलवी गुलाम सरवरख़ाँ को जो मैंने ख़त लिखा है उसकी नक़ल, आप अपनी फाईलमें करके, ज़रुर रख लें ताकि अपने दोस्तोंकों दिखला सकें । ओ ख़त इतना जामें (व्यापक) है कि उसकी तफ़सीर (व्याख्या) के लिये सौ-सौ सफ़े (पन्ने) लिख़े जा सकते हैं । उसमे मैंने फ़ना और बक़ा की हालत दिखलाई है । फ़ना और बक़ा के लिये हिंदी लफ़्ज (शब्द) लय अवस्था और तुरीया है । उसमें वैराग्य और भक्ति की हालत भी पूरी तौर से दिख़लाई है । और उसमें मैंने यह भी दिखला दिया है कि इन्तिहाई (आखीर) पहुँच पर इन्सान का etiquette (सौजन्य) क्या होता है और इन्किसार (विनम्रता) किस हद तक है । और एक जगह पर मैंने यह भी लिखा है कि आपने मुझे अपने हुजूर-ए-दिलमें (हृदय) जगह दी; ख़ुदा करे यह दिल, जिसमें आपने मुझे बसाया है हुजूर-ए-दरवेशान (पूज्य संत) की ख़बर (याद) आपको देता रहे । इसका मतलब इस क़दर है कि जिस क़दर चाहो लिखते चले जाओ । वैसे मुख़्तसर (संक्षेपमें) माने इसके यह भी हैं कि आपके दिलमें ख़दशात

(शंकाएँ) इस डर से पैदा न हो कि जिस फ़कीर को बसाया है वह क्या कहेगा । दूसरे यह कि जहाँ फ़कीर बस गया फिर ख़दशात (शंकाएँ) पैदा नहीं हो सकते । इसमें मैंने क़माल (पूर्ण) भक्ति का नमूना भी पेश किया है । और इसमें मौलवी साहब की बुजुर्गी (बडप्पन) हर जगह क़ायम रखी है और अपनी आजिज़ी (खाकसारी / दीनता) और इन्किसार (विनम्रता)। इस ख़त में मैंने एक छींटा तास्सुब से बरी होने (पक्षपात से छुटकारा पाने) का भी दिया है और उसमें यह भी दिखलाया है के मैं दूसरोंकी रुहानी ख़िदमत (आध्यात्मिक सेवा) करनेका किस क़दर दिलदाद: (कितना चाहनेवाला) हूँ ।

मैं बडा ख़ुश हूँ कि आप ने उर्दु किताब का अंग्रेजी तर्ज़ुमा (अनुवाद) शुरु किया है । मैं गणेशन को भी इत्तला (सूचना) कर दूँगा । बड़ा अच्छा है कि अगर मिस्टर लक्ष्मीनरसिंहम उसका तमील (Tamil) में भी तर्ज़ुमा (अनुवाद) कर लें । मुझे उनसे मुहब्बत है और उनका हाल पूछ लेना । आप ख़त में जिसका चाहे, अपने दोस्त अहबाब (मित्र लोगों) का हाल शौक़ से लिखा करें ।

जिन साहब ने Reality at Dawn देखी है और ख़ुश होते हुये, अपनी राय यह दी कि अगर इसमें My Vision chapter न होता तो इस किताब को कोई criticise नहीं कर सकता था | जब मैं My Vision chapter लिखने बैठा तो कुछ साथियोंने यह कहा कि यह न लिखा जाए मगर ज्यादा तर राय यह थी कि ज़रूर लिखा जावे | चुनांचे (इसलिए) लिख ही दिया और उसमें एक फ़िक़रा (वाक्य) और भी बढ़ा दिया कि believe me or not. मगर मैं उनके लिये यह कहूँगा कि अब भी इसको कोई criticise नहीं कर सकता और यह बातें सब सही हैं । मिसाल (उदाहरण) के तौर पर लिखता हूँ के Gulf Stream के बारे में जो पेशगोई (भविष्यवाणी) है, सही है और सही हो रही है | यहाँ के अख़बार में विलायत वालों ने कहा है कि Gulf Stream ने अपना Course बदलना शुरु कर दिया है । अपने अख़बार (समाचार पत्रों) में मेरी पेशिनगोई (भविष्यवाणी) निकाल दी कि हिंदुस्तानका एक आदमी इससे पहले कह चुका है। दूसरी चीज़ जो मेरे एक साथी ने कही थी के किसी अख़बार में उन्होंने यह भी पढा है कि England वालों को यह शुबा (संदेह) पैदा हो रहा है कि London के नीचे volcanic energy मख़्फी (छिपा हुआ) है, जो नुक़सान पहुँचा सकती है । तीसरी बात मुझसे यह कही गई कि अमेरिकन का ख़याल यह हो रहा है कि वहाँ

का wealth कमी पर है, बेहतर ईश्वर जानता है । Vision की सनद (प्रमाण, सुबुत) उस वक्त तक नहीं हो सकती जब तक वह बातें ज़ुहूर (प्रकट) में न आ जावे । और इतनी Superconscious state होना मुश्किल है कि उसके सही और ग़लत का अंदाजा कर सके । एक स्वीडन का saint चिल्ला रहा है कि दुनियामें तबादला (परिवर्तन) लाज़िमी है । और मेरी यह बातें जपान के एक Magazine में निकल चुकी हैं।

मिस्टर M .K . Ganeshan ने आपके घर का पता पूछा है, ताकि वह जब कभी इरादा करें, आसानीसे पहुँच सके और ओ आपसे मिलने का जल्द इरादा कर रहा है । आप अपने घर का पता उनको लिख दीजिए । मुझको मालूम न था वरना मैं ही लिख देता । बच्चों को बहुत दुआ और प्यार । जनाब मौलवी साहबसे मेरा बहुत बहुत सलाम अर्ज कह दीजिएगा । मज़ाक तो है ही, यह भी कह दीजियेगा के चूंकि उन्होंने मुझे अपने दिल में बसाया है, कहीं ऐसा नहीं हो कि मैं उकता (उब) कर अपने घर वापिस चला आऊँ । इस साल गुरुजी महाराज का जनम-दिन 15 लग़ायत (से) 17 फेब्रुवरी 1956 मनाया जायेगा । आपको व नीज़ (और) दूसरे सतसंगियोंको मदऊ (आमंत्रित) करता हूँ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह है कि अगर मौलवी साहब से ख़त की नकल दस्तयाब (प्राप्त) न हो सके तो आप मुझे लिखें । मैं भेज दूँगा । मेरे पास उसकी नक़ल मौजूद (उपलब्ध) है । और मेरे सब ख़ुतूत (ख़त)आप एहतियात (सावधानी) से रखते ही होंगे । यह आपके और दूसरे लोगों के भी काम के हैं।

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 20 शाहजहाँपुर
No. A-68/SRCM Date 05.02.1956

मेरे राघवेन्द्रराव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) 26 जनवरीका तहरीर शुदा (लिखा) मिला । खुशी हुई कि इस हक़ीर (नाचीज़) की याद ताज़ा रहती है । आप अपने भांजे से बिल्कुल इत्मिनान रखें (निश्चिंत रहें) । हमारे सबके संभालनेवाले मौजूद (उपस्थित) हैं । यह चीज़ कभी नुक़सान नहीं करती बल्कि फ़ायदा ही फ़ायदा है । ख्वाह (चाहे) इसे दीवाना बनकर हासिल करें, ख्वाह (या) मुहब्बत में डूब कर ।

आपने दो तीन बातें अपने तजरुबात की लिखी और दरियाफ़्त किया (पूछा) है कि ओ हज़रत (महाशय) जिनको आपने अपने vision में देखा था, कौन थे । मैं यह नहीं कह सकता, मगर इतना ज़रुर कहूँगा कि अपने यहाँ जब किसी अभ्यासी में रोशनी (प्रकाश) पाते हैं, तो फ़ैज़ (प्राणाहुति) देना मोक्ष-आत्माएँ शुरु कर देती है । ख़ुसूसन (खासकर) उस वक्त जब कि गुरुकी मुहब्बत का नशा पूरे तौर से सवार हो । क़िबला (श्रध्देय) लालाजी साहब का तशरीफ़ लाना (आना) यह सही है। और आप का (लालाजी साहब का) मेरी शक्ल में तहवील (बदलना) (convert) हो जाना यह माने रखता है कि लालाजी साहब ने अपने और मुझमें कोई फ़रक नहीं रखा और यह तजरुबा (अनुभव) इसी तरह का अक्सर (प्राय:) अभ्यासीयोंको हुआ है ।

गणेशन वाक़ई (सच ही) एक मुहब्बत के आदमी है । और मैंने उन्हें लिख दिया है कि आपको जो तरजुमा (अनुवाद) भेजा है ओ literal (शब्दानुवाद) ही मुनासिब (ठीक) है ताकि अल्फ़ाज (शब्दके) सही माने अंग्रेजी तरजुमे (अनुवाद) में आवे और तरजुमा (अनुवाद) तो वाक़ई (बिल्कुल) literal (शब्दश:) ही होना मुनासिब (ठीक) है । वरना असल (सही) मतलब ख़त्म हो जायेगा ।

श्री. लक्ष्मीनरसिंहम का कोई ख़त, जिसको कि आपने लिखा है कि हिंदीमें लिखकर भेज रहे हैं , नहीं मिला । मेरा खिंचाव उनकी तरफ बहुत रहता है । इसके माने यह है कि उनको भी इस हक़ीर (नाचीज़) से मुहब्बत है । डॉ. कुलकर्णी के तरफ मेरी कशिश (आकर्षण) कम हो रही है । यानी वह अपनी मुहब्बत की क़ाबिलियतसे (प्रेम की ताकद से) मेरी तवज्जह (ध्यान) अपनी तरफ नहीं खींच रहे हैं । मैं ज़रुर अक्सर (प्राय:) उनसे रुजू हो जाता हूँ । उत्सव का programme निवेदन पहुँच गया होगा । ख़ैर, फिर लिख देता हूँ । रोज़ाना सुबह 6.30 से 7.30 तक ज़रुर ध्यान में बैठें । तारीख 15 और

16 को दोनों वक्त और तारीख 17 को सिर्फ सुबह । इसके अलावा 15 तारीख के सुबह से लेकर 17 की सुबह तक मुतवातिर (निरंतर) जिस क़दर (जितना) ज़ियादा से ज़ियादा हो सके, याद व इबादत (पूजा) और ध्यान में मशगूल रहें और मौक़ा हो तो बार-बार दिन-रात में जितनी दफ़ा (बार) मुमकिन (संभव) हो सके ध्यान में बैठ जावें। यही तरीक़ा बाक़ी लोग भी करें। यह उनको समझा दीजियेगा। मतलब यह है कि इतने अरसे (देरतक) मुतवातिर (निरंतर) गोया (मानो) मारफ़त के समंदर (आध्यात्म के समुद्र) में गोताजन (डूबे) रहें ।

जिन साहिबान को आपने प्रेमभरा प्रणाम कहना लिखा है ओ सब के सब उत्सव में आ रहे है। और मैं उनसे कह दूँगा। N. Kumaraswamy का पता आपने पूछा है जो मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) है। यह साहब एक महिने तक मेरे पास रहे और मेरा reading यह है कि ओ एक अच्छी हालत ले गए और उसपर हैं। मगर उनको अपने सही हालत का एहसास (अनुभव) नहीं होता। इसलिए अंदाज यह हो रहा है कि उन्होंने तवज्जह (ध्यान) इस तरफ कम कर दी है । एक दो ख़त भी भेज चुका हूँ। मगर किसीका ख़त नहीं आ रहा है । उनको ज़रा तेज़ करने की ज़रुरत है । यह साहब Andhra State Co-operative Bank Ltd, Vijaywada (South India) में मुलाज़िम (कर्मचारी) है।

Address:
Shri N. Kumaraswamy,
Andhra State Co-operative Bank Ltd.
3/73 -A Brahimin Street, Vijayawada - 1
South India

बच्चों को दुआ और सब सतसंगी भाईयोंको नमस्ते। क़िबला (आदरणीय) मौलवी साहब से मेरा सलाम अर्ज कर दीजियेगा।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 21 शाहजहाँपुर
No. A-86/SRCM Date 21.02.1956

मेरे राघवेन्द्रराव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मसर्रत नामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला। पढ़कर ख़ुशी हुई। नहीं मालूम आपने मुझपर क्या जादू कर दिया कि आप का ख़त मूजिबे तक़वियत दिल (मेरे हृदय को संतोष का कारण) होता है। यह आपकी मुहब्बतका क़रिश्मा (प्रेम का प्रभाव) है। मैं समझता हूँ ऐसी ही हालत आपकी भी, मेरे अरिज़: (पत्र) के पहुँचने पर होती होगी । तो इस माने में हम दोनों एक से हैं और ठीक भी है कि जब मुझे नशा चढ़े तो ख़ुमार का एहसास (अनुभव) आप को होना ही चाहिये । आप ने यह लिखा है कि मुझे अभी कुछ एहसास नहीं होता मगर भाई, सच कहना, क्या मैं भी आप के एहसास में नहीं आता ? अगर यह है, यानी मैं एहसास (अनुभव) में आता हूँ, तो यह भी क्या कम है ! ऐसा होने पर भी आप यह लिखते हैं कि मुझे दलदल से बचाइए । दलदल में फँसे हुये इन्सान को सिवाय क़ीचड़ के और कोई एहसास नहीं रहता । क्या यह हो सकता है कि मिटे हुए की याद आप को भी उसी हालत पर एक रोज़ न ले आवे? क्या आपने एहसास नहीं किया कि आपका दिल किस वक्त बजाय दलदलमें फँसने के मुहब्बत में मुब्तला (प्रेम में डूबा हुआ) होता है ? इसलिये दलदल का सवाल ही नहीं ।

श्री.गणेशन् ने जो कुछ points A and B के बारे में लिखा है, सही है। आपको जो मुराक़बा (ध्यान) मुक़ाम (स्थान) A पर करना चाहिये था, वह आप मुक़ाम (स्थान) B पर कर रहे हैं। मैं भी इसे वाज़े (स्पष्ट) किए देता हूँ।

तरीका (पध्दति) : मुराक़बा (ध्यान) मुक़ाम (स्थान) B+ बवक्त (समय) सुबह + अंदाजन 5 मिनट + इस मुक़ाम (स्थान) पर तसव्वुर (विचार) बाँधे कि जुमला कसाफ़त (सब गन्दगी) वगैरा यहाँ से सामने की तरफ निकल रही है और इसके पसेपुश्त (पीछे) ताक़त जो आत्मा की है वह रोशन और नुमायाँ शक़लमें नमूदार है (वह प्रकाश रुप में प्रकट है) ।

मुराक़बा (ध्यान) मुक़ाम (स्थान) A बवक्त (समय) शब (रात) -सोने से क़बल (पहिले) -अंदाजा 5 मिनिट दुनिया के सब मर्द (पुरुष) और औरतें (स्त्रीयाँ) हमारे भाईबहन है । Points की पैमाइश (नाप) Efficacy of Rajayoga में सफ़े 39 के आख़िर में दी हुई है, देख लीजिएगा।

किताब का तरजुमा (अनुवाद) जो आप ख़तम (पूरा) कर चुके हैं उसकी एक नक़ल मेरे पास भी भेज दीजिए ताकि मैं भी देख लूँ और हसब ज़रुरत अस्लह (ज़रुरत के अनुसार ठीक) कर दूँ। अगर नक़ल आप के पास न हो तो गणेशन को लिख दीजिए कि वह उसकी नक़ल कराकर मेरे पास भेज दें।
जनाब मौलवी गुलाम सरवरखाँ से मेरा सलाम अर्ज कर दीजियेगा । दुआ ए-ख़ैर (शुभाशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

P. S. श्री.लक्ष्मी नरसिंहम का ताज्जूब (आश्चर्य) है कि ख़त (पत्र) क्यों नहीं मिला ? ख़ैर (ठीक है), अब फिर लिखनेकी तक़लीफ़ गवारा (कष्ट) करें । वह बामुहब्बत (प्रेमी) आदमी है ।

बिरादरम दुआ (प्रिय भाई, आशिर्वाद) ।

भाई, उत्सव तो ख़तम हो गया। अब चार-नाचार (विवश होकर) वापस ही जाना है । कल वापसीका इरादा है । आप की याद बहुत आती रही । जब आप की याद मौजूद थी तो एक माने में आप ख़ुद मौजूद ही थे । यही बाइसे तक़वियत (सांत्वना का कारण) हुआ । उत्सव के अय्याम (दिनोंमे) में बल्कि उसके कुछ क़बल (पहिले) से हजरत क़िबला (समर्थ सद्गुरु) दर्द शिकम शदीद में मुब्तला (पेट के तीव्र दर्द से पीडीत) रहे और हुनूज़ क़तई सेहत (अब तक भी स्वस्थ) नहीं है । ये बाअश तरद्दूद (चिंता का कारण) ज़रुर रहा। किसी क़दर (कुछ हद तक) दर्द अभी रहता है। लैमूँ (नींबू) ज़ियादा मुफ़ीद (फायदेमंद) रहता है । इसका इस्तेमाल (उपयोग) जारी है। मालिक जल्द, शफ़ा-ए-कुल्ली अता फरमायें (पूर्ण स्वास्थ प्रदान करें)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
ईश्वर सहाय

****

ॐ तत् सत

Serial No. 22 शाहजहाँपुर
No. A-107/SRCM Date 05.03.1956

मेरे राघवेन्द्रावजी,

आप का मुहब्बत नामा (स्नेहपूर्ण पत्र) 27 फरवरी 1956 का तहरीर शुदा मौसूल हुआ (लिखा प्राप्त हुआ)। जैसे ही आप मेरे ख़त का इंतज़ार करते हैं, वैसे ही मैं आप के ख़त का मुन्तजिर (प्रतिक्षार्थी) रहता हूँ । मुझे आपका ख़त पढ़कर एक अज़ीब राहत (अनोखा संतोष) मिलती है । जनाब मौलवी साहब भी बहुत ख़ुश अख़लाक़ (सुशील) आदमी मालूम होते हैं और आपसे दोस्ताना (मित्रता) भी रखते हैं । मगर भाई, बे ऐब मुहब्बत ज़ात ख़ुदा की है (निर्मल प्रेम स्वयं ईश्वर का है)। इसलिये अगर मैं आप के दोस्त के लिये एक लफ़्ज कर्रा (कठोर शब्द) यह लिख दूँ तो उम्मीद है कि आप बुरा न मानेंगे । वह आदमी ख़ुद गरज़ (स्वार्थी) है, जो रुहानियत के मुतलाशी (मुमुक्षु) में एक ऐब (दोष) कहा जा सकता हैं और अपने आपमें मुक़ैयद (बंदी) हैं, जिसके लिये शाईस्ता लफ़्ज (शिष्ट शब्द) तंगनज़रीही (संकीर्ण मनोवृत्ति) हो सकता है । वैसे वह आदमी बहुत अच्छे हैं ।

मैं बसंत पंचमी उत्सव में अपने दूर दराज़के साथियों से भी मुतवज्जह रहा (ध्यान दिया) हूँ । डॉ. कुलकर्णी को वाक़ई (सच भी) मैंने उसी तारीख में 6.30 बजे एक निहायत ही तेज़ सुकूनी क़ैफियत (बहुतही प्रभावी शांतीपूर्ण स्थिति) की तवज्जह (प्राणाहुति) दी थी, ताकि उनको यह एहसास (अनुभव) हो सके कि यहाँ जबानी जमा खर्च नहीं हैं बल्कि मेरे गुरु महाराज की शक्ती भी काम करती है और उससे ओ नतीजा निक़ाल ले कि यहाँ पर उनका काम बन सकता है। मैंने मिस्टर देवीदास को अपनी तवज्जह (निगाह) में ले लिया है और भाई, मुझे श्री. लक्ष्मी नरसिंहम् की याद बहुत आती है। ओ ख़त ही कभी लिख दिया करें, तो भी मेरे दिलको राहत (चैन) व तक़वियत (सांत्वना) मिलेगी । मेरी उनसे दुआ (आशिर्वाद) कह ही दीजिएगा ।

मैं point A पर 5 या 7 मिनटसे ज़ियादा मुराक़बा (ध्यान) नहीं चाहता इसलिये कि कुछ pressure इस पर पड़ सकता है । जब आप A पर मुराक़बा (ध्यान) करें तो अंदाजा 5 मिनट कर लीजिए । इससे अगर कभी दो-तीन मिनट बढ़ जाते है तो चंदा हर्ज़ (कुछ नुकसान) नहीं, इसमें अपने आपको ग़ाफ़िल (बेख़बर) करनेकी ज़रुरत नहीं

। इससे बेशुमार (अनगिनत) फ़ायदे हैं। माँ-बहनोंपर नज़र मुनासिब (उचित) पड़ने लगती है और Universal love भी आहिस्ता आहिस्ता (धीरे धीरे) बढ़ने लगता है । यह दोनों point मुझे अनुभव हुए हैं । मैं चाहता तो यही हूँ कि एक नक़ल अंग्रेजी तरजुमे (अनुवाद) की जो आपने किया है, मुझे कोई साहब भेज दें । यह पता नहीं कि गणेशन उसके sense को grasp कर सकें हैं या नहीं । किताब तो मुश्क़िल (कठीन) नहीं है मगर लोगोंको मुश्किल (कठीन) न मालूम क्यों मालूम होती है।

मिस्टर राजगोपालन उत्सव में आये थे । उनसे गालिबान (शायद) मैंने यह कहा था कि मैं कोशिश करुँगा कि मैं जुनूबी (दक्षिण) हिंद जल्द पहुँच सकूँ । इस वक्त कुछ मजबूरीयाँ ऐसी हायल (रोकनेवाली) हैं जिससे घर छोडना मुहाल (असंभव) है और यह भी बताए देता हूँ कि वहाँ आने पर सबसे ज़ियादा वक्त आपको और गणेशन को दूँगा । अगर मैंने आपके तारीफ़ में कुछ राजगोपालनसे कहा होगा, तो ठीक ही कहा होगा । ये लतीफा (चुटकुला) आपने ईश्वर के बारें मे ख़ूब लिखा है कि ओ दर्शन क्यों नहीं देता और इसका जवाब भी आपने ख़ुद दे लिया है कि लोग उसकी बहुत ही तारीफ़ करते हैं और उससे बहुतसी उम्मीदें वाबिस्ता (आशाएँ लगाए) रखते हैं । मतलब उसका यह है कि लोग उसकी ख़ुशामद (चापलुसी) करते हैं और ख़ुशामद (चापलुसी) करके अपना काम निकालना चाहते हैं और ओ लगाव पैदा नहीं करते कि ईश्वर अपने आप चला आवे। एक बात यह भी हैं के ओ अपने ईश्वर की तलाश करते है जिसके गोश्त, पोश्त (माँस, त्वचा) और हड्डीयाँ हों और ईश्वर में यह कोई चीजें नहीं हैं। तो आप ही फैसला कीजिए कि ओ तो इस पुतले के दर्शन क्या चाहते है जिसकी साख़्त (बनावट) इन चीज़ोंसे बनीं है । मगर जब इस तरह की चीजें है ही नहीं, तो नुमूदार (प्रकट) कैसे हो ?

आपने संत मंगय्या का ज़िक़र (चर्चा) करते हुये फ़रमाया (बताया) की बकौल उनके (उनके कहने के अनुसार) बुराईका वजूद (अस्तित्व) ही नहीं । इस बारेमें मुझे याद नहीं आता कि क्या लिख चुका हूँ । लिहाज़ा (इसलिए) उसका जवाब नहीं दे सकता । अगर याद आ गया तो फिर लिखूँगा।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

भाई राघवेंद्ररावजी, आप की छुट्टीयाँ तो अब आ ही रही हैं और मुझे इसकी ख़ुशी है कि आप हमसे इन छुट्टीयों मे यहाँ ज़रुर ही मिलेंगे और ज़ियादा वक्त (समय) देंगे।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 23 शाहजहाँपुर
No. A-129/SRCM Date 20.03.1956

मेरे राघवेंद्रराव जी

ख़त मोरखा (पत्र दिनांक) 13 मार्च 56 मिल गया । मुझे अफ़सोस (दु:ख) है कि मैं आप के दोस्त के लिए क्या लिख गया। लिख तो मैं यूँ गया था कि आप की मुहब्बत का नशा सवार था और उसी में कुछ बक़ ही गया । मगर यह याद रहे, कि काँटा जब ज़ियादा बढ जाता है तब उसके काटने की ज़रुरत होती है । इसलिये, खुदगर्जी (स्वार्थ) यूँ तो कुछ न कुछ हर शख़्स (व्यक्ति) में पाई जाती है मगर वह ऐब (दोष) उस वक्त हो जाती है, जब कि ओ एक हद से गुज़र जाती है । वाज़े (स्पष्ट) ये भी रहें कि ख़ुदगर्जी (स्वार्थ) बाल बराबर ही सही, मगर रुहानियत (आध्यात्मिकता) में ऐब (दोष) पैदा करने वाली है। अब अगर इस लिहाज़से मैंने अगर आपके दोस्त के लिये यह कलमा (वाक्य) लिख दिया तो आप सही ही समझिये। लफ़्ज़ तंगनजरी (शब्द संकीर्ण मनोवृत्ति) जो लिखा है उसको मैं ही समझता हूँ । यह झलक fanatic कौमोमें (जातियों) ख़ुसूसियतसे (खासकर) पायी जाती हैं और मेरा reading सही है। इसका display चूँकि ज़ाहिरा तरीकेमें (प्रकट रुप) आम तौर (साधारणतया) पर नहीं होता इसलिये इसको ऐब (दोष) नहीं कहना चाहिये । मगर रुहानियतमें (आध्यात्मिकतामें) यह bondage (बन्धन) बन जाता है । ख़ैर (अस्तु), मुझे लिखना तो माफ़ी ही चाहिये । मगर लिखा इसलिये नहीं कि आप चूँकि मुझे बड़ा मानते हैं । आप शरमा न जाए इसलिये यही लिखता हूँ कि मुझे उम्मीद है कि आप उसको दर-गुज़र (अनदेखा) करेगें । मैंने भाई लक्ष्मीनरसिंहम को भी एक अरीज़ा (निवेदनपत्र) उनके ख़त के जवाब में तहरीर (लिखा) किया था । उन्हें मिल गया होगा । ओ भी आदमी खूब ही अच्छे है । ईश्वर उनको तरक्की (उन्नति) दे ।

आँ अज़ीज़ने (आपने) ठीक लिखा है कि अगर लोगोंका काम ईश्वर से उनके हस्बे मनशा (मन के अनुसार) नहीं चलता है तो उसका वजूद (अस्तित्व) ही उनके दिमाग़ से ग़ायब (ख़त्म) होने लगता है । इसका इलाज मैं क्या बताऊँ? इसका इलाज क़ुदरत (प्रकृति) ख़ुद-ब-ख़ुद (स्वत:), वक्तन्-फ-वक्तन् (समय समय पर) करती रहती है । ओ यह कि उनको चैन (आराम) नसीब नहीं होता और शांती से कोसों दूर रहते हैं और दिल का इतमिनान (संतोष,सांत्वना) तो उन्हें होता ही नहीं । यह चीज़ आगे चलकर रुहानी तालीम (आध्यात्मिक प्रशिक्षण) की बुनियाद (नींव) बन जाती है और ईश्वर की हस्ती (अस्तिव) पर ईमान (विश्वास) लाने के लिये मज़बूर (बाध्य) करती हैं।

मि. देविदास वाक़ई एक सीधा सादा लड़का है और ऐसे शख़्स (व्यक्ति) के लिये यह प्रार्थना करना ऐब (दोष) नहीं कि उसको दीनी और दुनियाबी (इह और परलोक में) दोनों फ़ायदा पहुँचें । आपके भाँजें रामकृष्ण राव को मैंने भी एक ख़त डाला था, उसका जवाब अभी नहीं आया । मुझे फ़िक्र (चिन्ता) हो जाती है । उर्दू का तरज़ुमा (अनुवाद) गणेशनजी ने भेज दिया है । मैं यह चाहता हूँ कि श्री. ईश्वर सहाय, लडकोंके इम्तिहानों (परीक्षाओं) से फ़ारिग होकर (निपटाकर) जब तातील (छुट्टीयाँ) गुज़ारने के लिये मेरे पास आवें, तो हम दोनो मिलकर उसको देख लेवें । इसमें काफ़ी वक्त लगेगा । उनकी आदत अभी बच्चोसें तरज़ुमा (अनुवाद) कराने की पड़ी हुई है और ओ उर्दू व फारसी व अंग्रेजी में बहुत क़ाबिल (निपुण) आदमी हैं । फिर मैं टाईप करा कर आप के पास ख़ुद भेज दूँगा। और उस वक्त तो ईश्वर करे, आप भी मेरे पास मौजूद हों । अगर इसमें कुछ दिक्कत (कठीनाई) हो, तो लड़कों की मदद करना मेरा फ़र्ज (कर्तव्य) भी है । मास्टर साहब 16-17 मई को मेरे पास ज़रुर होंगे । तब तक आप दीबाचा (प्रस्तावना) का तरज़ुमा (अनुवाद) करके मेरे पास भेज देवें । दीबाचा (प्रस्तावना) मैने अंग्रेजी में लिखाया था । उसका तरज़ुमा (अनुवाद) किया गया है; जहाँ तक मेरा ख़याल है और उसमें वरक के वरक (पन्ने के पन्ने) मैंने अंग्रेजी में लिखाए थे । जिसका, बाद को तरज़ुमा (अनुवाद) मैंने ही करके लिखा है।

आपने यह दरियाफ़्त (पूछा) किया है कि उस Special Personality से intercommune करने की आपको ख़्वाहिश (इच्छा) है । उसके जानने के लिये तो मैंने उसीमें तरीका लिख दिया है कि ईश्वर से प्रार्थना करके meditation में कुछ अर्सा (देर) बैठा जावे, उसकी शक़ल (शक्ल) ख़ुद सामने आ जावेगी । अगर आप उसको अपनी

आँखोसे देखना चाहें तो यह हर वक्त मुमकिन है । Intercommune तो काफ़ी तरक्की (उन्नति) के बाद कर सकेंगे । यानी उसके लिये काफ़ी रुहानी तरक्की (आध्यात्मिक उन्नति) की ज़रुरत है । मगर जहाँतक देखने का सवाल है वह काम आँखे आसानीसे कर सकती हैं । अब आप यह कहेंगे कि मैं उसको ढुँढू कैसे ? तो उसका ज़वाब यह है कि "अपने क़रीब ही", या यूँ समझिए कि जहाँ तक और जिस इंतिहा (छोर) तक, आप की विचार की लड़ी काम करें । अब मैं क्या लिखूँ ? आप यह भी कह सकते हैं, मुहब्बत में, कि जिसकी आप ख़ुद तलाश करके, उसको मुझे बता दें। तो भाई, मेरी आँखे तो उसी तरफ झुकी रहीं हैं, जिसके झुकाव के असर (प्रभाव) से ऐसी personality का ज़हूर (प्रकट होना) मुमकिन (संभव) हुआ है ।

आपने ऋग्वेद जो देखा है, उसकी commentary अंग्रेजी में है या हिंदी में, और किन साहब की हुई है ? पंडित रामदास चतुर्वेदी जो लख़ीमपुर से अलाहाबाद आये थे और आपसे काफ़ी सतसंग रहा ; उनके पास सामवेद को छोड़कर सब वेद मौज़ूद है। मैं ऋग्वेद उनसे ले आया हूँ । और एक नौउमर (जवान) संन्यासी जिनकी संस्कृत बहुत अच्छी है और मुझसे रुहानी (आध्यात्मिक) ख़िदमत (सेवा) भी लेते हैं, उनको मैंने कुछ दिनों अपने पास रोक लिया है । और ओ घंटे दो घंटे ऋग्वेद मुझे सुना रहें हैं । मगर कुल वेद ख़तम करनेमें बड़ा वक्त लगेगा । लिहाज़ा (इसलिए) जो कुछ भी सुन सके ।

नासदीय सूक्त में जो कुछ लिखा है, मैंने ख़तोंमें highest approach जहाँ पर है, ओ ऐसी ही मिलती जुलती हालत है, उसका बयान (वर्णन) किया है । किताब जो मैं लिखना चाहता था, जब लिखनेका ख़याल आया उस वक्त अपने आप ख़यालात उठने लगे और जब ये ख़याल आया कि कुछ पढ़कर लिखूँ, तो ओ ख़यालात (विचारोंने) रुख़सत हो गये (बिदाई ली) और मैं उसको अभी तक study भी न कर सका । अब जब मालिकका हुक्म होगा तब कहीं लिख सकूँगा । मैं आजकल सुस्त ज़ियादा हो गया हूँ जब से पेन्शन ली है । मगर मैं यह सुस्तीका परदा बहुत जल्द अब उतारना चाहता हूँ । ईश्वर मेरी मदद करे।

आपने एक सवाल किया है, कि आप लोगों में इतनी मुहब्बत क्यों पैदा हुई ? इसका जवाब मैं क्या दूँ ! आप इसके ख़ुद जवाब हैं और उसकी जाँच (परख) यह है कि यार (दोस्त) के झिड़कियोंसे भी जब दिलको राहत (चैन) मिले। अब आप मुझसे यह कहते हैं कि "मैं भी मुहब्बत करना चाहता हूँ ; इस ख़्वाहिश (इच्छा) को आप पूरा करें । "

मैं इसके जवाब में बिजिंसिही आपका फ़िक़रा लिखे देता हूँ (बिल्कुल वही वाक्य आपको दोहराता हूँ) ।

मैंने सहजमार्गकी दस उसूलों की शरह में जो कुछ भी लिखा है, सब ब्रह्मचर्य ही लिखा है । ब्रह्मचर्य के माने है ब्रह्ममें विचरन करना और यही सब उसमें मज़मून (विषय) हैं । अब आज कल जो माने इस के लिये जातें हैं कि वीररक्षा (वीर्यरक्षा) करो जो भी एक ज़रुरी चीज़ है ताकि जिस्मानी (शारीरिक) और दिमागी कुव्वत (बौध्दिक ताकत) क़ायम रहे । अब रहा जायज़ तरीक़ा, मैं इसका इस्तेमाल (उपयोग) जिसको कभी जबानी बताऊंगा और जब आप मिलें तो मुझे पुछ लेवें । मुर्दा उठाने के बाद अपने यहाँ नहाना क्यूँ ज़रुरी कहा गया है ? मैं समझता हूँ इसी लिहाज़ से जब इन्सान अपनी मौत अपने ही औज़ार से करे, तो भी उसको नहाना ज़रुरी है।

आपने जो तीन कापी Reality at Dawn की फरोख़्त (विक्री) की है उसकी क़ीमत फ़िलहाल (अभी) आप अपने पास रखें । सतसंगियोंसे मेरी दुआ कह दीजिएगा । बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

बक़लम (लिखावट) हरिहर सहाय, सेक्रेटरी

P.S. आपने वेद का मंत्र लिखा । मुझको बहुत पसंद आया । मैं भी आपको भागवत का जडभरतका एक श्लोक लिखता हूँ ।

रहूगणै तत तपसा न याती,
न विद्यया निर्वसंगा गृहाद् वा,
न छंद सा नैव जलादि सूर्यै,
विना महत्पाद रजोभिषेकम् ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 24 शाहजहाँपुर
No. A-147/SRCM Date 28/30.03.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। श्री.रामकिशनराव की ख़ैरियत का हाल (कुशल समाचार) मिलकर ख़ुशी हुई और यह जानकर और भी ज़ियादा कि उनको लड़का पैदा हुआ। ईश्वर उसकी उमर दराज़ (लम्बी उम्र दे) करे । मिस्टर N. Kumaraswamy की अंदरुनी हालत, मुझे तो अच्छी मालूम होती है । और जब तक उन्होंने मुझे देखा नहीं था महिनेमें तीन चार ख़त आ जाया करते थे । मगर जब देख लिया तो उन्होंने कोताहकलमी इख़्तियार की (पत्र लिखनेमें आलस अपनाया) । मैं समझता हूँ यह मेरा ही कुसूर (कमी) होगा। आपने वह दो लफ़्ज़, जिस ख़तमें मौलवी साहब के बारेमें लिखे थे, दिखा दिए । हरज़ (नुकसान) कुछ नहीं हुआ, मगर मुझे शर्म ज़रुर आयी और आपसे माज़िरत (क्षमा) तो मैं मांग ही चुका मगर उनसे भी माज़िरत (माफ़ी) का तालिब (इच्छुक) हूँ । मुझे वाक़ई (सचमुच) ऐसा नहीं लिखना चाहिये था । यह मेरी गलती थी । मगर मैंने लिखा जो कुछ है वह सही ज़रुर है। गो (मगर) अख़लाकन (सौजन्यवश) मुझे नहीं लिखना था । अपने associates से मैं ज़रुर बेबाक (नि:संकोच) रहता हूँ और उनसे कह भी देता हूँ । यह मौलवी साहब की शराफ़त (भलमनसी) है कि उन्होनें उसको बुरा न समझा । उनका ख़त भी आया है । उसका जवाब मैं आप ही के ख़त में लिख रहा हूँ और भाई लक्ष्मीनरसिंहम का भी ख़त आया । वह भी बड़े मुहब्बत के (प्रेमी) आदमी हैं । उसका जवाब भी आप ही के ख़तमें लिख रहा हूँ । गणेशन तरक्की ज़रुर कर रहा है और आप की तरह ओ भी बामुहब्बत (प्रेमी) आदमी है । उर्दू किताब का preface का तरजुमा (अनुवाद) अभी नहीं आया । आ जायेगा । सहज समाधि को बढ़ाकर मेरे कहनेसे कस्तूरी ने 50-50 सफ़े (पन्ने) लिख दिये हैं और मैंने उनके ख़यालात को भी देख लिया है । अब जब ईश्वरने कृपा की और छप्पर फ़ाड़कर दिया तो ओ भी छप जायेगी । मेरे दो तीन लेक्चर हैं । मैं, उसकी नक़ल करनेवाला कोई शख़्स (व्यक्ति) मिल गया तो, भेजूँगा । उसमें दर्द के माने यही हैं कि जो आपको मेरे पास से हटनेके बाद पैदा हुआ था । आपने जो confession (आत्मनिवेदन) किया है कि constant remembrance की इद्दत और शिद्दत (कालावधि और जोश) में न जाने क्यों कमी महसूस (अनुभव) कर रहा हूँ, उसका जवाब तो यह है

"ज़माना-ब-एक गूना बूदे अगर नमी बाफ्त फरजंद जाये पिदर"

[अगर ज़माना (वक्त) न बदला (वैसेही रहा) तो कोई बेटा, बाप न बनेगा]।

मेहरबानी करके आप आयंदा (अगले) ख़त में ज़रुर लिखें कि आप constant remembrance किस तरहसे कर रहें हैं । ताकि मैं उसे सही कर दूँ, कुछ गलती ज़रुर है । मैंने Efficacy of Rajyoga में इसको deal किया है मगर बहुत बचाकर लिख सब कुछ दिया है। आप दिलजमइ रखिए (निश्चिंत रहीए) | मैं तवज्जह (प्राणाहुति) देना नहीं छोड सकता । मगर मेरी इल्तिजा (प्रार्थना) यह भी है कि आप तो मुझे लिखना न छोडें । मेरी तबीयत कभी अच्छी रहती है, कभी ख़राब और यह चली जाती है । आप उसकी परवाह (चिन्ता) न करें । काम कोई नहीं रुकता और आप यह भी यक़ीन (विश्वास) रखें कि मिशनका जो काम मैंने लिया है, उसमें हत्तुलवुस्अ कोताही (यथासंभव आलस) नहीं करता ! मिसाल (उदाहरण) के तौर पर, "सहज मार्ग के दस उसूलोंकी शरह" जब मैंने लिखी है, जब के मैं पेट को गरम बोतल से सेंकते जाता था और लिखाते जाता था। आप मौसम गर्मा में जब आना चाहेंगे तो आ ही जावेंगे।

आप अरविंदजी के ख़याल को पढ़ें और महर्षी रमन के भी । मगर आप करें वही जो आप कर रहे हैं । मैंने भी महायोग पढ़ा है जो South India से एक साहब ने भेजा था और महर्षी रमन के जो पैरो (अनुयायी) हैं ओ इस चक्कर में अब भी पडे हैं और कहते हैं कि दिल उन्होंने दाहिनी तरफ बताया है । मगर इस राज़ (रहस्य) को नहीं समझे । आप जब कभी मुझसे मिलें, तो इसको याद रखें, मैं आपको बता दूंगा । महर्षिजी तो यह कहतें हैं कि उसकी जुस्तजू (खोज) और तलाश करो कि मैं कौन हूँ, और इस हक़ीर (नाचीज़) की राय यह है कि forget yourself. Soul consciousness और body consciousness दोनों जाना चाहिये और यह राय मेरी ज़ाती तजरुबे (स्वानुभव) पर मबनी (आधारित) है । और इसको भी मैंने Efficacy of Raj yoga में लिख दिया है । मैं free thinker हमेशासे रहा हूँ, लिहाज़ा (इसलिए) गुरु के बारे में मैंने जो कुछ भी लिखा है, अपनी आज़ादी से रायें (निस्संकोच अभिप्राय) दी हैं । मैं यहाँ तक कहता हूँ कि मेरे पास जो कुछ भी training है, जब ओ सब दे चुकुँगा तो मैं साफ तौर (स्पष्ट रुप) से आँ अज़ीज़ (आप) से कह दूँगा कि अब कोई दूसरा आदमी इससे आगे ले जानेवाला तलाश कीजिए (ढूँढ लीजिये)।

जब हम ब्रह्म विद्या के लिये किसी को गुरु मानते है और इत्तिफ़ाकसे (संयोगवश) हमारी समझमें यह आता है कि यह ब्रह्मविद्या हमको हासिल (प्राप्त) नहीं करा सकता, तो फ़रमाईए (बताइए) तो सही ऐसे गुरुसे, सिवा इसके कि हम अपनी ज़िंदगी ख़राब कर लें और

मक़सद से बेबहरा (उद्देशसे वंचित) रहें, और कुछ फ़ायदा नहीं उठा सकते । आप जब अपने बच्चोंके लिये किसीको उस्ताद (शिक्षक) रखतें हैं, ये समझ करके, यह हिसाब (गणित) बच्चेको ठीक पढ़ा सकेगा और बच्चे की कमज़ोरी (कमी) दूर करेगा । और जब आपको तज़रुबे (अनुभव) से यह मालूम हुआ कि यह हिसाब (गणित) नहीं पढ़ा सकता तो फिर आपकी भी डयुटी रहेगी कि दूसरे उस्ताद (शिक्षक) को उसके लिये रखें और बच्चा अगर होशमंद (समझदार) और बालिग (सयाना, प्रौढ) है, तो ओ ख़ुद दूसरे उस्ताद (शिक्षक) की फ़िक्र करेगा । अगर ऐसा नहीं होता तो बच्चे की ज़िंदगी ख़राब होती है । इस हक़ीर (नाचीज़) की राय यह है कि मंत्र के जाप के तरीके लोग बहुत कम जानते हैं और मेरे पास मंत्र जापनेवाले कई एक आए और जब उनका मुशाहिदा (निरीक्षण) किया तो उनके दिलमें ऐसी ठोस गाँठ मिली कि जिसको दूर करना मुझे तो मुश्किल ही पड़ गया । बल्कि कुछ ऐसे हैं भी कि जिनको मैं अब तक दूर नहीं कर सका हूँ । जब तक, जैसा ईश्वर सूक्ष्म है, उसी क़िस्म (तरह) का अमल (अभ्यास) नहीं होगा, Realization (साक्षात्कार) नामुमकिन (असंभव) है।

आपका mood ख़राब नहीं हो गया है । इसका ख़याल (विचार) आप मत करें और उदासी जो आपने लिखी है, ओ एक रुहानी हालत (आध्यात्मिक स्थिती) भी हो सकती है । अगर वाज़े तौर पर (स्पष्ट रुप से) आप इसको लिखें तो मैं सही नतीजे (निष्कर्ष) पर पहुँच भी सकता हूँ । इस उदासीमें अगर आपको हल्कापन मालूम होता है तो मेरे साफ़ करने (निर्मलीकरण) का नतीजा (परिणाम) है, और मुबारक (अभिनंदन) ।

मैं समझता हूँ ख़ुदकुशी (आत्महत्या) वाले सवाल का जवाब देना बिलकुल बेकार है और इसमें कई सफ़े (पन्नोंकी) ज़रुरत होंगे । बस, यही समझ लेना चाहिये कि एक बादशाह आपको एक क़ीमती हीरा दे, और आप उसको तोड़फोड़ डालें, तो बादशाह के गैज़ोगज़ब (अत्याधिक क्रोध) की क्या हालत होगी! दूसरे, नेचर के ख़िलाफ जाना हमेशा पाप भी है और ज़ुर्म (अपराध) भी । ये सवाल आपके दिलमें उठना ही नहीं चाहिये था । मैंने किसी ख़तमें ज़रुर लिखा था कि आप को ज़िंदगी का मज़ा आ जायेगा । मेहरबानी करके उसके आगेवाला फ़िकरा (वाक्य) भी देख लीजिए, उस वक्त आपका दिल मुझे ख़तावार (दोषी) न ठहरायेगा । हालाँकि मैं हमेशा अपने आपको ख़तावार (दोषी) समझता हूँ और जब किसी associate में मैं कमज़ोरी पाता हूँ, तो मैं

अपनी ही कमज़ोरी समझ लेता हूँ । मगर अफ़सोस (दु:ख) ये है कि ओ मेरी कमज़ोरी को दूर करनेकी कोशिश नहीं करते ।

भाई, होलीमें मैं ख़ुद तो रंग नहीं खेलता, मगर लोग मुझसे खेल लेते हैं । गाली गलोच का रिवाज तो अब रुख़सत (बिदाई ले लिया) ही हो गया । उसका चिन्ह (निशान) मुमकिन हैं बरसाना और मथुरा में मिले, मगर यहाँ के देहाती गालीयाँ गाते हुये अपनी होलीमें (टोलीमें) ज़रुर निकलते है ।

भाई, यहाँ गलतीयों का कोई सवाल ही नहीं। साफ़ दिल होकर जो कुछ चाहें, सो कहें । साफ बातिन (स्वच्छ हृदय) से बल्कि अच्छा तो ये होगा कि आप के ख़यालात (विचार) मेरे ही दिलमें (हृदय में) बनें और वहींसे उठें। बाबू ईश्वर सहाय लख़ीमपुर से आये हुए हैं और एक और सतसंगी भी। दो रोज़ बाद ओ चले जायेंगे। बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिंतक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 25 शाहजहाँपुर
No. A-163/SRCM Date 11.04.1956

मेरे राघवेंद्रराव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मोरखा (दिनांक) 4 अप्रैल 1956 मौसूल (प्राप्त) हुआ । पढ़कर खुशी हुई। मेरे लिये इससे ज़ियादा और कौन ख़ुशी की बात हो सकती है कि आप इस हक़ीर (नाचीज़) के घरपर आकर मेरी ख़ुशीको दो बाला (दो गुना) करे । मैं तो आपकी अभी से राह देखने लगा । Constant remembrance जो आप कर रहे हैं, अच्छा है । मगर मेरा तरीक़ा जो रहा है ओ बहुत dull था । मगर मुझे उसीमें बहुत मज़ा आया और उसीकी बरकत (लाभ) से मैं जैसा हूँ, आपके सामने हूँ । मैं कुल (पूरा) शरीर गुरु महाराज का अपने सामने vision में रहते हुए देखता रहता था और meditation के समय दिलमें उनको बिठा कर उनका तसव्वुर (ध्यान) बाँधता था । जब

ये शगल (अभ्यास) पूरा हो जाता है तो अज़ख़ुद (स्वत:) इसका दूसरा हिस्सा शुरु हो जाता है, और जिसके माने ये होतें हैं कि एक हिस्सा फ़नाइयत (लय अवस्था का) मैंने पार कर लिया । आपने लिखा है कि मैं अपने अख़लाक (सौजन्य) से आपको बाँधे हुए हूँ । मैं ये कहूँगा ये आपही की ख़ूबी है कि आपने हाथपैर फड़फडाना बंद कर दिये हैं, जिससे क़ुदरती तौर पर (स्वाभाविक रुप से) मुहब्बत (प्रेम) का फंदा (फाँसा) पड गया, और जिस रोज़ (दिन) ये फँदा अपनी असल शकल में आकर मुहब्बत को भी लय कर देगा, तभी काम बन गया।

एक बात आपने इतनी बढ़िया लिखी है कि सोने से तौलने लायक है । ओ ये कि, " मैं आपही के लिये ज़िंदा रहना चाहता हूँ "। और भाई, सच कहता हूँ कि मेरा भी ज़िंदा रहना बस आप ही लोगोंकी वजहसे है। वरना काम ख़तम करके अब तक चल दिया होता । मगर मैं, जबतक आप लोग मिशनमें चार चाँद न लगा देवेंगे, जाने का इरादा भी नहीं करता। भाई, जब फ़नाइयत (लयावस्था) अपनी हद कुलियतन (पूरी तरह से) पार करके बक़ा तर (तुरियातीत) या एक क़िस्म की सूरत इख़्तियार (रुप धारण) कर लेती है, तो फिर बस यही हो जाता है कि जो भी ख़यालात (विचार) उठेंगे ओ मेरे ही दिल (हृदय) से उठेंगे । मतलब ये कि कुल मंडल उस वक्त एक ही दिल हो जाता है । मुमकिन (संभव) है बाबू ईश्वर सहायने इसीलिए कहा हो कि, "क्या बाबूजीके पास दिल भी है ?" और आपने ये कैसे कहा कि "आप मेरा दिल रख लीजिए" अगर आपका दिल मेरे पास न होता तो मुझे आपकी याद भी न आती । आपके भांजे श्री.रामकृष्णराव का भी ख़त मिल गया । उसकी मुश्क़िल (कठीनाई) ईश्वर आसान करे। डॉ. कुलकर्णी साहब ये कहते हैं कि “ख्वाब और नींद में भी constant remembrance का consciousness (जानकारी, बोध) होना चाहिये ।” जब उसकी आदत बन जाती है तो नादानिस्ता (अनजाने में) ख़्वाब की हालतमें भी sub-conscious mind याद में महव (मग्न, तल्लीन) रहता है । एक बात मैं और बताता हूँ कि मैंने, जैसा कि मेरे यहाँ तरीका (पध्दति) है, आपके individual mind के रुख को उपर की तरफ यानी ईश्वर की तरफ कर दिया है । जिसका अंदाज मुमकिन (संभव) है accidentally लग जावे या उस तरफ ध्यान ले जाने से मुमकिन है ये पता चल सके कि तबीयत (मन) उस तरफ़ लगी हुई है । मैं आपके लिये इस मरतबा (बार) जाने क्या क्या सोचे बैठा हूँ।

ईश्वर करे आप मेरे पास आ जावे और आप इस हद तक तैयार मिलें कि मैं अपना और आपका ताल्लुक (संबंध) कुछ ज़ियादा गहरा

हसबे तरीक़ा गुरु महाराज (गुरु महाराज के पध्दतिनुसार) कर सकूँ । और मैं भी उसी की तैयारी कर रहा हूँ कि फ़ैज (कृपा) के reservoir से आपका सम्बन्ध जोड सकूँ । जनाब मौलवी साहब से मेरा सलाम कह दीजिएगा और श्री. लक्ष्मीनरसिंहम से मेरी दुआ और एक जुमला (वाक्य) मैं उनके लिए लिख रहा हूँ । और ओ दर्द के साथ ओ उन्हे बता दीजिएगा ।

Dard is not physical pain but the pangs of seperation & restlessness to meet the beloved.

बच्चों को दुआ | जनाब मौलवी साहब को शेर मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) शेर सुना दीजिएगा।

सरापा जनाब टुटा रूबरू यार ज पानी
की बंश जमरूद यस आईना शुतुरी गरदब
।

(प्रियतम के पास जाने के लिए, संपूर्ण प्रेमरूप बनना पड़ता हैं |)

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 26 शाहजहाँपुर
No. A-207/SRCM Date 07.05.1956

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) 23 अप्रैल 56 का मिला । खुशीका ठिकाना न रहा जब कि आँ अज़ीज़ (आप के) की आमद (आने की) की ख़बर पाई । जहे क़िस्मत (सौभाग्य) की आपके भाई साहब भी तशरीफ़ लावें (आयें) और भांजे भी साथ होवें। मेरी आरज़ू (इच्छा) यही है अगर आप इसमें मदद करें कि निज़ामें मैख़ाना (आध्यात्मिक शराबखाने की व्यवस्था) में इस मर्तबा (बार) आप को भी हिस्सेदार बना लूँ और ये इस वक्त ज़ियादा मुमकिन (संभव) होगा कि कुछ पाबंदी (बंधन) ऐसी लगा दी जावे ताकि दिल व जिगर पास ही पास रहे ।

मैंने ये सोचकर ख़त का जवाब न दिया था कि आप आ ही रहे हैं । मगर जब आँ अज़ीज़ (आप) को देखने की बेक़रारी (बेचैनी) बढ़ने लगी तो इस लिखने के लिये कलम उठा ली कि जल्द आइए और अब की मैं ज़ियादा वक्त तक आपको रखना चाहता हूँ ताकि मैं अपनी भड़ास (हृदय में भरी हुई बातें) मिटा लूँ । रामकिशनजीने मुझे कुछ सवाल भी किये हैं, उसका जवाब भी अभी मुझे देना है । बच्चोंको दुआ और आपके भाई साहब को नमस्ते ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 27 शाहजहाँपुर
No. 246/SRCM Date 27.06.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दो ख़त मिले । इसमेंसे एक पोस्ट कार्ड भी था जिसमें (चार) 4 जुलाई लिखा हुवा था । इसके माने ये हुवे के आप तारीख भी भूल गये और भाई, ये सब खता (दोष) मेरी ही है के आप को भूलेमें डाल दिया । अब आप समझ लें के भूले हुए से मुहब्बत करनेका यही नतीजा (परिणाम) होता है । भला किसी अकलमंद से ये बात आप कह कर तो देखे, ओ इसी नतीजे (निष्कर्ष) पर आवेगा कि इसकी (रामचंद्रकी) सोहबत बहुत बुरी है। मगर भाई, अकलमंद तो इस नतीजे (निष्कर्ष) पर पहुँचेगा ही, मगर ज़ाहिल (अज्ञानी) ये नतीजा नहीं निकालेगा । इसलिये के भूली हुई हालत में भी अपनी याद छुपी हुई है । मगर भाई, इस याद को अभी अपनी याद नहीं कही जा सकती बल्कि ये याद प्रीतम की कही जावेगी और जहाँ तक प्रीतम (माशूक) की याद का सवाल है वहाँ तक अभी सही मानोमें भूल पैदा नहीं हुई । आप ये सवाल करेंगे कि प्रीतम की याद भूलनेपर फिर उसकी जगह क्या चीज़ लेगी। जवाब यही होगा के फिर अपनी ही याद रह जाती है और ये फ़नाइयत (लयावस्था) का तीसरा दर्ज़ा है । चाहता तो मैं ये हूँ के अपनी भी याद भूलने लगे मगर काफ़ी सफ़र तय करने के बाद; फिर तो मैं ये कहने के लिए तैयार हूँ के आप सबकुछ भूल गए । जब गुण (attributes) ख़तम होते हैं, तब यह हालत पैदा होती है । मैं तो यही चाहता हूँ कि आप सब लोग ऐसी हालत पर पहुँचे, जहाँ पर के याद की याद भी बाक़ी न रहे। ये तो आपके पोस्ट कार्ड का जवाब है । ये ख़त का हिस्सा ऐसा है कि अगर इसका अंग्रेजी तरजुमा करके गणेशन को भेज दिया जावे तो उसकी बाछें खिल जावे (अत्याधिक खुश हो जाये)। ओ मुझसे इस क़िस्म की बातें ख़त में करते ही नहीं है बल्के बेरुनी (बाहरी) बातों की मालूमात (जानकारी) वसी करनेके (बढाने के) लिए पूछते रहते है जिनका जवाब मैं दे दिया करता हूँ । मैंने गणेशन को इत्तला (सूचना) दे दी है के गुलबर्गामें आपके चार्ज़ में मिशन की branch खुल गयी है । अब की गणेशन का पोस्ट-कार्ड आया है, जिसको पढ़कर मुझे बहुत ख़ुशी हुई इस बात की, के उन्होने मिशन के काम के लिये मुझे बहुत तेज़ करना चाहा है और उसकी बेचैनी ज़ाहीर

की है के मिशन का काम जल्दी नहीं बढ़ रहा है । इसमें Vinoba Bhave की मिसाल (उदाहरण) भी दी है के भू-दान के लिये ओ बुढ़ापे में हिंदुस्थान भरमें पैदल सफ़र कर रहे हैं । इसके लिखने से उनका मतलब ये था के, मुझे भी तकलीफ़, आराम को बाला - ए - ताक (अलग) रख कर ऐसी जाँ फ़िशानी (जान तोड कोशिश) से काम करना चाहिये। मैं आपको भी लिख देता हूँ ताके आपमें भी गणेशन के तरह की, काम के लिए, बेचैनी पैदा हो जावे। काम आपसे भी बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) अच्छा चलेगा और लोगों को रोशनी (प्रकाश) मिलेगी।

अब मैं आपके बंद लिफाफ़े का ज़वाब दे रहा हूँ जो आपने 13 जून को भेजा है । रुहानी खिद्मत (आध्यात्मिक सेवा) आप जो कुछ कर रहें हैं ओ तो इस शकलों (रुप) में है के मालिक के हुक़म की पैरवी (अनुसरण), जब ये हाल है तो फिर उसी का ज़ोर (शक्ति) काम करेगा । इसलिये शकूक (संदेह) का इसमें सवाल ही नहीं रह जाता । आपकी हालत बफ़जलहू (ईश्वरकृपासे) रफ़्ता रफ़्ता (धीरे धीरे) चमकेगी, इसलिये के मैंने रुहानी मुक़ामात की कुल सैर (आध्यात्मिक स्थानों की सब यात्रा), इस तरह पर कराई है के आप को पता न लग सके । ओ इसलिये के ज़रा ज़ोर देनेमें nerves को नुकसान पहुँच जानेका अंदेशा (खतरा) था । अब ये अंदेशा (खतरा) बिलकुल नहीं है। इतमीनान (विश्वास) रखिए, **मैंने आपके कुल मुक़ामात पिंड के, उस हद तक मुक़म्मल सैर (पूर्ण यात्रा) कराई है जो बरसोंमे भी मुमकीन (संभव) न था।** अब जैसी बरदाश्त (सहनशक्ति) की capacity बढ़ती जावेगी, वैसे ही बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) हालत, एहसास (अनुभव) में आती जायेगी । **इस वक्त आपकी सैर गाह (यात्रा स्थान) ब्रह्मांड मंडल (आलमें कुबरा) है।** दुनियाके चक्करों से तो आप निकल चुके, यानी दुनिया-ए-दूँ (माया-मोह की दुनिया) में आप का पैदा होना अब मुमकिन (संभव) नहीं । अब फ़िक्र इस बात की है की के, आलमें बाला (परलोक) के किसी मुक़ाम (स्थान) पर भी आप की पैदाईश (जन्म) न हो और यही हालत Liberation या निर्वाण की कही जाती है ।

ये खुशी की बात है के श्री. दत्तात्रेयराव ने अभ्यास शुरु कर दिया है। डायरी मंगाते रहिए, उसमें आपका तज़रुबा (अनुभव) बढ़ता रहेगा और ख़ास बातें, अगर ओ चाहे, मुझे भी नोट करा दें । मगर ये उस वक्त, जब के ओ अभ्यास में मुस्तक़िल (सुस्थीर) हो जावे।

ग़ाइबाना तवज्जह (परोक्ष प्राणाहुति) देने का तरीका (पध्दति) ये है की अभ्यासी कि मिसाली शकल (जैसे रुप ,आकृति) यानी के ओ आपके सामने बैठे हुये है, सामने रखकर तवज्जह (प्राणाहुति) देना शुरु

कर देते हैं । ये भी है, जैसा के मेरे साथ हो रहा है, के अगर अभ्यासी अभ्यास कर रहा है मगर आपने उसको देखा नहीं है, तो उसके नामसे ये तसव्वुर (ख़याल) बाँधा जाता है, ये शख़्स (व्यक्ति) मेरे सामने बैठा हुआ है । और फिर तवज्जह (प्राणाहुति) देना शुरु कर देते हैं और इस तरीके से सफ़ाई वगैरा, जैसे मैं बता चुका हूँ, करते रहते हैं । आपको भी ये सबिका (काम,संबंध) पड़ सकता है।

Correspondence में नंबर ज़रुर होना चाहिये । ख़ुतूत (खतों) की नक़ल रखने की ज़रुरत नहीं । बल्कि एक दो लाईन में ज़रुरी हवाला (संदर्भ) कैफ़ियत (टिप्पणी) के ख़ाने में लिख दिया जावे। इससे branch के बाक़ायदा (विधिवत्) functioning का लोगों को यक़ीन (विश्वास) होगा और इसमें, फी ख़त (प्रति ख़त में) एक मिनट से ज़ियादा न खर्च होगा। और एक मुहर रबड़ की बनवा लीजिये। Shri Ram Chandra Mission, Branch Gulbarga , (Hyderabad Deccan) लफ्जों (शब्दों) के spelling, जो की ख़ुतूत (पत्रों) के कागजात पर छपतें हैं, वही होना चाहिये।

कॅप्टन साहब की क्या शिकायत है । नई रोशनी के लोग तो मज़ाक उडाते ही हैं मगर उस वक्त मज़ाक करना भूल जातें हैं जब के परेशानी से निकलनेकी कोई सूरत (उपाय) नज़र नहीं आती । फिर ज़नाब क्या होता है ? बजाय ख़ुदा के, उसके बंदों के पास जबींफ़र्साई (माथा रगडना) किया करते हैं। सिनेमा, नाच तमाशे की मुमानियत (मनाही) ज़रुर है । मगर इतना allowance भी है कि मज़बूरन (लाचारी में) और किसीके ख़ातिरन् (लिए) जाना पडे तो आप इसी ख़याल (विचार) से जा सकते हैं । और जनाब (महोदय) आप जाकर तो देखिये, ओ मज़ा नहीं आ सकता इसलिये के बेरुनी (बाहरी) निगाह (दृष्टि) फिरकर अंदरुनी निगाह (अंत:र्मुखी) हुई है । आपको अपने ही तमाशे में लुत्फ़ (आनंद) काफ़ी रहेगा । जनाब (महोदय) सरवर अली खाँ साहब जो फिलासफी के लेक्चरर हैं, उन्होने खूब कहा है के परहेज के लिए एक मुद्दत (अवधि) मुक़र्रर (निश्चित) होना चाहिये । मगर उसको परहेज़ कहाँ कहा जा सकता है जब के उसके मुताबिक (अनुसार) बीमारी सामने नहीं है । हम उन चीजोंसे अपना इलाज नहीं करते, इसलिये इनको परहेज नहीं कह सकते बल्के रास्ते पर चलनेके लिये, असल (वास्तव) में अपनी निगाह (दृष्टि) बचाना है, ताके कहीं दायें बायें भटक न जावे और रास्ते को न देख सकें । ये मुख्तसर (संक्षिप्त) जवाब फिलासफर साहब को समझाने के लिये हैं ताके उनके दिमाग़से यह ख़याल (परहेज़) टपक (निकल) जावे । क्या फिलासफ़र के बारेमें आपने

नहीं सुना है ? इसमें एक मिसाल (उदाहरण) - दीवान चंदर, जो कानपुर में एक फिलासफी के प्रोफेसर थे, देता हूँ के ओ कालेज में लेक्चर देने के लिए घर से निकले और एक अंग्रेज के गोल कमरे में घुस गए और ये समझ कर के ये कालेज का क्लास है लेक्चर देना शुरु किया । जब मेमने उनकी आवाज़ सुनी, तब उसने इनसे कहा के ये कालेज नहीं है , मेरा बंगला है । ऐसी मिसालें (उदाहरण) उनकी बहुतसी हैं और ये निहायत क़ाबिल (बहुतही विद्वान) आदमियोंमे से थे । फ़िलासफ़र साहब से पूछिये के ऐसे शख़्स (व्यक्ति) को ओ फ़िलासफ़र कहेंगे या बेवकूफ़; अगर बेवकूफ़ कहते है तो ओ भी इसी जुम्रे: (दल, पार्टी) में आते है क्यूँकि ये शख़्स (व्यक्ति) उनसे कई गुना क़ाबिल (होशियार) था और अगर बेवकूफ़ नहीं कहते तो आपको ये मानना पडेगा के ओ ठीक आदमी था । और फ़लसफ़ा के तह (थाह) में ओ पहुँच चुका था । अब कैसे पहुँचा ? सबसे चित्तको हटाकर अपनी कुल energy फिलासफीमें लगा दी और यह ज़रुर हुआ होगा के ओ बिरादरीके बुलावे में न पहुँच सके हों और नाच तमाशोंकी तरफ उचकने (ललचाने) के भी तबीयत न चाही हो । याने उन चीजोंसे किनारा कशी (अलगाव) फ़िलासफी को हासिल करने के लिये हो ही गई । साबित (प्रमाणित) ये हुआ कि फिलासफी को हासिल (प्राप्त) करने के लिये भी लाज़िम (ज़रुरी) है के अपने ख़याल को उसकी तह में लगा दें, तब क़ामयाबी (यश) यक़ीनी (निश्चित) है । अब आगे मैं नहीं बढूँगा,बस रुहानी फलसफा के लिये ये बातें हट जाना भी लाज़िम (अनिवार्य) होगा । उनको अगर शुरु में लेना है, तब तो इस तरफ ख़याल में डूबने का अच्छा मौक़ा मिलता है और अगर न लिया तो लंगडाते लंगडाते जब वहाँ पहुँच जाते है तो नाच तमाशा वगैरा की तरफ घूमकर भी नहीं देखता । ये एक लुल्ले (हाथ कटा हुआ) की इबारत (लिखाई) है जिसके पास एक हाथ ही उसकी टटोलके (ढूंढनेके) लिये है । कहीं फिलासफर साहब ये न कह बैठे के असलियत को टटोलने के लिए जब एक हाथ की ज़रुरत है, तो उसके माने यह हुए के एक हाथ कटाकर असलियतकी टटोल करें । उनके लिये ये कहना काफ़ी होगा के एक हाथ अपने सर पर रखें और दूसरे से टटोल करें । सरपर रखने से मेरा मतलब ये है के brain पर grip लगाये रखें ताके ओ हाथ जो असलियत को टटोल रहा है, दिमाग़ भी उसी तरफ लगा रहे । ये इबारत (लेख) अगर मुनासिब (उचित) समझें तो अपने दोस्त फिलासफ़र साहब के पास भेज़ दीजिए और देखिए इसपर कितना comment कर सकते हैं । ये जवाब उन्हीके लिये मैंने लिखा है ताके ओ फ़िलासफ़ी में पहली A, B, C, D

का राज़ भी समझ जावें और बौछार की आवाज़ को पानी की यकसानियत (सदृश्य) न समझ बैठें । ये ख़त कशीदा लफ़्ज बहुत पूर्रमानी (यह शब्दालंकृत पत्र बहुत अर्थपूर्ण) है और फिलासफर साहब ही के सोचनेवाला है । ये ख़त मैंने दोस्ताना तौर से लिखा है ताके उनके एतराज (आपत्तीयाँ) सुलझ जावें ।

मालिक की कृपासे शादी बहुत अच्छी तरह निपट गई और सब लोग निहायत मुतमय्यन (बहुत संतुष्ट) रहे । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: नंबर इस तरह पढ़ना चाहिये जैसे 5-BG SRCM इसमें 5 ख़त का नंबर हुआ । BG का मतलब (अर्थ) Branch Gulbarga है और SRCM से Shri Ram Chandra Mission मुराद (आशय) है। पोस्टऑफिस को भी इत्तला (सूचना) दे दीजिए के श्री रामचंद्र मिशनके पतेसे ख़ुतूत (पत्र) आपके मकानपर, मकान के पते के मुताबिक (अनुसार) भेजे जावें। आप के नाम, जो गणेशन की चिठ्ठी यहाँ आई थी, भेज रहा हूँ ।

मुकर्रर (पुनश्च): ये है के राघवेंद्रराव पटवारी के जो सवालात मेरे पास आये थे उनका जवाब मैं अब दे सका, जो आपके पते से भेज रहा हूँ; इसलिये के जो पता उन्होने लिखा था ओ साफ़ पढ़नेमें नहीं आया। आप ख़त पढ़कर उन्हे भेज दें।

Sd/-Ram Chandra

बिरादरम् दुआ (प्रियभाई ,आशिर्वाद)।

हजरत क़िबला (गुरु महाराज) के नाम आपका ख़त जो हाल में मौसूल (प्राप्त) हुवा, पढ़कर खुशी हुई । मालिक इसी तरह रोज़-ब-रोज़ रफ़्तार तरक्की (प्रगती की गति) में इजाफ़ा (बढोत्री) करे । शादी के बाद, मैं अपने भतीजे की शादी में शिर्कत (शामिल होने) के लिए लखनौ चला गया था । वहाँ, बाद शादी, ख़ुद दर्द कमर में शिद्दत (तेज़) से मुब्तला (ग्रस्त) हो गया जिसकी वजहसे वापस जल्द न आ सका । अब सेहत (स्वस्थ) है । कुछ मामूली शिकायतें बाक़ी हैं। जो कि एक दिन में रफ़ा (दूर) हो जायेंगी । आपकी याद बदस्तूर (यथापूर्व) क़ायम है । बल्के आपकी मौजूदगी का

तसव्वुर (ध्यान) बराबर क़ायम रहता है । इसलिए आप मुबारक बादी के मुस्तहक़ (हक़दार) ज़रूर है। शुक़र है मालिक का । मैं 6 या 7 जुलाई को वापस लखीमपुर जाऊँगा, क्योंकी 9 जुलाई को स्कूल खुल जावेंगे । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
ईश्वर सहाय

****

ॐ तत् सत

Serial No. 28 शाहजहाँपुर
No. 291/SRCM Date 24.07.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी,
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला । हालाते मुंदरिजे जैल से आगाही हुई (निम्नलिखित हाल मालुम हुआ ।) । अज़ीज़म (प्रिय) श्री.लक्ष्मीनरसिंहम के फर्जंदे अर्जमंद के तौलीद (सुपुत्र पैदा) होने का हाल सुनकर ख़ुशी हुई । ईश्वर उसकी उम्रदराज़ (दीर्घायु) करे और दीनी और दुनियावी नेमत से सरफ़राज करे (और ऐहिक तथा पारलौकिक सम्पत्ति से सम्मानित करे।) और ईश्वर, आँ अज़ीज़ (आपको) को भी ये मौक़ा दिखलावे (अवसर प्रदान करे) ताकि मुझे फिर इस दुआ (आशिर्वाद को) लिखने का मौक़ा (अवसर) मिले और ईश्वर करे ऐसा ही हो । मैंने गणेशनजीका ख़त और अपने जवाबातकी नक़ल इसलिए और भेज दी थी के आप को तज़रुबा (अनुभव) हो इसलिए के आप को काम करना है । दूसरे यह के, ऐसे मौकों (समय) पर मुझे राय (सलाह) मिलती रहे ।

मैं अपने आपको बूढा तो नहीं कहता मगर इस लिहाज़ (तरह) से मुझे बूढा समझ लेना चाहिये के, हैज: याने Cholera के असर (प्रभाव) से जो बीमारी के दर्द शिक़म (पेट दर्द) वगैरा, हैज: से सेहत (स्वास्थ्य) पाने पर पैदा हुई, उन्होने मुझे जवानीमें ही बूढा कर दिया था । इसलिए लागर (कृश) व कमज़ोर (दुर्बल) ऐसा हो गया हूँ के नहीं मालूम दिमाग़ ठीक काम करता है या नहीं । इसलिए भाई, मुझे अपने अज़ीज़ों (प्रियजनों) से मदद लेना ही चाहिए और कुछ हालत भी ऐसी हो गई है के जाहिले मुल्लक़ (संपूर्ण अज्ञानी) मुझे समझना चाहिए।

आपने जो अपने बारे में लिखा है के " ब्राह्मण कुल में होने के ख़ातिर तरह तरह के एतिक़ाद (श्रध्दा) और पूजाओं में ईमान (निष्ठा) लाने में मज़बूर (विवश) हूँ । " मेरे यहाँ भी यही बात है और कसीर तादाद (अधिक संख्या में) मेरी बिरादरी (जात) में भी मिलेगी, बल्कि क़रीब क़रीब हर जगह यहाँ भी ऐसा ही है । रिवाजन् (प्रथानुसार) कुछ न कुछ करना ही पडता है । मगर दिल जब उसी तरफ झुकता है जिस तरफ उसको झुकना चाहिए, फिर यह चीज़ें सब बेक़ारसी मालूम होतीं है और दिल उसका impression (संस्कार) नहीं लेता।

गणेशन के बारें में जो आपने लिख़ा है, ओ ठीक ही है और मुझे उससे बहुत कुछ इत्तफ़ाक (सहमति) है । आपको जो मैंने confidential ख़ुतूत भेजे थे ओ बातें आपकी गोशगुज़ार हो गई (मालुम हुअी), अब उनको रखनेकी ज़रुरत भी नहीं। इसलिए के मुमकिन (संभव) है के उनको कोई और भी देखें, इसलिए उनको चाक कर दीजिए यानी फाड डालिए ।

गणेशन की बातें यूँ और भी बुरी मालूम हुई के तहज़ीब और अख़लाक (सभ्यता और शिष्टाचार) इस संस्था (mission) की हस्ब-इरशाद (आज्ञानुसार) गुरु महाराज, जान (प्राण) है । उनको, उसे ध्यान में रख़ना चाहिए था । बहरहाल (फिरभी) मैंने उनकी ख़िदमत (सेवा) कुछ न कुछ की थी, जिससे उनको इक़रार (स्वीकृति) भी है । इसका लिहाज़ (ख्याल) करते हुवे मुझ, नावाक़िफ (अनाडी) और तुच्छ को, कुछ allowance देना ही चाहिए था । सबसे ज़ियादा नागवार (अरुचिकर) यह हुवा, के गुरु महाराज के नाम पर challenge (चुनौति) दिया । इसी पर मुझे लिखना पड़ा, के कोई दूसरा रास्ता या आदमी अपनी तरक्की(उन्नत्ति) के लिए तलाश (ढूँढ) कर लेवें ।

भाई, मुझमें यह सक़त (शक्ति) कहाँ, के दमज़दनमे (क्षणभरमें) किसी को धुर (चरम सीमा) पर फेंक दूँ । यह तो गुरु महाराज ही की शक्ति है, जो उनके हुकूम से मौजजन (कार्यान्वित) हो सकती है । इसके आगे मैं कुछ लिखूँ तो मुमकिन (संभव) है के पढ़नेवालोंको और शुबह (संदेह) में डाल देवें । इसलिए जहाँ तक के ताक़त का सवाल है, मुझको ऐसा दिक़ (क्षयरोग) का मरीज़ समझें जो हाथपैर भी हिला नहीं सकता ।

जितना इन्सान आगे बढ़ता है, आनंद की शक्ल (रुप) इतनी हल्की होती जाती है के समझ में भी नहीं आती और इस हालत से मेरे गुरु महाराज के सामने लोगोंने धोखा खाया है । अगर कहीं गणेशन की यह हालत आ गई तो ओ फिर मुझे challenge (चुनौति) दे देवेंगे । ऐसा भी होता है के बेहुदा (बुरे) विचारों का aggravation (वृध्दि) भी होता है । और कभी बहुत ही ज़ियादा, इसलिए के जब तक यह चीज़ें system (अंतरप्रणाली) से साफ़ नहीं हो जावेंगे, नजात (मुक्ति) के क़रीब पहुँचना मुश्किल (कठीन) है। एक जगह गुरु महाराज ने बंदे (भक्त) की आख़री पहुँच की हालत का इशार: (संकेत) दिया है और मुझसे कहा है के, उसको गुफ्तगू (बातचीत) या तहरीर (लेख) में न मिलाना, क्यूँकि यह राज़े क़ुदरत (प्रकृति का रहस्य) है । अगर उस

हालत का इशारा (संकेत) कुछ दिया जावे तो मैं समझता हूँ के गणेशन ऐसे सतसंगी मेरी शकल (चेहरा) भी न देखेंगे ।

गणेशन को उसी ख़त में, जिसकी नक़ल आपके पास है, मैंने तो लिखा था के, "I cannot keep you happy when you cannot understand the very spirit of training. Sometimes the better conditions follow when the mind is being purged of the poisonous matter. As you have not given your case in my hand, so you will always complain if anything beyond your taste or expectation comes in."

इसके जवाब में, शुक्र (धन्यवाद) है ईश्वर का, के तसल्ली बख़्श (संतोषदायी) ख़त आया है जिसकी नक़ल मुंदरिजे जैल (निम्नलिखित) है।

"I am very sorry to note that I have misunderstood you recently and I pray with humble supplication at thy feet to forgive myself, thine own unworthy, unruly son. I hope you surely do that, now that the veil of darkness has been torn off from my heart yesterday evening whenceforth I am experiencing a finer state by thy grace. If you had intimated me of the result of purging the mind of poisonous sanskars already, I would have been quiet as previously. I found no such thing in our books Reality & Efficacy and hence this misconception. I warmly welcome you here with open arms to stay with me for at least a month & shower thy blessings on me. You need not take me to be a ruffian. I bear no ill will, malice or jealousy towards anybody & I am a meek & humble being who has surrenderred myself at thy feet unquestioningly. Under the above circumstances it is for you to take me or reject me. Even if you kick me off, I have decided to stick to you firmly because you are my beloved father. The question of my making entirely lies with you according to your wish, and I have

nothing to dictate, command or order. I am here to obey you in humble way. If you goad me in my abhyas, I won't mistake you to be angry, since it is for my wellbeing. You have really dealt a very heavy blow at heart by asking me to quit. Does it behove you now, since I have clarified my case."

उनके इस ख़त आने के पहले ही मै इत्तिफ़ाक (संयोग) से उसका ज़वाब दे चुका था । उसके जवाब के इन्तज़ार (प्रतिक्षा) के बाद मैं उनको ख़त फिर लिखूँगा, कि मैंने उनको माफ़ कर दिया । और आप दुआ (प्रार्थना) कीजिए के ओ मुझसे ख़िदमत (सेवा) लेते रहें । भाई, मुझे उनसे मुहब्बत बहुत थी इसलिए मुझे ज़ियादा नागवार गुज़रा (बुरा लगा) । आपको मैं अपना दिल समझता हूँ और उनको अपना जिगर (यकृत) समझने की कोशिश करने लगा था । ओ बेचारे इश्क (प्रेम) की मंजिल (गंतव्य) का मज़ा अभी चख न पाये और सच्चे मानो में भी pangs of realization पैदा करने के बजाय enthusiasm से काम लिया ।

भाई, सच कहता हूँ के अपने अभ्यास के ज़माने में इतना जला हूँ के सीने (छाती) में दाग पड गये । मगर ओ बाग़ और गुलज़ार (फूल) बन गये । मैंने रुहानियत (आध्यात्मिकता) का मैदान (क्षेत्र) शांती को बेचकर पार किया है, यानी उसको हासिल (प्राप्त) करने के लिए शांती की भेंट दी है और जाने कितने बरजख़ (दरमियानी मुक़ाम) पडे हैं, जहाँ पर रुकरुक कर चलना पडा है । बरजखोंके (बीच वाले पडाव) बारे में मैंने एक ख़त बाबू ईश्वर सहाय को भी लिखा है जो आपके देखने के क़ाबिल (योग्य) है । मज़मून (लेख) मुझे ज़ियादा याद नहीं और भाई जब किसी इन्सान को तजरुबा (अनुभव) हो जावे के फलाँ साहब (इन महाशय) से असल रुहानी फ़ायदा (सच्चा आध्यात्मिक लाभ) मिलता है, तो फिर अपने आप को उस पर छोड ही देना चाहिए । अपने यहाँ जबके एक ही ज़िंदगी में नज़ात (मुक्ति) हासिल (प्राप्त) करना है तो संस्कारों को कुछ झुलसाकर (जलभूनकर) और कुछ भोगकर उससे सुबुकदोशी (मुक्ति) ही हासिल (पाना) करना चाहिए । गणेशन पर एक तांता (संस्कारोंका सिलसिला) उतर आया था जिसका एहसास तो मुझको था मगर कुछ causes (कारण) उसके अलावा भी मेरे अंदाज (नज़र) में थे जिसको मैं उनसे पूछना चाहता था ताकि उनका भी तजरुबा (अनुभव) बढ़े और मुझे भी वाक़फ़ियत (मालुम) होवें । मज़बूरन (विवशता से) गुरु महाराज से प्रार्थना करके ज़ल्द साफ़ करना

पडा, सिर्फ़ उनके ख़ौफ (भय) की वजह से, वरना थोडे दिनों और उनकी बेहत्तरी के लिए रखना चाहता था । ख़ैर, आप दुआ (प्रार्थना) कीजिए के गणेशन में अब आईंदा (आगे) ऐसी बात पैदा न होने पावे । आमीन (तथास्तु) |

मुझको system (अंतर प्रणाली) के साफ़ करने में महिनों लग जाते हैं और यही वजह (कारण) है के Mr. Shrinivasan को ज़ियादा एहसास (अनुभव) नहीं हो सका । इन्सान को इन्सान बनाने के लिए यह लाज़िमी (अनिवार्य) है और मेरी निगाह (दृष्टी) जब जाती है तो उसी पर जाती है । और यही हमारे लालाजी साहब का हुक्म (आदेश) भी है । गणेशन, कुदरती (स्वाभाविकत:) बहुत साफ़ थे इसलिए उनको जल्द फ़ायदे (लाभ) का एहसास (अनुभव) हुवा ।

भाई, सब बातें तो Special Personality (विशिष्ट विभूति) के हाथ में मेरी समझसे न होगी के हर ख़ास व आम (सामान्य) को ओ राहे-रास्त (धर्म के मार्ग) पर ला सके । श्री कृष्णजी महाराज भी दुर्योधन की अक़ल दुरुस्त (दिमाग़ ठीक) न कर सके और ऐसे दुर्योधन जैसे बहुत लोग थे । आख़िर को महाभारत कराना पडा । हो सकता है के यह कुश्तोखून (रक्तपात) फिर इस क़दर होवे कि दुनीया का एक कसीर (बडा) हिस्सा आबादी से खाली हो जावे । श्रीकृष्णजी महाराज से वही ज़ियादा फ़ायदा उठा सके जो उनके भगत थे । फिर, गणेशन का यह कहना सही नहीं हो सकता के Special Personality (विशिष्ट विभूति) ख़ुद (स्वत:) उस तरफ लोगों को मोड देगी (उन्मुख करेगी) | आपका suggestion (सुझाव) निहायत (बिल्कुल) sound (सही) है के हमको self - purification (आत्मशुध्दि) में लगना चाहिए ताकि हम उससे फ़ायदा उठा सकें ।

आप sitting के वक्त, बजाय अपने, मुझको बैठे हुवे देखते है, यह निहायत (अत्यंत) अच्छी हालत है और दूसरे के बजाय मुझे बैठा हुआ देखना यह भी उतनी अच्छी, बल्कि ज़ियादा; इससे आपकी हिम्मत दोबाला (दुगुनी) होनी चाहिए के काम आपके ज़रिये वही एक ताक़त कर रही है और आप सिर्फ औजार (Instrument) हैं ।

भाई सरनाड और भाई लक्ष्मीनरसिंहम् ख़ूब (अच्छे) हैं और यह सब आपके सतसंग के ही बदौलत (कारण) है । मगर भाई लक्ष्मीनरसिंहम् को सफ़ाई की ज़रुरत है । आप कहते हैं के इन सब लोगों को देख कर मुझे jealousy (मत्सर) आ जाती है । उसको jealousy (मत्सर) नहीं कह सकते । यह तो बडी ख़राब चीज़ है । उसको रश्क (स्पृहा) कहते हैं, के जिसके माने यह है के दूसरों को

देखकर अपने आप कोशिश करना ताकि आप भी वैसे अच्छे बन जावे और यह तरक्की (उन्नति) की निशानी है । उनको अपने से अच्छा महसूस करना, यह इस चीज़ की दलील (प्रमाण) है। कमाल-ए-इन्सानी शराफ़त की (मानवी सज्जनताकी पूर्णता) है । श्री.के. के. जो हैदराबाद के सत्संगी हैं अगर आप उनको यह ख्याल (संकल्प) करके तवज्ज़ह (प्राणाहुति) देवें कि "Lust धुवें के शकल (रुप) में पीठ के तरफ निकल रही है और उनमें इस बात की कमी होती जाती है" तो ज़रुर कमी होगी । अपने इतमिनान (संतोष) के लिए 15 यूम (दिन) बाद हाल दरियाफ़्त (मालूम) कर लीजिएगा।

भाई, मेरी तहरीर (लेखन) में मेरा दिल पिनहा (छुपा) रहता है । इसलिए उससे लोग मुअस्सिर (प्रभावित) होते हैं और यह सब ईश्वर की मेहरबानी है और उसका करम (कृपा)।

मुझे दोनों मुहरें पसंद आयी और डॉ. कुलकर्णी साहब का शुक्रिया (धन्यवाद) । उन्हें जो दिलचस्पी (रुची) मिशनसे हो रही है, ईश्वर उनको उसका अज़र (इनाम) देवें।

आपकी राय मेंबर बनाने के बारे में बिलकुल दुरुस्त (सही) है और मैं भी यही चाहता हूँ । इसलिए बहुतसे फॉर्म यहाँ भी अभी तक नहीं भरवाये । वाक़ई (सचमुच) मुक़म्मिल ईमान (पूर्ण निष्ठा) जब हो जावे, तब ही भरवाना चाहिए ।

अज़ीज़म् (प्रिय), आप मेरी खुशी पूरी होने दीजिए और मेरे काम में हाथ बटाईये इसलिए के कमज़ोर और लागर (क्षीण) हो रहा हूँ । Preceptor (प्रशिक्षक) आप ही रहेंगे । जब कभी कोई अपनी हालत उस हद तक ले आवेगा और आपके पास इतना काम हुआ के आप को मदद की ज़रुरत है उस वक्त देखा जावेगा । वैसे कायदा (नियम) तो यह है के, रोशनी अज़खुद (स्वत:) बिला इरादे (बिना संकल्प किये) बहने लगे और नादानिस्ता (अनजाने) लोगोंको फ़ायदा पहुँचने लगे, तब मुअल्लिमी (प्रशिक्षक) के ओ क़ाबिल (योग्य) है ।

वहाँ का काम आपही के सुपुर्द है । और मेरी मेहनत आपने बहुत बचा दी । ईश्वर आपको दिन दूनी और रात चौगुनी तरक्की देवें । और लोगोंको ख़ूब फ़ायदा पहुँचे और ईश्वर करे ऐसा ही हो । आमीन (तथास्तु) । इसलिये ड़ायरी आप ख़ुद मुलाहज़ा (देख) कर लिया करें और उनके हसबे हाल रुजू हो जाया करें (हाल के अनुसार ध्यान दीजिए) । जो तज़रुबा (अनुभव) बतला देगा, और कोई ख़ास बात जो आप समझना चाहें, या मुझको बतलाना लाज़िमी (ज़रुरी) समझें, या किसी खास मदद की ज़रुरत हो तो मुझे उतना हिस्सा लिख दिया करें । बाक़ी

जो हालत के मदारिज (स्तर) डायरी है, ख़ूब (अच्छे) है । ईश्वर आप सब पर अपना रहम व करम (कृपा व दया) शामिल हाल (बनाए) रखें । बहू और बच्चोंको दुआ (आशिर्वाद) । सब भाईयोंको आशीर्वाद।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: लिखने के बाद, एक ख़त उस ख़तके जवाब में, जो मैंने आख़िरमें लिखा था, गणेशन का आया । उसमें लिखा था के स्वामी विवेकानंद जी ने अपने गुरु महाराज को ईश्वर दिखलाने की ही challange (चुनौति) दिया था, जो ग़लत है और यह किसी ने उनको बतलाया था । इस वज़हसे उसने challange (चुनौति) दिया था जो उनका लड़कपन था । उसने बहुत माफ़ी माँगी है । अब मेरे दिलमें कोई बात नहीं है । उन्होने यह भी लिखा है के मैंने सख़्त तहरीर (लिखा) आपके निसबत (बारेमें), राघवेंद्रराव को भी लिखी है, जो आप अपने पास मँगवा लें या उनको लिखो के उन खतों को जला देवें।

एक मिशन के devotee ने मुझे एक ख़त भेजा है उसकी नक़ल आप के पास भेज रहा हूँ । भाई, क्या मुहब्बत है, उसको और लोग भी देख सकते है । अंग्रेज़ी पर ख़ियाल न कीजियेगा बल्के नफ्स मतलब (मुख्य आशय) पर आईयेगा।

सुबह का भूला शामको आ जाये तो ओ भूला नहीं कहा जाता।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 29 शाहजहाँपुर
No. A-306/SRCM Date 29.07.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त नंबर BG -11-SRCM मौसूल (प्राप्त) हुआ। मेरा ख़त A -291 -SRCM of 24-7-56 पहुँच गया होगा और उसमें श्री.लक्ष्मीनरसिंहम के लिये ख़त था, इस इत्तला (सूचना) के साथ के, उनका नाम रजिस्टर में मेंबर की हैसियत (रुपमें) से दर्ज़ (लिखा) हो गया है। गणेशन् के लिए मैंने जबाब बतौरे मस्वदा (मसौदे के रुप में)

draft लिख दिया है, उसको आप पढ़ लेवें। और ज़रुरी तरमीम व तनसीख (काँटछाँट, संशोधन) जो मुनासिब (योग्य) होवे कर लेवें। अगर ये मस्वदा (मसौदा) मुनासिब न ख़याल फरमावें (योग्य न लगा), तो अपना एक जवाब लिख़ देवें । मैंने, आपकी साधना के बारेमें जो उन्होनें पूछा है, उसका भी जवाब दे दिया है। और ये जुमला (वाक्य) सही भी है और जवाब के लिये काफ़ी (पर्याप्त) । अगर मेरे ही बनाये हुवे draft (मसौदा) की नक़ल भेजना मुनासिब (ठीक) होवे तो अंग्रेजी और इबारत (वाक्य रचना) सही कर लीजयेगा इसलिए के अंग्रेजी में मेरी लियाकत (योग्यता) बहुत कम है और थोडा लिखा पढ़ा हूँ ।

गणेशन को मैंने एक ख़त लिखा था । आखिर में बड़े submissive way (विनम्रता) में और मुहब्बत के साथ लिखा था। उसका असर अच्छा पड़ा और मुमकिन (संभावना) है के आइंदा (आगे) ऐसी चीज़ें उनसे सरज़द (घटित) न होवें। मैंने उनको ये लिख़ दिया था के जैसे तुम बेरुनी (बाहरी) बातोंमे मसरूफ (निमग्न) रहते हो, ऐसे ही अंदर रहना चाहिये। इस वज़ह से disappointing जुमला (वाक्य) उनके सामने आया है । ईश्वर ने चाहा, ओ जल्द ठीक आ जावेंगे, अगर वाक़ई मुहब्बत (सच्चा प्रेम) उनके दिल में मौजूद (उपस्थित) होगी । मेरे मुहब्बताना ख़ुतूत भी उनको रास्तेपर ले आवेंगे ।

बहू के सामने जो Visions आ रहे हैं ओ इन मानों में अच्छे है के पिछले ख़यालात जो अंदर मौजूद हैं, ओ निकल रहे है। Transmission (प्राणाहुति) जितना हल्का दिया जाता है उतनी ही potency (सामर्थ्य) उसकी ज़ियादा होती है और पुराने संस्कार और ख़ियालात को aggravate (वृध्दि) कर देता है । अगर ऐसा, बहु को ग़ाइबाना (परोक्ष) हलकी तवज्जह (प्राणाहुति) ये ख़याल (संकल्प) करके देवें कि उनकी energy (शक्ति, उर्जा) बढ रही है, तो उसको फ़ायदा होगा।

ध्यान के वक्त, सांस ख़ुद रोकने की ज़रुरत नहीं । अगर अपने आप रुक जाती है तो अच्छा है । जब परवाज़ग़ी (उड़ान) बहुत ऊँची हो जाती है, तो अक्सर (प्राय:) घंटो सांस नहीं आती और जब thoughtlessness (विचारशून्यता) पैदा होगी तो सांस धीमी पडने लगती है।

डॉ. वरदाचारी का Occult P. (विशिष्ट विभूति) का मज़मून (लेख) आवे तो एहतियात (सावधानी) से रखिएगा । मैंने जो हिंदी किताब लिखी है उस में बचती हुवी हालत में, इसपर काफ़ी रोशनी (प्रकाश) डाली है । वक्त रहेगा तो छप जायेगी । भुवनेश के बारेमें ये

आपने क्या लिखा है के प्रेमचंद के बारेंमें कुछ लिखें। उसको आइंदा ख़त में लिख दीजियेगा ताकि मतलब समझमें आ जावे | प्रेमचंद के क़िस्से मशहूर हैं । मुझे श्री. लक्ष्मीनरसिंहम की याद पहले ही बहुत आती थी । अब सरनाडजीकी भी याद आने लगी और कभी कभी Dr. Kulkarni की याद भी रेंग आती है। बहू व बच्चों दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): अर्ज़ (निवेदन) ये है के मैंने एक मराक़बा (ध्यान) हालही में सतसंग में रायज़ (शुरु) किया है, जो सफ़ाई के लिए बहुत मौजूँ (उचित) साबित (सिध्द) हुआ है । उसको आप भी करें और जुमला (सभी) सतसंगियोंको बतला देवें । ये दस (10) पंधरा (15) मिनिट तक सुबह दिलपर ध्यान करने के पहले करना चाहिये । इस मराक़बा (ध्यान) के बाद हसबे मामूल (सामान्य तौरपर) दिल पर ध्यान करना शुरु कर देवें।

मुराक़बा (ध्यान): ये ख़याल कीजिए के आप आनंद के समंदर में डुबे हुवे हैं और समंदर की लहरें सामने से आती हैं और पीछे से निकल रही हैं और वैसे साथ ज़िस्म की darkness-grossness व भारीपन वगैरा सब अपने साथ लेते हुवे पीठ के तरफ़ से निकल रहे हैं । उस वक्त ये ख़याल रखना चाहिए के ज़िस्म transparent (पारदर्शक) हैं इसलिए वहाँ धारें नफीज (साफ़) करते हुवे आरपार जा रही हैं ।

नोट: अगर ज़िस्म (शरीर) के बीमारियों के लिये ये तसव्वुर (ध्यान) बाँध कर किया जावे के इन लहरों के साथ जुमला (सारी) बीमारियाँ या फलाँ (यह) बीमारी निकलती जा रही है; तो बीमारी कैसी भी हो दूर हो सकती है । मगर ये चीज़ आप के इल्म (जानने) के लिए बता दी है । अगर बहू इस अमल (अभ्यास) को कुछ देर के लिए कर लिया करें तो बीमारियों में फ़ायदा हो जायेगा । उसके लिये मै इजाज़त (अनुमति) देता हूँ ।

आप इस ख़त के पहुँचने के बाद ये तहरीर (लिखें) ज़रुर करें के आपका द्रिमाग (समझ) कुछ खुला हुवा है ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 30 शाहजहाँपुर
No. 350/SRCM Date 28.08.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी,
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

दो मसर्रतनामे (हर्षपूर्ण पत्र) 4 ऑगस्ट 56 व 22-8-56 के मिले और डॉ. वरदाचारी का भी ख़त मिला जो पढकर वापिस कर रहा हूँ । मैं आपके ख़तोंका जवाब वालिदा (माताजी) साहब की बीमारी की वजहसे न दे सका। दिल का दौरा बफ़्ज़लहू (ईश्वर कृपासे) अब नहीं है। मगर दमा ज़रुर तंग कर रहा है । नक़ाहत (दुर्बलता) इस क़दर (इतनी) ज़ियादा के, उठने बैठने से माज़ूर (असमर्थ) । ईश्वर उनकी हालत क़ाबिल इतमिनान (संतोषप्रद) कर दे, ताके मैं जुनूबी हिंद (दक्षीणी भारत) का दौरा कर सकूँ, वरना मुश्किल (कठिन) मालूम होता है । मैंने जो पिछली नक़ल डॉक्टर साहब मौसूफकी (प्रशंसित) भेजी थी, उसका मनशा (आशय) यह था के फिलासफी जो सहजमार्ग के तह (नींव) में हैं, कुछ थोड़ीसी लिखी हुई थी, जिसको वे जानना चाहते थे । आप भी अपने ज़हन (समझ) में उतार लें इसलिये के बहैसियत trainer (प्रशिक्षक के नाते) के मुमकिन (संभव) है, कहींपर आप को उसकी ज़रुरत पड़ जावे।

ख़्वाहिश (इच्छा) उसको कहते हैं, जिसका न पूरा होने से दिलके मलाल (रंज) हो, और पूरा होने से ख़ुशी, और इसका हज़ (स्वाद) लेने वाले आप ही हो और ख़ुद ही कर्ता हो।

फ़र्ज़ (कर्तव्य) हुकुम की पाबंदी (आज्ञापालन) है और मतलब (उद्देश्य) से गरज़ (प्रयोजन) नहीं। मुहम्मद गजनवी का एक गुलाम अयाज़ था, वह इससे बहुत मुहब्बत करता था और दीगर (अन्य) दरबारी, बादशाह की इन बातों को पसंद न करते थे । किसीने सवाल किया के आप अयाज़ से इतनी मुहब्बत करते हैं । कुछ वक्त के बाद एक क़ीमती झाड जो ओ हिंदुस्तानसे ले गया था और छतसे टाँगा हुआ था उसको ज़मीनपर दे मारने के लिये हर दरबारी से कहा । सबने कहा के इस क़दर (इतनी) क़ीमती चीज़ टूट जावेगी जो किसी तरह मुनासिब (योग्य) नहीं और किसीने उसको न तोडा । फिर अयाज़ को बुलाया और उसको यही हुक़म दिया । अयाज़ ने फ़ौरन (तुरन्त) तामील (आज्ञापालन) की और उसे पाश पाश (टुकडे टुकडे) करा दिया, फिर

बादशाहने दरबारीयोंसे कहा के यही वजह यह है के: मैं अयाज़ से मुहब्बत करता हूँ । मेरा हुक्म उसने अपना फ़र्ज (कर्तव्य) समझा और नफ़ा नुक़सान से ताल्लुक (संबंध) न रखा । इसलिये फ़र्ज़ (कर्तव्य) को ख़्वाहिश (इच्छा) नहीं कह सकते।

श्री. सरवर अली खाँ ने जो मेरे ख़त का जवाब दिया है मैं उसको पढ़कर खुश हुआ और इसमें चंद (कुछ) बातें अच्छी भी है । मेरा सलाम (प्रणाम) उनको लिख दीजिएगा, जब आप उनको ख़त लिखें। एक बात उन्होने बड़ी उम्दा (उत्तम) लिखी है, जिसके लिये मैं चंद सत्रें (कुछ वाक्य) आपको लिख रहा हूँ । ओ लिखें हैं के, हक़ीकत (वास्तविकता) को अक़ल (बुध्दि या तर्क) यानी reason के तवस्सुल (माध्यम) से रसाई (पहुँच) नामुमकिन (असंभव) है । ओ तो एक वज्दानी चीज़ (समाधिजन्य विषय) है । यह सही है और सूफ़ी ज़ियादा तर वज्दानी कैफ़ियत (समाधिजन्य स्थिति) को ही असल कैफ़ियत (सच्ची हालत) समझते हैं । मगर अपने यहाँ के मुहक्किक (अन्वेषक) इससे आगे गये हैं । वज्दान (समाधिजन्य आनंद) का ताल्लुक (संबंध) फिर भी matter (भौतिकता) से है और इसमें अपनापन छुपा हुआ है । इससे परे जो हालत है, उसको वाक़ई हालत (सच्ची अवस्था) कह सकते है । वहाँ तक अक़ल (बुध्दि) की रसाई (पहुँच) नामुमकिन (असंभव) है और उसकी तशरीह (व्याख्या) मुख़्तसरन (संक्षेपमें) आपके दोस्त ने ख़ुद की है और ठीक की है । मगर भाई जब individual mind (व्यक्तिगत मन) में से individuality (वैयक्तिकता) जाती रहती है तो फिर सिर्फ़ Mind (मन) रह जाता है, जो एक ही है और उसको Godly mind (ईश्वरीय मन) कह सकते है । बस वही अपनी असल की हालत (मूल अवस्था का) एहसास (अनुभव) कराता है । अक़ल (बुध्दि) का वास्ता (संबंध) वहाँ तक है जहाँ तक के आप अहमियत के साथ दूसरी चीज़ पर निगाह करते (देखते) हैं । बहुत मुख़्तसरन (संक्षेपमें) आपके जानने के लिये लिख दिया है ।

श्री.दत्तात्रेयरावजी, बड़ा अच्छा है, के लगे हुवे हैं । श्री.लक्ष्मीनरसिंहम भी, ईश्वर ने चाहा, फिर वैसे ही अपने आपको लगाना शुरु कर देंगे | आमीन (तथास्तु) । Confidential खुतूत फ़ाडनेका आपका जी नहीं चाहा यह बुतपरस्ती (मूर्ती पूजा) नहीं है बल्के मुहब्बत और ख़याल । बाबू ईश्वर सहाय की राय से के B.G. आप नंबर खुतूत में पहले न लगायें, इससे मुझे क़तई इत्तेफाक़ (बिल्कुल सहमत) है । आज जनम् अष्टमी का बरत आप लोगों ने भी रखा होगा । मेरा ख़याल है के बहुत सुकून (समाधान) और शांती रही होगी । बहू

की तबीयत अब बफज़लहू (ईश्वरकृपासे) अच्छी होगी । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 31 शाहजहाँपुर
No. 376/SRCM Date 18.09.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी,
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आपका मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) 7 सप्टेंबर 56 का मौसूल (प्राप्त) हुवा । सरनाडज़ीके दो ख़त आए । जब पहला ख़त आया तो मैंने यह सोचकर जवाब नहीं दिया के आपका ख़त आनेपर उनका भी जवाब आपही के लिफ़ाफ़े में रख दूँगा ताके postage में किफायत (मितव्यय) रहे। अब उनके ख़त का भी जवाब आपके ही लिफ़ाफ़े में रख दिया है । पढ़कर उन्हे दीजियेगा।

Point B का मुराक़बा (ध्यान) आप ख्वाह (चाहे) इन दोनों मुराक़बों (ध्यान) से पहले कर लें । ख्वाँ (चाहे) शांती के समंदर में डुबाव के मुराक़ब: (ध्यान) के बाद, क़रीब क़रीब पाँच मिनिट कर लें और फिर उसके बाद दिलका मुराकबा (ध्यान) शुरू कर दें। मैंने इस मुरक़ब: (ध्यान) को लाज़िमी (अनिवार्य) कर दिया है और भाईयोंको इत्तला (सूचना) भी दे दी हैं। इसकी तारीफ़ हर जगह से आ रही है । यह सब मालिक की तरफ से है कि उसने हम लोगों के फायदे के लिए, मेरे ख़याल में, ये मुराक़ब: (ध्यान) उतार दिया । उसका हज़ार शुक्रिया (धन्यवाद) ।

शुक्र (धन्यवाद) है मालिक का के आपके वालिदमाज़िद (पिताजी) रूहानियतके दिलदाद: (प्रेमी) न सही, पसंद तो करते है । जब वक्त आयेगा और मालिक की मर्ज़ी होगी तो ओ भी शुरू कर देंगे; चूँके आपके वालिद (पिता) हैं और पितृऋण लडके को अदा ही करना चाहिए और वह यह के रूहानी फ़ायदा पहुँचावे । चूँकि ईश्वरने आपको इस क़ाबिल (योग्य) किया है तो आप कभी कभी उनके system की

सफ़ाई करके ग़ाइबाना (अनुपस्थिति में) तवज्जह (प्राणाहुति) दे दिया करें । श्री. के. दत्तात्रीराव को आपने जो कुछ भी जवाब दिया है ओ ठीक है और ओ भी वाक़ई (सचमुच) रूहानियत (आध्यात्मिकता) के अहल (पात्र) मालूम होते हैं । ईश्वर उनको तरक्क़ी (उन्नती) दे। मुझे बड़ी खुशी हुई के South India के लोगों से मुझे बहुत मदद मिल रही है और सरनाडजी का भी बहुत शुक्रगुज़ार (आभारी, उपकृत) हूँ के उन्होने गुरु संदेश का अंग्रेजी तरजुमा (अनुवाद) करना शुरू कर दिया है । आपने जो उसूलोंका तरजुमा (नियमोंका अनुवाद) कर दिया है, मास्टर ईश्वर सहाय ने उसको देखना शुरू कर दिया । मगर उन्होने गव्हर्नमेंट स्कीम के मुताबिक रुपये उससे लेकर मकान बनवाना शुरू कर दिया है इसलिए आजकल अदीमुल फुर्सत (व्यस्त) है । डॉ. कुलकर्णी साहब आपके तरीक़े (पध्दति) को अब अच्छा समझने लगे हैं और इसलिए ईश्वरने चाहा तो उनको एतिक़ाद (विश्वास) और अक़ीद (श्रध्दा) भी हो जायेगा । रामकिशनरावजी एक अच्छा और बामुहब्बत (प्रेमी) लडका है। जब आप ख़त भेजें तो मेरी दुआ (आशिर्वाद) लिख़ देना ।

सरनाडजी बहुत अच्छे आदमी हैं और जिज्ञासू भी हैं और ओ बिला (बिना) फ़ायदा उठाये हुए नहीं रह सकते और फ़ायदा है भी, जिसको उम्मीद (आशा) है, के जल्द एहसास (अनुभव) करने लगें। मैं तो यही चाहता हूँ के मेरे सब सतसंगी मुझ से भी ज़ियादा तरक्क़ी (उन्नति) करें। मगर यह सब उनकी मुहब्बत, मेहनत और ईश्वरी कृपा पर निर्भर है। मुहब्बत और मेहनत जब होती है तो फिर कडी मिलही जाती है और हमारी झंकार मालिक तक पहुँच ही जाती है।

ईश्वर का शुक्र (धन्यवाद) है के मेरी वालिदा (माताजी) अब पहले से अच्छी हैं । उनको दिल का दौरा ख़तम होने के बाद दमा तेज़ हो गया और फिर पेचिश (मरोड के साथ दस्त) के 60-70 के तादाद (संख्या) में आते रहे, और चारपाईसे मिल गईं। दस्त (पतला शौच) अब नहीं है । दमा में भी कमी है । मगर कुछ न कुछ तो हमेशा रहता है । खुशी हुई की बहु की सेहत (स्वास्थ्य) अब ठीक है। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

मुझे आप के दोस्त मुंशी गुलाम सरवरखाँ साहब की याद आ जाती है। उनको सलाम (प्रणाम) कह दीजिएगा ।

ज़ियादा दुआ (अनेक आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह के सहज मार्ग पत्रिका आसाम से कलकत्ता छपने के लिए भेज दी गयी है। 15 रोज़ में आ जाएगी । आप के पास आसाम से एक दरजन (12) के क़रीब कापियाँ पहुँचेगी । बाक़ी जितनी ज़रुरत हो मुझसे तलब (माँग) कर लीजियेगा । मैं चाहता हूँ के इसके ग्राहक वहाँ भी बन जाये ताकि मिशन के ख़यालात (विचार) उन तक पहुँच सके | एक अर्ज़ (निवेदन) यह है के आप भी अंग्रेजी या हिंदी में, जिसमे के आसानी हो, मज़मून (लेख) भेजते रहीये और आप के दोस्त भी भेज सकते है, ताके मज़मून (लेखों) की कमी की वजह से रिसाला (पत्रिका) न रुक जाए । अंग्रेजी के लिए अभी सिर्फ 15 सफ़े (पन्ने) रखे गये है । बाक़ी 30-40 हिंदी के लिए ।

Sd/-रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 32 शाहजहाँपुर
No. A-401/SRCM Date 30.09.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त नंबर BG -SRCM -32 मो. (दिनांक) 15 सितंबर 56 मिला, पढ़कर ख़ुशी हुई । मैं सरनाडजी का बड़ा शुक्रगुज़ार (आभारी) हूँ के गुरुसंदेश का तरजुमा (अनुवाद) अंग्रेजी में उन्होनें कर दिया । आप लोगों से वाक़ई (सचमुच) यह बडी मदद मिल रही है । गणेशन को ज़रुर भेजना और मुझे तो टाइप्ड कापी भेज ही देंगें । आपका ख़याल सही है के गणेशन में मुहब्बत बढ़ रही है । मगर भाई, इस रदीफ़ (बारेमें) में अभी उनको आपसे बहुत सीखना है । मैं यह सुनकर बहुत ख़ुश हुवा के आपने लिखा के मज़ूमन (लेख) के कमी से रिसाला (पत्रिका) बंद नहीं होगा । मुझे आप सबसे यही उम्मीद (आशा) है । भाई आपने ख़त में लिखा है के जी चाहता है के बाबूजी बाबूजी कह कर पुकारता रहूँ, तो जी मेरा भी यही चाहता है के मैं राघवेंदर राघवेंदर कह कर पुकारता रहूँ। शेर

इश्के अव्वल दरदिल माशूक पैदा मी शुहूद
ताना-ए-सूजे शमा किए परवाना शैदा मी शुहूद।
(प्रेमी के उपस्थिति से पहले प्रेमिका के दिल में प्रेम पैदा होता है
पतंगा आने से पहिले शमा जल उठती है |)

आपने यह क्या लिखा है के मैं बेअक्ल (बुध्दिहीन) हो गया; जब के सबसे ज़ियादा अकलमंदी (बुध्दिमानी) का आप काम कर रहे हैं। दीवाना होना लिखा है तो अगर आप के हाल के मुताबिक (अनुसार) मैं इसका जवाब दूँ तो यह है , "दीवाने गर नहीं है तो होशियार भी नहीं " और अगर अपनी पुरानी आदत के मुताबिक़ मज़ाक़ के लहजे में जवाब दूँ तो यह होगा मिसरा (वाक्य) के `दीवाना बकारे खेश होशियार (पागल अपने काम में होशियार)।' भाई मिशन का काम तो वही अच्छा चला सकेंगे जो दीवाना होते हुवे होशियार रहे और मेरी रुदारी यही (प्रतिष्ठा इसीमें) है के आप मिशनका काम

वाक़ई (सही) तौर पर चला सक़े और उसको फैला सके, जिसकी के उम्मीद (आशा) हैं ।

आपने जो कुछ भी इशार: (संकेत) बरनाडशाँ को लेते हुवे समझाया है, बड़ा अच्छा है । और बाबू सूरज प्रसादजी, जो initiated सतसंगी है और फ़िलासफी के हेड ऑफ दी डिपार्टमेंट Y.D. College के हैं, उन्होंने बहुत पसंद किया और ओ इस वक्त यहाँ मौजूद (उपस्थित) भी है । भाई, रोने धोने का मैं क्या जवाब दूँ ? इसका जवाब तो, आपके लिखनेसे पेश्तर (पहले), कबीर साहब ख़ुद दे चुकें हैं ,

"हँसी खेल नही पाइयाँ जिन पाया तिन रोय,
हँसी खेल में पियू मिले तो कौन दुहागीन होय।"

श्री. लक्ष्मीनरसिंहम की माँ का हाल लिखना और उनके बच्चोंकी ख़ैरियत (कुशल) का भी हाल लिखना। डॉ. वरदाचारीने एक ख़त भेजा । उसमें उन्होने आपका हवाला (संदर्भ) दिया है और एक para (अनुच्छेद) का explanation (विवरण) उन्होने मुझसे पुछा है । मैंने लिख तो दिया ही है मगर भाई, उनको ऐसा लिखना गोया (जैसे) सूरज को चिराग़ दिखाना है । नये ध्यान के बारे में, जो आप कर रहे हैं, उन्होने लिखा है । मैं उनके ख़त की नक़ल और उसके जवाब की भी नक़ल आपके मुलाहज़: (देखने) के लिए भेज रहा हूँ । इसलिए, के मुमकिन (संभव) हो के उसमें कोई कार आमद (काम की) बात हो । उन्हे पढ़कर अपनी फ़ाईल में लगा लेना । मुझे वापिस करने की ज़रुरत नहीं ।

रामकिशनराव बड़ा अच्छा और मुहब्बती (प्रेमी) लडका है । उसने जो हालत अपनी लिखी है, ख़ूब (अच्छी) है । जब उनको यह शौक़ (रुचि) है, तो पूजामें रुकावटें पड ही नहीं सकती ।आपने जो कुछ भी उनको हिदायत (सूचना) की है ओ ठीक और सही है । आपने यह ख़ूब (अच्छा) लिखा है के जबसे आप मुझतक पहुँचे, नहीं नहीं जबसे मैं आप तक पहुँचा आप के दिल से ईश्वर दर्शन की ख़्वाहिश (इच्छा) ही जाती रही और यह इस वजहसे है के आपने एक वीरानापसंद से मुहब्बत (प्यार) की है । तो भाई, यह तो कुसूर (दोष) मेरा ही है ।

यह क्या आपने लिख दिया के अगर कुछ नाशाइस्ता (अशिष्ट बात) लिख गया हूँ तो तालिबे माफ़ी (माफ़ी चाहता) हूँ । मैं तो समझता हूँ के आपने शायस्तगी (शिष्टता) ख़त के किसी सतर (पंक्ति) में नहीं छोडी और भाई, मुहब्बत में कोई मुझे गालियाँ दे तो भी मेरे ख़ुशीका ठिकाना न रहे । बाबू ईश्वर सहाय आजकल अपने मक़ान

बनवाने में मसरूफ (व्यस्त) हैं । इस वजहसे लिखने पढ़ने का मौक़ा (अवसर) कम मिलता है । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) । रामकिशन को जब आप ख़त लिखें तो मेरी दुआ (आशीर्वाद) लिख देना । सब भाईयों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 33

शाहजहाँपुर
Date ...Oct.1956

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आपका ख़त नंबर SRCM-BG-38 मोरखा (दिनांक) 10 अक्तूबर 56 मौसूल (प्राप्त) हुवा । पढ़कर ख़ुशी हुअी । अफ़सोस (खेद) यह है के इससे पहले मैं जवाब न दे सका, यह समझते हुये के आप जवाब का इन्तज़ार (प्रतिक्षा) तेज़ीसे कर रहे होंगे । वजह (कारण) यह थी कि मैंने बाबू ईश्वर सहाय को दीवाली में लखीमपुर से बुलवाया था और यह समझकर जवाब छोड रखा था के उनको dictate कर दूँगा। मुझे चाहिए यह था के मैं तीन पैसे के पोस्ट कार्ड से आप के ख़त को acknowledge कर लेता (प्राप्तिसूचना भेजता) | मगर ऐसा नहीं किया के मिशन का पैसा बचाना था । आप कहेंगे की तीन पैसे का ख़याल तो रहा मगर आप की तकलीफ़ का एहसास (ख़याल) न हुआ । इसलिए आपको इक्तिफ़ा (संतोष) कर लेना चाहिए के इन्तज़ार (प्रतिक्षा) भी एक क़िस्म (तरह) कि याद तेज़ है । जिससे बड़ा रूहानी (आध्यात्मिक) फ़ायदा पहुँचता है । एक शायरने (कविने) भी लिखा है के

"जो मज़ा इन्तज़ार (प्रतिक्षा) में देखा,
ओ नहीं वस्ले यार (प्रियतम के मिलन) में पाया।"

इसलिए इसी तकलीफ़ (कष्ट) ने दूसरे मानों में, बहार का ख़ैर मुक़द्दम (स्वागत) किया । यह तो आप को मालूम ही है क्या मेरी कमजोरी, के जब मैं कुछ अच्छा लिखना चाहता हूँ तो लिखनेवाला भी

अच्छा होना चाहिए । मैं ख़ुद लिखने से यूँ माजूर (विवश) हूँ के मेरा दिल उंगलियों तक नहीं पहुँचता ।

डॉ. वरदाचारी के बारे में जो आपकी राय (मत) है, ओ सही है । मेरी दुआ (प्रार्थना) यह है के कहीं उनकी गुत्थीयाँ (उलझनें) सुलझकर राहे बातीन (आंतरिक राह) पर उनका सही क़दम (सही पदार्पण) हो जाता । मुझे उनसे मुहब्बत भी है और इन अय्याम (दिनों) में एक दो ख़ुतूत उनके हस्बेहाल (स्थितिनुसार) भेजना भी पडे हैं। और उनमें कुछ अभ्यास मुतालीक़ (बारेमें) भी मैंने रोशनी (प्रकाश) डाली है, जो हर preceptor के पास रहना चाहिए । ख़त उनके कुछ private (प्राईवेट) है इसलिए उसकी नक़ल मैं न भेजूँगा । मगर जवाबात में कोई ऐसी बात नहीं जो उनके प्रायवेट बातों की तरफ इशारा (सूचित) करे । Orthodoxy (कट्टरपंथी) को मैं ऐसा समझता हूँ, जैसे के कोई अपने सामने एक दीवार खड़ी कर ले, जिसकी वजह से उसके आगे जाना मफ़कूद (लुप्त, ग़ायब) हो जावे मगर यह चीज़ आ ही जाती है और यह ऐब (दोष) हममें मुसलमानों को देख-देख कर पैदा हुआ है। वरना हममें ओ बहाव (प्रवाह) की सूरत (स्थिति) थी के जहाँ पर कोई रेज़ा (कण) भी ठहर नहीं सकता।

भाई, गणेशन ने सच लिखा है के रुहानी मज़ामिन (आध्यात्मिक लेखों) से फ़ायदा उठाने वाले जुनूबी हिंद (दक्षिण भारत) में कम मिलेंगे और यह चीज़ कम-व-बेश (ज्यादा-कम) हर जगह है । शुमाली हिंद (उत्तर भारत) भी इससे बरी (मुक्त) नहीं मगर यहाँ तो यह है के आप लोग लिखे जाइए और लोग उसको कसीर तादाद (अधिक संख्या) में पढते चलें । मुमकिन (संभव) ही नहीं के यह चीज़ें दिमाग़ में किसी वक्त नक्श (छाप) न बना दे । नमककी खान में चीज़ पड जाती है ओ नमक ही हो जाती है । दखन में intellectual class बहुत मिलेगा । मगर मेरी राय उनके बारे में जो है ओ मैंने मिस्टर राजगोपालन (देहली) को लिखी थी, वही जुमला बजिन्सिया (वाक्य जैसे के वैसा) आपको लिखता हूँ । " They love their own sentiments ".

मैंने जो आप को लिखा था के श्री. दत्तात्रीरावकी डायरी देखने के लिए और हर शख़्स (व्यक्ति) की तालीम (ट्रेनिंग) के लिए आप काफ़ी (पर्याप्त) है । यह सही है और इसमें पूरी ताक़त है । ईश्वर का शुक्र (धन्यवाद) है के आपके भाईसाहब का भी शौक (रुचि) बढ़ रहा है । ईश्वर करे वह भी रास्ते पर पडकर अपने ज़िंदगीके मसले (समस्या) को हल कर लें । नारद भक्ती का सूत्र मेरे पास भी है और ओ बहुत

अच्छा है । आपको जो अपनी हालत के बारे में एहसास हुवा जिसको आपने यूँ लिखा है के ऊपरी निस्फ (आधा) हिस्सा आस्मान है वगैरा, यह विराट रूपका दर्शन की हालत है । इसलिए की आपकी जौलाँगाह (भ्रमणस्थान) आलमें कुबरा या ब्रह्मांड मंडल है । इसी का नज़ारा (दृश्य) अर्जुन ने देखा था । आपका यह ख़याल सही है जो आपने इस तौर ज़ाहिर (प्रदर्शित) किया के कहीं कोई link टूट गया मालूम होता है । इसको यूँ कहिए के link असल (मूलस्थिति) चीज़से जुड गया और बजाय दुनिया के दूसरी दुनिया के अहवाल (समाचार) आ रहे हैं, और भाई, भूलना तो है ही । ख्वाह (चाहे) मैं हूँ ख्वाह (चाहे) तुम हो, मगर यह stage बहुत advanced है, मगर भाई, मुझे भूलने की कोशिश न करना । इसलिये के मैं आपको भूलानेके लिये ख़ुद फिल वक्त (इस वक्त) एक instrument हूँ और जब यह पूरे तौर से हो गया तो फिर आप instrument मेरे भूलने के लिये हो जावेंगे तब ही Oneness (एकत्व) क़ा पता चलेगा । अगर आख़री मंजिल की ख़बर दूँ तो मुमकिन है के कोई scientist मुझपर झपट पडे । बिलकुल (पूर्णत:) आख़री हद (सीमा) का पता देना तो बहुत मुश्किल (कठीन) है मगर ख़ैर, यहाँ तक कह देता हूँ के जब अभ्यासी अपने आप को भूल जावे और ईश्वर को भी, तब समझना चाहिये के अब किसी तरह उसको फिर दुनियामें आना नहीं हो सकता । इस हालतमे ओ ऐसे समंदर में गोताज़न (डूबा हुआ) रहता है के उसे सिवाय उसके और कोई चीज़ही नहीं दिखाई देती । इससे पहले ओ दुनिया को उक़बा (परमार्थ) के लिये बेच चुकता है । अब कही उक़बा (परमार्थ) को भी बेच सके तो फिर असलियत (वास्तविकता) ही असलियत (वास्तविकता) है।

भाई, डॉक्टर वरदाचारीने यह क्या आपको उचलन लगा दी (उकसाया) के scientific explanation आप मुझसे पूछे । भला मैं क्या और मेरी वसअत (सामर्थ्य) क्या ! एक सीधा सादा बेपढ़ा इन्सान हूँ और उससे आप God के माने पूछते हैं । मुमकिन (संभव) है के ओ dog के माने बता जावे । मेरे पास तो कुछ इल्म (ज्ञान) ही नहीं रहा इसलिये के मैं मौलाना रूम के शब्दोंमें

मन जे कुरआँ मग्ज़ रा बरदाख्तेम
उस्तख्वाँ पेशे सगाँ अन्दाख्तेम
[मैंने तो कुरानसे उस का मग्ज (सार तत्व) उठा लिया;
और हड्डियाँ कुत्तों के आगे डाल दी।]

मगर भाई, प्रीतम जिस तरह चाहे, प्रेमी को रेंगाले । रेंगना भी प्रेमी को प्रीतम ही सिखाता है और रेंगनेकी spirit (प्रेरणा) भी उसको प्रीतम से ही मिलती है । इसलिए जिस चालमें चला, अगर ठीक है, तो इसमें आपकी तारीफ़ और अगर ग़लत है, तो आप ही की बदनामी । अब उसको अगर आप वसीउन्नज़रीसे (व्यापक दृष्टी से) देखें तो फिर यही समझमें आवेगा के हमको रेंगना वहींसे मिला है, जिसकी याद भक्ति करनेवालों को तड़पाती है । जो चीज़ पहुँची या उतरी है उसका विस्तार या पसारा हो गया । जो देखने या एहसास में आई उसकी हालत ऐसी बन गयी जैसे के एक नुक्ते (बिन्दु) से जिसमें पानी भरा हो जब छलक होती है तो इसका हज्म (फैलाव) बढ़ता ही जाता है । अब इस छलक को ग्रहण करनेवाले हमारे ऋषी मौजूद थे और उनकी निग़ाह (दृष्टि) भी उस तरफ थी इसलिए की ज़माने की शुरुआत थी और संस्कार का उनमें उस वक्त उतना गुज़र (प्रवेश) न था । जैसी चीज़ छलकी वैसी की वैसी उनके एहसास (अनुभव) में आ गई । यह ज़रुर हुआ के किसी की निगाह उस मोटी चीज़पर पड़ी जो ज़ख़ामत (घनत्व, स्थूलता) ज़ियादा लिये हुवे थी और किसी की इस पतली धारपर पड़ी जिसमें छलकाव की मिक़दार (मात्रा) कम थी । मोटी चीज़ क्या हो सकती है ? ओ बातें जो हमारी और सबकी ज़रुरत के लिए थी, लिहाज़ा (इसलिए) ओ इस में पड़ गये और बारीक बातें, बारीक बीनों (सूक्ष्मदर्शियों) के लिये छोड दी । जिन्दगी रखकर ज़रुरतें तो होती ही है । आग, पानी, हवा इनको वक्त वक्त (समय समय) से अपनी रफ़्तार (गति) के मुताबिक़ (अनुसार) काम करना ही चाहिये । उन्होने इन ही चीज़ोंको लिया और अपने में घुमाव की सूरत (स्थिति) ऐसी पैदा की के जिस जगहपर उस मोटी धार का असर है वहीं से हम उसको हरकत (गति) दें । चुनांचे (अत:) अग्नी, वायु वगैरा को हरकत (गति) वहीं से दी जहाँ से उसका ज़ियादा ताल्लुक (संबन्ध) था और नतीजा मतलूब (इच्छित परिणाम) बरामद (प्राप्त) होता है । ख़याल (विचार) इस हक़ीर (नाचीज़) का यह है के, सबसे पहले उनकी निगाह (दृष्टि) अनासिर (मूल भौतिक तत्वों) पर पहुँची इसलिये के रुहानियतकी (आध्यात्मिकताकी) इस्तेदाद (योग्यता) उनमें मौजूद (उपलब्ध) ही थी । लिहाज़ा (अत:) आप मुलाहिज़ा फ़रमावें (देखें) के सबसे पहले वही मंत्र लिखे हैं जिनसे नताईज (नतीजे / निष्कर्ष) अपनी ज़िंदगीके क़ियाम (स्थिरता) के लिये पैदा हो, जो भी एक ज़रुरी चीज़ है । अब जब अनासर (पंचभूत) पर जा पडे और ज़माना (वक्त) ज़ियादा गुज़र चुका था तो फिर यह होश आया के उसपर रहते रहते ख़यालका

focus (केंद्रित) इसी पर होकर रह गया । आगे फिर उन्होंने उस असल धार जिसको रुहानियत कहेंगे उसपर सोचना शुरु किया जिसका नतीजा (परिणाम) उपनिषद् है और उनकी right thinking (शुध्द चिन्तन) की वजह (कारण) है। अब क्या आप इससे यह नतीजा (निष्कर्ष) नहीं निकालते के evolution (विकास) की शकल इसमें क़ायम ही रही और दिमागी द्रौड धूप की यह तवारीख़ (इतिहास) बनी।

यह तो उन्वान (प्रस्तावना) है और बेपढ़े की तहरीर (लेख) और ख़याली पकाव का तलछट । अब नफ्स मतलब (वास्तविक तात्पर्य) पर आता हूँ । वेद दर हक़ीक़त (वास्तव में) ओ हालत है जो पैदाइश आलम (सृष्टि रचना) से पहले थी जिसका कैफ़ (आनन्द), ईश्वर ओ हालत (समय) लाए, आप को भी मिलेगा । इसलिये यह ठीक है के पैदाईश आलम (सृष्टिरचना) होते ही वेद मौज़ूद (विद्यमान) हो जाते है, जिसको किताबी सूरत (ग्रंथरुप) में कर दिया गया है । गोया (मानों) हालतों (स्थितियों) को एक जामा (पोशाक) पहना दिया गया । अब उस वक्त क्या था ? वही मथनेवाली हालत (क्रिया) और जौहर की पैदाइश (मौलिक तत्व का जन्म)। जिस चीज़से यह जौहर बना ओ मथनेवाली क्रिया का नतीजा था गोया (मानों) इस जौहर (मौलिक तत्व -अणु) का ताल्लुक (सम्बन्ध) उस चीज़से है जिसके मथनेका यह नतीजा है । अब जब नतीजा जो कुछ भी हुआ और उसमे जो भी सूरतें (रुप) पैदा हुअी उनका ख़याली ठहराव अपने असल पर ज़रुर रहा और ओ जो कुछ भी हालत थी ओ scientific (वैज्ञानिक) कहना चाहिये, इसलिये के ऐसा कभी नहीं हुआ के Oxygen और Hydrogen मिलकर पानी न बन गया हो । मैं scientific उसी को समझता हूँ के जो भी उसका तजरूबा (experiment) कर ले नतीजा (निष्कर्ष) वही बरामद (प्राप्त) हो । अब नतीजा जो कुछ भी हुआ, उसकी असल की तरफ जब निगाह (दृष्टी) गई तो असल चीज़ का इल्म (ज्ञान) ले ही आई । अब इन धारों में जो कुछ के उनके मथनेसे dim-sound (धीमी आवाज़) पैदा होती है उसको basis (आधार) मान कर वैदिक ऋषी उसकी तलाश में रहे जिसकी के यह आवाज़ थी । लिहाज़ा (अत:) ऋग्वेद जो कुछ के मैंने पढ़वाकर सुना है, यानी शुरु के कुछ हिस्से में - ओम इसी शब्द या आवाज़ से काम लिया गया है । गोया (मानों) यह कुँजी थी, असल चीज़को (वास्तविक तत्व) इनकिशाफ़ करा (खोल) देने के लिये । अब जब कुंजी उनको मिल गयी और असल चीज़ का इनकिशाफ़ होने (खुलने) लगा तो फिर दूसरा फेरा शुरु हुआ । या यूँ कहो के एक नया chapter (अध्याय) मक़सदे रुहानी (अध्यात्मिक उद्देश) के लिये खुल

गया और विचार की दौड़धूप और ज़ियादा होने लगी । जब शब्द द्वारा हमने असलियत (वास्तविकता) का पता चला लिया, तो फिर ऋषी लोग चेते (संकल्प किया) के अब इसमें घुस पड़ना चाहिये । जब इस में घुस पड़े और लडी के उस हिस्से को पकड लिया तो पहला सबक जो उनको मालूम हुआ ओ `एको Sहं बहुस्याम:' का जज़्बा (आवेग) था । मगर यह उस असल चीज़ की दुनियादारी थी यानी नीचा ख़याल । अब ख़यालात ने और आगे फेंका । ऊपर की लडी हाथ में आई । पता चला के यह तो ओ गूँज है कि जो धारों की हरकत से पैदा हुई थी । इसके आगे कुछ और भी है । तजस्सूम (अन्वेषण) और तलाश (खोज) अभी क़ायम रही । इस `एको Sहं बहुस्याम:' के ख़याल से ऊपर पहुँचे । गोया (मानो) इस क़िस्म की दुनियादारी अब छुटी । दूसरे मानों में उस असल चीज़ की जो भद्दी शकल बादियुन्नजर (पहिली नज़र) में थी, वह निगाह से ओझल होकर उसके आगे हमारी Jump (कुदान) शुरु हो गई । फिर क्या था । दुई (द्वैत) का ख़याल भी ऐसा, जिसमें युँ शुबह: (अनुमान) था के यह चीज़ कहाँ तक हो सकती है, मौजज़न (उत्पन्न) हुवा । ख़ुदको तौला और उस तरफ निगाह जमाई । तौलते तौलते यह पता चला के सिर्फ़ यह इन्सानी खवास (मानवीय वैशिष्टय) था के हम अपने को तौलने लगे । जब यह चीज़ समझमें आ गई तो फिर ओ असल चीज़ जो हममें पैवस्त (भिदी हुई) है उसी में तबीयत और ख़याल चिमट पडा । गोया (मानो) अब इस लडी में विचार तैरने लगा । बढ़ते चले गये | अंदाज लगा के यह सब cream, जो मथने का नतीजा था, असल नहीं है । अब क़दम बढ़ता ही गया । दरमियानी हिस्से तक की यह पहुँच है जो ऊपर बयान की गई । इससे आगे बढ़े तो फिर आनंद की फुरना (स्फुरण) का एहसास (अनुभव) लेने लगा । अब यह सवाल पैदा होता है की यह एहसास (अनुभव) कैसे हुवा जब के हमारा ख़याल इसमें चिमट चुका था। बस जवाब यही है के वही cream इन्ही अजजा (तत्वों) की ठोस अवस्था थी जिसको के हम ख़याल में पकडे हुवे है । आनंद तो आया और हमारा ठहराव भी हुवा और एहसास भी । समझ लिया के बस यही चीज़ है जिसकी तलाश थी । कुछ लोग यहाँ पर रह गये । बाक़ी इस हालत सतचिदानंद से भी आगे गये और चलते चलते रंग ऐसा सवार हुवा के non-duality (अद्वैत) के चक्कर में आ गये । यहाँ से आगे मुमकिन है कि वेद खामूश (खामोश) हों, इसलिये के अनिर्वचनीय कहते हुवे उसने `नेति' `नेति' कह दिया है ।

अब वही सवाल science (विज्ञान) का आ जाता है । उसका जवाब, ख़याल तो यह है, कुछ न कुछ हो ही गया है। मगर और

सही | तो फिर ये कहना चाहिए के हम रास्ते पर हैं और अपने आपको हमने ऐसा बना लिया है के हम असल से हम आहंग (तादात्म्य) हो गये हैं। तब तो यही कहना चाहिए के असल ही असल हमारे ख़याल में है । नहीं, बल्कि हम ख़ुद ऐसे ही बन गये हैं । सही इल्म (वास्तविक ज्ञान) के मस्कन (घर) नहीं, बल्की ख़ुद इल्म (ज्ञान) बन गये हैं । अब आप मुवाज़ना (तुलना) कर लीजिए के यह चीज़ scientific (वैज्ञानिक) है, या नहीं। भाई, इससे ज़ियादा लिखने की ताब (शक्ति) मुझमें मालूम नहीं होती। अब अगर कुल वेद मैं पढ़ डालूँ तो फिर मैं वह आवाज़ जो मंत्रोमे क़लम बंद की (लिखी) गई है, उसके बारे में भी मुमकिन (संभव) है के कुछ लिख सकूँ ।

Dr. Vardachari का यह remark (कथन) के ओ (वेद) mathematical symbols (गणित के प्रतीकों) से भी ज़ियादा सही हैं, तो ये वहाँ पर ठीक होता है जबके हम अपने को इससे हुलूल (घुला मिला देते) कर लेते हैं । और वही चीज़ सामने आती है जो सही है और जितने भी लोग चलेंगे वही चीज़ उनके सामने आवेगी । अब आपका ख़याल ये हो सकता है के इसमें शाइराना नुक्ात (काव्यात्मक बारीकियाँ) मौजूद है, जिसमें exaggeration (अतिशयोक्ति) भी हो सकता है । तो भाई, असल चीज़ को बताने के लिये उसकी surroundings बांध देने से ख़याल को pick-up (ग्रहण) करने में मदद मिलती है । मुझे भी अक़सर (प्राय:) इससे काम लेना पडा है । मिसाल (उदाहरण) के लिये एक शेर लिखता हूँ ।

"नातवाँ कैस व नाज़नीं लैला, कोई परदा उठाए महमलका

[प्रेमी दुर्बल और प्रेयसी (लैला) नाजूक है । फिर महमलका (ऊंट पर प्रेयसीका बैठने का स्थान) पर्दा कौन उठाएँ।] "

अब इसके माने पर अगर आप गौर करें, तो फिर यह बात साबित होती हैं के कैस (प्रेमी) और लैला (प्रेयसी) दोनों inactive (निष्क्रिय) है जो एक असल हालत है । गोया (मानों) वह condition जो वाक़ई है इस तरह से ज़ाहिर (स्पष्ट) की गयी है । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र
बकलम ईश्वरसहाय

****

ॐ तत् सत

Serial No. 34 शाहजहाँपुर
No. A-469/SRCM Date 9.11.1956

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आप का ख़त No. 42 -BG SRCM मोरखा (दिनांक) 5-11-56 मौसूल (प्राप्त) हुवा । ख़ुशी हुई । सहज मार्ग पत्रिका, कलकत्ता छपती है । वहाँ से बराहे रास्त (सीधे), 478 कापी (प्रतियाँ) मेरे पास तीन यूम (दिन) के अंदर आ गयी और वहाँसे आसाम बहुत दिनोंमें पहुँचेगी। इसलिये काशीरामजी न भेज सके । चूंके (क्योंकि) आप उसके लिये बेचैन हैं, लिहाज़ा (अत:) एक कापी आपको व गणेशन को भी बज़रिये बुक पोस्ट (से) आज ही रवाना की (भेजी) है । फिर वहाँ से (आसामसे) आती रहेगी ।

श्री. के. दत्तात्रीराव को फ़ायदा तो है मगर जिसके एहसास (अनुभव) यूँ (इसलिये) नहीं हो रहा है कि उनके दिलमें कालिमां और जिस्म में grossness (ठोसता) मौज़ूद है । उसके दूर करनेकी तरकीबात (उपायोंको) आप उनको बतला दिये होंगे और आप भी मदद दे रहे होंगे। इससे पहले ख़त का जवाब, वेद के बारेंमे मैंने लिखाकर बाबू ईश्वर सहाय को दे दिया है । ओ उसकी नक़ल रखना चाहते है । उसके बाद आपके पास रवाना कर देंगे । जब पहुँच जावे तो लिख दीजियेगा, और अपनी राय (मत) भी के मैं कुछ ठीक कह सका हूँ या नहीं। क्योंकी मेरी निसबत (संबन्ध), भाई, जहालत (अज्ञानता) से है और दौरान अभ्यासमें किताबें बंद ही रही । मुझे श्री. लक्ष्मीनरसिंहम की याद अक्सर (प्राय:) आ जाती है । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 35 शाहजहाँपुर
No. A-500/SRCM Date 04.12.1956

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आपका ख़त नंबर 45-BG-SRCM मोरखा (दिनांक) 15-11-56 मौसूल (प्राप्त) हुवा । चाहता था के जवाब जल्द दे दूँ । मगर हुवा यह के इतनी देर हो गई । अब आप अगर इस पर mathematical calculation लगायें तो graph तो नहीं बन सकेगा, मगर हाँ, ओ ख़ामुशी (खामोशी) का period ज़रुर मालूम हो सकेगा । मगर उस वक्त, जब के आप हिसाब से काम लें और अगर आप हिसाब नहीं जानते तो फिर उसको बेहिसाब ही कहेंगे । गोया (मानों) आपकी वाकफ़ियत (ज्ञान) ने ऐसा बंधन पहना दिया के बेहिसाब को आप हिसाब में लाने लगे ! यही individuality (वैयक्तिकता) है और एक परदा (आवरण) और इसी को दूर करने के लिए तमाम (सारी) रियाजत (साधना) और अभ्यास है । पैदाईश आलम (संसार की उत्पत्ती) के वक्त हर चीज़ नाप और तौल कर मुहैया (प्रस्तुत) नहीं की थी । इसलिए हर चीज़ असली (विशुद्ध) परतोंपर (प्रतिबिंबित) दिखाई देती थी । दरिया सामने था । और कोई चीज़ (वस्तु) न कोई रेज़ा (कण) निगाह (नज़र) के सामने था, जो उसको देखने में दखलअंदाज होता (आडे नहीं आता था) ।

अपने यहाँ की ये theory (सिध्दांत) है के इन्सान जब अव्वल मरतबा (पहली बार) पैदा हुवा तो मुकम्मिल (पूर्ण) था । ज़ाहिर (स्पष्ट) है के यह गुत्थीयाँ (उलझनें) इन्सान ने ही बनायी जो सरचश्म: (श्रोत) की तरफ निगाह ले जाने में हायल (बाधक) हैं। उसकी activity ने उस में ख़ुद (स्वत:) एक दुनिया (विश्व) बना दी । वजह (कारण) यह थी के कारीगर (शिल्पकार / विधाता) ने हमको साफ शफ़ाफ़ (निर्मल और स्वच्छ) भेजा था और (विधाताकी) उमदा तारीफ़ (अच्छी पहचान) भी यही है । गर्दो-गुबार (धूल-मिट्टी) जो अब चढ़ गया है, इसकी ज़िम्मेदारी हमारे ही ऊपर है । संस्कार हम ने ख़ुद बनाये, जो गिलाफ़ दर गिलाफ़ (आवरण) होकर हमको रेशम के कीडे की तरह छुपाने में कामयाब (सफल) हुवे । अब जब इब्तदा (शुरु) की हालत (स्थिति) हमारी ऐसी थी के हकीक़त (वास्तविकता) के समंदर से निक़ले

हुवे हम सरापा (सर से पैर तक) हकीक़त (वास्तविकता) थे । इसलिए हमारी निगाह (नज़र) बेगिलोगिश (बेखटके / अबाध) उसको देखती थी और इस के इल्म (विज्ञान) को जानती थी, जिसकी शक़ल (रुप) वेद की कहना चाहिए । और भाई, याद दिलाना जब मैं आप के पास हूँ । ईश्वर को मंजूर (स्वीकार) हो तो, मैं यह हालत अनुभव भी कराने की कोशिश (प्रयत्न) करुँगा । एहसास (अनुभव) करना आप का काम होगा । ज़बाने संस्कृत (संस्कृत भाषा) को ज़ियादा natural (स्वाभाविक / सहज) कहा जाता है । इसलिए के पैदाईशे अव्वलीन (पहले के लोग), आपस में बोलने और समझने के लिए जैसी चीज़ इनके एहसास (अनुभव) में आई, वैसी ही उन्होने ज़बान हिलाई । आप अगर संस्कृत के alphabet (वर्णमाला) पर गौर (विचार) करें तो उसमें rise (आरोह) और fall (अवरोह), जो एक vibration (कंपन) के शक़ल (रुप) में हैं, मिलेगा और इसमें हर vibration (कंपन) को एहसास (अनुभव) करके इन्होंने लिखा है, जिसको संस्कृत (देववाणी) कहने लगे । कुल इलहाम (संपूर्ण श्रुति) उनको ख़ास (विशिष्ट) ज़बान (भाषा) में नहीं हुवा । ईश्वरी इलहाम (दिव्य श्रुति) अब भी होते हैं, मगर उन लोगोंको ज़ियादा तर और ठीक, जिन्होने अपनी Original (मूल) हालत क़ायम (मजबूत / दृढ) कर ली है और Main Source (मूल श्रोत) से लगाव पैदा हो गया है । अब ओ आना, vibrations (कंपनें) की ही शक़ल (रुप) में है । मगर ज़िस ज़बान जो शख़्स (व्यक्ति) जानता है, उसके नक्श (छाप) जो होते है, उसमें touch (स्पर्श) करके, जो ठोकर के मन पर लगती है इसमें, वही ज़बान में, जो उसने पढ़ी है, अल्फ़ाज़ (शब्द) मालूम होते हैं। स्वामी विवेकानंदजी ने लिखा है के इल्हाम (दिव्य श्रुति) ज्यादातर poetry (कविता) में ही होते हैं । ऐसा नहीं होता, कमजकम (कम से कम) सच्चे जिज्ञासुका हाल, के ओ surroundings (पास - पडोस) में फँसकर असल मूल (यथार्थ) को खो बैठे । Surrondings पता देतीं हैं उस चीज़ का, जिससे उसका वास्ता (संबंध) है | जैसे धुवाँसे हमें यह पता चल जाता है के यहाँ पर आग है जिसका के धुवाँ हो रहा है ।

Constant remembrance (सतत स्मरण) एक तो ओ है जिसका के आप ध्यान करते है । दूसरे दिमाग़ थक जाये, पर उसकी याद भी वही असर (प्रभाव) पैदा कर देती है । मतलब (गरज़ / उद्देश्य) सवाब (सुकृत / पुण्य) से है । आपने यह जो लिखा है के अंदरुनी हालत एक तरह की नहीं रहती; कभी इंतिहाई लतीफ (अत्यंत सूक्ष्म) और हलकी और कभी उसके खिलाफ़ (विरुध्द) | यह बराबर

होता चला जाता है; उस वक्त तक जब तक के changeless हालत पैदा नहीं हो जाती और अगर हल्कापन और भारीपन जो एक दुसरे के मुतजाद (विरुध्द) है, सामने न आवे तो changeless हालत जो इन्तिहाई लतीफ़ (अत्यंत सूक्ष्म) चीज़ (वस्तु) है, उसकी पहचान नहीं हो सकती । अलावा इसके, जिस point पर के हमारी सूक्ष्म गती पैदा हो गयी है, उसके आगेवाले point पर के जब हम जाते है तो भारीपन उस वक्त तक एहसास (अनुभव) में आता है जब तक के उसका यह असर (प्रभाव) दूर हो कर ओ सूक्ष्म गती पैदा न हो जाती । और यह सिलसिला (क्रम) बराबर रहता है, जब तक के हम इस गती (स्थिति) में नहीं आ जाते के जिसके बाद के कोई point नहीं होता । इसलिये अब आप समझ गये होंगे के यह सब बातें आप की तरक्कीका (प्रगतिका) हाल बतला रहीं हैं ।

आपने लिखा है के आप ओ चीज़ दे दीजिए जो के आप मेरे लिये ज़रुरी समझते है। और लिखा है उम्मीद (आशा) है आप दे ही देंगे । इसके लिये दुनियादारी का फ़िक़रा (वाक्य) तो यह है के जब हम ही आप के है तो हमारी सब चीज़ आप ही की है । और मेरा असल (सच्ची) जज़्बा (भावना) यह है के मैं तो अपने आप को बेचना चाहता हूँ । मगर कोई ख़रीददार (ग्राहक) पैदा नहीं होता और ओ इस वजह से के मैंने अपनी कोई क़ीमत नहीं रखी । तो यह ज़माना है के मुझे कोई मुफ्त भी ख़रीदना नहीं चाहता और ठीक भी है के मुठ्ठीभर हड्डीयों को कोई लेकर करेगा भी क्या ? "नानक बूढे बैल को कौन बाँध भूस दे ।" तो भाई, आप ही मेरी ख़रीदारी के लिये तैयार हो जायें ताके मुझे दरदर यह सदा (आवाज़) लगानी न पडे ।

"मनकाश फरोशीम (मैं बिकनेके लिये हूँ |)
दिल सदबारा खुशीम् (मेरा दिल सौ बार खुश है |) "

और भाई, सच बात यह है के सेहत (स्वास्थ्य) और तंदुरुस्ती (आरोग्य) और धन दौलत की ख़्वाहिश (इच्छा) कुछ न कुछ सभी को रहती है । मगर आपको उसकी चाह है जो आप ही की है और आप के पास है और इसलिये आपको उसीकी ज़ियादा फ़िक्र (चिन्ता) है ।

भाई गणेशन का कार्ड आया, पढ़ लिया, पढ़कर भेज रहा हूँ । Initiation (दीक्षा) के मुतअल्लिक़ (बारेमें) मैंने यहाँ आपको बहुत कुछ बतलाया था । और आनेपर जुमला (सारी) बातें उसके मुतअल्लिक़ (बारेमें) बता दूँगा और यह बात सही है, मैं initiated और non-initiated मेंबर्स की तालीम (प्रशिक्षण) में कोई फ़र्क़ (अंतर) नहीं रखता

। अगर एक दिल (हृदय) है तो दूसरा ज़िगर (कलेजा) है । अगर मैं ऐसा (अंतर) करने लग जाऊँ तो समझ लेना चाहिए के गैरियत (परायापन) का परदा (आवरण) अभी उठा नहीं । अब अगर क़ुदरती तौरपर (प्राकृतिक रुप से) भी कुछ फ़र्क़ (अंतर) पड जाता है तो इसको initiation (दीक्षा) का असर (प्रभाव) कहना चाहिए और इसको हर जगह रायज (प्रचलित / रुढी) यूँ है के उनका हाथ, मालिक के हाथ में देना पडता है और shake hand तो उसी वक्त होता है जब एक दूसरे में निस्बत (संबंध) पैदा हो जाती है । अब हर क़स व नाक़स (हर किसी व्यक्ति) के साथ यह अमल (काम) मैं करने लगूँ तो इसका नतीजा (परिणाम) यह होगा के ओ तो भाग निकले और हमें पेच व ताब (परेशानियों) में डाल गये ; जो बाईस इन्तिहाई तकलीफ़ (अत्यंत कष्ट का कारण) हो सकता है । इसलिए जब अभ्यासी को यक़ीन कामिल (पूर्ण श्रध्दा) हो जाय के इस तरीक: (पध्दति) और इस शख़्स (व्यक्ति) से मुझे फ़ायदा होगा और इस दरवाज़े पर मुझे रहना है तो फिर कोई हर्ज़ (हानि) नहीं होता ।

मैं सर्नाडजी का शुक्रिया (धन्यवाद) अदा करता हूँ के उन्होने अपना वक्त गिरॉमाया (अमूल्य समय) की कुर्बानी करके गुरु संदेश का तर्जुमा (अनुवाद) किया है । जो मुझे मिल गया । मुझे आइंदा (आगे) भी आप लोगों से उम्मीद (आशा) है के ऐसी ही मदद करते रहेंगे । आप का मज़मून (लेख) भी कल लखीमपुर से आ गया । जिसको, ख़त लिखने के बाद मैं पढूँगा और श्री.काशीरामजी को, जो आज कल यहाँ है, छपने के लिये दे दूँगा । भाई लक्ष्मीनरसिंहम साहब मुहब्बती (प्रेमी) है और मुहब्बतकी (प्रेम) पहचान भी यही है के ओ वही करें जो उसके पसंद हो जिसको ओ मोहब्बत (प्यार) करते है।

सिफ़र (शून्य) के माने (अर्थ) वाक़ई (सही में) जितना, और लोग अच्छा समझ सकतें हैं, मुमकिन (संभव) है के मैं न समझ सकूँ, इसलिये के सिफ़र (शून्य), सिफ़र (शून्य) की हालत (स्थिति) नहीं जान सकता और मुर्दा मुर्दे की । वैसे कह लीजिए के जहाँ पर के कुल senses रूख़सत (बिदा / प्रस्थान) हो जाये और हम ज़िंदे से मुर्दा हो जाय, या अपने असल में ऐसे घुल मिल जाएँ जहाँ हर तमीज़ (विवेक), असल (बिंब) और नक़ल (प्रतिबिंब) में तफ़ावत (अंतर) समझमें न आवे।

मैं और बाबू ईश्वर सहाय, 10 डिसेंबर की रात की गाडीसे चलकर 11 को, बाद दोपहर, झाँसी पहुँचेंगे | Grand Trunk Express से 1 बजे रात को चलकर Tirupati ब तारीख 14 डिसेंबर

पहुँच जावेंगे। South India रेल्वे Time table मुझे दस्तयाब (प्राप्त) नहीं हो सका इसलिये programme (कार्यक्रम) ठीक नहीं बना सके हैं । मैंने N. Kumaraswamy को मद्रास लिखा था के वह Time Table भेज दें। मगर ज़बान (भाषा) तमिल में था । इसलिए उनका भेजना बेसुद (व्यर्थ) था और नहीं भेजा । मैंने देहली, मिस्टर राजगोपालन को लिखा है । वहाँ ग़ालिबन (संभवत:) होगा, तो दो-तीन रोज़ में आ जायेगा । मेरी वालिदा (माताजी) की तबीयत बहुत अच्छी है । इस वक्त न दमा है न इख़्तिलाज कल्ब (दिल धडकने की बीमारी), और जबसे ओ बीमार हुअी ऐसा कभी नहीं हुआ के इन बीमारीयों से कुलीयतन (संपूर्ण) सुबुक दोशी (मुक्त) हुई हो । यह सब आप लोगों की दुआ (प्रार्थना) का असर (प्रभाव) है | सिर्फ़ एक शिकायत नयी ज़रुर है ; जिसमें कुछ फ़ायदा भी है, के चलने मे सीधी टाँग नहीं उठती, जिससे उनको पकडकर पाखाने, पेशाब के लिए ले जाया जाता है । फ़िक्र (चिन्ता) इस मरज़ (रोग) की ज़ियादा थी के जिससे ओ परेशान थी ; ओ बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपासे) अब ठीक है। सब भाईयों को आशिर्वाद। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह है के हैद्राबाद के के. दत्तात्रयराव को इत्तला (सूचना) कर दीजियेगा के मैं आ रहा हूँ । आप के यहाँ, जनवरी के पहले हफ्तेमें (सप्ताह) पहुँच सकूँगा।

Sd/ Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 36 Madras
No. A-533/SRCM Date 18.12.1956

मेरे राघवेंद्रराव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त तिरुपतीमें मिल गया । डॉ. वरदाचारी की जितनी तारीफ़ (प्रशंसा) की जावे उतनी थोडी है । आप की राय ब्रांच inauguration की है । इसके मैं भी मुवाफ़िक़ (सहमत) हूँ । इसलिये, 6 जनवरी इतवार का दिन है, उस रोज़ (दिन) रख दीजिए । मैंने अपनी इख़्तितामी speech (समापन भाषण) क़रीब क़रीब तयार कर ली है और अंग्रेजी में है । अगर आपकी राय (विचार) छापनेकी हो और जितनी कापी के आप चाहते हैं, ओ आप तिरुचिनापल्ली के पते से लिख दीजिये । Emblem मेरे साथ है । उतनी कापी मैं वहाँ छपा लूँगा । मैं 17 दिसंबर की शाम को मद्रास आ गया और श्री. कुमारस्वामी के यहाँ ठहरा हूँ । 23 तारीख को शाम की गाडीसे तंजाऊर जाने का इरादा है । वहाँ श्रीनिवासन् के यहाँ 24 को सुबह पहुँच जाऊँगा और 25 को दोपहर 2 बजे चलकर 4 बजे तिरुचिनापल्ली पहुँचूगा और गणेशन के यहाँ ठहरुंगा । वहाँसे दो जनवरी को चलने का इरादा है और तीसरी (3) या चौथी (4) को आपके यहाँ पहुँच जाऊँगा । Train और वक्त का पता तिरुचिनापल्ली से दूँगा । मैं समझता हूँ के Gulbarga जानेके लिये मुझे तिरुचिनापल्ली से मद्रास फिर आना पडेगा । वहाँ वरदाचारी के disciples (शिष्य) ने जो रेनीगुंटा में है, बहुत इसरार (आग्रह) किया है के एक गाडी कम से कम ज़रूर ठहरुँ। मैं भी यही इरादा करता हूँ । Varadacharya ने भी रेनीगुंटा station पर मिलनेको कहा है । मेरी सबसे दुआ (आशीर्वाद) कह देना । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: अज़ जानिब बंदा ईश्वर सहाय (सेवक ईश्वर सहाय की तरफसे) नमस्ते । जुमला बिरादरानसे (सभी भाईयोंसे) आदाब अर्ज़ (प्रणाम) कह दीजियेगा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 37 Tiruchinapalli
No. A-552/SRCM Date 26.12.1956

My Dear Brother,

Due to some trouble to my mother who had recently fallen down accidently, I have decided to cut short the tour programme, consequently I shall be reaching there on the night between 1st Jan and 2-1-57 at 1.39 a.m. by the Bombay Express. It may be a bit inconvenient to you to be at the station at that time. So I shall wait at the station for rest of the night and come to your house.

The date of the inauguration function stands as previously decided, but I propose to leave Gulbarga soon after. Please inform your friends of the change in the programme.

With best wishes and love to children.

Yours

affectionately,

Ram Chandra.

मुकर्रर (पुनश्च): यह के मैंने एक Training centre Madras में Kumarswamy के ज़ेरे एहतिमाम (निगरानी में) और एक Tiruchinapalli में M.K. Ganeshan के ज़ेरे एहतिमाम (निगरानी में) खोल दियें हैं। यह दोनों Gulbarga Branch के मातहत (अधीन) रहेंगे। मैं address (भाषण) नहीं छपा रहा हूँ । आपकी रायसे मुझे इत्तफ़ाक़ (सहमती) है । सब बिरादरान (भाईयों) को दुआ (आशीर्वाद) ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 38
No. B-47/SRCM

शाहजहाँपुर
Date 13.01.1957

मेरे राघवेंद्रराव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मैं बख़ैरियत तमाम (सकुशल) कल दोपहरको यहाँ पहुँच गया । एक रोज़ कानपुर, एक रोज़ लखनौ रुका था । मास्टरसाहब, कल लखीमपुर वापस जावेंगे । वालिदा साहिबा (माताजी) की तबीयत पहलेसे अब बफ़जलहू (ईश्वरकृपासे) अच्छी है । श्री. दत्तात्रयराव और आपके भाईसाहब हैद्राबाद station पर मिले थे । उनकी वजह से बहुत सहूलत (आसानी) हो गयी । आपके भाई को मुझसे बहुत मुहब्बत मालूम होती है । कुछ अजब (आश्चर्य) नहीं के ओ आपके system (पध्दति) पर चल निकलें । उन्होंने आपके साथ तातीले गरमामें (गर्मी की छुट्टियोंमें) आनेको कहा है । मेरे लिए यह बडी ख़ुशी की बात होगी । आप हैद्राबाद तो गये ही होंगे और दत्तात्रयराव मिले होंगे । आपको सत्संगियो के system (अंतर प्रणाली) की सफ़ाई के लिए ज़ियादा तवज्जोह (ध्यान) देना चाहिए । और खाली वक्तमें ग़ाइबाना तौरपर (परोक्ष पध्दतीसे) फ़रदन् फ़रदन् (अलग अलग करके) या मजमूई (इकठ्ठा) तौरपर ले लिया कीजिये । मुझे कुछ ऐसा अंदाज हो रहा है के कोई चीज़ दक्खन में ऐसी पैदा हो चुकी है के जो लोगों के दिलोंको रुहानियत (आध्यात्मिकता) की तरफ कशिश (आकर्षित) कर रही है । यहाँ आनेपर डॉ. व़रदाचारी का ख़त मिला । मुहब्बत (प्यार) से पूर (भरपूर) था । यह, भाई, सब उनकी जाती (अपनी) क़ाबिलियत (क्षमता) है वरना मैं इस क़ाबिल (योग्य) कहाँ के कोई मुझे इस क़दर (इतना) मुहब्बत (प्यार) करे । मुझे आपकी छोटी लड़की की बहुत याद आती है । सत्संगी भाईयोंसे मेरी नमस्ते कह दीजिएगा । ज़ियादा (बहुत) दुआ, (आशीर्वाद) बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मज़ीद (अधिक) यह के गुलबर्गा Function (कार्यक्रम) की रिपोर्ट मय (साथ) Presidential address (अध्यक्षीय भाषण) के, Hindu अख़बारमें (वृत्तपत्र में) छपवाने की ज़ल्द कोशिश (प्रयत्न) कीजिये । बहुत देर हो जानेपर शायद (कदाचित) नहीं हो सकेगा । मैंने यहाँ Pioneer अख़बारमें छपवानेको भेज दिया है। ज़ल्द शाए (छप जायेगा) हो जावेगा। आप भी इसकी कोशिश करें ।

Sd / Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 39 शाहजहाँपुर
No. B-82/SRCM Date 28.01.1957

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मोहब्बतनामा (स्नेहपत्र) मोरखा (दिनांक) 18-1-57 मौसूल (प्राप्त) हुआ । मैंने 17 अदद (संख्या) invitation बज़रिये (व्दारा) book post रवाना (भेजी) कर दीं है । मिल गये होंगे । जो बचे रहे, वह आइंदा (अगले) साल काम आवेंगे । ईश्वर का शुक्र (धन्यवाद) है के भाई माधवरावजी के दिलमें इस हक़ीर (नाचीज़) की मुहब्बत (प्रेम)मौजूद (विद्यमान) है । उन्होने तातील गरमामें (गर्मी की छुट्टीयोंमें) यहाँ आनेका, आपके हमराह (साथ), वादा भी किया है । ईश्वर उनको उद्देश (मक़सद) में कामयाब (सफल) करे । गुलबर्गे का address (संदेश) का लुब्बे लुबाब (सारांश) Pioneer अख़बार (वृत्तपत्र) लखनौ Daily में छप गया है जो भाईयोंको दिखाकर अपने पास अपने फाइलमें रख लीजियेगा । यह 20 जानेवारी 57 के पर्चेमें (अखबारमें) छपा है । मास्टरसाहब भी ग़ालिबन (संभवत:) typed copy भेजेंगे । मैंने यह सोचा के असल (मूल) भी आपके पास होना चाहिये।

भाई सरनाड का मॅगजीनका चंदा अभी अपने पासही रखें और किताब के दाम भी । आसामसे कोई न कोई, जलसा (उत्सव) जन्मदिनमें शिर्कत (शामील होने के) के लिए ज़रुर आवेगा । उसको मैं यहाँसे दे दूँगा । इस तरह मनीआर्डर कमीशन बच जावेगा । Ouspensky की किताब आप इतमीनान (संतोष) से पढ़ीये। जब आप आवें तो लेते आवें। ईश्वरने मदद की तो चंद सतर्रे (कुछ वाक्य) मैं उसके खिलाफ़ (विरुध्द) ज़रुर लिखूँगा । मैं उसकी Theory (सिध्दांत) को समझ गया हूँ । इसलिए कि उसने हटयोगीयों पर और कुंडलिनी जगानेवालोंपर हमला (खंडन) किया है । **आपकी ब्रह्मांड मंडल की सैर बफ़ज़लहू तक़रीबन (क़रीब) आधीसे ज़ियादा ख़तम हो चुकी है ।** डॉ. वरदाचारी के ख़त मुहब्बतभरे (स्नेहपूर्ण) आ रहे हैं। और बहुत अच्छी हालत की ख़बर (समाचार) दे रहे हैं । उन्होंने वाक़ई सब कुछ मुझे दे डाला जिसकी वजहसे मुझे, उनकी बीवी व बच्चोंकी भी क़ुदरती तौरपर

(सहजही) फ़िक्र रखनी (ध्यान रखना) पडती है । भाई, आपको आदमी खूब मिला और ओ बहुत अच्छी तरक्की (प्रगति) करेंगे ।

मुझे डॉ. कुलकर्णी व अज़ीज़म (प्रिय) राम किशन का पता नहीं मालूम है | उनके donation की रसीदात (रसीदें) जो मुनसलीका (नथ्थी किया) ख़तमें है , भेज दीजियेगा । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) । ख़त लिखते वक्त छोटी बच्ची की फिर याद आ गयी और अक्सर (प्राय:) आ जाती है । बिरादरान सत्संगीयों को दुआ (सत्संगी भाईयोंको आशीर्वाद) । मुझे छोटे बच्चों से जो ज़ियादा मासूम (निष्पाप) होते है, बड़ी मुहब्बत है । Shri. Laxmi Narsinham के बच्चे की भी याद आ जाती है और खिलानेका जी चाहता है।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

Attachment to letter dated 28.01.1957

Newspaper Pioneer of 20th Jan 1957, its cutting

Shahjahanpur
Jan 17, 1957

Sahaj Marg of realizing Divinity was expounded by Mahatma Ram Chandra, head of the Shri Ram Chandra Mission of Shahjahanpur, inaugurating the mission's branch at Gulbarga, South India recently. If you really aspire in good faith for the attainment of the Absolute, said the Mahatma, all that you have to do is to turn your attention that way with full sincerity of heart, linking yourself closely with one Ultimate Reality. The Divine current will readily begin to run through every fibre of your being, kindling the feeling of true love and devotion in the heart. God is simple and extremely subtle. In order to realize this subtlest being, we must take up means which are equally fine and subtle. The difficulty arises only, when intricate methods are

applied for the solution of this very simple problem. In other words they apply huge cranes for picking up a small sewing needle. We have set up a tiny creation of our own in the form of our individual material existence; having layers after layers of grossness and opacity. What is now to be done is to shatter off those layers of opacity one by one and assume the absolute state as we had at the time of creation. This is all the gist of the philosophy of our system, `Sahaj Marg'. Easiest and surest means to achieve this end is to surrender yourself to the Great Master in the true sense and become a living dead yourself. This feeling of surrender if cultivated by forced and mechanical means seldom proves to be genuine. It must develop automatically within you, without the least strain or pressure upon the mind. Even if the knowledge of the fact is retained, then it is not the true form of surrender. What remains to be done when you have surrendered yourself, in true sense; I believe "nothing". In this state you will be in close touch with the Reality all the time and the current of Divine effulgence will continue to flow to you without a break.

****

ॐ तत् सत

Serial No. 40 शाहजहाँपुर
No. B-94/SRCM Date 8/9.02.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आपका ख़त SRCM - BG -81 मोरखा (दिनांक) 28 जनवरी 57 मौसूल (प्राप्त) हुआ । खुशी हुई के श्री. श्रीधररावजी अभ्यास में लगे हुए हैं। और आप के भांजे ने भी शुरु कर दिया है ।

फारम (फॉर्म) श्रीपतरावजी का पहुँच गया । उसमें Signature of the member पर दस्तख़त नहीं थे । मैं ईश्वर सहाय से करा दूँगा । वरदाचारी के खुतूत (खतों) की नक़ल पहुँची और रिपोर्ट भी मौसूल (प्राप्त) हुवी । उत्सव में जज साहब आये थे । शुक्लाजी नहीं आ सके । उनसे आपका प्रणाम कह दिया था । जज साहब की लड़की बहुत सख़्त बीमार थी मगर फिर भी उनसे आये बगैर रहा न गया।

आप डॉ. K.C. वरदाचारी से Ouspensky Thought के मुतअल्लिक (बारेमें) सवालात ज़रुर करें । बड़े अच्छे सवाल हैं । बहू की हालत (स्वास्थ्य) ईश्वर की कृपासे कुछ अच्छी ही होगी । डॉ. वरदाचारी ने भी एक दो sitting के बाद खुशबू का एहसास (अनुभव) किया था । लडकियोंकी मुझे भी याद आती है और ईश्वर ने मदद की तो अगले साल फिर आने की कोशिश करुँगा और भाई, मुझे श्री.लक्ष्मीनरसिंहम के बच्चे की भी याद अक़सर (प्राय:) आ जाती है । ईश्वर उन सबको खुश रखे।

आपने यह सवाल किया है कि faith (श्रध्दा) किस तरह से बढ़ाया जाता है । अगर सिखानेवाले पर trust (विश्वास) किया जाए और उससे फ़ायदा (लाभका) महसूस (अनुभव) हो, तो यही बात सच्चे जिज्ञासू के दिल में faith बढ़ाना शुरु कर देती है ।

और भाई, आप यह चाहतें हैं के जीता जागता faith (श्रध्दा) आपके दिल में हमेशा रहे । मैं आपको यक़ीन (विश्वास) दिलाता हूँ, चष्मे बद्दूर, की (तुम्हे नज़र न लगे) आप में उसकी कमी नहीं है । एक हालत (स्थिति) यह ज़रुर आती है और ओ रुहानी हालत (आध्यात्मिक स्थिति) है के जहाँ पर उसका कलाव: (धागा) ऐसा मिल जाता है के अलाहिदा (अलग) हो ही नहीं सकता । ईश्वर वह हालत भी अता (प्रदान) करेंगे ।

एक बात आपने बडी टेढ़ी (जटील) पूछ ली के, अकल (समझ) और एहसास (अनुभव) कब एक हो जाते हैं। इसका छोटा जवाब तो यह है `बहम (एक दूसरे के साथ) लैला व मजनू एक ही महमिल (ऊँट का हौदा) में रहते है । इसका साथ आप यूँ समझें जैसे ज़िस्म (देह) और रुह (आत्मा) का या मन और बुध्दी का । क़रीब क़रीब दोनों लाज़िमो मलज़ूम (अनिवार्यत:, संग रहते) हैं । अक़ल (समझ) अपना दूसरा परतों (रुप) आगे चलकर ले लेती है जिसको Divine Wisdom (दिव्य प्रज्ञा या ईश्वरी समझ) कहते हैं । और जब यह हालत पैदा होती है तो एहसास (अनुभव) की भी शकल (रुप) बदल जाती है । यानी उसीकी मुवाफिक़त (अनुरुप) एहसास (अनुभव) करने लगता है ।

एक चीज़ बतानेवाली (अकल) हो जाती है और दूसरी ख़बर देनेवाली (अनुभव) । एक बात और लिखता हूँ के एहसास (अनुभव) का ताल्लुक घना, रुहसे (आत्मा) है और अक़्ल (समझ) का ताल्लुक घना, एहसास (अनुभव) की नज़दीकी से है । दूसरे मानोंमें एहसास (अनुभव) रुह (आत्मा) से नज़दीक (समीप) तर है और अक़्ल (समझ) एहसास (अनुभव) से क़रीबतर है । रुख़सत (बिदा) कोई चीज़ नहीं होती । उसका proper use (योग्य उपयोग) शुरु हो जाता है । आपका constant remembrance (सतत स्मरण) अक़्ली (बौध्दिक) नहीं है बल्कि दिली (हार्दिक) है । अक़्ल (समझ) और एहसास (अनुभव) के बारे में Varadachari को परेशान करो (कष्ट देना) ओ अच्छा जवाब देंगे। मेरा जवाब एक बे पढ़े हुए (अविद्यावंत) का है । Constant remembrance (सतत स्मरण) का एहसास (अनुभव) नहीं किया जाता बल्कि यह ख़ुद किया जाता है । तरीका: (पध्दति) आपको मालूम ही है ।

तिरुचिनापल्ली में दो आदमी और बढ़े हैं । सब सतसंगी भाईयों को दुआ (आशीर्वाद) और बच्चोंको भी दुआ (आशीर्वाद) फक़्त (इति)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: इस उत्सव में मिनजुमला (इनमें से) और आदमियों के, दो आदमी आसाम के आकर शामिल हुए । यह लोग सुबह आज, जा रहे हैं और दो बहनें भी आसाम से शरीक (शामील) हुईं। पंडित रामदास चतुर्वेदी के लड़के की शादी है । बारात 13 फरवरी को लखीमपुर से अलाहाबाद जायेगी । मेरा इरादा शिर्कत (शामील होने) का न था, मगर फिर कर ही दिया । वजह (कारण) यह थी के जज साहब की लड़की सख़्त बीमार है, उसको अलाहाबाद देखना था । मैंने पिछले ख़त का जवाब दे दिया था, जो पहुँचा होगा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 41 शाहजहाँपुर
No. B-108/SRCM Date 10.02.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मेरे ख़त आपको लिखने के बाद, डॉ. वरदाचारी का ख़त आया के ओ 3 फरवरी 57 को 11.30 P.M. बहुत सख़्त Colic Hernia Orchitis (उदरशूल आंत्रवृध्दि से) बीमार हो गये थे । अभी तबीयत सुधरी नहीं है । दर्द बहुत है । आप भी बतौर हमदर्दी (सहानुभूति के तौरपर) एक ख़त डाल दीजिएगा । ईश्वर इनको जल्द शफ़ा बख़्शे (स्वास्थ्य दे) । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 42 शाहजहाँपुर
No. B-129/SRCM Date 22/28.02.1957

मेरे राघवेंद्राव
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मुझे लखीमपुर, हस्बे ख़लद (लोगों की इच्छानुसार) या हस्बे ज़रुरत (आवश्यकतानुसार) आना पडा और आज तारीख 21 तक रहना पडा । कल जा रहा हूँ । मुमकिन (संभव) है आपका ख़त शाहजहाँपुर भेजा हो । उसका जवाब वहाँ से दे दूँगा। यहाँ बस उसका जवाब है जो गणेशनकी तहरीर (लिखने) से ईश्वर सहाय तक पहुँची और मेरे पास भी इससे मिली जुली चिट्ठी आई । उसका जवाब मैंने इस शक़ल (रुप) में दे दिया था के उसे देखकर गणेशनको शरम से पानी पानी हो जाना था । मगर भाई, Trichy का centre तो फफोला बन गया । समझता था, मगर फिर भी गणेशनको इख़्तियार तालिम (ट्रेनिंग का अधिकार) देना पडा और उसके लिए initiation (दीक्षा) करना पडा । पहले ख़ुतूत जो मेरे पास आये थे, यानी जुनूबी (दखनी) हिंद को जाने से पहले, उसकी

नक़लें सब आपके पास भेज दी थी । ख़ैर, वह मामला सुधर गया । अब उसकी आदत और mentality ने दूसरा रुख बदला । मजबूरन (विवश होकर) कुल तहरिरात (सारा पत्रव्यवहार) आँ अज़ीज (आपके) के मुलाहिजे (देखने) के लिए भेजना पडा ताकि आप मेरी गलती को सुधार लें । मैंने काम लेने से क़बल (पहले) गणेशन से कह दिया था के इन आदात (आदतों) पर खास निगाह (नज़र) रखें। मगर ओ बातें aggravate (बिगड़कर) होकर नमुदार (सामने आई) हुईं । आपको, मुमकिन (संभव) है की याद हो के, मैंने लिखा था और गणेशनको साफसाफ लिख दिया था के आपको इजाज़त पहले मिल जाने पर इसमें jealousy की बू का इज़हार हो गया (दुर्गंध प्रकट हुई थी) । आप भी मेरे इस ख़ियाल के मुआफ़िक (सहमत) न थे । मगर अब इसका इज़हार कुलियतन (पूर्ण प्रकट हो) रहा है।

मै जहाँ गया, कोशिश यही की के उस वक्त के जितने सत्संगी हैं, सबके शुकूक (संदेह) रफ़ा (दूर) होकर काम के बन जावे । चुनांचे (इसलिये) यही तिरुचिनापल्ली में भी किया और उसमें से एक शख़्स Mr. A. Krishnamurthy छाँट लिया, जिसमें मुहब्बत भी काफ़ी पैदा हो गई और सतसंग बढ़ाने की कोशिश कर रहा है । चुनांचे (अत:) इस के दिल (हृदय) को भी मैं मुहब्बत के सर चश्मे (श्रोतसे) से सींचता रहा । नतीजा यह निकला के trainer साहब को नागवार गुज़रा (असहनीय हुआ) और उन्होंने ऐसी तहरीरात (बातें) लिखी जो शायानेशान न थी (जो अशोभनीय थी) । इस चीज़ का starting point सिर्फ़ इतना है के मैंने A. Krishnamurthy को अपने ख़ैरियत से (सकुशल) शाहजहाँपुर पहुँचने की, यह समझकर, इत्तला (सूचना) दी थी के वहाँ सबको मय (सह) गणेशन के इत्तिला (सूचना) हो जावेगी । इसपर गणेशन को बहुत नागवार (अरुचिकर) हुवा । मुझे तो South India के काम के लिए गणेशन ऐसों की ज़रुरत नहीं । बल्कि राघवेंद्रराव जैसों की ज़रुरत है । किस्स: कोताह (तात्पर्य यह कि) जुमला तहरीरात (सारा पत्रव्यवहार) आपके पास रवाना (भेजा) है । इसलिए के उस centre के आप incharge हैं। अगर आप के तहरीर (लिखने) से, या समझाने से, गणेशन हमेशा के लिए राहे रास्त (सही मार्ग) पर आ जावे तो अच्छा है । और अगर न जावे तो मैं, अगर आपकी राय (सलाह) होती, तो उस centre को close कर दूँगा। करने वाला सब ईश्वर है। सिर्फ़ बहाना इन्सान का होता है। यह मेरे अंधेपन का नतीजा (निष्कर्ष) है के समझते हुवे मैंने यह नतीजा निकाल

लिया के ओ सुधर जावेगा और उसको इशारा (संकेत) भी कर दिया था के इन बातोंको संभाल ले ।

डॉ. वरदाचारीका ख़त श्री. ईश्वर सहाय के पास आया । उससे मालूम हुआ के उन्हे Typhoid हो गया है । भाई, आप के यहाँ का batch ख़ूब (अच्छा) है और यह वाक़ई (सच ही) आपकी क़ाबिलियत (योग्यता) और मुहब्बत (प्रेम) का नतीजा (परिणाम) है । ईश्वर मुबारक (मंगल) करे । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 43 शाहजहाँपुर
No. B-131/SRCM Date 28.02.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

शाहजहाँपुर आने पर आप का ख़त नंबर No. 95 -BG - SRCM मोरखा (दिनांक) 17 फेब्रुवारी 57 मिला । जो ऋण सरनाडजी बताते हैं ओ सही है । इसलिए मैंने अच्छा किया के जनीव नहीं पहना। हालाँकि (जब कि) एक दो पंडितोंने भी जनीव पहनने के लिए मुझे कहा। ख़ैर (अच्छा है कि), उस ज़द (चोट) से बच गया । ख़ैर (अच्छा), यह तो मज़ाक है। वाक़िया (सच) यह है के तीन ऋण (कर्जा) सबको चुकाने पडते हैं और उसकी फिलासफी भी उसी वक्त निगाहमें घूमने लगी । मगर कोई लिखने वाला नहीं इसलिए उसको यहीं पर छोडता हूँ । असल मतलब (मूल उद्देश्य) से गरज़ (मतलब) रखना चाहिए । आप तो यह तीनों कर्जा चुका रहे हैं । मैं तो भाई ऋषी ऋण के बजाय गुरु ऋण लफ़्ज़ (शब्द) डालना चाहता हूँ । मैं चाहता हूँ के इस कर्जे को अदा करुँ (चुकाऊँ) और यह उसी वक्त अदा (पूरा) हो सकेगा के अगर कोई एक ही ऐसा बना सकूँ जैसा के मुझको गुरु महाराज ने बनाया है । मगर वाक़ई (सच भी) उसका चुकाना भी उन्हीके हाथ है ।

दुनिया में रहकर उसके थपेड़े (धक्के) हर इन्सान को लगते ही रहतें हैं। और यह नया झंझट तनख़ाओंके (वेतन के) बारे में पैदा

हुआ । अगर आप उनको प्रीतम (सद्गुरु) की तरफसे न समझ सकें तो शैतान की तरफ से समझ लेवें, तो भी ढारस (हिम्मत) हो जावेगा । भारीपन बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपासे) हट जावेगा और मुमकिन (संभव) है कि हट गया हो। Ouspensky की किताब अभी भेजने की ज़रुरत नहीं है । उसको summer vacation (गर्मी की छुट्टियों) में लाने के लिये रखिए ।

पत्रिका छप गया है । आप ने एक दरजन कापियाँ मांगी हैं । इस ख़त के साथ भेज रहा हूँ । फिर आसाम से आती रहेंगी। वहाँ डाकखाने में strike (हड़ताल) चल रहा है । श्री. श्रीधररावका हाल श्री. सरनाडजीसे मालूम हो जावेगा। जज साहब की लडकी बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) अब अच्छी है ।

डॉ. वरदाचारी का आज ही ख़त आया । अब ओ अच्छे हैं । मगर कमज़ोर बहुत हो गये हैं । इतनी सख़्त (गंभीर) बीमारीमें भी ओ बहुत cheerful रहा । यह उन्हीकी हिम्मत है । भाई, इतनी सख़्त बीमारी में जो मोहब्बत (प्रेम) भरे उन्होंने ख़त लिखें हैं, यह ख़ुद अपनी मिसाल (आदर्श) है । एक ख़त में लिखा है जिससे मालूम होता है के ओ सरापा मुहब्बत (एडी से चोटीतक प्रेममय) हो गया है । ओ यह है, उसके feelings (भावनाओं) को आप गौर फ़रमावे (ध्यान दीजिए)। Master ! Thou art the ocean of bliss, perfection & power. I am but thy body, existing for thee, governed by thee. O God, have grace for me.

बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)। सब भाईयोंको दुआ (आशीर्वाद) कह दीजिएगा |

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 44
No. B-188/SRCM

शाहजहाँपुर
Date 25.03.1957

मेरे राघवेंद्ररावजी,
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आपका मसर्रत नामा (हर्षपूर्ण पत्र) No. 107 -BG SRCM of 18 -3 -1957 मौसूल (प्राप्त) हुआ । पढ़कर ख़ुशी हुई । मैंने पत्रिका और कुल गणेशनकी मुरासलात (पत्रव्यवहार) बज़रिये (द्वारा) पार्सल 28 फरवरी 57 को भेजी थी । उसमें आपके लिए और सरनाडजी के लिये भी, आप के ख़तों के जवाब के दो ख़त थे । मगर 22 मार्च 57 को पार्सल बिलकुल टूटा हुआ, जिसमे पता भी नुचा (खरोंचा) हुआ था, इस तहरीर (टिप्पणीके साथ) से वापिस हुआ के श्री. राघवेंद्रराव नहीं मिले । पार्सल इस क़दर टूटा था की मुझे अंदेशा (संदेह) है की ख़ुतूत (पत्र) कहीं उसमें से गिर न पड़े हो । चूँकि ड़ाकिया मुझपर मेहरबानी करता है , उसने फिर पता लेकर भेज दिया जो अब पहुँचना चाहिए ।

ख़त से मालूम हुआ है कि दस जिल्दे पत्रिका की, आसाम से पहुँच गई । लिहाज़ा (इसलिए) जो ज़रुरत से ज़ियादा हो, उनको कुतुबखाना (ग्रंथालय) व दीगर (अन्य) interested (रुची रखनेवाले) लोगों और दोस्तों को तकसीम (बाँट) कर दीजिए । और एक कापी भाई श्री. माधवरावजी को ज़रुर भेज दीजिए ।

मैं जब दौरे से घर पर वापिस हुआ, त्रिची से श्री. कृष्णमुर्तीका ख़त मिला । मैंने उनको ख़ैरियत (सकुशल) से पहुँचने की इत्तला (सूचना) दे दी । मतलब यह था के मेरे पहुँचनेकी इत्तला (सूचना) वगैरा सबको हो जावेगी । यह चीज़ उनको नागवार (नापसंद) हुई के अख़लाक़न और तहज़ीबन (शिष्टाचार और सभ्यतावश) मुझे इत्तला (सूचना) गणेशन को करना चाहिए था । इसलिये के मैं उसका मेहमान (अतिथी) था । और यह भी लिखा के South India is the land of etiquette (दक्षिण भारत शिष्टाचारकी भूमी है) और अगर मुझे mission (संस्था) फैलाना है तो इस तहजीब (सभ्यता) का लिहाज़ (ध्यान) रखिए । और शायद यह भी लिखा है के कृष्णमूर्ती आपसे ज़ियादा मुहब्बत (प्रेम) करतें हैं इसलिए आपने उनको लिखा है । मैं तो सब वाक़ियात (घटनाएँ) समझाते हुए उससे माफ़ी माँगी और लिखा की जब तक आप मुझे माफ न करेंगे मैं बेचैन ही रहूँगा । उसके जवाब में उसने यह लिखा है की आपको तहज़ीब (शिष्टता) बरतना चाहिए । मैंने रफ्त व गुजिस्त (रफ्तो गुजिस्त - समाप्त) कर दिया । इससे आपको (गणेशन को) शय (विषय) मिल गई । श्री. ईश्वर सहाय को भी तहज़ीब (शिष्टता) सिखाई और उनको सख़्त लिखा । उन्होंने भी वाकयात (घटनाओं) को समझाते हुए माफ़ी माँग ली । इसको भी मैंने नज़र अंदाज़ कर दिया । इसके बाद गणेशनने एक पोस्ट कार्ड ईश्वर

सहाय को लिखा के जो underlined था । If you don't believe in my devotion, my duty to the mission ends. एक initiated member को इतना बदतमीज़ (अशिष्ट और उध्दत) होना मुझे गवारॉं (सहन) न हुआ। मैंने उनको लिख दिया "आपकी सब मुरासिलात (पत्रव्यवहार) branch को भेज रहा हूँ । अगर श्री. राघवेंद्रराव की यह राय हुई तो मैं Trichy का centre बंद कर दूँगा । "उसका जवाब जो मैंने दिया है, उसकी नक़ल भी पार्सल में रखी हुई है। उसके बाद जो पोस्ट कार्ड आया और उसका जवाब दिया है उस पोस्टकार्ड की, और उसके जवाब की नक़ल, इस ख़त में भेज रहा हूँ । मैंने उसकी अख़लाक (सदाचार) की हालत सब, उसको देखते ही ताड़ ली (समझ लिया) थी और उसको हिदायत (सूचना) की थी के सब बातें बदलना चाहिए और मैंने श्री. ईश्वर सहाय से कहा था के न तो ये शख़्स (व्यक्ति) initiation के क़ाबिल (योग्य) है और न training के लिए । उन्होंने कहा के उसको हिदायत (सूचना) कर दी जावे, ओ संभल जावेगा।

मुझे initiated members पर गुस्सा आता है और उनके किसी बेजा (अनुचित) काम को देख नहीं सकता इसलिए कि कायदन (विधिवत / तत्वत:) ओ रुहानी औलाद (आध्यात्मिक संतान) है । और ज़िंदगी के बाद गुरु की कमाई का हिस्सा बतौर विरासत के मिलता है और ख़ुसूसन (खासकर) जो trainer हो, उनके ज़िम्मा (ज़िम्मेदारी) दूसरोंका अख़लाक (सदाचार) संभालना है ।

"जो कुफ्र अज़ काबा बरखे जो कुजा मांद मुसलमानी"

जब काबे में कुफ्र (नास्तिकता) पैदा हो जाय तो भला मुसलमानी कहाँ रह सकती है?

Trichy में उसके बाद बहुत सी controversy गणेशन और कृष्णमुर्ती में पैदा हुई । मैं गणेशन की शान रखते हुए सबको राहे - रास्त (सही रास्ते) पर ले आया । मुझे तो कोई कितनाही बुरा भला कहे परवा नहीं, इतना बेहया (बेशरम) हूँ । मगर जहाँपर के मिशन के interest का ख़याल है वहाँ बरदाश्त (सहन) नहीं होती । अब आप गणेशन को लिख सकते है।

अब आपके ख़त का जवाब आता है । दुआ (आशीर्वाद) ।

ईश्वर आपकी उम्रदराज़ करे । (ईश्वर आपको दीर्घायु करे।)

और दुनिया और उक़बेमें नेकनाम रहे। (और इह और परलोक में आपकी अच्छी ख्याति रहे।)

और ईश्वर ओ क़ुदरत अता करें (और ईश्वर ओ क्षमता प्रदान करे)

के मिशनमें चार चाँद लगाए।

मेरी तबीयत (हृदय) आपसे इस क़दर (इतना) खुश है के अपना गोश्त (माँस) व पोश्त (चमड़ी) बेचकर सब कुछ दे सकता हूँ। ईश्वर आप में काबिलियत (क्षमता) का माद्दा इससे ज़ियादा (अधिक) पैदा करे। भाई, यह जुमला (वाक्य) आपने गणेशनको खूब (बहुत अच्छा) लिखा। मैंने भी Trichy में उनसे यह जुमला (वाक्य) कहा था। कबीर ने लिखा है -

जब हम थे तब गुरु नहीं, जब गुरु है हम नहीं,
प्रेम गली अती साँकरी , उसमें दो न समाए ।

Forbidden fruit (निषिध्द फल) जो आदम (मनुष्य) ने खाया था जिसके वजह से ओ जमीन पर फेंके गये । बकौल अहले इस्लाम (इस्लाममें श्रध्दा रखनेवालोंके अनुसार) हम उनकी औलाद (संतान) माने जाते है । तो उसका असर (प्रभाव) हममें भी होना चाहिए । मगर भाई, इस सानिह (घटना) को करोड़ों बरस (वर्ष) गुज़र गए, अब आपके खून में उसका असर (प्रभाव) कैसा? ओ (वह प्रभाव) तो खून में मिल मिलाकर सब ख़तम हो गया । हाँ हव्वा जो उनकी स्त्री थी, उन्होने अपना साथ नहीं छोडा । इसलिए नसलन् बाद नसलन् (वंशागत), बतनन् बाद बतनन् (पीढी दर पीढी) उसका जुहूर (प्रकट होना) साथ ही साथ रहा । यही हव्वा, हम को अपने घर (श्रोत) से लौटाकर बेहिश्त (स्वर्ग) में लाई, और जुतियाँ चिटकाते (बुरे कर्म करते) हुए ज़मीन पर आये ।

भाई, क्या थे, क्या हो गये ? अब उन हव्वा (माया) से पीछा छोड दिये, तो फिर आप बेहिश्त (स्वर्ग) में पहुँच जावेंगे और जब आदम होने (अहं) का ख़याल भूलायें, तो फिर जहाँसे के आप आए थे वहीं वापस हो जावेंगे । आदम और हव्वा की जो कहानी है, वही हमारे यहाँ मनु और सत्यरुपा का क़िस्सा है। आप आदम होने (अहं) का अंदाज (ख़याल) भुलाएँ और हव्वा (माया) से रिहाई (मुक्तता), मेरे जिम्मे है। आदम का अंदाज खोने (अहं के ख़याल को भूलने) के लिए आप शगल राबिता (शक़ल का ध्यान) कर ही रहे हैं। गालिब ने कहा है,

"न था कुछ तो ख़ुदा था,
कुछ न होता तो ख़ुदा होता
डुबोया मुझको होने ने,
न होता मैं तो क्या होता।"

श्री. रामकिशनजी को लिख़ देना के अब मैं अच्छा हूँ। मेरी दुआ (आशीर्वाद), उनको, राघवेंद्ररावजी को और उनके भाई को लिख देना । ईश्वर करे श्री. किशनरावजी का बच्चा जल्द सेहतबादी और तंदुरुस्त हो जावे (स्वास्थ्य प्राप्त करे)। यहाँ सब बच्चे चेचक में मुबतिला (पीड़ित) रहे । अब उससे फ़ारिग़ (मुक्त) हुए, तो बडी लडकी जो second year का इम्तीहान (परिक्षा) कल से देगी, आधा सिर के सरदर्दसे, बुखार और सख़्त खाँसी में मुबतिला (ग्रस्त) हो गई । दिनेशचंद्र की हलक (गले) से खून आ रहा है । X-Ray से मालूम हुआ के फेफ़डेमें कोई ख़राबी नहीं है बल्के सीनेके अंदर कोई gland बढ़ी हुअी है। ओ भी इम्तेहान (परिक्षा) हाइस्कूल का दे रहा है। मगर पढ़नेमें उसने कुछ कोशिश नहीं की है। गणेशनने मुझको अपनी डायरीकी नक़ल भेजी थी। उसमें मैंने बहुत कुछ इशारतन (संकेत रुपसे) समझाया है।

"Received your special report. I feel that you are growing higher day by day internally but unless these things affect the daily routine of your life, the spirituality has its own undermining. For this a good deal of labour, toleration & devotion are necessary. There is no limit to these things, one who digs his own grave in his own self is a man reckoned to be a big personality ultimately. What is the way? Think yourself & write to me in the next letter."

एक नक़ल डॉ. पी. सेन (P. Sen) Calcutta की आपको भेज रहा हूँ । पढ़कर फाईल में लगा लीजिएगा । इसमें उनके दो एक सवाल (प्रश्नों) का जवाब (उत्तर) है। इससे कुछ आपको भी मालूम हो जावेगी । इसलिए के लोग अक्सर (प्राय:) ऐसे सवाल (प्रश्न) पूछते है।

ईश्वर करे बहू तंदुरस्त (स्वस्थ) ही बनी रहे। बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) । सब भाईयोंको नमस्ते । मुझे आपके भाई श्री. माधवरावजी की याद अक्सर (प्राय:) आ जाती है । मुमकिन (संभव) है ओ भी मेरी याद करते हों ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 45 शाहजहाँपुर
No. B-219/SRCM Date 08.04.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आप की दो चिठ्ठीयाँ 108-BG-SRCM मय 110-BG-SRCM मोरखाँ (दिनांक) 18 मार्च एक साथ मौसूल (प्राप्त) हुई । गणेशनने मुझको अक्सर (बहुधा) और पिछले खुतूत (ख़तों) में भी चाल (धूर्तता) की बातें लिखी हैं। चुनांचे (जैसे कि) एक दफ़े (बार) उसने लिख दिया के मेरी बीवी हामिला (गर्भवती) है और कहती है के गणेशन मुझसे पूछे के लड़का होगा या लड़की और अगर उनका कहना सही हो जावे तो उनको रुहानी आदमी (आध्यात्मिक व्यक्ति) मानूँगी । मुमकिन (संभव) है बहु ने इससे यह कहा भी हो मगर उसको वहीं समझा देना चाहिए था । मैंने उनको जवाब दे दिया के अगर रुहानियत (आध्यात्मिकता) की जाँच (परख) सिर्फ़ इसी पर मबनी (निर्भर) है तो उनके सिखानेके लिये एक जोतिषी काफ़ी होगा । इसको लड़की पैदा हुई है । यह बात सही है के उसमें काम करनेका जोश (उत्साह) है । मगर अपने साथियोंको गिरवीदा (आकर्षित) कर लेना, यह काबिलियत (योग्यता) मालूम नहीं होती । एक A. Krishnamurthy हैं, जो जाती के अपने यहाँ के लिहाज़ से, सुनार हैं और उन्हीको मैंने अपने पहुँचने की ख़बर दी थी । गणेशन उनकी शिकायत ही लिखता रहता है । और लिखता है, कृष्णमूर्ती मुझे यह इल्ज़ाम (दोष) देते हैं के फलाँ साथी ब्राह्मीन है, इसलिये ओ उसपर ज़ियादा रुजू (ध्यान देता) रहता है । मैं नहीं समझता के इसका क्या मतलब (अर्थ) है । कुछ रकाबत (ईर्ष्या) गणेशन के दिलमें मुमकिन (संभव) है मौजूद हो, बस इस ख़ियालसे कि मैं इससे ज़ियादा मुहब्बत करता हूँ । हालात सही (सही स्थिति) ये है के जो मुझे खींचता है मैं उस तरफ खींचें जाता हूँ । मगर इसके माने यह नहीं के दूसरोंसे मेरी मुहब्बत कम रहती है ।

इतने ख़त लिखने पर भी गणेशन को यह एहसास (संवेदना) नहीं है के उसकी गलती है । मैंने उससे माफ़ी मांगी फिर भी उसको कुछ एहसास (बोध) न हुआ । ईश्वर सहायने भी, जब उन पर डाँट पडी तो उन्होंने भी, माफ़ी ही माँगी । इसपर जो पोस्ट कार्ड लिखा, जो आपके पास भेज दिया गया । मुझे तो यह ख़याल होता है के ओ मामूली (साधारण) इन्सानी etiquette (शिष्टाचार) से भी नावाक़िफ़

(अनभिज्ञ) है । मिशन का मेंबर और फिर trainer (प्रशिक्षक), उसकी अख़लाकी (शिष्टाचार संबंधी) कैफ़ियत (हालत) इस क़दर (इतनी) बिगडी हुई है । कितनी अफ़सोस (दु:ख) की बात है, मैंने अभी एक पोस्ट कार्ड में लिखा है के ओ आपसे Gulbarga जाकर मिले और उनका इसमें खर्च भी न होगा । क्योंकि Railway pass भी मिल सकता है और उनका फ़र्ज (कर्तव्य) भी है के preceptor से जहाँ तक हो सके मिलता रहे । मगर मुझे डर है के उसके जवाब में कोई डाँट डपट वाला जुमला (वाक्य) फिर न आ जावे । इसलिये के मैंने उसको एक दफ़ा (बार) यहाँ बुलाने के लिए लिखा था । इस ख़त पर उसने मुझे बडा सख़्त (कठोर) जवाब दिया था । मैंने फिर यह लिख दिया के अच्छा फिर मैं ही चला आऊँगा । मैं आपकी राय (अभिप्राय) से मुवाफ़िक़त (सहमत) करता हूँ के Trichy का Centre न तोडा जावे और कोई आपके मातहत (अधीन) centre बिला (बिना) आपके राय (सलाह) के नहीं तोडा जा सकता । अब उसका पानी आज़मानेके (जाँचनेके) लिए आप भी कुछ लिखकर देखिये । उसकी इस बदतमीज़ी (उद्दंडता) का ख़त श्री. ईश्वर सहाय के माफ़ी माँगने के बाद जो आया है ओ मुझे ज़ब्त (सहन) न हो सका । नहीं तो मैं रफ्तो गुज़श्त (गया-गुजरा / अनदेखी) कर ही चुका था । मैंने जो के दो ख़त इस पोस्ट कार्ड से पहले भेजे थे, जिसकी नक़लें आपके पास मौजूद हैं, उसका कोई जवाब नहीं आया । सिर्फ acknowledge कर लिया है । इन सबका नतीजा (परिणाम) यह हो रहा है के मुझसे फैज़ (आध्यात्मिक लाभ) नहीं पहुँच रहा है और इसका उसे एहसास (बोध) भी नहीं अगर उसका initiation न हो गया होता और रुहानी ताकत मैंने बवक्ते इजाज़त (प्रशिक्षक बनाते वक्त) भर न दी होती तो गणेशनसे दूसरे को भी फ़ायदा न पहुँचता । देखें, ओ ईश्वर सहायसे माफ़ी माँगते हैं या नहीं और उनकी तबीयत (हृदय) उनके ख़ुद (अपनी) गलती कुबूल (स्वीकार) करती हैं या नहीं । बस यहीं मारके की (महत्वपूर्ण) बात है । आपने तो कुछ लिखा ही होगा । देखें, आप भी डाँटे जाते हैं या नहीं।

अब आपके ख़त के जवाबपर आता हूँ । इस फ़िकरे (वाक्य) के बाद जहाँ मोहब्बत (प्रेम) है, वहाँ गालियाँ भी गवारा (रुचिकर) है । मगर भाई, इन गालियोंमें भी अजीब मज़ा (अनूठा आनंद) होता है और सिर्फ़ बेखुदी (आत्म विभोर स्थिति) में निक़ल सकती है । ऐसा शख़्स (व्यक्ति) अख़लाक (शिष्टाचार) से कभी नहीं गिरा होता । सूरदास का एक मशहूर (प्रसिध्द) पद लिखता हूँ जो कृष्ण प्रेम में उन्होने कहा है-

बाहें छुडाये जात हो निर्बल जान के मोहे,

हृदय से जब जाओगे मरद जानियो तोहे ।

यह उन्होने उस वक्त कहा जब के बीनाई (दृष्टी) न होने की वजह (कारण) से ओ कुँएमें गिर पडे थे और कृष्णजी महाराजने उनको निकालने के बाद, उन्होंने बाहें पकड ली थी के जाने नहीं दूँगा । यह हज़रत (महाशय) छुडाकर भाग गये । उस वक्त इनके ज़बान से यह लफ़्ज़ (शब्द) निकले थे ।

गणेशन के बारें में जो आपने कहा है के उसका violent temper है, कुछ तो होगा मगर ज़ियादा मालूम नहीं होता । अपने शख़्सियत (व्यक्तिमत्व) और अहं का एहसास (ध्यान) ज़ियादा मालूम होता है । और बेवुकूफ़ चालाक है । मुझे भी उसकी तसनीफ़ात (लिखावट) से धोका हुआ और ख़ुशामद (प्रशंसा) को मोहब्बत (प्रेम) समझ बैठा । मगर देखा, तब मुझे एहसास हुआ मोहब्बत नहीं, खुशामद है | मगर जब उसको training के लिये यहींसे तैयार कर ही चुका था, दिल न चाहते हुए भी उसको इजाज़त दे ही दी । आपने अच्छा किया के लखीमपुर का मेरा मसवदा (मसौदा-प्रारुप) गणेशन के पास भेज दिया । देखें क्या असर (प्रभाव) लेता है । गलतियाँ सबसे होतीं हैं और यह तक़ाज़ा बशरीयत (इन्सानी स्वभाव) है और भाई, मुझसे मेरे गुरु महाराज ने यह कहा था के मैं सबकी गलतियाँ माफ करुँगा मगर तुम्हारी एक गलती भी माफ नहीं कर सकता । मैं ख़ुश तो ज़रुर हो गया के ये खास बरताव (व्यवहार) उनकी ख़ास मुहब्बत (प्रेम) की दलील (प्रमाण) है । रवायत (कहते) है के मजनूँने लैला के फ़ुरकत (विरह) में अपने तन (शरीर) में खाक (धूल) रमाली (लगाई) और भिकारी की सूरत (रुप) इख़्तियार (धारण) करके गदागरी (भीख माँगने) करने लगे । लैला हर जुमेरात (गुरुवार) को मोहताजों (गरीबोंको) को रोटियाँ बाँटती थी । दिली मनशा (इच्छा) तो उसका यही थी के मजनूँ भी रोटियाँ लेने आवें। मजनूँ जब अपना कासां (प्याला) लेकर पहुँचता था तब बजाय रोटी देने के ओ उसका प्याला फोड देती थी और मजनूँ इस बरताव (व्यवहार) को देखकर वज्द में आ जाता था (आत्मविभोर हो जाता था) और नाचने लगता था । लोगों ने पूछा, के यार (दोस्त) अजीब ऐमख (मूर्ख) आदमी हो, के सबको तो रोटियाँ देती है और तुम्हारा प्याला फोड देती है और आप मुहब्बत (प्यार) में नाचने लगते है । उसने कहा, ये बर्ताव (व्यवहार) सिर्फ़ मेरे साथ में है और ये उसकी मुहब्बत (प्यार) की ख़ुसूसियत (विशेषता) है।

आपने लिखा है की, आप मुझे बुला लें । तो मैंने तो जबसे ख़त आया दिनोंका शुमार (गिनती) करने लगा हूँ | मैं ख़ुश क़िस्मत (भाग्यवान) के, हमारे बुजुर्ग (बडे) लोग इस हक़ीर (नाचीज़) की बातोंको पसंद करते है और भाई, मैं वालिद साहब (पिताजी) का ममनून मश्कूर (आभारी और उपकृत) होऊँगा के अगर ओ इस हक़ीर के (नाचीज़) लिए दुआ (आशीर्वाद) करते रहे ताकि मुझे नजात (मुक्ती) से भी नजात (मुक्ती) मिले । मेरा उनसे प्रणाम कह देना।

आपने लिखा है, के Captain Iyengar के पास Poona गये और इनके दिल में बजाय मुहब्बत के आप मेरी रक़ाबत (स्पृहा) पैदा कर बैठे । अगर यही बात इनमें पैदा हो जावे के दिल में मुझसे रक़ाबत (स्पृहा) का ख़याल रहे तो फिर नतीजा (परिणाम) यह हो के, गुरु महाराज के आस्तानपर (दरवाजे / चौखट) सरके बल गिरे । और यह इतना बडा काम आपका है के दूसरे का करना मुश्किल (कठीन) है ।

अब भाई, इतना तो बतावें के कब आ रहे हो और कब से तातील (छुट्टियाँ) है और मुझे भी भाई, अभी से बेचैनी शुरु हो गई और अब की, वक्त ज़ियादा देना, ताके मैं आपको खूब समझ लूँ । कुछ दिल में सोच ही रहा हूँ और इसकी तैयारी तो मैं अभी से ही शुरु कर दूँगा और जब मैं आप के यहाँ आ जाऊँ तो उसके ऐवज (बदले) में तुम जितना चाहो मुझे ठहरा लेना । भाई श्री. माधवराव जी ने भी Hyderabad में मुझसे वायदा किया था के आपके हमराह (साथ) ओ भी आवेंगे । मास्टर साहब के लडके की शादी की तारीख ग़ालिबन (प्राय:) 18 मई मुक़र्रर (निश्चीत) होगी । हम, आप, सब शादी में भी शरीक (शामील) होंगे। बहुकी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) की फ़िक्र (चिन्ता) मुझे अक्सर (प्राय:) हो जाती है। ओ इस क़दर (इतना) घर का काम करतीं हैं फिर भी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) नहीं संभलती। मुझे Gulabi की बहुत याद आती है। आज़ श्री. ईश्वर सहाय एक रोज़ के लिये आ गये । ओ Mohammadi में invigilator हैं जो Shahjahanpur से 20 मील पर है । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: Dr. K . C. Varadachari अपने यहाँ सतसंग बढ़ाने की कोशिश में है और अच्छे अच्छे आदमीयों की तलाश (ढूँढने) में। दो

एक तो आ भी चुके है, उनको मैंने भी अभ्यास का तरीका तहरीर (पध्दति लिख) कर दिया है ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 46 लखीमपुर खीरी
No. B-255/SRCM Date 27/29.04.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आप का ख़त नं. B.G. 117 मोरखा (दिनांक) 22 April 57 मिला । मैं उसका जवाब लखीमपुर से दे रहा हूँ । मैं यहाँ 3 यूम (दिन) के लिए इस ज़रुरत से आया था के दिनेश को एक डॉक्टर को दिखाना था । इसलिए के Typhoid के बाद खाँसी के साथ खून आने लगा था जो के आजकल बंद है । X-ray भी उसका कराया था । सीनेमें कोई बीमारी के अलामत (लक्षण) नहीं है । मगर सीनेके blood vessels में खून ज़ियादा भरा हुआ है जिसकी वजह (कारण) डॉक्टर कुछ तय (निश्चित) नहीं कर पाये । मगर कोई फिकर (चिन्ता) की बात नहीं है । श्री. माधवरावजी आते वक्त Hyderabad में मिले थे । उनके कहने के मुताबिक (अनुसार) एक सहल तरीका (आसान पध्दति) उनको बता दिया था। और यह अंदाज (अनुमान) कर लिया के उनको मुझसे मुहब्बत (प्रेम) है और ओ बगैर शुरु किये नहीं रह सके । आप के भांजे रामकिशनराव की हालत सुनकर बहुत खुशी हुई । ईश्वर उनको तरक्की (प्रगति) दे। बडा अच्छा है के रामकिशनराव भी आ जावें।

श्री. लक्ष्मीनरसिंहम के लिए कुमारस्वामी और मुदलियार के मकान के पते लिखता हूँ। मकान का नंबर मुझे याद नहीं। मैंने कुमारस्वामी को लिख दिया है। ओ ख़ुद आपको पूरा पता लिख देंगे।

Shri. C.M.T. Mudaliar
5 Banglow, Pensioner Street
Madras.

मकान Chintadri Pet से दक्कन की तरफ थोडी दूर पर है।

N. Kumarswamy, Maistry street
Near T.T.V. High School, Madras.

स्कूल से पश्चिम के तरफ जो रास्ता है इसपर 200 क़दम चलकर एक रास्ता दक्कन की तरफ जाता है। वहाँ से 5 या 6 मकान छोडकर लबेसडक (सड़क के किनारे) मकान है।

बहू को कोई tonic वगैरा देना चाहिए ताके कमज़ोरी रफ़ा (दूर) हो।

आपने गणेशन को ठीक लिखा । मैंने भी एक ख़त उसको लिखा है, जिसकी नकल भेज रहा हूँ । उन्होंने मुझसे 23 circles की तफ़सीर (भाष्य) के लिए पूछा था । दूसरे एक साहब को ख्वाब (स्वप्न) में Lord Venkateshwar ने मना किया था के इस रास्ते को इख़्तियार (स्वीकार) न करो। उसी का जवाब था। उन्होंने ईश्वर सहाय को माफ़ी का ख़त लिखा । आपके कहने के मुताबिक (अनुसार) उसके बारे में श्री. ईश्वर सहाय आपको लिखेंगे ।

उसके तबीयत (मन) में इस बात का एहसास (संवेदना) नहीं है उसकी गलती थी। पहली गलती जो उसने की थी, उसको मैंने लेस-पोत करके उसको एहसास (बोध) कराया की उसकी गलती थी और फिर मुहब्बताना तौर पर (प्रेमपूर्वक) उसको राज़ी (मनाया) भी कर लिया । मगर इस मर्तबा (बार) दूसरी बात है ।

"जिसके रुतबे (ओहदे) हो सिवा (अधिक),
उसको सिवा (अधिक) मुश्किल (कठीनाई) है। "

बच्चोंको दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): गणेशन ने 5 copies of magazines II issue मंगवाई थी ओ भेज रहा हूँ | जब आप आवेंगे तो किताब In Search of the Miraculous ज़रुर लेते आवें।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 47
No. B-259/SRCM

शाहजहाँपुर
Date 03.05.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मैंने एक ख़त B-255-SRCM लखीमपुर से रवाना किया (भेजा) था, जिसमें गणेशन को जो ख़त मैंने भेजा था, उसकी नक़ल मैंने उसमें रख दी थी । अब उसका जवाब जो आया है ओ भी आप के मुलाहिज़े (देखने) के लिए भेज रहा हूँ । गणेशन के ख़तों में खुशामद थी न की मुहब्बत । मुझे कल रात सिर्फ़ दो या तीन घंटे मुश्किल (कठीनाईसे) से नींद आई । बाक़ी श्रीमान गणेशनका ही ख़याल (विचार) रहा और साथ ही उसकी फ़िक्र (चिन्ता) के मैंने जान बुझ के क्या गलती की है और मैंने उनसे कह भी दिया था के न तुम initiation के लायक (योग्य) हो और न तालिम (प्रशिक्षण) करने लायक (योग्य) । इसलिए के तुम्हारी यह mentality है। उसने वायदा किया (वचन दिया) था की मैं बदल दूँगा। मैंने उसपर ऐतबार (विश्वास) किया और भाई मुरव्वत (संकोच) में मेरे आँखेंपर पर्दे पड गये । मैं उनके वायदे करने (वचन देने) पर भी राज़ी (तैयार) न हुआ फिर श्री. ईश्वर सहाय ने उनकी सिफ़ारिश की । मज़बूरन (विवश होकर) करना पडा ।

इस सब की बुनियाद jealousy (मत्सर) है । जिसको मैंने पहले ख़त में आप को लिखा था जब के गणेशनने मुझे challenge (चुनौति) दिया था । उनको यह नागवार (नापसंद) था के मैंने आप को initiate (दीक्षित) पहले कैसे कर लिया और इजाज़त भी गणेशनसे पहले दे दी । आप इस ख़याल से मुत्तफ़िक (सहमत) न हो । इस मर्तबा (बार) मेरे पास और श्री.ईश्वर सहाय के पास ख़त आये, उनमें इसी तौर (तरह) की बू मौजूद थी । उनको यह नागवार (नापसंद) था के Krishnamurthy से मैंने ज़ियादा मुहब्बत (प्यार) की इसलिए उनको ख़त भेजा । उनका ख़त यहाँ आ चुका था । मैंने यह समझ करके गणेशन को भी इत्तला (सूचना) हो जावेगी, Krishnamurthy को ही लिख़ दिया । अलावा (सिवाय) उसके मैंने गणेशन से कह भी दिया था के मैं Krishnamurthy को तुम्हारा मददगार (सहायक) बनाना चाहता हूँ । दूसरा कुसूर (गलती) यह हुआ के गुलबर्गा से भी कुछ मोहब्बत के अल्फाज (शब्द) मैंने उनको लिखकर भेजे थे। इसलिए के मैंने कृष्णमूर्ती के कहने पर वादा (वचन दिया) कर लिया था के गुलबर्गा पहुँच कर मैं इत्तला (सूचना) दूँगा।

उसका ख़त गौर (ध्यान) से पढ़ीयेगा । मेरे समझमें नहीं आता के अब मैं क्या करुँ? ऐसी हालत में initiation तो उनकी करतूत (करनी) ही से ख़ुद ब ख़ुद (स्वयं) ख़त्म हो जावेगा । जिसको गुरु नहीं कर सकता तावक्ते (जब तक) की उसको special power न होवे । जो हजारो बरस में कहीं मिलती है । अब मैं ख़तावार (दोषी) ठहराया

जा रहा हूँ, तो मेरी तबीयत (मन) में आता है के उसका इन्साफ (न्याय) ईश्वर पर छोड दूँ । यह एक तरीका (पध्दति) है । इसमें अगर मैं ख़तावार हूँ तो मुझे सज़ा मिलेगी और अगर ओ है तो उसको; मगर कुदरत का (प्रकृति) step बहुत serious होगा । मगर उसमें जिसकी ख़ता (गलती) होगी ओ ज़ाहिर (प्रकट) हो जायेगी । मैंने तो इस ख़त का जवाब नहीं दिया । आपकी उनपर जैसी राय (सलाह) होगी वैसा करुँगा । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुझे गुलाबी की बहुत याद आती है।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 48 शाहजहाँपुर
No. B-325/SRCM Date 28.06/01.07.1957

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आँ अज़ीज का (आपका) हैद्राबाद से भेजा हुवा ख़त (पत्र) मिल गया था । मगर चूँकि (क्योंकि) आप अनक़रीब (उसके बादही) महबूबनगर जानेवाले थे, मैंने ख़त का ज़वाब देना बेसूद (व्यर्थ) समझा, इसलिए के ख़त पहुँचने तक आप हैद्राबाद छोड देते ; और महबूब नगर का पता आपने तहरीर (लिखा) नहीं किया था । आपका ख़त No. 122-BG-SRCM of 7-6-57 मौसूल (प्राप्त) हो गया । उसके जवाब में ताखीर (देर) हुई । वजह (कारण) यह थी के मैं 9 जून 57 को बारा रोज़ (दिन) के लिए लखीमपुर चला गया था । वहाँ से लौटने के बाद ख़तों का अंबार (ढेर) लगा हुवा था । अब दो एक ख़तों का जवाब देना रह गया।

Mr. M.K.Ganeshan का ख़त क़रीब 25 यूम (दिन) हुए आया था। उन्होंने पाँच मील दूरीपर Trichy से मकान लिया है । अपना पता मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) लिखा था । आप भी अपने यहाँ नोट कर लीजिए । Mr. M.K.Ganeshan Railway clerk , West Agraharam, Bikshandar covil, Trichinapally.

अभी तक उनका दिमाग़ ठीक नहीं हुआ है । मैं समझता हूँ उसकी लडने की आदत है । Krishnamurti कोई न कोई बात लिख़ते रहता है । जिससे मालूम होता है के Ganeshan उसके ख़िलाफ है । M. Masik और Krishnamurthy दोनों non-brahmin है और दोनो शाकी (शिकायत करनेवाले)। अगर ब्राह्मन और गैर ब्राह्मन का सवाल हमारे सतसंग में पड गया तो मुझे सख़्त (बहुत) अफ़सोस (दु:ख) होगा और यह ओ कमजोरी (दुर्बलता) है के जिससे broad mindedness (मन की विशालता) पैदा नहीं हो सकती है और साम्यावस्था नहीं आ सकती और Universal Love (विश्वप्रेम) तो कोसों दूर रहेगा । ख़ैर, जो मालिक की मर्ज़ी ! Tanjore से Srinivasan का भी ख़त आया है । उन्होंने लिखा है Now I have dropped Mr. Ganeshan completely as he can not help me in any way.

बड़ी खुशी की बात है के आपकी बहन पहलेसे अच्छी है । ईश्वरने चाहा तो उसे सेहत (स्वास्थ लाभ) होगी और उसको तो आप भी अच्छा, बडे आसानी से कर सकते हैं । तरीका (पध्दति) अब की मुलाकात (मिलने) पर बता दूँगा । मुझे भी उन साहब से जो मफ़लूज (अर्धांग से पीडीत) है, मुहब्बत है । मैं आनेपर उनको ज़रुर देखने जाऊँगा । आराम उनको भी हो सकता है । मगर बड़ा वक्त लगेगा और वक्त दूसरोंके रुहानियत (आध्यात्मिक) की तालिम (प्रशिक्षण) में खर्च करना चाहता हूँ । इसलिए, अब उतना दिमाग़ नहीं के दोनों काम कर सकूँ । तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) ज़ियादा गिर चुकी है ।

यह ख़ियाल (विचार) के आपने अबकी बार ज़ियादा फ़ायदा नहीं उठाया, ज़ाहिर करता है के रुहानियतकी (आध्यात्मिकताकी) प्यास बढ़ी हुई है । शक़ल (आकृति) का ध्यान जब किसी तरह से न हो सके तो आप फर्ज़ कर लीजिए (मान लीजिए) के शक़ल (आकृति) सामने है । जब यह भी न हो सके तो ओ ध्यान का रुख (दिशा) अपने आप बतला देगी । अगर वेंकटरावसाहब एक घास, जिसको समखुलिया कहते हैं और ज़िसमें सफेद फूल होता है, एक तोला पीस कर शरबत शक्कर के साथ इस्तेमाल (उपयोग) करें तो गरमी की तकलीफ़ (व्यथा) जाती रहेगी । यहाँ बहुत गर्मी पड रही है । इसलिए के बरसात शुरु नहीं हुई ।

सहज मार्ग पत्रिका की कुछ जिल्दें (कापियाँ) छपकर मिल गई । दो रोज़ में सब जिल्दें (कापियाँ) आ जावेगी । आप अपने भाई माधवराव और दत्तात्रेयराव और डॉ. कुलकर्णी का पता जल्द (शीघ्र) भेज दीजिएगा । ताके आपको वहाँ से भेजने की तकलीफ़ न गवारा (सहना)

करना पडे और दूसरा, टिकट के । आपके पास आवें तो टिकट लगे । आप जब भेजें तो टिकट लगानेसे बच जावे ।

एक सतसंगी भाई अपने Tibet में है, ओ वहाँसे आये थे । अब वापस चले गये । अब की उनके साथ Dalai Lama को भी किताबें और पत्रिका भेजी हैं । उन्होंने वहाँ 25 गि-हाक (ग्राहक) बनाये हैं । उनमें कुछ Chinese भी हैं जो हिंदी जानते हैं । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) । श्री. ईश्वर सहाय और उनके बच्चे influenza में मुब्तला (पीडीत) थे । अब अच्छे हो रहे है । चौबेजी का सब घर इसी मर्ज़ में मुब्तला (बीमारीसे ग्रस्त) थे । अब ओ भी बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) अच्छे हो रहे हैं । बहूकी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) की फ़िक्र (ध्यान) रखना चाहिए।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: डॉ. K.C.V. का ख़त आपका हवाला (संदर्भ) देते हुए आया था। उसमें, मुझे अपने यहाँ बुलानेकी दावत (न्यौता) दी है । एहतियातन् (सावधानी के रुपमें) एक पत्रिका बज़रिये (व्दारा) book - post भेज रहा हूँ । इसलिए के आसाम से देर करके मिलेगा। यहाँ से पत्रिका आसाम भेजी जावेगी और फिर वहाँ से ओ आप के पास dispatch करेंगे (भेजेंगे)। सब भाईयोंको आशीर्वाद।

Sd/-

****

ॐ तत् सत

Serial No. 49 शाहजहाँपुर
No. B-361/SRCM Date 17.07.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू। (दीर्घायु हो)।

आपके ख़ुतूत No 138/BG-SRCM मोरखा (दिनांक) 5 जुलाई 57 मय दीगर (और दूसरे) नुक़ुले ख़त (खतोंकी नक़लें) व नं. 130 BG-SRCM 30 जून 1957 पहुँच गये। मैं एक नक़ले ख़त (पत्र की प्रतिलिपी) आपके पास भेज रहा हूँ, जो मैंने Paris के एक society को, जो UNO की Branch World Peace के लिये है, भेजी थी । उन्होंने membership का form भी भेजा था और एक bulletin भी । मेम्बर (सदस्य) (member) तो मैं नहीं हो सकता था । Suggestion भेज दिया । आप अपनी file में रख लीजिएगा । और एक ख़त की नक़ल जो डॉ. K.C.V. को भेजा है, उसमें एक दो बातें काम की (उपयुक्त) हैं, वह रख लीजियेगा।

मेरे पास एक ख़त Shri M. Kishanrao, Chincholi के और एक Shri. B.A. Kishnarao, महबूबनगरसे आया । दोनों के जवाब दे दिया । मैंने पत्रिका Hyderadad और Sedam व आपके भांजेके पास भेज दी है । और 10 आपके पास भेज रहा हूँ । उसमें एक Shri Lakshmi Narsinham और Shri Sarnad जी की है । अगर इससे ज्यादा ज़रुरत होवें तो काशीरामसे मँगवा लीजिएगा ।

भाई Laxmi Narsinham में जो साधना में रुकावटें है, अगर वह internal है तो आप दूर कीजिये । अगर वह external है तो वह सबर (धैर्य) इस्तिक़लाल (दृढता) से और दुआसे काम (प्रार्थना) लेवें । मेरी सेहत (स्वास्थ्य) ठीक है । आप ख़्वाब (स्वप्न) से परेशान न होवें । श्री. ईश्वरसहायके यहाँ और चौबेजी के यहाँ सब ठीक है। आपने चिचोंलीवालोंको ठीक जवाब दिया है । मैं वाक़ई (सही भी) जादू नहीं जानता । मोहनरावजी को अपने पास आने दीजिए और जो कुछ वह करते हैं, करने दीजिए । थोडे दिनोमें हाल (स्थिति) खुल (मालुम हो) जायेगा।

भाई, एक जुमले (वाक्य) को देखकर मैं उछल पडा , वह यह है "कभी कभी यह peace बहुत ज़्यादा देरतक रह जानेपर dullness और hardness जैसे बेचैन पसंद हालतमें तबदील (बदल) हो जाता है ।

और उस वक्त मैं, जी न चाहते हुए उसको जबरदस्ती तोड देता हूँ ।" इससे मालूम होता है के ये peace कुछ और करवट (रुख) लेना चाहती है जो हक़ीक़त (वास्तविकता) का एक पहलू है । ईश्वर मुबारक (कल्याण) करे । आपके सवाल का जवाब कोई writer मिल जानेपर दूँगा। मैंने निशानात लगा कर ख़त एहतियात (सुरक्षित) से रख लिया है ।

डॉ. KCV के ख़तसे मालूम हुआ के Shri. Sarnadji ने कुछ सवाल उनसे किये हैं । जिसका उन्होने Sarnadji को जवाब दिया है । उसकी नक़ले ख़त (ख़त की प्रतिलिपी) मय (साथ) डॉ. का जवाब, मेरे पास भिजवा दीजिए और आइंदा (आगे) से आप किसी शख़्स (व्यक्ति) को इजाज़त न देवें के डॉक्टर का बेशबहा (बहुमुल्य) वक्त (समय) सवाल के जवाब में ख़राब (व्यर्थ) करें। Sarnadji से ख़ास तौर (विशेषत:) पर कह दीजियेगा । अगर कोई सवाल करना चाहते हैं, तो आपसे करें और न समझमें आवे तो मुझसे । सिर्फ़ आपही उनसे सवाल करने के मौजूँ (योग्य) है । आपके लिए ये रुकावट नहीं है । ख़ुशी हुई के बहुकी सेहत (स्वास्थ्य) अब अच्छी है । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) । सब भाईयोंको आशीर्वाद।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: श्री.सरनाड ने एक ख़त भेजा था । उसका जवाब आपकी मार्फ़त पहुँच गया । उसके बादसे कोई ख़त नहीं आया । आप ash tray भूल गये हैं, जो याद रही तो साथ लाऊँगा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 50 शाहजहाँपुर
No. B-385/SRCM Date 28.07.1957

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू। (दीर्घायु हो) ।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) 143-BG-SRCM मो. (दि.) 22 जुलाई 57 मौसूल (प्राप्त) हुआ । मैं सरनाडजी साहब का बहुत शुक्रगुज़ार (आभारी) हूँ के ओ मिशन को बढ़ाने की कोशिश (प्रयत्न) कर रहे हैं । ईश्वर उनको इसका अज्र (इनाम) दे । डॉक्टरसाहब का ख़त पढ़ा । ये सवालात (प्रश्न) वाक़ई (सच भी) अगर मुझसे सरनाडजी पूछते तो मुझे खामोश (मौन) ही होना पडता इसलिए कि मेरे मुतअल्लिक (बारे में) थे । आप सवालात डॉक्टरसाहब से ज़रुर करें । आपको मुमानियत (मनाही / रुकावट) नहीं और अबकी आपको तिरुपती अपने साथ ज़रुर ले चलूँगा, इसलिये के जब के मैं जुनूबी (दक्षिण) हिंद (भारत) का काम आप दोनोंके सुपुर्द कर देना चाहता हूँ । एक शख़्स (व्यक्ति) पर निगाह (नज़र) और भी है । मगर उसको सतसंग का मौक़ा (अवसर) न मिल सका।

बडी ख़ुशीकी बात है के आप लतीफ़तर (सूक्ष्मतर) हालात (स्थितियों) का एहसास (अनुभव) कर रहे हैं । यह पारब्रह्ममंडलका characteristic (विशिष्टता) है । आपका ख़याल ठीक है के ये हालत जिय़ादा देर तक रहने वाली नहीं है । " दरवेश रवाँ रहे तो बेहत्तर। " ठहरना आपको किसी जगह नहीं । आपका ठिकाना वहाँ है, जहाँ पहुँचनेसे पहले आनंद ख़ैरबाद कह देता है । और फिर हालत क्या होती है । अगर ignorance कहा जावे तो ओ भी साथ छोड देती है । एक लफ्ज़ ज़रुर इस हालत पर रोशनी फेंकता है, जिसको जहालत-ए-मुतलक़ (संपूर्ण अज्ञानता) कहते हैं । उस हालत को मैंने changeless condition (अपरिवर्तनीय स्थिति) कहा है और यही असल (वास्तविकता) , और रुहानियत (आध्यात्मिकता) तो ख़ैर, रुख़सत (बिदा) हो जाती है । उसको दौड़धूप का लुब-ए-लुबाब (सार) कहना चाहिए ।

तो भाई, बस यही चीज़ है जिसकी लोगोंने तमन्ना (इच्छा) भी नहीं की । नहीं तो हासिल (प्राप्त) हो चुकी होती, और करता कौन, जबके यह चीज़ किसीके ख़ियाल (विचार) में ही न थी । यह गुरुमहाराज का शुक्रिया (धन्यवाद) है के आपने इस तरफ़ हम लोगोंकी

नज़र घुमा दी है । अब आप जहालत-ए- मुतलक़ (संपूर्ण अज्ञानता) को इस term (अभिव्यक्ति) में ले लीजिए के हाँ-नहीं के बीचमें जो कुछ है सो है (कबीर)। ख़ैर, मतलब पर आता हूँ । असल आनंद वही है जिसमें आनंद न हो। जब तक आनंद का एहसास (अनुभव) हैं, माया इसमें शामिल है । अब अगर आनंदकी कैफ़ीयत (स्थिति) को आप भारी कहते हैं तो इससे यह बात साबित होती है के, आपकी लडी जहालतके (अज्ञानता) केंद्रसे जुड चुकी है । और इसकी वजह initiation है । बजाय भारीपन के अगर आप लफ़्ज़ (शब्द) इस्तेमाल करें के, तबीयत (मन) उकताती (ऊब जाती) है तो शायद ज़ियादा सही हों । उकताने (ऊब जाने) के मतलब यह हैं के, आपको तो खुशगवार (मनपसंद) और हलकी हवाकी ज़रुरत युँ है के, आप higher altitude (उन्नत ऊँचाई) पर चल रहे हैं । Peace (शान्ति) हरगिज़ (कदापि) dull (उबानेवाली) नहीं होती । वजह (कारण) ऊपर बयान (बता) कर चुका हूँ । यह तो ओ शख़्स (व्यक्ति) पसंद करेगा के जिसकी बजाय दोनो आँखे जाने के, एक ही जाय । एक शख़्स (व्यक्ति) झोपड़े में रहनेवाला अगर कहीं हुस्ने इत्तफ़ाक (सुयोग) से अच्छे और आराम देह मकान में पहुँचता है तो ओ बहुत पसंद करता है, मगर रहते रहते जब उसकी आदत बन जाती है तो उसकी निगाह (नज़र) इस से बेहत्तर (अच्छे) मकान पर पहुँचने लगती है । यह मिसाल (उदाहरण) आपकी है के आप boredom और dullness क्यों महसूस (अनुभव) करते हैं । आपने लिखा है के "mind की tendency इस हालतसे हट जानेकी महसूस (अनुभव) करता हूँ । इसलिए या तो अभी मेरा mind तैयार नहीं है । या यह peace और bliss की असल हालतें (स्थितियाँ) नहीं है।" Mind में कुदरती ताक़त (प्राकृतिक सामर्थ्य) अच्छी चीज़ एहसास (अनुभव) करनेकी है । ख़्वाह (चाहे) ओ मायावी हो या रुहानी (आध्यात्मिक) । लिहाज़ा (इसलिये) जो कुछ चीज़ सामने आती है, ओ इसमें लग जाती है ख्वाह (चाहे) ओ bliss हो या peace.

आपने इलाज करने का तरीक़ा (पध्दति) मुझसे पूछा है । तरीका (पध्दति) यही है जो आप रुहानी (आध्यात्मिक) फ़ायदा पहुँचाने में करते हैं के जैसे कालिमा निकालते है । वैसे ही बीमारी निकाली जाती है और तवज्जह (प्राणाहुति) भी इसी तरह दी जाती है । मगर यह suggestion (सुझाव / सूचना) दिया जाता है के फलाँ मर्ज़ (बीमारी) जा रहा है । तरीक़ा (पध्दति) मैनें बता दिया । मगर जब इसके लिए इतने डॉक्टर मौजूद (उपस्थित) है तो बजुज़ (सिवा) किसी ख़ास सूरत (स्थिति) के हमको मतलब (गरज़) नहीं रखना चाहिए के

आपके पास जो काम है यह भी क्या कम है, और आगे बढ़नेकी भी उम्मीद है ।

यह सुनकर ज़रुर ख़ुशी हुई के आप मसीहा (उध्दारक) बनना चाहते हैं । मगर इसके लिए पहले दर्द पैदा करना चाहिए। गणेशनके एक दो पोस्टकार्ड आये थे । मैंने जवाब नहीं दिया । अब ख़त मोरखा (दिनांक) 19 जुलाई का ख़त आया है, ओ यह है।

" In the light of thy last letter and the one from Raoji of Gulbarga it seems to mean that you have blocked my way of transmitting to others, although I want to carry on my humble services in the interest of the mission as usual. I intend transmitting my associates from a near date and I have also fixed a place in Trichy Town for the purpose. My regard to Sahaiji and Rao of Gulbarga also. "

मैंने इस ख़तका ज़वाब भेज दिया, जिसकी नक़ल (प्रतिलिपी) भेज रहा हूँ और एक ख़तकी नक़ल (प्रतिलिपी) जो मैंने श्री. K. Subramaniam, Trichy के जवाबमें भेजी है, भेज रहा हूँ । यह सब भाईयोंके मुफ़ीद मतलब (फायदेमंद) है, दिखा देना और फिर अपनी फाईलमें रख लेना । हम लोग जन्माष्टमीका पहला बरत (व्रत) रखते हैं, यानी जिस यूम (दिन) कृष्णजी महाराज पैदा हुवे । इस साल ग़ालिबन (निश्चित) 17 ऑगस्त को है । आपको ख़ास तौरपर (विशेषत:), और सतसंगियों को रखना चाहिए । भाई सरनाडका ख़त आप पढ़कर उनको दे देवें । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: डॉ. वरदाचारीने एक इतना मोहब्बताना जुमला (प्रेमपूर्ण वाक्य) अपने ख़तमें लिखा है जिससे तबीयत (मन) बाग़ बाग़ (खुश) हो जाती है। "I am praying that I may lose my consciousness of body and soul and be merely Thy body alone and live for Thee."

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 51 शाहजहाँपुर
No. B-432/SRCM Date 24.08.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आपका ख़त No.-148-BG-SRCM मो. (दि.) 5 अगस्त 57 मौसूल (प्राप्त) हुआ । जवाब देने में इसलिए देरी हुई के मैं, ईश्वर सहाय का जन्माष्टमीमें इंतज़ार (प्रतिक्षा) कर रहा था के, गणेशनका जो ख़त आया है उसको दिखाकर उनके मुवाजह: (उपस्थिती) में जवाब तहरीर करुँ (लिखूँ) और उन दोनोंकी नक़लें आपके पास भेज दूँ । मगर किसी ख़ानगी (निज़ी) ज़रुरत (काम) के वजहसे (कारण) ओ न आ सके । मज़बूरन (विवशत:) मैंने जवाब दे दिया और उनके ख़त और उसके जवाबकी नक़ल (प्रतिलिपी) बडे अफ़सोस (दु:ख) के साथ भेज रहा हूँ । आप इनको पढ़कर उनके ख़तोंके फ़ाइल में लगा लीजिएगा । मैं जब आऊँगा तो अपने साथ लेता जाऊँगा । मुमकिन है के Trichy या कहीं उनकी ज़रुरत पड़ जावे । एक नक़ल ख़त (पत्रकी प्रतिलिपी) Shri. Thyagarajan को भेज रहा हूँ जो दूसरे भाईयोंको सुनानेसे शायद कुछ encouragement पैदा करे । ख़त तो मामुली है । वहाँ के सतसंगियों को भी इल्म (ज्ञात) है; मेरे और गणेशनके दरमियान (बीच) कुछ मुरासलत अहम (महत्वपूर्ण पत्रव्यवहार) जारी है । चुनांचे (इसलिये) Shri. K. Subramaniam ने लिखा है के जब गणेशन और आप आमने सामने हो तो Krishnamurti और गणेशनके मुआमलात (विवाद) तय हो जायेंगे । इससे पता लगता है के उन दोनोंमें चली हुई है और नज़ला (संकट) मुझ कमज़ोर (दुर्बल) पर गिरा । चुनांचे (इसलिए) मैंने अब कृष्णमुर्ती को भी लिख दिया है कि गणेशन मुझसे नाख़ुश (असंतुष्ट) है और कुछ बातें भी जो उनके, मेरे ख़तोंमें आई है, मजबूरन (विवशतावश) ज़ाहीर (प्रकट) कर दी । Mr. Subramaniam को मैनें सिर्फ़ यह लिख दिया I am having bloodless operations from Mr. Ganeshan since I returned from South India. I do not know how

long I will be able to endure the pains of such operations. I will have to end the experiment.

आपका batch बफ़्ज़लहू (ईश्वरकृपासे) सब अच्छा है । लक्ष्मी नरसिंहम अगर मेहनत कर जावे और constant remembrance (सतत स्मरण) की तरफ़ तवज्जह (ध्यान) रखें तो बहुत जल्द तरक्की (प्रगति) करें । सरनाडजी के जिस्ममें (अंतरप्रणाली में) कुछ झाँई (धब्बे) या शिकने (सिलवटे) पडी हुई हैं जिसको मैंने बहुत कुछ दूर कर दिया। अब ओ बहुत कम और हलकी रह गयी है जो आँ अज़ीज़ (आप) का हिस्सा (काम का भाग) है । ज़रा हिम्मत बाँधे और साफ़ । M. Kishanrao का ख़त Chincholi से आया था । चंद (कुछ) मुख़्तसर सवाल किये थे, मैंने मुख़्तसरन (संक्षिप्त) जवाब दे दिये । प्रेमशंकर शुक्ला मुनसिफ़ (जज) जो आपसे अलाहाबादमें मिले थे, अब आगरामें तबादिला (स्थानान्तरण) होकर पहुँच गये । मैं चाहता था के कोई सतसंगी आगरामें आ जावे, तो आपको वहाँसे घुमनेकी आसानी हो जाए । अब की बार जब आप आवेंगे तो आसानी (आसानी) से आप फ़तेहपुर सिकरी और दीगर (दूसरे) मुक़ामात (स्थानों) पर जा सकेंगे । आँ अज़ीज़ने (आपने) जन्माष्टमीका बरत (व्रत) रखा होगा और अंदाज़ा (अनुभव) भी किया होगा के तबीयत (मन) कितनी सुकून (शान्त) पर रही । आपके सवालात (प्रश्नों) से मैं बहुत ख़ुश हुआ, जो जन्माष्टमीके बारेमें थे । ईश्वर आपको ख़ुश व ख़ुर्रम (प्रसन्न) रखें । और रुहानियतका (आध्यात्मिकता) चिराग (दीप) आपके घरमें रोशन (प्रकाशित) रहे । इस क़दर (इतना) अपने co-operation, भक्ति और ईमानदारी और मिशनके वफ़ादारी (निष्ठा) का आपने उस ख़तमें सुबूत (प्रमाण) दिया है के जी चाहता है के एक विलायत (एक आध्यात्मिक क्षेत्र का अधिपत्य) दे दूँ । मैंने आपको पाकर, जुनूबी (दक्षिणी) हिंद में सब कुछ पा लिया और आपसे मिशन ज़रुर चमकेगा । हिम्मत बाँधे और ताक़त आपके पसे पुश्त (पीछे) बेहद मौजूद (विद्यमान) है । अब मतलब (मुख्य बात) पर आता हूँ।

हिंदुओंमें प्राचीन समयसे चला आता है के हर संस्था आख़री अवतारसे अपने आपको connect कर लेती है । मगर हवादिस जमाने (समय के दुर्भाग्य) ने इसको क़ायम न रखा और हम बिगड़ते ही चले गये । और हमारे connection एक बुज़ुर्ग (महात्मा) ने जो मुसलमान थे और बहुत पाये (ऊँची स्थिति) के बुज़ुर्ग (महात्मा) थे, काट दिए यह समझकर के हिन्दू इस क़ाबिल (योग्य) नहीं रहे । उनका ख़याल (विचार) था के ईश्वरका हुक्म यही है या उन्होंने उसको बेहत्तर

(अच्छा) समझा हो । अब यह हुआ - मुसलमानी connection जो मुहम्मद साहब से थे, वह अब Special Personality (विशिष्ट विभूति) ने हुक्मन (हुक्मसे) काट दिए और इसकी तसदीक़ (पुष्टि) भी एक मुसलमान बुज़ुर्ग (महात्मा) ने मेरे गुरुभाई पंडीत रामेश्वरप्रसाद के मुवाज़ह (उपस्थिति) में की थी के मुसलमानी ख़तम हो गयी और भाई, हिंदुओं में भी कई संस्थाओं में जान नहीं रही । कबीरका सिलसिला (पंथ) कबीरसे कट गया । श्री रामकृष्ण परमहंस ने अपना सिलसिला (संबंध) अपनी मिशनसे क़ायम नहीं रखा । चैतन्य महाप्रभू व गुरुनानक व दादूने अपने सिलसिले (पंथ) से अपने आपको हटा लिया । अब कृष्णजी के अल्फ़ाज़ (शब्द) यह हैं, "अपना सिलसिला सहजमार्ग रहेगा और इसीसे रोशनी (प्रकाश) सबको मिलेगी ।" आपसे कुछ परदा (छुपा) नहीं । श्री कृष्णजी महाराजसे कामके इशारे (सूचनाएँ) बराबर मिलते रहते हैं । और मेरी डायरीमें जिसमें क़रीब चौदह सौ सफ़े (पन्ने) होंगे, तारीख़ वार मिनजुम्ला (इनमें से) और बातोंके नोट हैं । और My Vision जो मैंने लिखा है उसी डायरी से नोट किया है । ओ चूँके मुरिसे आला (मूल पुरुष) है; इसलिए उनके जन्मदिनपर हमलोग बरत (व्रत) रख लेते हैं । और कोई चीज़ मज़हबी (धार्मिक) उसमें शामिल नहीं करते और यह हुक्म उपर का है के, मिशन में कृष्णजी महाराजका जन्मदिन और लालाजी साहब का हमेशा मनाया जावेगा । प्रसाद जो लाज़मी (ज़रुरी) नहीं, मगर चढ़ाते इसलिए हैं के, उसमें Power (शक्ति) होती है जो जिस्म (शरीर) को शुध्द कर देती है और मैं इसको practically दिखा सकता हूँ और आप भी दिखा सकते हैं।

कायस्थोंको लोग आधे मुसलमान कहते हैं । वजह यह है के रोज़ा भी रखते थे और नमाज़ पढ़ते थे और अरबी और फ़ारसीके उस्ताद (प्रवीण) थे । ताजियों में शरबत रखते थे और यह शाही ज़माने का हाल है । मगर उन्होने नयी तरकीब (युक्ति) की के, शराब (मदिरा) पीने लगे और शराब पीनेवाला मुसलमान नहीं हो सकता, क्यों के शरह के ख़िलाफ़ (विरुध्द) है । इसलिये ये हिंदू के हिंदू ही रहे गये । इस तरह से अगर हम हिंदू धर्म के नुमाइन्दे (प्रतिनिधी) श्रीकृष्णजीको अगर किसी form में ले लेते हैं तो हम हिन्दूओंकी हमदर्दी (सहानुभूति) के पात्र रहेंगे और ओ अपनी दाइरे (परिधि) से अलहिदा (अलग) नहीं कर सकते । जो मिशन के बाक़ायदा दीक्षित हैं उनके लिए यूँ लाज़मी (ज़रुरी) है के कृष्णजी से फ़ैज (आध्यात्मिक लाभ) पाते हैं और उन्हीकी यह संस्था क़ायम (स्थापित) की हुई है । हम इस बरत को कोई formal shape नहीं देते ताकि बुत परस्तीमें (मूर्तिपूजा) न शामिल हो

जावें । उनका जो हिंदू धर्म पर एहसान (उपकार) है उसका शुक्रिया (धन्यवाद) इस शकल (रुप) में अदा (देते) करते हैं । अगर इसमें और सवाल उठे तो लिखियेगा । बच्चोंको दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 52 शाहजहाँपुर
No. B-466/SRCM Date 12.09.1957

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ का ख़त 157-BG/SRCM मो. (दि.) 5-9-57 मौसूल (प्राप्त) हुआ। गणेशनको जो ख़त मैंने भेजा है और उसकी नक़ल भी आपके पास भेज दी थी, उसका कोई ज़वाब नहीं आया । इसके माने ये समझे जा सकते हैं के अब उसे ख़त व किताबत (पत्रव्यवहार) भी रखना गवाँरा (पसंद) नहीं।

कृष्णमुर्तीको मैंनें कुछ वाक़ियात (घटनाओं) से आगाह (सूचित) किया के तुम्हारी वजह (कारण) से गणेशन इस हद तक पहुँच गया । वह गणेशनके पास गये और गणेशनने उनसे कहा के उनसे कोई grudge नहीं है । उन्होंने यह भी लिखा के, गणेशन अब फिर सतसंग कराने के लिए मज़बूर किया जावेगा । मगर सवाल यह है के गणेशन अपने आपको ख़राब कर चुका है और वह receptive नहीं रहा । अब इस चीज़ को कौन ठीक करे जबतक उसको दिली अफ़सोस न पैदा हो | भाई, ज़रा तौलकर देखना यह मिसाल peevishness (चिड़चिड़ापन) की कहीं भी न मिलेगी। अब सिर्फ़ तरक़ीब यही हो सकती है के मैं गणेशनकी ख़ुशामद कर लूँ और जिस तरहसे उसको मेरे साथ बरतावा रखना चाहिए वैसा मैं उनके साथ करुँ और ओ जो कुछ कहे उसकी मैं मानता रहूँ । मुझे इसमें भी बहुत कम एतराज (आपत्ति) है मगर इसमें गणेशन बिगड जावेगा, बनेगा नहीं।

अब की मैं जन्माष्टमीकी इत्तला (सूचना) पहले से दे दिया करुँगा ताकि यही दिन सब लोग बरत (व्रत) रखें । भाई लक्ष्मीनरसिंहम को यह ख़ियाल छोड देना चाहिए के उनकी क़ुवत इरादी (इच्छाशक्ती) कमज़ोर है । Faith के माने यह है के अपने ख़ियालकी डोरी सिखानेवाले की हिम्मतपर जुड़ी रहे । आपका ख़ियाल सही है के आपके भाईमें अक़ीदत (श्रध्दा, विश्वास) बढ़ रही है और मुझे भी उनसे मुहब्बत बढ़ रही है और इसका सेहरा (श्रेय) आपके ऊपर है । मैं उनसे वादा कर आया था के हैद्राबाद उतरुँगा। चुनांचे अब के दो दिन, "ईश्वर वह वक्त लावे," हैद्राबाद रहूँगा। दतात्रीराव की नादारी (ग़रीबी) की हालत सुनकर मुझे बडा खुल्क (संकोच) आया । अफ़सोस है के ज़मीनदारी ख़तम हो चुकी और ऐसी ख़तम हुई के मुझे

गरीब बना दिया वरना कुछ महाना भेजता रहता | फिर भी इस वक्त मैं Rs. 20/- उनको इस इस्तिदुआ (निवेदन) से भेज रहा हूँ के वह इसको क़बुल (स्वीकार) करें। मुझको ममनून (उपकृत) करें । मुमकिन (संभव) है के स्वामीजीके मंत्र का यह असर (परिणाम) है के मेरे दिल में यह ख़ियाल पैदा हुआ । मगर भाई, मैं अक्सर (प्राय:) ऐसा करता रहा हूँ इसलिए मंत्रका असर नहीं हो सकता ।

स्वामी विशुध्दानंदसे आपने जो कुछ कहा ओ निहायत (बहुत) मुनासिब (उचित) था । ओ शख़्स (व्यक्ति) निहायत (बहुत) ठोस आदमी है और ब्रह्मविद्याके लायक नहीं । पत्थरमें आप कितनी ही गरमी पहुँचाये ओ मय (साथ) अपने ज़र्रात (कणों) के गरम हो जावेगा मगर पसीजना मुश्किल है । जब आपकी तवज्जह (प्राणाहुति) से उन्हे कुछ एहसास (अनुभव) न हुआ तो मुझसे भी होना मुश्किल (कठीन) है । इसलिए के मुझमें और आपमें एकही ताकत काम कर रही है । ऐसों के लिए वही तरक़ीब (उपाय) है जो मास्टरसाहबने आपको गुलबर्गामें बतलाई थी । और आपही तक रहना चाहिए । उनका दिल पकडकर ख़ियाल के ज़रिये से दो तीन ठोकरें करीं (कड़ी) दिमाग़पर दे दिये होते तो साधू साहब को मज़ा आ गया होता। मैंने यह तरीका ग़ालिबन (निश्चित ही) कभी नहीं किया। इसलिए के मैं जौहर देता हूँ जिसकी परख जौहरी कर सकता है । अगर शीशा बेचनेवाला उसकी क़दर (मूल्य) नहीं जानता तो जौहर का क़ुसूर (दोष) नहीं । एक फारसी शेर का यह मतलब है अगर चमगादड दिनमें नहीं देख सकता तो सूरज का उसमें कोई क़ुसूर नही । शेर भी लिखे देता हूँ । "गर न बीन्द बरोज़ शब पर चश्म, चश्माये आफ़ताब राचेह गुनाह" |

अगर उसी चीज़से दूसरोंको फ़ायदा होता है और किसी एक को फ़ायदा नहीं होता, तो इसके माने यह है के उसीका क़ुसूर है । Disciple और जिज्ञासू बन कर आपके सामने आवें तो देखिये कौन ऐसा शख़्स है जिसको फ़ायदा नहीं होगा। मैं अगर इस वक्त गुलबर्गा या हैद्राबाद में होता तो मास्टरसाहब से तवज्जह दिलवाता ।

एक शख़्स मुझे, जंगलमें जब के ठहरा हुआ था ऐसा मिल गया । मास्टर साहब ने ज़रा उनकी कर्रा कर दिया । उनके, जैसा के ओ कहते थे, दिनभर गफ़लत (विस्मृति) की हालत रही । मगर इन तरीकोंको बजुज़ (सिवा) खास सूरतके (परिस्थिती) रवाँ (जारी) नहीं रखता, ख़ुसूसन (खासकर) अपने लिए । इन साहबसे कहिए के ज़रा अपने अंदरकी ठोसता दूर कर दें और जिस मतलबसे के फ़कीरी ली है, उसको दिलसे हटाकर Realization की तमन्ना (इच्छा) में

बेक़रार (व्याकुल) रहें तब ओ ब्रह्मविद्याके अहल (पात्र) हो सकतें हैं । और अपने आपमें ठोसता दूर करने के लिए अमल करें " तीन महिनेतक कम अज़ कम ग्यारह -11- साँसभर धनात्मक (ध्वन्यात्मक) शब्द, जो के मैंने आपको बतलाया है, की गुंज़ार लगावे।" ऐसे शख़्सोंको अगर आपकी तवज्जह (प्राणाहुति) का एहसास नहीं होता तो यह ख़राबी (दोष) उन्हीकी है । यह अल्फ़ाज़ (शब्द) चाहे मेरी तरफ़से उनसे कह दें क्यों के यह उनके बेहत्तरी के लिए है ।

मुझे श्री. दतात्रीराव और श्री. सरनाडजी के लडकोंकी तवल्लूद (पैदा) होने की बहुत ख़ुशी है । ईश्वर उनकी उम्रदराज़ (दीर्घायु) करें । मैंने आपके भाईके पास पत्रिका भेजी थी मगर किसी वजह उनको न मिल सकी । आपने अच्छा किया जो दूसरी भेज दी । श्री.ईश्वर सहाय के लडके श्री. नारायण सहायकी बीबी के पेटमें बच्चा मर गया और डॉक्टर की गलती से उसमें कुछ सड़न भी पैदा हो गई, चुनांचे (इसलिये) ऑपरेशन करके बच्चा निकाला गया । नारायणका तार लखनौसे उनके भाईके पास आया था, के हालत ज़ियादा ख़राब है । चुनांचे (इसलिए) वह कल गए है । अभी कोई हाल नहीं मिल सका । ईश्वर सेहत करे (आरोग्य दे) ।

मैं अब तातील (छुट्टीयाँ) दसरामें कहीं नहीं जाऊँगा । मैं चाहता हूँ के आप मेरे सामने बने रहें । मगर रुपयेकी कमी हर दो जानिब (दोनो तरफ से) इस बात को होने नहीं देती । आप आना चाहे तो शौक से आईए । खर्चेका ख़ियाल ज़रुर है ।

मैंने Government से रुपये, Social Welfare Department के ज़रियेसे (द्वारा) किताब और magazine के लिए माँगा है । यहाँ के अफ़सर ने 4000/ की सिफ़ारिश की है । हर branch में हिसाब बाक़ायदा रखना होगा । जिसकी पेशानी (प्रपत्र / proforma) श्री. ईश्वर सहाय आपके पास भेजेंगे । क्योंके audit हो सकता है । आपने और आपके साथियोंने जो रुपये शाहजहाँपुर आनेमें खर्च किया है उसकी अपनी तरफ़से और अपनी साथियोंकी तरफ़से as a donation जमा करके सफर खर्च में दिखला दीजिए । क्योंके यह मिशन के फ़ायदे के लिए ही है । टिकट जो मिशन के ख़त व किताबतमें खर्च होते है, ओ भी एकमुश्त देवावी (एक रकमी जमा) दिखाकर, ख़र्च होना बता दिया जाय। Dr. K.C.V. और Mr. A. Balasubramaniam ने मुझसे मिशनके लिए दो एकर जमीन चुंगी (म्युनिसीपालटी) से lease पर लेने की इजाज़त माँगी है । मैंने डॉक्टर को इजाज़त दे दी है । अब Subramaniam को

भी लिख रहा हूँ । 'अनंत की ओर' जो किताब छपने के लिए है, उसके foreword के लिए श्री. ईश्वरसहाय ने उनसे इल्तिजा (बिनती) की थी, उसके जबाब में डॉक्टर साहब ने लिखा "Your wish is a command for me." चुनांचे (इसलिए) किताब भेज दी गई । उन्होंने ख़तमें लिखा था के मैं हिन्दी प्रोफ़ेसर के साथ पढ़कर foreword बहुत जल्द भेजूँगा। बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

P.S. चिंचोलीसे श्री. M. Kishanrao का ख़त आया है । उन्होने लिखा है के प्रार्थना करनेमें दिल नहीं लगता । चिंता और आलस बढ रही है । दिल को चैन नहीं । ऐसी हालत (स्थिति / उदाहरण) जब आपके सामने होवा करे तो ग़ाइबाना तौरसे (परोक्ष रूपसे) सफ़ाई करके दिलपर हलके ख़ियालसे रुजू हो जाया कीजिए । सब ठीक हो जावेगा और अगर केस सामने है तो अपने सामने बिठाकर किया कीजिए । तवज्जह (प्राणाहुती) हिम्मत बांधकर देना चाहिए । और उस वक्त यह समझ लेना चाहिए अपना जिस्म (शरीर) वगैरा जो कुछ है यह गुरु ही है और ख़ियालमें यह चीज़ नहीं होना चाहीए के मैं नहीं कर सकूँगा । आपके पसेपुश्त (पीछे) तो बेशुमार ताक़त जो आपकी मददगार है । मैं उनको कल तक जवाब लिख दूँगा ।

Sd/- Ram Chandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 53 शाहजहाँपुर
No. B-512/SRCM Date 05.10.1957

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैनें आपके ख़त का जवाब दे दिया था । मुलाहिज़ासे गुजरा होगा (देखा होगा) । एक नये साहब Shri N.A. Sarnad, Teacher, Primary School करजगी, जिला गुलबर्गा का ख़त आया है । ओ अभ्यास शुरु कर रहे हैं, इसलिए ओ आपके पास आयेंगे । मि.

गणेशन का ख़त आया, जिसकी नकल मैं आपके पास भेज रहा हूँ और उसके जवाब के लिए आपके ख़त का इंतज़ार रहेगा। क्या अब भी गणेशन इस क़ाबिल है के उनको मिशन में रहने दिया जावे ?

डॉ. वरदाचारी K.C.V. ने हिंदी किताब का preface लिखकर भेज दिया है जो निहायत (बहुत) अच्छा है । Tamil translation of Reality at Dawn छपना शुरू हो गया है । रुपये भी मैं आज भेज रहा हूँ।

आपको Efficacy of Rajyoga और Reality at Dawn की कितनी कितनी जिल्दें (प्रतियाँ) ज़रुरत होगीं लिखें के मैं अपने हमराह (साथ) लेते आऊँ और सहज मार्ग के दस उसूलोंकी शरह भी । सब भाईयोंको दुआ। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 54 शाहजहाँपुर
No. B-516/SRCM Date 09.10.1957

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

ख़त No. 160-BG-SRCM मौसूल हुआ । जो ख़त श्री.गणेशन का मेरे ख़त के जवाब में आया था उसकी नक़ल मैंने भेजी थी, मिल गई होगी । ऐसे शख़्सको जो मिशन में रहना नहीं चाहता और जिसको रखनेसे बुरा असर पडता है उसको रखनेसे कोई फ़ायदा नहीं । बहरहाल (हर हालत में) आपकी राय का इंतज़ार है । Trichy जानेका मैं इरादा नहीं कर रहा हूँ । बहरहाल यह बात Gulbarga आनेपर आपसे discuss करके तय करुँगा । एक नसीहत (सलाह) मैं आपसे यह करता हूँ के अपनी कमज़ोरी अगर एहसास में आवे तो सिवाय मेरे किसीसे कहना नहीं चाहिये।

गणेशन ने आप पर भी एक फिक़रा (व्यंग्य) कसा है। मेरा इरादा बफ़ज़लहू December के पहले हफ्तेमें क़रीब क़रीब चलने का है और सीधे Hyderabad पहुँचूँगा, वहाँसे सेडम, जब डॉ. कुलकर्णी इतना मुहब्बत करतें हैं, एक या दो यूम के लिए उतरुँगा । ख़त लिखते लिखते नूरचश्मी गुलाबी की याद आ गई। बच्चों से पूछना के मैं यहाँसे उनके लिए क्या लाऊँ? आपका batch बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) ख़ूब (अच्छा) है | स्वामीजी को मैंने जो लिखा उससे नियत (मन्शा) यह थी के उनको फ़ायदा पहुँचे। श्री. ईश्वर सहाय की बहू अब ठीक है । उनका इलाज उनके बडे लडके कर रहे है । और बहु को भी बुला लिया।

बच्चों को दुआ । बिरादरान (भाईयों) को आशीर्वाद ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 55 शाहजहाँपुर
No. B-538/SRCM Date 24.10.1957

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

जुनूबी (दक्षिण) हिंद का दौरा 5 डिसेम्बर से शुरु हो रहा है । प्रोग्राम भेज रहा हूँ । आप अपने भाई श्री. P. Madhavrao जी को वक्तन-फ-वक्तन (वक्त वक्त पर) ग़ाइबाना तवज़्जह (परोक्ष प्राणाहुति) देते रहिए और सफ़ाई भी करते रहिए । मैंने अब के दौरा Hyderabad होते हुये, Gulbarga का रखा है । और आपको तिरुपती भी ले चलना है । मुझे दो हफ्तेसे दमा तंग कर रहा है । दो रोज़ दौरा (रोग का आक्रमण) सख़्त रहा । अब कम हो रहा है । कुछ फ़िक्र की बात नहीं, ओ भी ठीक हो जावेगा । मैं 15 या 16 November को मथुरा जा रहा हूँ । दो दिन रहकर 4 यूम (दिन) के लिए आगरा जाऊँगा और प्रेमशंकर शुक्ला जो आगरा में मुनसिफ (मजिस्ट्रेट) हैं, वहाँ ठहरुँगा । 23 को देहली पहुँच जाऊँगा । क्योंकी एक बरात में शरीक होना है और आखिर नवम्बर तक वापिस आ जाऊँगा ।

आपका ख़त जो गणेशन के बारे में आया था, मैंने इरादा कर लिया था के Trichinapally में उसका फैसला कर दूँगा । मगर श्री. त्यागराजन का एक ख़त आया जिसकी नक़ल मुलाहिज़ा (देखने) के लिए भेज रहा हूँ । उसने मज़बूर कर दिया के Trichy का Centre बंद कर दिया जावे इसलिए के ख़िलाफ़त (विरोध) मिशन की शुरु कर दी ।अब अगर मैं वहाँ जाता तो सिर्फ़ एक ही तरीका था के मैं उसकी खुशामद (स्तुति), मिन्नत (प्रार्थना) व समाजत (गिड़गड़ाना) करता । मुझे इसके करने में भी कुछ आर (लज्जा) न था । मगर ऐसा करने से गोया दूसरों की निगाह में मैं अपनी कमज़ोरी इज़हार (प्रकट) कर रहा हूँ जिसका असर (परिणाम) अच्छा न पडता । पस (अंततः) मज़बूरन (विवश होकर) गणेशन को ख़त लिखा जिसकी नक़ल भेज रहा हूँ । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 56 शाहजहाँपुर
No. B-559/SRCM Date 06.11.1957

मेरे राघवेंद्रराव़जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दो ख़त मिले । मैंने programme में Hyderabad पहुँचने का वक्त 8 दिसम्बर 57 को 7.05 am लिखा है । Programme आपके पास पहुँच गया होगा । मैं लखनौ होता हुआ आऊँगा । Emblem मैं अपने साथ में लेता आऊँगा । गणेशन को आप अब गया हुआ ही समझे । यह उसकी दूसरी अहम (गंभीर) गलती थी और फिर बेबुनियाद (निराधार)। मुझे 15 Nov से 30 November तक बाहर रहना पडेगा । देहली में एक शादी में शरीक होना है । चुनांचे (इसलिए) मथुरा और आगरा फिरता हुआ देहली पहुँचूंगा और फिर दो या तीन रोज़ Hapur, एक देहलीके क़रीब का स्टेशन है, वहाँ रुकना है। कस्तूरी का इलाज एक क़ाबिल डॉक्टर जो अपने सतसंगी है, उसके intestinal T.B. glands कर रहे है और काफ़ी फ़ायदा है । सेडम के school master के पास बैठनेसे जो दिल में हरारत (गर्मी) आँ अज़ीज़ (आप) को महसूस (अनुभव) हुई उसकी वजह यह है के उनके संस्कार बहुत ख़राब है और उभरे हुवे है । यह एक आम बात कह दी । पूरा हाल देखनेसे मालूम हो सकता है । हमारे यहाँ पर trainer में यह faculty तरक्की कर जाती है के अगर आप सोते हो तो और कोई फ़ैज लेना चाहे तो आप नादानिस्त: (बे-जानेबुझे) तवज्ज़ह(प्राणाहुति) देना शुरु कर देंगे । इस लिहाज़से आप में यह ख़ूबी (गुण) मौजूद है । बच्चों को दुआ । सतसंगियोंको आशीर्वाद।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 57 शाहजहाँपुर
No. B-594/SRCM Date 15.11.1957

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं 8 December 57 सुबह मुताबिक programme पहुँच रहा हूँ । डॉ. वरदाचारीने आपको आनेके लिये welcome किया है । जब के मैंने लिखा था के आप भी मेरे साथ पहुँचेंगे । आपको भी annual day के यूम (दिन) पर बोलना होगा । अगर आप मुनासिब(उचित) समझें तो आपने जो तजरूबा (अनुभव) किया है और जैसे आपका इस तरफ झुकाव हुवा है अपने speech में शामिल कर लें । मेरा address (भाषण), मुख़्तसर (संक्षेप में) क़रीब क़रीब तयार है । कल मैं बाहर जा रहा हूँ । 29 Nov तक वापसी होगी । उस वक्त type कराऊँगा । एक नये सतसंगी सूरत में बढ़े हैं, उनको invitation दे देना । पता हसबे जैल (निम्नलिखित) है ।

Shri. Maganlal k. Naik. Desai Street
Jalapur-Dist Surat

Mr. C.M.T. Mudaliar, Kumaraswami व Dr. Varadachari को भी invitation जावेंगे । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः आपके दोस्त मुन्शी गुलाम सरवरखाँ साहब को पता भेज दीजिएगा ताकि उनसे मिल सकूँ ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 58 मद्रास कॅम्प
No. C-32-/SRCM Date 14.01.1958

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त मद्रास में मिला था । जवाब दे दिया है । हम लोग बख़ैरियत तमाम (सकुशल) 13 सुबह को पहुँच गये और मेरी तबीयत अब संभल रही है । मद्रास का मसला इस वक्त हल होता हुआ मालूम होता है । जब के speeches मुतवातिर (लगातार) होती रहीं और मैं इस नेमत (दौलत) से मुबर्रा (दूर) हूँ । लिहाज़ा (अत:) उसका इन्तज़ाम (व्यवस्था) और कोशिश (प्रयत्न) आप ही लोगोंके करने की है । एक चना भाड नहीं फोड सकता । बच्चों को दुआ । मैंने अब की कुमारस्वामी के बीवी को भी trainer बना दिया ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 59 शाहजहाँपुर
No. C-58-SRCM Date 28.01.1958

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

सरनाडजी का ख़त आया था । मेरी तबीयत का हाल सुनकर ओ परेशान हैं । उनसे लिख देना के मैं क़रीब क़रीब ठीक हूँ । फ़क़त (केवल) कमज़ोरी बाक़ी है । ओ भी कम हो रही है । Dr. P. Sen 14 जनवरी 58 को कलकत्ता से आ गये और काशीराम आसाम से मय (साथ) 6 आदमी और औरतों के 19 जनवरी 58 की सुबह आ गये । डॉक्टरने तिरुपती से कुछ कार्ड प्रार्थना आपके पास भेज दिए । पहुँच गये होंगे ।

Shri N. Thyagarajan की डायरी मुझे मिली, जो मैं आप के पास भेज रहा हूँ । उसका जवाब चंद सुतूर (पंक्तियों) में दे दिया है । इसलिए के दिमाग़ (मस्तिष्क) को आराम देना चाहता हूँ । इस

मर्तबा (बार) ईश्वर का शुक्र है के आपको साथ रहने से बहुत फ़ायदा पहुँचा । एक बात गौर करके लिखना के दिल पर बोझ या pressure तो नहीं है , अगर है तो नागवारे ख़ातिर (अरूचिकर) तो नहीं है ।

Shri M. Kishanrao का ख़त आया है जो आपके पास भेज रहा हूँ । उसका जवाब आँ अज़ीज(आप) ही दे देवें । एक बात ज़रुरी उसको लिखना है के ओ A and B का ध्यान और दिल का ध्यान सब मिलाकर गड़बड़ कर लेते हैं । यह उनको समझा देना हैं । A पर ध्यान रात के वक्त भाई बहनों का मुराक़बा है । B पर ध्यान असली meditation से पहले 5 मिनट कर लेना है । ख़ैर, आप समझा देवें ।

उपरवाला ख़त उत्सव से पहले कई रोज़ लिख चुका था । उसके बाद जब लिखने की नौबत (बारी) आई तो आपका ख़त BG 204 मो. 20 जनवरी भी आ गया । इसका जवाब देनेसे पहले मैं यह लिखना चाहता हूँ के आप अवंती और गुलाबी या अगर मुमकिन न हो सके तो गुलाबी की ही marriage endowment policy ले लीजिये । बडी लडकी की शादी में अब ज़ियादा वक्त नहीं है । इसलिए उसको छोड दिया | उसके बारेमें मुझे वाक़फियत (मालूमात) नहीं है । आप किसी agent से क़वायद (नियम) लेकर पढ़वा लीजिये और अज़ीज़म माधवराव या किसी और होशियार आदमी से मशवरा(सलाह) ले लीजिए ।

अज़ीज़म माधवरावजी की मोहब्बत में कोई शुबहा (संदेह) नहीं । और मैं यह चाहता हूँ के अगर Hyderabad में सतसंगी बढ़ जावे तो एक training centre उनके मातहत(निगरानी में) खोल दिया जावे । मगर उनकी अंदरूनी system पर बडी मेहनत की ज़रुरत है । तो आँ अज़ीज़(आप) तो कर ही रहे हैं । मैं भी जल्द शुरु कर दूँगा।

आपने जो सरनाडजी के बारे में लिखा है के ओ पहले point को cross कर चुके हैं। पहला point यानी दिल, रुहानियत से लबरेज़ (तर) हो चुका है । मगर अभी उसकी सैर-ए-लतीफ़ (सूक्ष्म यात्रा) बाक़ी है । इस लताफ़त (सूक्ष्मता) को आँ अज़ीज़ (आप) ने second point पर समझ लिया है । उसका तरीका यह है के आप पहले point पर concentrate होकर या टटोल लें, के क्या बात है । यह practice पर मबनी (निर्भर) है । और इसको बढ़ाना चाहिए । फिर दूसरे point पर भी concentrate करें । पता चल जावेगा | भाई Laxmi Narshimham की दिल की सैर शुरु हो

गई है । मगर बहुत मध्यम है । सैर के वक्त यह ख़ियाल बांधा जाता है के सैर शुरु हो गई मगर साथ ही अगर आप यह ख़ियाल बांध दे के clockwise wave चलने लगी है तो सैर हो जावेगी और इस movement का दौर या circle आप पूरा कर दें तो सैर उसी मिनट ख़तम हो जावेगी । ऐसा करनेमें कुछ अपनी इच्छा शक्ती को थोडा press उसके दिल में रखना पडता है या हलकी grip रखना पडती है, ताके अंदर की ताक़त इस क़दर (मात्रा में) न उभर जावे के इस में tension पैदा कर दें । दूसरे मानो में इस चीज़ पर काबू रखना होता है के ओ ज़रुरी ताक़त जो सैर में पैदा होती है, ज़रुरत से ज़ियादा न उभर पडे । इसलिए बुज़ुर्गोने इस चीज़ को रवाँ (प्रचलित) नहीं रखा । मैं, चुंके अपने आपको बुज़ुर्ग नहीं समझता, इसलिए, उस को जायज़ (उचित) समझ लेता हूँ । मैं चाहता हूँ के तुम कोई एक case मेरे सामने करो ।

दूसरी बात और बताता हूँ । यह बड़े मारके की (महत्वपूर्ण) बात है, अगर आपका किसी के बारे में ख़ियाल आ रहा है के फलाँ मुक़ाम की सैर वैसे ही हो रही है जैसे के आँ अज़ीज़ (आप) चाहते हैं तो भी यह काम होने लगेगा । फ़कीर का तसव्वुर (ख़याल) खाली नहीं जाता । लिखते लिखते मुझे वह रावणवाले स्वामी की याद आ गई और ओ कुछ शरमाये हुए से मालूम होते है।

आप की ख़्वाहिश यह है के आप का एहसास (अनुभवशक्ती) तेज़ हो जावे । और मेरी ख़्वाहिश यह है के मैं राघवेंद्रराव बन जाऊँ और भाई यही तरक़ीब सब से बढ़िया मालूम होती है । इस में एहसास भी तेज़ हो जावेगा और हर बात ठीक उतरती चली जावेगी । या फिर एक बात करो के मेरी वृत्तीयों से अपनी वृत्तियाँ बदल लो । अब लिखता हूँ के आप के एहसास में मुझे कमी नहीं मालूम होती, मगर confidence न होने की वजह से गलती होती है । जो बात सही होगी उस के बारे में दिल में इतमीनान (संतोष / विश्वास) मालूम होगा।

जाने कौन सी बात आप पूछना चाहते है, जिसको बदतमीज़ी समझें है । पूछने में कोई हर्ज नहीं इसलिए के जब मैं किसी की बदतमीज़ी (अशिष्टता) जानूगाँ, तब तो उसे तमीज़ (शिष्टता) सिखा सकूँगा। तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) के बारे में मेरा तजरूबा (अनुभव) यह है के, मैं यह सोच रहा था के अब की उत्सव में कैसे 3 दिन रुजू हो सकूँगा, जब के मैं एक आदमी को तवज्जह (प्राणाहुति) देने के बाद, दो दिन तक अपने आप को बेकार महसूस करता था । करना तो ज़रुर

है जैसे भी बन पडता । मगर एक ताज्जूब (आश्चर्य) की बात सुनाता हूँ के 6.25 a.m. बतारीख 24 जनवरी मैं नहा कर गुस्लखाने (स्नानगृह) से निकला तो कोई कमज़ोरी जिस्म (शरीर) में न थी और न खाँसी थी और अब भी वही बात है ।

दूसरा तजरुबा, सेलम में सख़्त बीमार हो गया | कमर में इस क़दर (इतना) दर्द के एक आदमी जो चारपाई से उठाये तो उठ सकूँ और बगैर उसके दो तीन मिनट उठने और संभलने में लगते थे । यहाँ तक के छडी के ज़रिये से जब पेशाब वगैरा के लिए जब जाता था, तो कई मर्तबा (बार) गिरते गिरते बचा । मजबूरन मास्टरसाहब और राजगोपालन मुझे पकडे रहते थे । रेल में सवार होना नामुमक़िन (असंभव) था । मास्टरसाहब की राय हुई के दो तीन दिन ठहर कर जावें, जब सेहत (स्वस्थ) हो जावे । मगर मैंने programme बदलना न चाहा, जैसे होगा चलूँगा । जाने के दो घंटे पहले कमर में एक jerk ऐसा लगा, के 90% दर्द दूर हो गया और पेशाब, जो दर्द कमर की वजह से ठीक नहीं हो रहा था, साफ होने लगा । जब रेल मे बैठा तो एक हल्का jerk फिर लगा; दर्द काफ़ूर (ग़ायब, दूर) हो गया । ओ पेशाब जो जमा हो गई थी ख़ारिज (बाहर) हो गई । जब मद्रास पहुचाँ तो ओ पांचवा दिन था के पाखाना नहीं हुआ था । वहाँ पेट भी साफ़ हो गया । कुदरत (प्रकृती, निसर्ग) को जिस क़दर ज़रुरत थी हो गया।

ये बात वैसी है, जो ज़ाहिर करती है के काम लेनेवाला जिससे काम लेता है, उसे वैसा ही बना लेता है । ख़ाँसी वगैरे कुछ न कुछ ज़रुर रही और मद्रास से वापसी के वक्त रास्ते में दो दौरा (रोग का आक्रमण) दमे के हो गए । मगर जिस तकलीफ़ की वजह मैं बेकार था वह जाती रही ।

भाई मर्हबा (शाबाश, बहुतखूब) ! इस इबारत को देखकर के आप को आधा चना भी बना दिया जाय तो ये शरारा (चिनगारी) देखिए क्या कर दिखाता है । मैं इस हिम्मत पर बहुत ख़ुश हुआ । ईश्वर मुबारक (मंगल) करे । और इसपर साबित क़दम रखें । मैंने तो South का काम ख़्वाँ (चाहे) speeches हों या और काम, सब आप पर छोड रखा है । रवानगी के वक्त मैंने Varadachari के सामने आप दोनों को इसके जिम्मेदार किया था । आप Varadachari को इस मामले में तेज़ भी करते चलें ।

काशीराम आसाम से, मय (साथ) 6 दीगर (अन्य) आदमी औरतों के, आये । 30 को वापिस जा रहे हैं । Dr. P. Sen आये हुये हैं और अभी काफ़ी अरसा (वक्त) रहेंगे ।

डॉ. Varadachari ने अपने ख़त 22 जनवरी 58 में मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) लिखा है ।

Shri R. R. wrote to me a letter in which he says some things about me which are too good to be true. But he is such an evolved soul and shining in the grace of the Master that he sees himself in everybody. The mission is bound to be enriched by his work.

ज़रा मुझे भी लिखना के आपने क्या लिखा था ताकि मैं भी आप के मुताबिक ही उन्हे समझा दूँ ।

गुलाबी की और श्रीकरराव की याद, मुझे अक्सर (प्राय:) आ जाती है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 60 शाहजहाँपुर
No. C-101-SRCM Date 14.02.1958

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त 210-BG-SRCM मो. 3 फरवरी 58 मौसूल हुआ । आपका तरीक़ा ठीक है । अगर इश्क सादिक़ (सच्चा) है तो हर ज़र्रा जिस्म (शरीर का हर कण), का सात साल के अंदर बदल जाना चाहिये ।

अगर तनख्वाह इजाज़त (वेतन अनुमती) देवे, और marriage endowment policy मुफ़िद (फायदेमंद) साबित हो, तो लेने की कोशिश करना । मेरी एक लडकी शादी करने के लिए रह गई है । रुपये की किल्लत (कमी) की वजह से मुझे marriage endowment policy याद आती है, और उस वक्त यह रुपया भी मेरे पास बहुत था । ज़मीनदारी जाने से तंगी शुरु हुई ।

आप घर के अख़राजात (खर्चा) में जितनी किफ़ायत (बचत) कर सकते हो, कर लिया कीजिए । किफ़ायत से मेरा मतलब कंजूसी से नहीं है जिससे बच्चे तकलीफ़ उठाये।

एक बडी ख़ुशी की बात सुनाता हूँ । तिरुपती में एक जमीन के बारे में दरख़्वास्त (अर्जी) दी गई थी, ओ मिल गई । बडी अच्छे जगहपर है । और कब्ज़ा मिल गया । वहाँ पर हिंदुवाना तरीक़े में सुपारी पान व खोबरा से जो रसम (रिवाज़, रीति) अदा की जाती है, 9 Feb. 58 को हो गई । आप भी Mr. A. Balasubramaniam, pensioner, 41/2 Nehru Street, Tirupati, को शुक्रिया का ख़त लिख दीजिए । यह उनकी कोशिशों का नतीजा (परिणाम) है । ओ कच्ची इमारत फ़िलहाल बनावेंगे । Dr. K.C. Varadachari, कलकत्ता 21 Feb. को पहुँच रहे हैं और 24 Feb को by air मद्रास होकर तिरुपती पहुँच जावेंगे । मैंने दो सतसंगियों को उनसे मिलने और सतसंग करने के लिए लिख दिया है और Varadachari को भी इत्तला (सूचना) दे दी । सतसंगी Dr. P. Sen मेरे पास मौजूद है । K.C.V.ने एक ख़त से मुझे लिखा है "I have resigned my self completely to thee and in fact I was even feeling why I was accepting invitation to speak of Shri Aurobindo, but in a way that too may

by thy blessing help the cause." दोबारा लिखा है , " I am sure, with thy blessings, it will be possible for me to more and more be thine alone and in thy own language "dead and gone."

Thyagarajan का ख़त चार यूम (दिन) हुए आया था । मुहब्बत से भरा हुआ था । आपने अच्छा किया, चिंचोलीवाले भाई का confusion दूर करने के लिए समझा दिया । दो यूम (दिन) से कुछ खाँसी सूखी, जुक़ाम के साथ शुरु हो गयी है । हिंन्दुस्तानी दवा मँगवाई है, जो फ़ायदा करती है । तबीयत ठीक हुई तो 21 Feb. को एक बरात में देहली जाना है । 24 को वापसी। फिर 26 को लखीमपुर जाऊँगा । बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 61 शाहजहाँपुर
No. C-122 -SRCM Date 03.03.1958

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज (आपका) का ख़त No-220-BG-SRCM of 25-2-58 मौसूल हुआ। आप तिरुपती जो रुपया भेजना चाहते हैं, रोके रखें । मैं जब ज़रुरत समझूँगा, लिख दूँगा । मिस्टर कुमारस्वामी को आपने ठीक लिखा । मैंने उनको मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) लिखा है ।

Your very thought of service will bring men under your fold of spiritual training. The thought of a spiritual man creates atmosphere in accordance with the nature of one's thought. But we are all human beings, so we must adopt the methods, what the human wisdom demands and it is our duty too. The tide, when once rises, can not be settled down and we must try to raise the tide. I want that these must not be purely advertisement although every

activity becomes the advertisement itself, if it is not turned into the idea of service. So please try to have that turn as we are doing the same.

आप का और मेरा जाना उस वक्त मद्रास, बहुत अच्छा हुआ और आपकी समझाने बुझाने से उनमें हिम्मत आ ही गई । अब लाज़िम (आवश्यक) है के उनको हिम्मत दिलाते रहें ।

श्री.रामकिशनरावजी साहब मोहब्बती है । उनको मेरी दुआ कह देना । मुझे बडी ख़ुशी होगी के अगर आपके और सरनाडजी के साथ श्री. लक्ष्मीनरसिंहम भी आवे ।

टिकट concessions शायद इस लिहाज़ से मिल जावें के आप लोग प्रोफ़ेसर हैं । और तालिब इलमों (विद्यार्थीयों) को ही concessions रखा गया है । इसलिए आप लोगों के लिए भी मुमकिन (संभव) है, गुंजाइश (जगह) रख छोडी हो । रेल्वे में circuitous route लेने से concession मिल सकता है । मगर आप इतना फ़ासला तय नहीं कर रहे हैं के टिकट मिल सके ।

आप की रुहानी हालत बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) बहुत अच्छी है और बढ़ रही है । ईश्वर आप को खूब तरक्की देवे और शाइक़ीन मारफ़त (साधकों को) को फ़ायदा होवें । सरनाडजी में और लक्ष्मीनरसिंहम में इतना फ़रक है के सरनाडजी ब्रह्मविद्या को मुक़द्दम (मुख्य) और दूसरे काम मोख़र (आखिरी) समझने लगे हैं । लक्ष्मीनरसिंहम बरख़िलाफ़ (विरुद्ध) इसके, दीगर (अन्य) कामों को मुक़द्दम (मुख्य) और ब्रह्मविद्या को उसके बाद समझते हैं। मोहब्बत इन दोनों को खूब है । आपने जैसा कहा था, सरनाडजी initiation के लायक है और लक्ष्मीनरसिंहम भी हो जावेंगे ।

सरनाडजी का ख़त आया था । उन्होंने अपने में गुस्से की शिकायत की थी । आपके ख़त का जवाब यह है के ईश्वर से प्रार्थना उसके जाने की करें, इस तरह पर के आँसू डिब डूबा आवें । गुस्से में कमी, बफ़ज़लहू, ज़रुर हो चुकी होगी । डॉ. P. Sen कलकत्ता से 16 Jan. को आये थे और ओ मेरे पास अभी रहेंगे । बच्चों को दुआ ।

बडी खुशी की बात है के तरजुमा (अनुवाद) उर्दू किताब का अच्छा हो रहा है । चिंचोली से भी ख़त आया । जवाब दे रहा हूँ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 62 शाहजहाँपुर
No. C-131 -SRCM Date 13.03.1958

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं आप के पिछले ख़त का जवाब दे चुका हूँ, पहुँचा होगा। वालिदा साहिबा (माताजी) की तबीयत अय्याम होली में (होलीके दिनोंमे) बहुत ख़राब रही । जीस्त (ज़िंदगी) की उम्मीद जाती रही थी । बुखार अब भी हो आता है । ख़तरेसे बफ़ज़लहू, बरी (मुक्त) हैं । क़मजोरी इस हद तक है के बिला मदद के उठ भी नहीं सकती । श्री. ईश्वर सहाय होलीमें यहीं आये थे, मैं न जा सका । कुमारस्वामी का इरादा एक pamphlet, 8 सफेका (पन्नों का), Telugu में तरजुमा(अनुवाद) करनेके बाद, छपवाकर मुफ्त तकसीम (बाँटनेका) करनेका है । ओ श्री. ईश्वर सहायने मुझे दिखलाया, बहुत अच्छा था । अब उनके पास पहुँच गया होगा । Messages भी 35 मँगवाये थे, ओ भी उसके साथ किये होंगे ।

एक ख़ुश खबरी आपके लिए यह है के आपने एक region जिसको मैंने फ़ारसी नाम माबद्र (प्रभू), आबिद (प्रपन्न) दे रखा था, पार कर के अब्दल माबद (प्रपन्न प्रभू) में आ गये । मुबारक (मंगल) हो । अब इसके बाद ABC वगैरा शुरु होंगे । इसलिए के नाम अब हालत के मुताबिक नहीं मिलते । अभ्यासी जितना higher जाता है, खुसूसन (विशेषत:) मुक़ाम A से मुझे तालीम (प्रशिक्षण) करना आसान होता है । और कुव्वाए बातिना (आंतरीक शक्तियाँ) सुधरते चले जाते हैं । फिर भी मेहनत अगर रहती है तो हर faculty को कुदरत (प्रकृती) से हम-आहंग (एकरुप) (in conformity) करनेमें रहती है । और उसीको making कहते है और बडी मेहनत तलब (कष्टसाध्य) चीज़ है ।

Tyagarajan का ख़त और डायरी मेरे पास आयी थी । मैं उसको आपके पास जवाब के लिए भेज रहा हूँ । और यही उनको लिख दिया हूँ । Shri M. Kishanrao के दो ख़त मेरे पास आए उनको भी आपके पास जवाब के लिए भेज रहा हूँ । उसमें जो सवालात है, ओ इस क़दर (इतने) मामूली (सामान्य) है के मेरा उनके जवाब देनेके

लिए दिल रागिब (झुकाव) नहीं होता । ओ आपके पास आये भी होंगे ।

अब थोडेही दिनोंमे मैं आप सबका आने का, तेज़ीसे इंतज़ार (प्रतीक्षा) करने लगूँगा । भाई श्रीपत सर्नाड तो बहुत ही अच्छे आदमी बन रहे हैं । और श्री. लक्ष्मी नरसिंहम में भी ख़ूबियाँ (गुण) हैं । मगर उनको लगाव बढ़ानेकी ज़रुरत है । श्री P. Madhavraoji का ख़याल भी अक्सर आ जाता है । और उनमें मुहब्बत बढ़ रही है ।

Tirupati में कुछ आदमी और बढ़े हैं । और आगे बढ़ने की उम्मीद है । Shri. A. Balsubramaniam इसमें बहुत कोशाँ (प्रयत्नशील) रहते हैं । अब सब मिलकर, मफ़ादे आम्मा (लोकहित) के लिए, mission की ideology को फ़ैलाईये । ईश्वर मदद करे । एक कंबल blanket ओढनेवाला, अगर गाँवमें तैयार हो सके तो तैयार कराके, लेते आना । बच्चों को दुआ । सभी भाइयोंको आशीर्वाद ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 63 शाहजहाँपुर
No. C-146 -SRCM Date 29/31.03.1958

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के ख़त No.225-BG-SRCM मो. 10-3-58 और 227/BG/SRCM 21-3-58 मौसूल हुए । ज़हे क़िस्मत (सौभाग्य) के आप सब लोग तशरिफ़ लाकर (आकर) इस हक़ीर (नाचीज़) के दिल में क़ियाम (निवास) करेंगे । आप लोग सूरत होकर circular tour पर अगर आवें या उधर से होकर जावें, तो मगनलाल K नाइक को मैं इत्तला (सूचना) दे दूँगा के ओ स्टेशन पर आपसे मिल लें । उनको अभी कुछ ऐतबार (विश्वास) नहीं ।

अच्छा हुआ के आपने लडकियों की marriage endowment policy ले ली । ईश्वर ऐसी सूरत (उपाय) निकालता रहेगा के उसका premium अदा (देना) होता रहे। आप से मैंने ऊनी कंबल मँगवाया है। सो भाई, इतना क़ीमती मत ले आना जो मुझे गरीबी में कुचल दे । औसत दर्जे (मध्यम स्तर) का होना चाहिए । जिसकी क़ीमत का अंदाजा आप पर छोडता हूँ । अच्छा है, भाई किशनरावजी व नीज़ (और) सतसंगियो में यह जागृति पैदा होती जा रही है के मिशन को बढ़ायें ताके दूसरों को फ़ायदा पहुँचे । M.Tyagarajan का ख़त आया और डायरी भी आई। उसकी कापी आपके पास पहुँच गई होगी । तिरुपती में सतसंग के मेंबर अभी तक हर महिने मे कुछ न कुछ बढ़ते रहे हैं । कुमारस्वामी के यहाँ सतसंगी नहीं बढे हैं । उन्होंने एक Pamphlet 8 पन्ने का मँगवाया है जो भेज दिया गया और उन्होंने पसंद किया । ईश्वर, भाई लक्ष्मीनरसिंहम को जल्द शफ़ा (आरोग्य) देवे ।

फ़कीर कितना ही ऊँचा हो जावे मगर इन्सानियत जो ख़ुद एक limitation है, बाक़ी रहती है । कबीर ने भी कहा है -

जा मरीबे सो जग डरै सो मोहे अती आनंद
कब मरी हौं कब पाई हौं पूरन परमानंद

एक फारसी के शायर ने कहा है के -

" गहे बरतारम आली नशीनम, गहे पुश्त पाय खुदनबीनम " यानी एक फ़कीर की हालत बयान की है, जिसका मतलब यह है के " कभी तो मैं सातवें आसमान पर तख़्तनशीन होता हूँ । और कभी अपने

पैर का तलवा भी दिखाई नहीं देता । " अगर यह limitation या हद तोड़ दी जाय, तो रुह (आत्मा) क़ल्बे इन्सानी (मानव हृदय) से परवाज़ (उड़) कर जायेगी । इसलिए गुरुलोग इस चीज़ को नहीं छूते । हमारे लालाजी साहबने जो इजादें (अविष्कार) की हैं, इसमें एक इजाद और भी है के 16 दायरे, जैसे के Reality at Dawn के Diagram में मौजूद है, जिसके बाहर अब तक सिवाय हमारे गुरुमहाराज के, या जिसपर उनकी कृपा हुई हो, कोई न जा सका । अब आपने जब जाने की राह बताई, तो तरकीब (युक्ती / उपाय) भी बता दी । जब कोई 17th circle में जाने की खुशख़बरी दे, तो Teacher का यह फर्ज़ (कर्तव्य) हो जाता है के वहाँ पर एक bondage पैदा कर दे, ताके रुह अपने असल में परवाज़ (उड़) कर के मिल न जाय । मैं चाहता तो यह हूँ के अपनी ज़िंदगी में यहाँ तक पहुँचने की, लोग ख़ुशख़बरी दे। मगर यह सब ईश्वर के हाथ में है। कोई अमल, कोई क्रिया इसके आगे पहुँचाने में हरगिज़ (बिल्कुल) काम नहीं दे सकता । सिर्फ़ Teacher का will जो यहाँ तक पहुँचा हो, वहाँ सैर कराने में मददगार हो सकती है ।

भाई, आप मुझसे मज़दूरी माँगते है ? मैं तो आप को मालिक समझता हूँ । पस् (फिर) ताज्जुब (आश्चर्य) है के मालिक अपने किये हुए की मज़दूरी, ख़ादिम (सेवक) से माँगे । कहिये कुछ लिख दूँ , मगर कोई यह न समझ जाय के मैं अपनी दिखाता हूँ और भाई उस्तादी दिखाऊँ किसको, जबके कोई चेला मिले । मैं क़रीब क़रीब हर वक्त बफ़ज़ल (ईश्वरकृपा से) Negation की हालत में रहता हूँ, जहाँ न मैं हूँ न मेरा ख़ुदा । भाई, काफ़िर (नास्तिक) का ख़िताब (उपाधि) लोग मुझे न दें । कुफ्र (नास्तिकता) तो मैं तोड चुका और यह मेरे गुरुमहाराज का फ़ज़ल (दया) व करम (कृपा) है।

एक शायर ने लिखा है के

"कुफ्र (नास्तिकता) से खाली नहीं ऐ शेखजी ताअद (उपासना)
कोई |

ख्वॉ (चाहे) बुत (मूर्ती) पूजिये या लीजिए नाम अल्लाह का |"

और भाई, नहीं मालूम इस संग (पत्थर) बेनमक (नमकहीन) में क्या मज़ा है । इससे हटने का जी नहीं चाहता । यहाँ तक के जब किसी को तवज्जह (प्राणाहुती) देता हूँ तो तालीम के

कायदे (नियम) के मुताबिक़ (अनुसार) मुझको इस मुक़ाम से नीचे आकर तवज़्जह (प्राणाहुती) देना चाहिए । मगर मुझसे यह नहीं हो सकता यही वजह है के सिवाय शांती के और कोई जज्बा (भावना) और भड़क अभ्यासी में पैदा नहीं होती के जो मिशन के उसूलोंपर ईमान (तत्वोंपर निष्ठा) ला सके । मगर ऐसा हुआ है के मैं अपनी पिछली गुज़री हुई हालत पर दमज़दन (क्षणभर) के लिए आ गया, तो उसी हालत का अक्स (प्रतिबिंब) फिरने लगा । मुझे याद है के मैंने किसी शख़्स को लिखा था के आपने मुझे रुहानी तालीम (आध्यात्मिक प्रशिक्षण) दी और आप ही के वजह से और कोशिश से मैंने रुहानी तरक्क़ी (प्रगति) की और यह जज्बा (भावना) सही था । जब मैं उस हालत में आता हूँ तो मुझे ऐसा ही मालूम होता है के आप लोग मिस्ल (जैसे) गुरु हैं । नहीं, नहीं, बल्कि गुरु ही मालूम होते हैं । फिर क़ुदरतन् (सहजही) यह जज्बा सरनगी (विनम्र भाव) हो जाता है के आप ही लोगोंने तालीम दी । मैं चाहता हूँ के हमारे अहबाब (मित्र लोग), अपनी गलतियाँ, और बेवकूफी तो मैं नहीं कहूँगा; ख़ैर, जो कुछ भी इस लफ़्ज के बजाय आप रख लें, मुझसे कहें । मगर जब यह चीज़ दूसरों से expect करुँ तो सबसे पहले मुझे चाहिए के मैं अपनी बेवकूफ़ी ज़ाहिर कर दूँ । एक मर्तबे का वाक़या है के पंडित रामदास चौबेजी जो अपने इल्म (ज्ञान) व हुनर (कौशल्य) पर नाजाँ (गर्व) हैं, मुझको इल्म (ज्ञान) के बारे में मात खाया हुआ समझने लगे । मैंने यह समझा के यह अहंकार उनमें रहना ठीक नहीं । लिहाज़ा मैंने फिर करवट ली और एक हालत गुज़िस्ता (पहलेवाली) पर आ गया और फिर उन्हें क्या लिख दिया - आप ख़ूब हँसेंगे " मैं ही था के जिसने राम और कृष्ण को दुनिया में भेजा, मैं ही था के ऋषियों पर shruti नाज़ल (उतारा) की " वगैरा वगैरा । अब आप समझ गए होंगे के आप, अपने आप को अक्सर बिल्कुल अंधेरे मे क्यों पाते हैं ।

अब मैं आप के दूसरे सवाल पर आता हूँ । मगर इस से पेश्तर (पहले) मैं यह कह देना चाहता हूँ के ब्रह्मसूत्र गोयंदका का तर्जुमा (अनुवाद) पढ़नेमें मज़ा नहीं आयेगा । मैं उनके किसी तर्जुमे (अनुवाद) से agree नहीं करता। उन्होनें literature बजाय अच्छा करने के ख़राब कर दिया। बजाय तरक्क़ी (प्रगति) के तनज्जुल (पतन) का रास्ता बताया । मगर भाई, चलती का नाम गाडी है । लोग उनकी किताबें पसंद करते हैं, इसलिए के ओ आम तौर पर जैसी mentality है, उसी के मुताबिक़ लिखी जाती हैं । अगर ब्रह्मसूत्र देखना है तो मैं आप

को मँगवा दूँगा । उसका भाष्य शंकरने किया है और रामानुजने, और लोगों ने भी किया है । मैंने उसको पढ़ने के लिये Madras order दिया था मगर उस वक्त किताबें खत्म हो चुकी थी । यह किताबें यहाँ अलाहाबाद में भी, मिल जाती है और मद्रास में भी । पारसाल (पिछले साल) मैं जब तिरुपती में था, मैंने चाहा था के मद्रास में से खरीद लूँ और डॉ. Vardachari से दरियाफ़्त (पता) किया के आपकी राय में किस का भाष्य देखना चाहिये । उन्होंने न मालूम मुझसे क्यों कह दिया के आप देख कर क्या करेंगे । मैंने ख़ियाल हटा दिया । उसका तर्जुमा (अनुवाद) अंग्रेजी में भी हो चुका है । लिहाज़ा आप तय कर लीजिए के आप किस का भाष्य पढ़ना चाहते हैं और मुनासिब (उचित) यह है के आप Dr. K.C.V से consult कर लें । फिर मैं कोशिश करुँगा के आप के आने तक वह मैं मँगा लूँ । Dr. K.C.V से मिलने का पता भी पूछ लेना क्यों के अलाहाबाद में तेज़ (महँगा) मिलता है । उस वक्त उसके दाम Rs 20/- थे ।

भाई, आपने सच लिखा है के आप माद्दा (पदार्थ) की असलियत को नहीं समझ रहें है । अगर शक्कर के खिलौने में जान डाल दी जाय तो ओ अपनी असलियत को न समझ सकेगा । मतलब यह है के माद्दा (पदार्थ) में हम रहते हुए अपनी माद्दियत (असलियत) खो बैठे । बस ख़राबी है, तो यही है । Nature दरहक़ीकत (वास्तव में) कोई mystery बंदे से रखना नहीं चाहती । इसलिए के mystery को पेचीदगी (उलझन) कह सकते है और जहाँ पेचीदगी है वहाँ बजुज़ (सिवा) माया के और कुछ नहीं कहा जा सकता । यह Nature एक खुली क़िताब है । मगर हमने अपना vision इतना inverted कर लिया है के उसके तरफ निगाह रहती ही नहीं और भाई, इसको अगर ख़राब ज़बान में कहा जावे तो यह कहना मोजूँ (उचित) होगा के हमारी खोपडी औंधी (उल्टी) हो गई। असलियत का जुहूर (प्रकट होना) उस वक्त होता है, जब के मुतज़ाद ढंग (विरोधाभास) हममें पैदा हो जाते हैं । यानी माद्दीयत (प्रकृति / पदार्थ) की तरफ अगर ख़ियाल होता है तो रुह की तरफ भी हम रेंग जाते हैं । उस वक्त तवाजुन (दोनो पल्लों में बोझ बराबर होना, संतुलन) से हमें कुछ असलियत का इशारा (संकेत) मिल जाता है । अब साइन्सदानों की कुछ क़लई खोल देना (वास्तविकता को प्रकट करना) चाहिये । यह समझ करके आप को इस झुमरे (समूह) में शुमार (गिनती) नहीं कर रहा हूँ । लोगोंने अक्सर मुझसे सवाल किये हैं, या मुमकिन है मुझे शुबह ही (संदेह) है के

scientists ने इस हद तक काम किया है के माद्दे (पदार्थ) की ताक़त को इन्सान का गुलाम बना दिया; तो इससे ज़ियादा नेचर पर command, जो सिर्फ़ yogi का ही aim होता है, और क्या हो सकता है । मगर भाई, मामूली शोबीदा बाज़ों (बाज़ीगर) ने शेर को काबूमें कर के सर्कस में क्या क्या तमाशे दिखाये । सायन्स की चीज़ों का दफैया (रोक) तो दूसरी neutralising चीज़ मिलाने से हो सकता है । मगर इस फ़ाड खानेवाली ताक़त का दफईय: (रोक) किसी acid से मुमकिन नहीं । इस लिहाज़ से यह तमाशा दिखानेवाला, साइन्सदानों से कहीं अफ़ज़ल (बडा) है । भाई, बात यह है के माद्देपर (पदार्थ) क़ाबू पाना यह human brain का development, है और spiritual brain का development, जहाँ पर माद्दे की energy काम नहीं करती, और ही है । इसमें Divine wisdom है और उसमें human wisdom है । आप की राय सही है के इन्सान फ़ित्रतन (स्वभावत:) फ़िलासफर है । इसके निशानात भी मिलते हैं । बच्चा पैदा होने के बाद भी जब ज़रा समझ आने लगती है, तो एक तहय्युर (आश्चर्य) या हैरत उसमें पैदा हो जाती है। जो रुहानी और माद्दी साइन्सकी (पदार्थ विज्ञानकी) जान है । कुछ लोग तो आम खाने में जुट जाते है और कुछ पेड के पत्ते गिनने में । मगर इन सबकी बुनियाद हैरत (आश्चर्य) ही है । साइन्सदां तो माद्दीयत के झमेले में पड़कर उलझ जाते है और मुहक्किक (जिज्ञासु / seeker) उसको छोडकर उस परतौं (बिंब) पर आ जाता है जिसके यह सब परतौं (प्रतिबिंब) है । जब हमें संखियाँ (Arsenic) का असर मालूम हो गया तो हम यह समझने लगे के इसको जहाँ मिला देंगे, ओ चीज़ जहरीली हो जायेगी । या जहाँ उसको मिली हुई देखेंगे, उसको हम ज़हरीली चीज़ समझ लेंगे और यही ज़हर, चीज़ों को ज़हरीला बनाने में मददगार होता है। क्योंके यह इसका ख़ासा (गुण) है । गोया (यानी) संखियाँ (Arsenic) का असर इस चीज़ के जिसमें के मिली है हर रग व रेशे में पैवस्त (मिला हुआ) है । इसी तरह माद्देमें energy काम कर रही है । यह मिसाल आप के इस सवाल को हल कर देता है के रुह (आत्मा) माद्देमें कैसे फँस जाती है । मगर भाई, कुछ समझना, और बाक़ी रह जाता है । अब संखियाँ सब में मिली हुई है । और अलाहिदा (अलग) भी है । दूसरे मानों में अब जो कुछ भी है संखियाँ में है । इसको बाहमा और बेहमा की हालत कहते है । यानी सबसे मिली हुई और सबसे अलाहिदा। रुहानी तरक्की (आध्यात्मिक प्रगती) करते करते अभ्यासी की हालत भी ऐसी ही हो

जाती है । यानी बाहम: ओ बेहम: (सबसे मिला हुआ और सबसे अलग भी) की; और यह ईश्वर की और तारीफ़ों में से एक तारीफ़ (परिचय) है।

अब माद्दा की तरफ झुक़ता हूँ । इस हक़ीर (नाचीज़) का ख़ियाल यह है के महाप्रलय के बाद माद्दा भी नहीं रहता इसलिए के अगर कोई चीज़ बाक़ी रह गयी तो लफ़्ज महाप्रलय ग़लत होगा । मैं माद्दा को eternal नहीं मानता सिर्फ़ ज़ात (Reality / हक़ीक़त / परमसत्ता) वाहिद (एक) है । जो अगर सबका कारण है, तो एक वक्त आने पर सिवाय उसके और कोई चीज़ नहीं रहती । इसलिए यह बात साबित होती है के आग़ाज़ आलमपर (सृष्टीनिर्माण के वक्त) माद्दा बना । यह माद्दा क्या था ? यह ओ actions थे जो मथते मथते ठोस चीज़ को बना सके । क्या उमदा (अच्छी) फ़िलासफ़ी है के हर चीज़ गोल नज़र आती है । वजह यह है के उस बडे क़ारीगर ने जब पैदाइश आलम (सृष्टीनिर्माण) का इरादा किया और energy को काम में लाने का, तो ओ actions round way में हुए ताके energy का circuit बन जाये ताके energy काम करने लगे । चुनांचे (इसलिये) आप जब तवज़्जह देते हैं तब आपकी energy भी circuit में काम करती है ताके अभ्यासी पर असर हो और सतसंगियों का दायरा बनाकर हम इसलिए बैठते है के यह चीज़ भी हमारी मुआविन (सहायक) और मददगार बन जावे । अब यही concentrated energy हो गई तो actions के force की वजह से उसको ठोस या माद्दा कहने लगे । अब यह ठोसताही आप को अभ्यास से दूर करना है ताके आप सरापा (सिर से पैर तक) जान हो जावे । मौलाना रुम जो एक बादशाह था और फ़कीर भी, और शमसे तबरेज़ का मुरीद, क्या अच्छा कहा है, "ख़ुद-ब-ख़ुद आज़ाद यदि ख़ुद गिरफ़्तार आमदी " मतलब यह है के अपने ही आप आज़ाद था और अपनेही आप गिरफ़्तार हुआ । इस फिक़रे में वाक़ई वहदते वजूदी (अद्वैत) का ज़िक्र है, जिस पर मेरा ईमान (विश्वास) नहीं । मैं तो वहदते शहूदी (विशिष्ट अद्वैत) का क़ायल (माननेवाला) हूँ । मगर इस बात पर यह मिसरा (वाक्य) ज़रुर रोशनी फेंकता है के इस energy ने अपनी दूसरी सूरत (रूप) इख़्तियार (धारण) कर ली ।

आपने लिखा है के ऐसा तरीक़ा होना चाहिये के इस चेतना या जड़ता पर पूरा control होना चाहिये । जब factory चलती है तो इस में energy इंजन ही से निकलकर काम करना शुरु कर देती है

और हर हिस्से को घुमाना शुरु करती है । अब आप इस को control करना चाहें तो अगर किसी पहिया या कल को पकड लेवें तो नतीजा यही होगा के हाथ चकना चूर हो जायेंगे और आप चलती हुई चीज़ पर क़ाबू न पा सकेंगे । अगर आप इस मशीन को रोकना चाहते हैं तो जहाँ से energy रवाँ (जारी) है उस पर control हासिल कीजिए और मशीन रुक जायेगी । अब यह बात साबित होती है के जडता पर काबू पाने के लिये आप चैतन्यता पर क़ाबू पायें । और हम सब यही करते हैं । अब चैतन्यता पर क़ाबू पाने की तरक़ीब (उपाय) तो आप को मालूम ही है । जिसके लिये अभ्यास और सतसंग ज़रुरी हो जाता है । मगर फिर भी कुछ कह देता हूँ के चेतना पर क़ाबू हासिल करने के लिये इस चीज़ में आप दखल (प्रवेश) फ़रमाये (करे) जो चैतन्यता की वज़ह है । अब इस पर काबू कैसे हो ? जब के हम बिलकुल उसके क़ाबू में हो जावें । अब यह बात कैसे नसीब हो ? जब के हम उस तरफ़ ऐसा रुजू हो जावें के उसकी नफ़ासत (सूक्ष्मता, निर्मलता) और ताज़गी से charge होने लगें । फिर हमारे environments बदलने लगेंगे और naturalness पैदा होने लगेगी और जो बात के आप चाहते हैं, होने लगेगी । भाई, बह चलो । मम्बा (श्रोत) मिल ही जायगा या अगर ऐसा रुजहान (झुकाव) तेज़ हो के दरीया आप में ख़ुद उमड पडे, तो फिर किसी अभ्यास की ज़रुरत नहीं रह जाती ।

जी चाहता है के कुछ तबीयत आप की खुश कर दूँ । इसका जवाब दे कर, के "माद्दा की असलियत को तो भी नहीं समझ सक रहा हूँ | " माद्दा की असलियत आप उस वक्त समझेंगे जब आप को अपनी असलियत मालूम हो जावे । फिर तो आप माद्दा में गरदिश (घुमाव / भ्रमण) भी पैदा कर सकते हैं ।

अगर आप तवज्ज़ह (प्राणाहुती) देते वक्त यह भूल जाते है के मैं तवज्ज़ह दे रहा हूँ तो कुछ मुज़ायका (हानि) नहीं । तवज्जह न मैं देता हूँ न आप । देनेवाला कोई और ही है । जब ख़याल आ जावे तो उसे कर दिया ताके उसमे ज़ोर पैदा हो जावे । तवज्ज़ह देते वक्त हर कोई, जो फ़ैज के ऊपर से आता है, उसमें कुछ न कुछ मस्त हो ही जाता है । मुझे तो अक्सर जो फ़ैज मेरे ऊपर गिरता है, रोकना पडता है । इसलिये के कहीं नाक़ाबिले बरदाश्त (असहनीय) न हो जावे । मगर आप उसको न कीजियेगा । तवज्ज़ह देते वक्त इतना मस्त नहीं होना चाहिये के दूसरों का हिस्सा आप हड़प कर जाए और वह फ़ैज आप में रह जावे । यह खराबी कोई नहीं है, न इससे किसी का नुक़सान है ।

ख़ुद मस्त हो जानेमें, दूसरों के पास हिस्सा बहुत कम पहुँचता है । ऐसे तवज्ज़ह देनेवाले के हिस्से में कुछ न कुछ फ़ैज रह ही जाता है और उससे उसको फ़ायदा भी पहुँच जाता है।

आप ग़ाइबाना तवज्जह (परोक्ष प्राणाहुती) देते वक्त ख्वाँ (चाहे) बैठ जाईये या लेट जाईये या चलते फिरते दीजिए, कोई हर्ज़ (नुकसान) नहीं । जब आप आमने सामने सतसंग कराते हैं, उस वक्त भी अगर लेट जावें तो कोई हरज (हानि) नहीं होता, मगर यह चीज़ जब बैठने से कोई मजबूर हो तो करना चाहिये । तवज्ज़ह में कोई फ़रक नहीं पडेगा ।

मेरी माँ की तबीयत अब सुधर रही है । मगर नक़ाहत (कमजोरी) इस क़दर है के रिफा-ए-हाजत (पाखाना या पेशाब) के लिये उठाने की ज़रुरत पडती है । और अक्सर पाखाना पेशाब चारपाई पर ही हो जाता है ।

आप के ख़त के जवाब में इसलिये देर हुई के कोई लिखनेवाला आ जावे तो आपके सवालात का जवाब दे दूँ । हुस्ने इत्तिफ़ाक़ (सुयोग) से सूरजप्रसाद आ गये । उनसे लिखा दिया । ओ आप को नमस्ते कहते हैं । अब की आप की उनसे भी मुलाक़ात होगी । ओ यह चाहते हैं के आपके इस ख़त के extracts, सहज मार्ग पत्रिका के अगले नम्बर में छाप दिये जाए । इसलिये मैं आपको यह तकलीफ़ देना चाहता हूँ के बवक्ते फ़ुरसत (अवकाश हो तब), उसकी नक़ल करके आप श्री.ईश्वर सहायजी के पास भेज दें | उनके पास वक्त कम था, नहीं तो यहीं नक़ल कर लेते और लखीमपुर मैंने ख़त यूँ न भेजा के फिर आप के पास पहुँचने में देर हो जावेगी।
बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः Reality at Dawn की तमील publication छप गयी है। और अभी दो किताबें आई हैं।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 64 शाहजहाँपुर
No. C-193 -SRCM Date 18.04.1958

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) No.-236-BG-SRCM मो. 6-4-58 मौसूल (प्राप्त) हुआ । अब मैं आपके आने का तेज़ी (आतुरता) से इंतज़ार (प्रतिक्षा) करने लगा। श्री. त्यागराजन ने एक नक़ल मेरे पास भी भेजी है। मैंने पोस्टकार्ड से मुख़्तसर (संक्षिप्त) जवाब दे दिया । तिरुचिन्नापल्ली में मेम्बर नहीं बढ़ रहे हैं, बाक़ी जो हैं, ओ सब अच्छे हैं | Tirupati में तादाद (संख्या) बढ़ रही हैं । Hindu का Asstt. Editor शामिल हुआ है । मगर दो तीन sitting के बाद ही 7-4-58 को, leader programmes conference में अमेरिका चला गया | उनकी Varadachari ने बहुत तारीफ़ की है । मैंने 6 किताबें Reality at Dawn की, उनके पास भेज दी अगर वक्त पर मिल गई तो ओ किसी को दे देंगे । मगर उन्होने लिखा है के interested person कौन है इसका पता चलाना मुश्किल होगा । इसका तमील में तरजुमा (अनुवाद) छप के आ गया है, जो सिर्फ तमील जानने वालों के लिये अच्छा रहेगा। आप को ज़रुरत होवें तो मुझे लिख दीजिएगा । अज़ीज़ लक्ष्मीनरसिंहम की तबीयत ठीक सुनकर ख़ुशी हुई। ईश्वर करे वह भी आप की हमराह (साथ) आवें । मुझे दमे में अब दो यूम (दिन) से इफ़ाक़ा (आराम) है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 65 शाहजहाँपुर
No. C-233 -SRCM Date 25.04.1958

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) बिला (बीना) तारीख मौसूल (प्राप्त) हुआ। आप के यहाँ शादी 8-5-58 है । उसके एक हफ्ते या दस यूम (दिन) बाद आप आसानीसे चल सकेंगे । आप की तातील

(छुट्टीयाँ) तो जुलाई के पहले हफ्ते तक रहेगी । आज मैंने Theosophical Society मद्रास, ब्रह्मसूत्र के लिये लिखा है और quotations मँगवाये हैं। मद्रास में Rs. 18/- क़ीमत 1946 में थी और अलाहाबाद में Rs. 25/-। Dr. K.C.V. ने मुझे भी क़रीब क़रीब यही लिखा था । मैंने उसका जवाब दे दिया के मैंने तो उनको किताबें पढ़ने के लिये कहा है ताके उनसे अच्छी अच्छी writings मिल सके । ईश्वर, भाई लक्ष्मीनरसिंहम की मुश्किलात (कठीनाईयाँ) आसान करे । मुझे भी एक अरसे (लम्बे समयसे) से ख़ानगी (घरेलू) तफ़क्कुरात (चिंताएँ) और मुश्किलात (कठीनाईयाँ) चली जा रही है। आनेपर आप को बतलाऊँगा । ताकि आप की दुआ से कुछ मदद मिल सके । श्री. राममूर्ती ने हैद्राबाद में भी पत्रिका का ग्राहक बनने के लिये कहा था और श्री. ईश्वर सहाय को पता भेजा था, मगर ओ भेजने को भूल गए । अब मैंने उनसे ताक़ीद कर दी के एक कापी उनको ज़रुर भेज देंवे।

कल Shri N. Appajirao मय (साथ) अपने बीवी के गरीब खानेपर (मेरे घरपर) पहुँच रहें हैं। ओ यात्रा कर रहे हैं | और तिरुपती के श्री. Balasubramaniam के रिश्तेदार है । ख़ैर, Kolar Gold Field के वकील है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 66 शाहजहाँपुर
No. 262 - SRCM Date 09.05.1958

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आप का मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) No-243-BG-SRCM मोरखा 29-4-58 मौसूल (प्राप्त) हुआ । बडी ख़ुशी की बात है के आप लोग सब आ रहे हैं । मैं इंतज़ार (प्रतिक्षा) में रहूँगा । 17 जून, आगरे में Shri P.S. Shukla की लड़की की शादी है, मुझे बुलाया है । मैं इस साल बवजह तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य के कारण) कहीं शादी में

शरीक नहीं हुआ । शुक्लाजी के यहाँ शादी जेरे ख़याल (विचाराधीन) है । आप ने initiation का ज़िक्र सरनाडजी से कर दिया होगा क्योंकि initiation करने में मुझे अपने आप को दूसरे के हाथ में दे देना होता है । और ऐसा के, मैं ताल्लुक (संबंध) कत्अ (तोड़) नहीं कर सकता, बजुज़ (सिवा) किसी खास सूरत (परिस्थिति) के । अब की आप को तनहा (अकेले) सफ़र करना होगा । आप मुझे सफ़र में साथ रखिएगा । अब की saint कस्तुरी को मैंने 6 मई से यहीं रोक लिया है ताकि आप लोग भी देख सकें । मैंने ब्रह्मसूत्र के लिए मद्रास लिखा है मगर वहाँ छपनेवाली है । 1947 में भी मैंने लिखा था मगर available न थी । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 67 शाहजहाँपुर
No. C-354 -SRCM Date 01.08.1958

मेरे राघवेंद्रराव़जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के दो ख़त No. 262 BG-SRCM मोरखा 10 July 58 व No. 267-BG-SRCM मो. 22 July 58 मौसूल हुवे। डॉ. K.C.V. काम तो मिशन का तनदेही (तन्मयता/परिश्रम) से कर ही रहे हैं । मसलहतन (सोच समझ कर) उसको जवाब नहीं दिया होगा । मैं उनका ख़त पढ़ने के बाद वापिस कर रहा हूँ।

श्री. M. Kishanrao का ख़त भेज रहा हूँ । उनको आप ही जवाब दे देवें । मैनें जुमला (वाक्य) underline कर दी है और कुछ नोट (टिप्पणी) भी लिख दी है।

आप मुझे बजाय तीन या चार माह रखने के हमेशा के लिये रख क्यों नहीं लेते ? डॉ. साहब, तिरुपती, ख़ुद जानते है के मैं आऊँगा इसलिए आप का लिखना बनावट में शामिल हो जावेगा । भाई रामचंद्ररावजी अगर पूजा आप के ढंग पर क़ाइदे (नियम) से करेंगे, तो darkness साफ़ हो जावेगी । मगर इस वक्त तक वैसी ही है।

आप फार्म जब चाहे और मुनासिब (उचित) समझें भरवा सकते हैं । श्री. रामचंद्रावजी अगर सफ़ाई वाला ध्यान शाम को करें, यानी धुवाँ की शकल में सियाही और grossness निकल रही है और सुबह को वही ध्यान जो हम सब लोग करते हैं, तो बहुत कुछ अपने आप ही साफ़ होने में कामयाब (सफल) हों। अगर ओ चाहें तो उनको ध्यान यह बतला दीजिये।

Shivlingapa अच्छे आदमी ज़रुर है मगर अहंकार मालूम होता है और Realisation की तरफसे फिरे हुए है । मास्टरसाहब ने पत्रिका भेज दी होगी । उनको एहतियातन (सावधानी के रूप में), मैं लिख रहा हूँ। मुंदरिजा जैल (नीचे लिखे) अश्ख़ास (लोगो) ने बज़रिया (द्वारा) डॉ. वरदाचारीजी, शुरु किया है । ये हैद्राबाद में हैं । जब आप वहाँ जाएँ तो उनको इत्तला (सूचना) कर देवें के ओ सतसंग के लिये आप के पास आवें और उनको reference मेरा दे देवें, के उन्होंने मुझे सतसंग आप को देने का लिखा है, और यह के आप भी preceptor मिशन branch के हैं।

1) Shri. M.B. Sreeramulu, B.A., Asstt. Secretary to Govt. of Andhra Pradesh, Agriculture Secretarial Dept., Hyderabad.
2) Shri. D. Damodran, B.A., Upper Division Clerk, Health & Local Administration Dept., Govt. of Andhra Pradesh, Hyderabad. No. 1-C2-Erram Manzil, Khairatabad, P.O. Hyderabad.

ईश्वर की कृपा से जुनूबी (दक्षिण) हिंद में अब कुछ कुछ मिशन की आग भड़कना शुरु हो गयी है । इसको fan up करने की ज़रुरत है । मैंने, भाई Laxmi Narasimham को ख़त लिखा है, आप पढ़कर दे दीजियेगा । Tirupati के Shri A. Balasubramaniam अपने लड़के की शादी में त्रिची गये थे । वहाँ उन्होंने अच्छा काम किया । सतसंग बढ़ने लगा । Dr. K.C.V., Trivandrum 19-8-58 को जा रहे हैं । मौक़ा मिला तो ओ भी Trichy उतरेंगे ।

अब घरेलु बातोंपर आता हूँ । अज़ीज़म रामकिशन जो मोहब्बती लड़का है और दूसरे के ग़म को अपने ग़मके तरह से महसूस होना इन्सानियत मुक़म्मिल (पूर्ण) के जौहरों (रत्न) में से एक है ।

भाई माधवरावजी को मुझसे बहुत मोहब्बत है। इसलिये तबादिला जगह (स्थलांतरण) के लिये उन्होंने राय दी है ताके environment बदल जावें । मगर सही यह है के, आग, लोग दोजख़ (नर्क) में बतलाते हैं, मगर अपने साथ लिये हुए जाते है और उसी में जला भूना करते हैं । रामकिशनजी पर एक शेर याद आया –

जो हो दर्द से आश्ना (परिचित) दिल वही है
किसी के मोहब्बत के क़ाबिल (योग्य) वही है

अंदर अंदर मे रंज (कष्ट) व ग़म (दुःख) से पाक हों, मगर गोली लगती हुवी शक़ल जब दिनेश की सामने आ जाती है तो कुछ दिलपर हल्का pressure सा मालूम होता है । कई साल हुए, मैंने मास्टर साहब को एक ख़त लिखा था के negation का कमाल क्या है और फ़नाइयत (लयावस्था) के परतौ (प्रभाव) में, मैंने हर मजलिस (सभा) में यही बताया है के दूसरे के ग़म को देखकर ऐसे शख़्स को automatically ग़मगीन होना चाहिये और ख़ुशी देखकर, ख़ुश । मगर यह चीज़ सतही (उपरी) होना चाहिये और उसके बाद फिर जैसा के तैसा।

दिनेश के अवसाफ (गुण), उसके मरने के बाद मेरे ख़ियाल में आये । ज़िंदगी में उसने मेरी ख़िदमत (सेवा) बहुत की और मुझको ख़ुदा समझता था । और मिशन से उसको कमाल (पूर्ण) मुहब्बत थी । जैसे के ख़ुतूत (पत्र), जो "सहज मार्ग June 1958" के आख़ीर हिस्से में छपे हैं, मालूम होगा। बहुत सीधा, इताअतशार (आज्ञाकारी) और नेक मिज़ाज (सरल स्वभावी) था । ओ पैदाइशी सरापा (सिर से पैर तक) नूर (प्रकाशमय) था और उसके संस्कार नहीं बनते थे । उसकी मौत ने मिशन का एक क़ीमती आदमी जो बहुत अच्छा काम करता, उठा लिया । हर चीज़ घर की क़ायदे (व्यवस्थित) में रखता था, mechanical brain था और अज़ख़ुद (स्वत:) घड़ी बनाना (दुरुस्त करना), बिजली फिट करना, चक्की दुरुस्त करना वगैरा जानता था । जैसा के एक दोस्त से उसने इज़हार (प्रकट) किया था, आपसे, ठाकूर हरदत्तसिंग से और बाबू सूरजप्रसाद से बहुत मोहब्बत थी और सब सतसंगियों को देवता की तरह मानता था, और मोहब्बत करता था । जिस रोज़ उसने ख़ुदकशी (आत्महत्या) की है, मेरे दिल में कई मर्तबा (बार) ख़ियाल उठा के यह बंदूक से ख़ुदकशी (आत्महत्या) कर लेगा । मगर उधर ख़ियाल आता था और भूल जाता था । वरना नामुमकिन था के ख़ुदकशी कर लेता, इसी को `मशीयत' (ईश्वरेच्छा) कहते है । ओ ख़ामुश मिज़ाज़ (शांत स्वभावी) आदमी

था और मुस्काराहट चेहरे पर रहती थी । ओ उस रोज़, भाई और बहनों में कुछ हँसता भी रहा । उसके ख़ुतूत pathetic है और ज़ाहिर करते हैं के इस फेल (काम) का उसे रंज (दु:ख) हो रहा था । बच्चों को दुआ । बहु की care अच्छी रखिए ताके तंदुरस्त (स्वस्थ) हो जावे।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 68 शाहजहाँपुर
No. C-430 -SRCM Date 27.08.1958

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला । हालात मुंदरिजा (लिखे हुए हालात) से आगाही (मालूम) हुई । बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे), अब दक्कन भारत में मिशन फैलना शुरु हो गया है। मगर रफ़्तार (गति) हलकी है। आप लोगों की कोशिश और दुआ से रफ़्तार भी तेज़ हो जावेगी । इसलिये के हम सब दावते ख़ुदा (ईश्वरी निमंत्रण) देते है, न के दावते खुदी (अहंकारी निमंत्रण) |

श्री. रामलूजी का हैद्राबाद से ख़त आया । उस में बहुत से सवालात, अभ्यास के मुतअल्लिक (बारेमें), किये है । मैंने उनके ख़त की नक़ल मय (साथ) उसके जवाब के, आप के ख़त में रख दी है । इसलिये के आप से भी ऐसे सवालात हो सकते हैं ।

श्री. ईश्वर सहाय, जन्माष्टमी के बारे में आप को लिख दिये हैं के 5 Sept 58 को बरत (व्रत) रखा जावेगा । Captain L.N. Srivastava देहली से आये हुए हैं । ओ तक़रीबन (क़रीब) एक माह ठहरेंगे और आप को प्रणाम कहते हैं । अब के प्रोग्राम बनाने में दिक्कत (कठीनाई) रहेगी, इसलिये के Dr. K.C.V. 15 December से 27 December तक बाहर रहेंगे । श्री. भीमसेनरावजी का ख़त आया । ओ constant remembrance के मुतअल्लिक (बारेमें) मुझसे

मुलाक़ात (मिलना) करना चाहते हैं । आप उन्हे लिख दीजिये ताके आने से पहले ही शुरु कर देवें । आप को सब मालूम है, एहतियातन (सावधानी के रूप मे) मैं typed copy भेज रहा हूँ । Tyagarajan ने जो आप के पास diary अभी भेजी है, उसका ज़वाब जो मैंने दिया है उसकी नक़ल भी आप के पास भेज रहा हूँ । दूसरे ख़त में उन्होंने लिखा, के मैंने ध्यान के वक्त उनसे कहा, के रामेश्वरम जाओ । गरीब वहाँ भी चला गया । उस ख़त के जवाब में भी मैंने लिख दिया के यही ख़त C-424-SRCM उस का भी जवाब है और यह भी लिख दिया के आइंदा (आगे) से इसे अनुभव समझें । पहले दरियाफ़्त (मालूम) कर लिये जावे । उसके बाद कारबंद (कार्यरत) हों । बच्चों को दुआ । श्री. लक्ष्मीनरसिंहम अब ठिकाने पर आ गये या अभी नहीं ?

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः ख़त ख़तम (पूर्ण) करनेके बाद ही आप का ख़त No-286-BG-SRCM Dt.- 25-8-58 मौसूल हुआ । मास्टर साहब ने कुतबे मतलूबा (वांछित किताबें) भेज दिये हैं। आज अभी ख़त मौसूल (प्राप्त) हुआ है। भाई Laxmi Narsimham से ख़तो किताबत (पत्र व्यवहार) जारी (चालू) रखना । शुक्र है के सतसंग, आप के यहाँ का बढ़ना शुरु हो गया । आप will बाँध कर तवज्जह (प्राणाहुती) दीजिये के खौफ (भय) ध्रुवें के शक़ल में बाहर निकल रहा है । खौफ़ (भय) दूर हो जावेगा।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 69 शाहजहाँपुर
No. C-533 -SRCM Date 3.11.1958

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

ख़त नं. 314-BG-SRCM ता.27 अक्टूबर का मौसूल हुआ। और चेक नं. B 0637433/P10 दि. 27-

10-58 भी मिला । मैं इसके बारेमें क्या लिखूँ ? कभी प्रकाश को देखता हूँ, कभी आपको । और इस लिहाज़ से मंजूर ही करना पड रहा है । अगर शुक्रिया (धन्यवाद) लिखूँ तो उसकी तबियत नहीं चाहती । इसलिए कि अगर प्रकाश से खूनी ताल्लुक (संबंध) है तो आँ अज़ीज़ से रूहानी ताल्लुक, जिसको, हमारे क़िबला लालाजी साहब ने हमेशा खूनी ताल्लुक पर तर्जी (वरियता) दी है और मैं क़ुदरतन (सहज ही) यही ख्याल बाँधे हुए हूँ । हाँ, दुआ की तबीयत ज़रुर चाहती हैं । जो हर वक्त आप के साथ है ।

अब समाचार यह है कि अंदर की इमारत जो आपके सामने बन रही थी वह दस-बारह रोज़ और लगेगी, इसके बाद हस्बे इसतीताअत् (शक्तिनुसार) बाहर की बारी आयेगी । ईश्वर वह भी तकमील (पूर्ण) करा ही देगा । जातबरी (ईश्वर) से उम्मीदें कवी (काफ़ी) है ।

ये ख़ुशी है कि श्री रामुलु जो मिशन में हमारे साथ हैं, मिशन को फैलाना चाहते हैं । कोशिश कर रहा हूँ । मेरा डिसेंबर में आना मुमकिन (संभव) नहीं मालूम होता, इसलिए एप्रील में आने की सोच रहा हूँ । जबकी बच्चों के हाईस्कूल और कॉलेज के इम्तिहान (परीक्षायें) ख़त्म हो जाते है ।

आज ये ख़त, नरसप्पाजी का, आया है जिसको आपके पास जवाब के लिए भेजता हूँ । ख़ास ख़ास बातें underlined है । जहाँ पर सुर्ख़ी (लाल) की double line है इसको पढ़नेसे दिनेश का नक्शा, निगाह (आँखो) के सामने आ गया । मैं दुआ करता हूँ कि ऐसे ख़याल कभी उनके दिल में न आवे । और उसके बारेमें आप ज़रुर समझा दें । एक अच्छी ज़िंदगी पाकर, सैकड़ों ज़िंदगियों की तमन्ना (इच्छा), आदमी साथ ले जावे, तो किस क़दर (कितनी) अफ़सोस (दुःख) की बात होगी ।

मेरे पास एक ख़त ऐसे मौसूल हुआ है जिसमें कुछ बनी रखी हुई थी, नमूने के तौर पर, भेज रहा हूँ । नहीं मालूम इसका नाम क्या है ? और ये बतौर (रुपमें) शगुन रख्खी जाती है क्या ?

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 70 शाहजहाँपुर
No. C-552 -SRCM Date 10.12.1958

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आँ अज़ीज़ (आप) के दो ख़त मिले । मैंने यह बात मंजूर कर ली के श्री सरनाडजी आपकी नियाबत (सहकारिता) में गुलबर्गा काम करेंगे। मगर मैं चाहता हूँ के जैसा उनका इरादा था, ओ बसंत पंचमी के उत्सव में चले आवें और कुछ दिन पहले और कुछ दिन बाद तक रहें । मैं इस दौरान में आप की सिफारिश के मुताबिक initiation और इजाज़त भी दे दूँगा । मैंने काम करना तो शुरु ही कर दिया है । सामने आनेपर कुछ सूरत (चित्र / तस्वीर) बेहतर हो जाती है । तब तक सब सतसंगियों को या जो भी आवें, उनको लेकर सतसंग करायें। तवज्ज़ह न (प्राणाहुति) दें। बल्के खुद meditation में बैठकर यह ख़ियाल रहे के Master की divine current इस तरफ flow हो रही है । बात हो जावेगी। सिर्फ़ कहने भर के लिये फ़रक रहेगा। तब तक नये आदमी जो शुरुआत करें, उनको तरीक़ा (पध्दति) सरनाडजी बतलावें और आप तीन चार sitting अपनी जगह से उनको दे देवें । फिर सरनाडजी उनके साथ सतसंग करा सकते है । किराया में कमी, अगर सरनाडजी को महसूस हो तो, यहाँ से भेजा जा सकता है।

Branch Gulbarga ही रहेगी और आप के under में और ज़िम्मेदारी में, और काम, सरनाडजी इजाज़त के बाद, आप के instructions के मुताबिक (अनुसार) कर सकेंगे । और Bellary, जहाँ के आप मुक़ीम (निवासी) हैं training centre Gulbarga Branch के under ही रहेगा, जिसके head आप ही रहेंगे । सरनाडजी की हैसियत (स्थिति / दरजा) prefect की होगी और preceptor आप ही रहेंगे । प्रार्थना और उसूल (नियम) बज़बान

(भाषा) कानडी मिल गये । आप सतसंग Bellary में बढ़ाईये। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 71 शाहजहाँपुर
No. C-567 -SRCM Date 27.12.1958

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

आप के दो कतअ: (संख्या) मोहब्बत नामें (प्रेमपूर्ण पत्र) मौसूल (प्राप्त) हुये । आप की रुहानी (आध्यात्मिक) हालत पढ़कर बाग़ बाग़ (बहुत खुश) हो गया । जी तो यह चाहा के तफ़सीर (व्याख्या/भाष्य) के साथ जवाब दूँ । मगर सब चीजें बेतरतीब (अस्तव्यस्त) होने की वजह से तबीयत हाज़िर नहीं हो रही (मन नहीं कर रहा है) है । इमारत का काम जारी है । घर के अंदर का जुनूबी (दक्षिणी) हिस्सा सिर्फ़ plaster, और छतें पक्की होना रह गई हैं । मामूली टूट फूट दीवारों की ख़तम हो चुकी है।

एक अमर (काम) ज़रुरी यह है के डॉ. वरदाचारी मद्रास में Psychology conference में यकुम 1 जनवरी लग़ायत (से) 3 Jan. 1959 में सहजमार्ग की psychology पर बोलेंगे और उनकी speech Hindu में ज़रुर निकलेगी । आँ अज़ीज़ (आप) इन तारीखों का Hindu अख़बार खरीदकर उसका cutting ज़रुर रख लेवें । ओ सहजमार्ग Philosophy पर कुछ लिखना भी चाहते है, जैसा के आप का ख़ियाल था । सरनाडजीको भी मैंने ख़त लिख दिया । उत्सव की तारीख 11 Feb. सुबह 6.30 से 13 Feb 59 को 7.30 बजे तक । मौसम भी इस जमानेमें अच्छा हो जावेगा । बच्चोंको दुआ । मुझे नूरचश्मी (बेटी) गुलाबी की अक्सर (प्राय:) याद आ जाती है ।

दुआगो (शुभचिन्तक)

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 72 शाहजहाँपुर
D-65 -SRCM Date 22.02.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त 7 Jan का मौसूल (प्राप्त) हुआ। जिस में आँ अज़ीज़ (आप) ने मेरी खूब तारीफ़ की है। इसका जवाब नहीं दे सका। अब दे रहा हूँ। और एक 16 Feb को दूसरा ख़त मौसूल (प्राप्त) हुआ। मुझे उम्मीद (आशा) है के बच्चे अब अच्छी तरह होंगे। जिन जिनको जो magazine आपने भेजने को लिखा है, उन्हीको भेज रहा हूँ। भाई श्रीपती सरनाडजी और रामचंद्रराव आये थे। रामचंद्रराव भी बामोहब्बत आदमी है। उन्होंने बहुत मोहब्बत से मुझसे कहा के मैं भूतपुर आऊँ और वहाँ ओ मुझे दूध खूब पिलायेंगे और मैं सेडम हो आऊँगा। दूध में मक्खन भी होता है और छाँछ भी, मगर मैं सब ही पी जाऊँगा।

हस्बे मनशा आँ अज़ीज़ (आपके इच्छानुसार), मैंने 10 Feb को सरनाडजी को दीक्षित कर लिया है। और श्री रामचंद्रराव को इसकी हवा नहीं लगने दी। उनको सतसंग की इजाज़त दे दी गई और authority letter भी दे दिया। जिसकी नक़ल आप की file के लिये भेज रहा हूँ। डॉ. वरदाचारी, Madras में environment मुआफ़िक (अनुकूल) न होने की वजह से नहीं बोले और उन्होंने एक मज़मून Being & Becoming पर लिखकर दे दिया जिसकी इजाज़त (अनुमति) magazine में छापने की भी दे दी जो आइंदा (अगले) परचे (अंक) में शाया होगी (छप जाएगी)।

श्री कुमारस्वामी की लडकी की शादी का invitation मेरे पास भी आया। जिसका जवाब दुआ के साथ उनको दे दिया गया और ओ Bellary पहुँचा होगा।

यह सही है के आप मेरे बहुत शुक्रगुज़ार (उपकृत) हैं मगर मैं जब अपने जज़्बे (भावना) की तरफ निगाह उठाता हूँ तो मैं आँ अज़ीज़ (आप) का अपने आपको शुक्रगुज़ार (उपकृत) पाता हूँ। इसलिये के आपने वाक़ई (सचमुच) मुझपर एहसान (उपकार) किया

के रुहानी सेवा मुझसे लेना शुरु कर दी और मेरा यह जज़्बा हर शख़्स (व्यक्ति) के साथ रहता है। और इसी तरह से मैं अपने भाईयोंका एहसानमंद (कृतज्ञ) रहता हूँ। इसीलिये आप एहसान (उपकार) का बोझ महसूस नहीं कर रहे हैं। बल्की मैं, अपने आपमें एहसान का बोझ महसूस करता हूँ के इस एहसान की ऐवज (बदले) में सेवा ठीक ठीक कर सकूँ और इस में कोई खामी (कमी) मेरी तरफ से न रह जावे। रह गया attributeless के बारेमें। यह मुमकिन (संभव) है मेरी ज़बान से निकल गया हो और जिसने यह लफ़्ज़ (शब्द) कहें हो ओ वाक़ई (सचमुच) attributeless (गुणातीत) है। अब आपने जो मुझे All powerful कहा है, तो ना-ताक़ती (कमजोरी / निर्बलता) इस क़दर (इतनी) दामनगीर (साथ) हो गई है के हाथ पैर हिलाने के भी तबीयत (दिल) नहीं चाहती। इस लिहाज़ से आप चाहे मुझे All powerful कह दें के जहाँ शक्ति का एहसास नहीं, वहाँ ना-ताक़ती (निर्बलता) तो है ही। इसलिये के यह ना-ताक़ती (निर्बलता) शक्ति का बुनियादी (नींव का) पत्थर है । अब मैं अपने लिये क्या कहूँ । आप तो मेरे लिये सब कुछ कह बैठे। मुझे, भाई P. Madhavrao की याद अक्सर (प्रायः) आ जाती है। ओ भी मेरी याद ज़रुर करते होंगे। और साथ-साथ बल्की (शायद) उनसे ज़ियादा, बरखुरदार (भाग्यवान) श्रीकरराव (उंडीवाले) की याद बहुत आती है। इस मरतबा (बार), जुनूबी (दक्षिणी) हिंद में दौडकर जाने की तबीयत (दिल) चाहती है और जाने का बहुत शौक उठता है। इसके माने यह है के ओ लोग सब बामुहब्बत (प्रेमी) है और तेज़ी (आतुरता) से मेरा इंतज़ार (प्रतीक्षा) कर रहे है। बच्चों के इम्तहानात (परीक्षाओं) के बाद आना मुमकिन (संभव) होगा और उस वक्त में, आँ अज़ीज़ (आप) भी vacation में होंगे। बच्चों को दुआ व प्यार। सब सतसंगियों को आशीर्वाद। आपने जैसी मोहर (रबर स्टाम्प) बनवाने को कहा है, बनवा लीजिए । यह राय ठीक है और डाकखाने को इत्तला (सूचना) दीजिये ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 73 शाहजहाँपुर
D-108-SRCM Date 10.04.1959

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के कई मसर्रतनामे (हर्षपूर्ण पत्र) मिले और मैं एक का भी जवाब न दे सका। इसमें मेरी तसाहुली (आलस) ही कही जा सकती है और बहाना ये है के इमारत अभी बन रही है। उसकी फ़िकर दामनगीर (लगी) रहती है; जो हिस्से, के गिर गये थे, ओ सब मुकम्मिल (पूरे) हो चुके है। जिस कोठरी (कमरे) में होकर, आप अंदर खाना खाने जाते थे उसके पच्छिम की तरफ एक कमरा और बनवाया है और उसको बनवाने की वजह यह थी के धन्नी वगैरा और दीगर (अन्य) लकडी इतनी बची थी के इसको रखने की जगह, ज़ियादा ज़रुरत थी । लिहाज़ा इसको इस तौर (प्रकार) काम में ले आया। एक हफ्ते में यह सब मुकम्मिल (पूरा) हो जावेगी। Plaster रह जावेगा, ओ बरसात के लिये मुल्तवी कर दिया (रोक दिया) ।

आपने बहुत अच्छा किया जो Theosophical Society में तक़रीर की (भाषण दिया) और मैं बहुत खुश हुआ । Speeches हर जगह, जहाँ मौक़ा हो, देना चाहिये। अब की डॉ. K.C.V. का article सहज मार्ग में छपा है। ओ आप के पास पहुँच गई होगी। Time table अब तक नहीं मिल सका। उम्मीद, 15 April के बाद आने की है। इसके बाद programme बनाऊँगा। इरादा यहाँ से 26 या 27 April को चलने का है। एक दिन मथुरा, एक दिन हाथरस और एक या दो दिन आगरा ठहर कर वहीं से सीधा हैद्राबाद पहुँचूँगा। इस हिसाब से 3 या 4 May पहुँचने की तारीख़ पडती है। Time Table उस वक्त तक न मिल सका तो बड़ी मुश्किल पडेगी। अब की मैं programme सिर्फ तिरुपती तक का बनाऊँगा, और उसके आगे का programme फिर वहीं बनाऊँगा। इसलिये के तिरुपती में मुमकिन (संभव) है के क़रीब एक हफ़्ता रहना पडे क्यों के क़रीब के ज़िलोंसे लोग आ जाते है। वरदाचारी मुझे कम से कम दस रोज़ रखना चाहते है और आप तो मुझे तमाम उम्र रखना चाहते हैं । लडकी की तबीयत अब बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) अच्छी होगी और भाई, मेरी हालत तो ये है के जहाँ चख़माख हुआ, सुई उस तरफ़ झपक जाती है। आप जो किताबें पढ़ते हैं, भूलते नहीं बल्कि रखी रहती हैं, जो ज़रुरत पर याद आया करेंगी। मैने भाई, कुंडलिनी वगैरा पर कुछ नहीं पढ़ा। कुछ

सवालात कुंडलिनी के बारेमें क़ायम (निश्चित) कर लेना ताके मैं भी तबअ आज़माई (बुद्धि परीक्षा) कर सकूँ। क्यों की हाल ये है के जब कोई सवाल करता है, उस वक्त इस चीज़ का मुझे इल्म (ज्ञान) होता है। वैसे ignorance कहता, तो यह लफ़्ज़ भी नहीं चाहिये बल्कि (परंतु) इससे भी नीचा उतरा कोई लफ़्ज़ (शब्द) हो मुमकिन (शायद) है, ओ मोजूँ (उचित) हो सके। उसी में रहता हूँ और ऐसा सुस्त हो गया हूँ के तमाम कामोंमें हरज (नुकसान) होता है। मेरी सुस्ती दूर करने के लिये भाई, दुआ ज़रुर करो। इसलिये के, एक बेकारसा आदमी साबित हो रहा हूँ ।

मैं ज़बान थाम के लिखता हूँ के, रमण महर्षी से आप बढ़ चुके है। और यह आप का ख़ियाल सही है, संस्कार बहुत कुछ मिट चुके हैं, थोडे ही बाक़ी है । संस्कारों के बारे में गणेशन के सवालोंपर मैंने कुछ लिखा भी है जो सहजमार्ग (पत्रिका) में छप चुके हैं ।

ये कुछ समझ में नहीं आया के वहाँ पानी की क्यों किल्लत (कमी) है। क्या वहाँ pipe system नहीं है या कुवें (कुआँ) दूरपर है। मैं भी पानी के इस्तेमाल (प्रयोग) में किफ़ायत (बचत) करुँगा। मगर भाई, गरमी का मौसम होगा, एक वक्त तो नहाना ही पडेगा, फिर भी किल्लत (कमी) हुई तो सफ़र से आने के बाद बस एक ही दफ़ा (बार) नहा लूँगा। लिहाज़ा आप इस में परेशान न हों। किताब "अनंत की ओर" छप चुकी है। सिर्फ़ सिलाई बाक़ी है, जो जल्दी हो जायेगा। किताब में सफ़े (पन्ने), 56 है। आप लिखिये के आप के लिये कितनी किताबें लाऊँ और इतनी तादाद (संख्या) लिखिये ताके सरनाडजी की भी ज़रुरत रफ़ा (पूरी) हो जावे या उनसे दरियाफ़्त (पूछ) कर लीजिए । मेरे दौरे में श्री. लक्ष्मीनरसिंहम कैसे मिल सकेंगे ? इनको मेरी आमद (आनेकी) की तारीख की इत्तला (सूचना) तो दे ही देना। उनका पता मालूम नहीं था । इसलिये magazine पुराने पते से ही भेजी गई है । उन्होंने ख़तों किताबत (पत्र व्यवहार) भी बंद कर दी है। मास्टरसाहब अभी यहाँ है। दौरे में मेरे साथ होंगे । चार पाँच दिन के लिये ज़रुर जायेंगे । बच्चों को दुआ ।

श्री. मंजुनाथ अय्यर, 882 -V-Vilas Road, Mysore का बडा नुकसान हुआ। Coffee field में आग लग गई। तख़मीनन (लगभग) Rs.70,000 का है। एक ख़त हमदर्दी (सांत्वना/सहानुभूति) का भेज देना।

दुआगो (शुभचिन्तक)

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 74 Tirupati Camp
No. D-178/SRCM Date 25.05.1959

बिरादरम दुआ (प्रिय भाई, आशिर्वाद)।

हम लोग बख़ैरियत तमाम (सकुशल) यहाँ पहुँच गये | Guntkal में गाड़ी में बेइंतहा भीड़ होने की वजह से III (3rd) class में जगह न मिल सकी। मजबूरन II (2nd) class में दाख़िल हो गया। और किराये का difference अदा कर दिया। इस तरह आरामसे तो ज़रुर पहुँच गये; मगर क़रीब 10 रूपया ज्यादा खर्च हो गया।

श्री. सोमराज तिरुमलराव का ख़त आया है। इसमें लिखा है की report वगैरा अखबारत को पहुंचाने में और उसके लिए सवारी के लिए एक रूपया सर्फ (खर्च) हुआ है । उनके हालात बहुत तंग है । लिहाज़ा रूपया भेजने के लिये दरख़्वास्त की है; या राघवेन्द्रराव को लिख दूँ के ओ रूपया अदा कर दें । चुनांचे (इसलिये) बमौजीब इरशाद हज़रत (मालिक के आज्ञानुसार) आप उनको एक रूपया ज़ल्द अज़ ज़ल्द दे दें । मैं भी उनको तहरीर (लिख) कर दूँ के आपसे ले लें । ज़्यादा दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

गुलाबी की याद आती है ।

P.S.: **आज का हज़रत क़िबला (गुरु महाराज) इरशाद फरमाते (बताते) हैं के आप Point G पर थे | और इस ख़तके पहुँचने तक आप Point H पर आ जायेंगे** | आप इन मुक़ामात का एहसास करने और हालत को समझने की अच्छी तरह कोशिश करें | गो हालत का इज़हार, अल्फाज़ (स्थिति का शब्दोंमे वर्णन) में मुश्किल ज़रुर है | ताहम (फिर भी) कोशिश करना चाहिये, जहाँ तक हो सके |

ईश्वर सहाय

****

ॐ तत् सत

Serial No. 75 Madras Camp
D-204 -SRCM Date 02.06.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

मैं मुदलीयार साहब के यहाँ ठहरा हुआ हूँ । कल सुबह त्रिचनापल्ली जाऊँगा । मुझे तिरुपती से यहाँ तक आने के लिए एक साहब ने अपनी कार दे दी थी । इसलिए बहुत कुछ तकलीफ़ बच गई । और ढाई घंटे में यहाँ पहुँच गया । डॉ. वरदाचार्या भी हमराह (साथ) आये और पहुँचाकर वापिस चले गये । 8 ता. को वह मद्रास फिर आयेंगे और 9 और 10 तारीख को वेदांतम के यहाँ ठहरेंगे ।

Mr. रामचंद्रन, थियासॉफिकल वाले, जो आपके साथ काम करते हैं, मुमकिन है, मिले हों । उन्होंने मुझसे ये कहा था कि अगर हम मिशन की प्रॅक्टिस इख्तियार करें (अपनाये) तो कुछ deviation तो नहीं होगा? इसके लिये वरादाचार्याने अच्छा जवाब दिया – "why should the mission deviate".

हेडमास्टर साहब ने जो गुलबर्गे में मुझसे सवाल किया था कि दिल पर ध्यान क्यों करते है जब दिमाग़ ही हर एक बात सोचता है। मैंने उनको, जैसा कि आपको मालूम है, खुजली कि मिसाल देकर बताया था, मगर वाक़या (वास्तव में) यह है कि दिल mind कि field of work है और हर point जो जिस्म में और दिमाग़ में है, क़रीब क़रीब सब उसमें पाये जाते हैं । और इस स्थान पर ध्यान करने से उन सब को साफ करने में मदद मिलती है ।

सहजमार्ग के दस उसूलों की शरह का तर्जुमा (अनुवाद) सही करके वरदाचार्याको दे दिया है, ताकी ओ भी इसको देख लें । उन्होने कहा है के वह इसको टाईप करके किसी अच्छे छापखाने में छपने के लिए दे देंगे । दीबाचा (प्रस्तावना)असल में जो अंग्रेजीमे था, वह घरपर मौजूद (रखा) है; जाकर भेज दूँगा । इसके छपाई

के खर्चे का ज़िम्मा, उनके चाचा मि. गोपालस्वामी, जो मद्रास से तिरुपती आये हुए थे, उन्होने अपने उपर ले लिया है ।

मद्रास में अभी मिशन को जगह नहीं मिली है। और लोग जानते भी नहीं है। यह चीज़ आप ऐसे लोगों के सोचने के क़ाबिल है। यहाँ अगर कोई आदमी ऐसा मिल जाय तो मस्ला (समस्या) आसान हो जाएगा। श्री. S. C. Naik, Chief Engineer Highways जो कि दिल्ली में Mr. Rajagopalan के दोस्त है, ने शुरू किया है।

मैं आपके points ले रहा हूँ और जल्दी जल्दी लूँगा । आपसे मैं भी कहता हूँ कि कम से कम एक पाव दूध, सोते वक्त या किसी वक्त, आप ज़रुर ले लिया करें। इसलिए कि points की सैर वगैरा में दिमाग़ का काम ज्यादा रहता है। **चाहता यही हूँ के जब तक आप उत्सव में आवे, तब तक Central Region तक पहुँचा दूँ।** ईश्वर फ़ज्ल (कृपा) करेगा | गुलाबी की मुझे बहुत याद आती है | बच्चों को दुआ और सत्संगी भाइयों को सलाम |

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

P.S.: I have opened a training centre at Mysore and have appointed Shri. Manjunath Iyer as the preceptor.

****

ॐ तत् सत

Serial No.76 शाहजहाँपुर
D-234-SRCM Date 22.06.1959

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

हम लोग कल शाम को बख़ैरियत तमाम (संपूर्ण सकुशल), यहाँ पहुँच गये। अभी सफर की थकान किस क़दर (कुछ) बाक़ी है। दो एक दिन में रफ़ा (दूर) हो जाएगी | नूरचश्मी छाया B.A. इम्तिहान में और नूरचश्मी

माया Inter में पास हो गई है। उमेश का नतीजा आज शाम को आनेवाला है। उसकी कामयाबी की भी पूरी उम्मीद है। मैं दो-एक यूम (दिन) में लखीमपुर जाऊँगा। हिसाब-खर्चा, जैसा ज़बानी अर्ज कर चुका हूँ, बनाकर भेज दीजिएगा। और जहाँ तक मुमकिन हो सके, हर मुक़ाम के figures इसमें शामील किये जावे तो बेहतर और रहेगा। अगर बिल्कुल सही याद न हो, तो कुछ rough (अंदाजा) कर लिया जाय। जैसा हो सके, कर लीजिएगा। ज्यादा दुआ। बच्चों को प्यार।

नतीजा उमेश का भी आ गया। और ओ बफ़्ज़लहू, हायस्कूल के इम्तहान (परिक्षा) में कामियाब (उत्तीर्ण) हो गया। सब बच्चे III Class Pass हुए है। छोटा बच्चा जो पाँचवी दर्जे हिंदी का पास हुआ है, ओ First Class हुआ है। आप यह ख़ूब अपने आप को तौल कर लिखें के अब pressure तो सर में नहीं है ? आप अपने सतसंगियों को जो दूर हैं, और हररोज़ नहीं आ सकते है, मसलन (उदाहरणार्थ) गुलबर्गा वगैराके, जिनको ग़ाइबाना तवज्ज़ह (परोक्ष प्राणाहुती) अक्सर और बेशतर (अधिक से अधिक) दिया करें, तो तेज़ी (तीव्रता) कम हो जावेगी । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 77
D-279 -SRCM

शाहजहाँपुर
Date 14.07.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र)आया था। कहीं misplace हो गया। पता नहीं क्या लिखा था। अब आप अपनी हालत के बारे में लिखिये, और यह भी लिखें के pressure अब दूर हो गया है और general condition क्या है। Tirumalrao जी ने एक नक़ल, दक्कन Herald और भेजी है, जो मिल गई। तिरुपती के हनमंतराव आप के पास

हाजिर हुए होंगे और उनकी सोहबत मुस्तफ़ीद (लाभदायक) हुई होगी। बरख़ुरदार (बेटे) सर्वेश की दाहिनी कलाई की हड्डी, गिरने से 3 जुलाई को टूट गयी, हड्डी बफ़ज़लहू ठीक जुड गई है; जैसा के screening से पता चला है। कोई तशवीश (चिंता) की बात नहीं है। ईश्वर फ़जल (कृपा) करेगा। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

नोट: ख़त लिखने के बाद ही आपका पिछला ख़त मिल गया। इस ख़त के जवाब आने के बाद उस ख़त का भी जवाब लिखूँगा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 78
D-305-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 29.07.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। हालात से आगाही (स्थिति की जानकारी) हुई । ईश्वरका शुक्र (धन्यवाद) है के बहू की सेहत (स्वास्थ्य) अब ठीक है। कभी कभी मरज़ोंको (रोगोंको) हटाते हुए सेहत बख़्शनेवाली (देनेवाली) और मरज़ों की दूर करनेवाली तवज्ज़ह (प्राणाहुति) दे दिया कीजिये। जैसा suggestion आप देंगे पावर (शक्ति) वैसा ही असर (परिणाम) करेगी। श्रीपतराव सरनाड मुतफ़क्किर (चिंतीत) है। इसलिये के आपने उन्हे कोई ख़ैरियत (कुशल) का ख़त नहीं भेजा। आप ने जो अपने संस्कारों का मुर्दा होना लिखा है ओ वाक़ई संस्कार मुर्दा होना नहीं है। बल्की (परंतु) एक हालत शुरु है, जिसको मैंने अपने गुरुमहाराज को, ज़िंदगी में मौत का तमाशा देखना, लिखा था। आप ने (गुरुमहाराज ने) जवाब दिया था के, "इस हालत से गुलामी से आज़ाद होना होता है", यह हालत अभी और बढ़ेगी। संस्कार की बेरुनी (बाहरी) तह (परत), जो अपनी जगह से आई थी, ओ लडी ख़तम हो गई है। अभी अंदर संस्कार मौजूद हैं और ओ जो हालत, के मैंने ऊपर लिखी है और जैसा के आप का एहसास (अनुभव) है, बहुत कुछ अपनी

intensity (तीव्रता) खो चुके हैं। उनको भी रफ़्ता रफ़्ता (धीरे-धीरे) बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) निकाल दूँगा और आप की मोहब्बत ख़ुद उनको झुलसा (जला) देगी ।

Pressure तो अब मुझे नहीं मालूम होता, सिर्फ जगह energy से भरी हुई मालूम होती है । जिसके हलका हो जाने का इंतज़ार (प्रतीक्षा) है ।

डॉ. वरदाचारी का ख़त, उपनयन श्री. मनी का दावतनामा (निमंत्रण) मेरे लिये भी आया था। मैंने भी चंद सतरे (पंक्तियाँ) दुआइयाँ (आशिर्वाद) लिख दी। श्री. नारायणरावजी अपने मरज़ (रोग) के दवा के लिये डॉ. वरदाचारी को लिख सकते हैं । इसमें ओ आप का हवाला दे दें, ख्वाँ (चाहे) ओ मेरा reference दें । ये दर्द, जो कुछ भी है, ये सब रियाही (वातविकार) है और मैंने उनको अंजीर खाने के लिये कहा था। ताज़ा अंजीर अगर न मिलें, तो विलायती अंजीर एक, थोडेसे पानी में रात को भिगो दें और सुबह को पीसकर थोडासा शहद मिलाकर चाट जाएँ । नींबू और टमाटर का इस्तेमाल रखें और leafy तरकारियाँ भी खाया करें। अगर एक वक्त मट्ठे (छाछ) की गिज़ा (भोजन) और दूसरे वक्त चावल वगैरा की कुछ दिनों रखे, तो बहुत फ़ायदा होगा । सुबह को ज़ियादा पानी से नहाया जाए, जिसमें कुल जिस्म (संपूर्ण शरीर) ठंडा पड जाए और फिर दो तीन मील तक टहलने (घूमने) के लिये कपडे पहनकर चले जाया करें। पानी ठंडा होना चाहिये न के गरम। इस मरज़ की बहुत काफ़ी एहतियात (सावधानी) की जाए और यह सब चीजें क़ायम रखी जाए तो ज़रुर इफ़ाका (आरोग्य लाभ) हो सकता है। काशीराम की तंदुरुस्ती , appendicitis के ग़लत नश्तर (शल्य चिकित्सा) से ख़राब हुई थी । गोरखपुर में Naturopathy का इलाज किया और अब बहुत तंदुरुस्त (स्वस्थ) हैं और इन्होंने डॉक्टरसे तरीक़ा (पद्धति) इलाज सीख भी लिया। ओ यहाँ आये हुए भी थे। कल lower Assam गए हुवे हैं, दस पंदरह यूम (दिन) में वापिस आ जायेंगे। डॉ. मुकर्जी का पता हसबेजैल (निम्नलिखित)है -

Dr. S.R. Mukarji Hd. T.C. Hathras City, Dist Aligarh.

त्यागराजन की डायरी और ख़त मेरे पास भी आया। सेडम के भाई रामचंद्रराव अगर चंद दिन आप के पास क़ियाम करेंगे (रहेंगे) और लगनसे अभ्यास शुरु कर दिया, तो लाज़िमी (निश्चित) तौर (रूपसे) पर फ़ायदा होगा। नारायण शेट्टी को लगन मालूम होती है।

मगर अभ्यास में उनको अभी शुबहा (संदेह) ज़रुर है और Theos में इतने दिनों रहते हुवे कोई फ़ायदा भी नहीं हुआ इसलिये कोई शुबहा (संदेह) भी पैदा नहीं हुआ। Shri. Raghavendrarao Hyderabad वाले के वालिद माजिद (पिता) से दो ख़त exchange हुए । उनकी उमर 70 साल की है, अब ओ अभ्यास शुरु कर रहे हैं । जनगांव के मुनसिफ़ मॅजिस्ट्रेट, जो मुझसे Gulbarga मिलना चाहते थे, उनका ख़त मुझे बुलाने के लिये आया है। ताके मैं गीता जयंती में शरीक़ (शामील) होऊँ । मैंने उनसे बवजह खराब तंदुरुस्ती (प्रकृति अस्वास्थ्य के कारण), अपनी अदम शिरकत (न शामील होने) की माफ़ी माँग ली है। मैं गीतापर उन्हे message भेजनेवाला था, जो कोई अच्छा लिखनेवाला मौजूद (उपस्थित) न होने की वजह से न भेज सका। इसलिये छपा हुवा message जो गुलबर्गावालों को दिया था, भेज दिया है ।

सर्वेश की पट्टी 31 July को खुलेगी, हड्डी बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) जुड चुकी होगी। पत्रिका के ग्राहक यहाँ नहीं बन रहे हैं । इसलिये उसका चलना यहाँ बडा दुशवार (कठीन) हो रहा है । ईश्वर फ़ज़ल (कृपा) करे । बच्चों को प्यार और सब भाईयों को प्रणाम ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

नूरचष्मी (बेटी) गुलाबी मेरी याद करती होगी, उससे कह देना के 3.1/2 माह बाद मैं फिर आ रहा हूँ ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 79 शाहजहाँपुर
D-343 -SRCM Date 10.08.1959

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त आया। हाल मालूम हुआ। जन्माष्टमी 26 August को है और उसी रोज़ बरत (उपवास) रखा जावेगा। अच्छा हुआ, बच्चोंकी तबदील आबोहवा (हवापानी बदल) हो गई और ओ तिरुपती के मंदिर की भी ज़ियारत (दर्शन) कर आये । सर्वेश का plaster काट दिया गया है। मगर अभी हाथ पूरे तौर से काम नहीं दे पाता है। मालिश हो रही है। चंद यूममें (दिन) ठीक हो जावेगा। ग्राहक बनाने के लिये मैंने सरनाडजी से भी ज़िक्र किया है। और सब भाई लोग कोशिश करें तब इसका चलना आसान जो जावेगा। कृष्णमूर्ती की किताबों की मैंने भी तारीफ़ सुनी है । मगर उनकी यह चीज़ देरपा (टिकाऊ) नहीं है। और उनके ज़िंदगी के बाद ही यह चीज़ ख़तम हो जावेगी । शैतान से रास्ता पूछना और उससे काम ले लेना, वाक़ई इन्ही का काम है । जब ये authority के खिलाफ़ हैं, तो ओ अपनी चीज़ किस हैसियत से पेश करते हैं ? अगर उनकी बात मान ली जावे, तो डर है के exploitation न पैदा हो जावे, जैसे के ओ कहते हैं । श्री ईश्वर सहाय को मैंने यहाँ बुला लिया है । इसलिये के मकान का plaster और कुछ मरम्मत (दुरुस्ती) बाक़ी थी और ये काम बरसात पर छोड दिया गया था । बारिश यहाँ बहुत कम हो रही है । इसलिये धानकी (चाँवल) फसल को देर हो रही है । पार साल (पिछले वर्ष) भी August तक ऐसा ही रहा और September में एकदम पानी गिर गया । बच्चोंको दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

अज़ जानिब ईश्वर सहाय (की ओर से) नमस्ते ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 80 शाहजहाँपुर
No. D-345/SRCM Date 12.08.1959

मेरे राघवेंद्र राव जी,
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैंने आपको पिछले ख़त का जवाब एक पोस्टकार्ड में दिया और 26 अगस्त जन्माष्टमी बरत (उपवास) की भी इत्तला (सूचना) दे दी थी। आगे जो कुछ भी लिखना चाहता हूँ, लिख रहा हूँ । भाई, आपके मुहब्बत का कोई शक (संदेह) नहीं। मैं सोचता के इस मोहब्बत का बदला कैसे करूँ । फिर दिल को इतमीनान (संतोष) कर लेता हूँ कि मुहब्बत का बदला कोई शख्स (व्यक्ति) अपने आप को गिरवी करके भी नहीं दे सकता। ऐसे ही लोग और थोड़े पैदा हुए तो मैं समझता हूँ, सबके लिए जन्नत (स्वर्ग) यहीं है। यह ज़रुर है, हमको जन्नत (स्वर्ग) से सरोकार नहीं; हमें तो जन्नत बनाने की चाह है और भाई सरनाड जी को आपने ख़ूब बनाया है | वह भी साहेब मुहब्बती है | अब आप डाक्टर कुलकर्णी को बनाने की चाह में हैं। वह भी अच्छे हैं । शिवलिंगप्पा भी अक्सर मुहब्बत में सिसकियां लेते हैं और किशनराव भी उधर खमोशी से जा रहे हैं । भाई नारायणराव से जो उम्मीद है और उन्हें एतिक़ाद (विश्वास) भी है मगर ओ अपनी तरफ अभी ज्यादा देख रहे हैं । ईश्वर को अपनी तरफ देखने का मौक़ा नहीं दे रहे हैं। जब हम अपनी तरफ ख़ुद देखते रहे तो मालिक की तवज्जोह (ध्यान) उस तरफ नहीं घुमती इसलिए ओ समझेंगे के वह अपनी फ़िक्र ख़ुद कर रहे हैं ।

किशनराव जी का ख़त आया, वह पूजा में अपनी तन्हाई (अकेलापन) महसूस कर रहे हैं। इसलिए कि उनको भी अब तक अपना कोई हमख़याल (समान विचार वाला) नहीं मिल सका। जनगांव के श्री सत्य कुमार मुनसिफ मॅजिस्ट्रेट का ख़त आया था, बुलाने के लिए। मैंने वही अपना छापा हुआ मेसेज भेज दिया। जिससे ओ बहुत असरपजीर (खुश) हुए और वह उसको तेलगु भाषामें

शाया करके (छपा कर) सभी को सुना देंगे । और मुझे लिखा है कि जब जुनूबी (दक्षिण) हिंद का मैं दौरा करूँ तो उनको तारीखों से इत्तला (सूचना) कर दूँ ।

आपने जो तरजुमा (अनुवाद) उर्दू किताब का किया था, वह देखभाल कर सही हो गया। मास्टर साहब type भी कर रहे हैं । मगर मेरे तसाहुली (आलस्य) के वजह से मैं अभी तक कुल नहीं देख सका हूँ । इनके काम में भी देर हो रही है। यही इसमें एक नोट आपके तरफ से लिखना चाहता हूँ । ` इन्तहाई कोशिश (अत्याधिक प्रयत्न) उर्दू का अंग्रेजी तर्जुमा (अनुवाद) में सही ख़बर लाने की कोशिश की गई है । फिर भी सेन्स में कुछ फर्क हो तो उर्दू किताब का मकतूब (लिखा हुआ) सही समझा जायेगा ।' अब आपके दस्तखत (हस्ताक्षर) जो नीचे होगा, तो इसमें आपकी डिग्री वगैरह भी लिखी जावे । दूसरे इन डिग्रीयोंके बाद designation भी लिखा जावे | और ऐसी हालत में सही मुक़ाम तो बेल्लारी ही रहेगा ।

एक ख़त मैसूर से एक क़ाबिल भक्त का आया है ; जिनकी फखामत (इज्जत) करना चाहिए । तहसीन (प्रशंसा) इस बात की है के ओ लग्वी (बेहूदा / व्यर्थ) में मुतबला (फँसा हुआ) है । मगर भाई, मेरे समझ में नहीं आया कि गंगा की रवानी में कुडा कर्कट अभी तक क्यों न बह गया। मैं समझता हूँ कि क़ाबिल भक्त की फ़िक्र (चिंता) मुमकिन (शायद) हैं कि ईश्वर को जब फ़ुर्सत मिलती हो, तो करता होगा | खैर, मैंने तो ख़त का जवाब दिया है । लिखा सब कुछ है, मगर बचते हुए। मैं उनके ख़त की नक़ल मेरे जवाब के साथ आपके पास भेज रहा हूँ ताकि गौर (देख) करके इसे अपने फाइल में रख लें । मुमकिन है कि जैसे ख़त मैं आप को फाईल में रखने के लिए भेज रहा हूँ, श्री किशनजी महाराज ने भी उनको अपनी फाईल में रख लिया न हों | मेरे जल्दी आने कि ख़बर सुनकर गुलाबी भी खुश होगी । मगर वह तीन मास को साड़े तीन मास समझती होगी | अबकी मेरे ख्याल में नवम्बर के पहले हफ़्ते में मेरी रवानगी होगी । क्योंकि दस जनवरी

तक बावजह (कारणवश) दौरे से वापस आ जाना है। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

P.S.: बिरादरे अज़ीज़म दुआ (प्रिय भाई, आशीर्वाद)। अरसा (काफ़ी समय) हुआ, आपका ख़त लखीमपुर में मिला था। और उसमें statement of accounts भी मिल गया। मैं इसके बाद यहां चला आया। इसलिए जवाब नहीं दे सका | Subscription बढ़ाने की कोशिश कर रहा हूँ। ग़ालिबन (निश्चितही) आप भी इस कोशिश में ज़रुर होंगे, वजह ये है, इसका खर्च पूरा नहीं हो रहा है। जो कुछ आता है, अदा करता (देता) जाता हूँ। अज़ीज़म प्रकाश बाबू के, परसों रात के साढ़े ग्यारह बजे लड़की का जन्म हुआ है।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 81
D-408 -SRCM

शाहजहाँपुर
Date 10.09.1959

मेरे राघवेंद्ररावजी,
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बत नामा 82-TCB-SRCM मो. 28-8-59 मिला। श्री. ईश्वर सहाय कुछ दिनों लखनौ रहकर मेरे पास फिर आ गये। वहाँ उनका लडका बीमार हो गया था, जो अब बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) अच्छा है। Repairs और plaster क़रीब 6 हफ्ते से जारी है। मगर अभी 8 यूम (दिन) ग़ालिबन (संभवतः) और लगेंगे। इस के बाद चंद (कुछ) दिनों के लिये लखीमपुर जानेका इरादा है। वहाँ गोलामें के चंद (कुछ) अशख़ास (लोगोंने) ने मुझसे वादा ले लिया है के मैं कुकरा

(मौजा) (गाँव) पहुँच जाऊँ। इसलिये के ओ मिशन के मुतल्लिक (संबंधमें) कुछ जानना चाहते हैं। किताब उर्दू की, मास्टरसाहब ने देखकर type कर ली है, जो दो तीन यूम (दिनोंमे) में डॉ. वरदाचारी के पास foreword लिखने के लिये और वहाँ से मद्रास छपने के लिये, भेजी जावेगी ।

आप ने मेरी तबीयत की बात लिखी, इसलिये के मैं इस बार चिंचोली और भूतपुर नहीं जाना चाहता था । नया Time Table जो अक्टूबर में आता है, मिलनेपर programme बनाऊँगा । आप यह तहरीर फ़रमायें (लिखें) के मुझे Hyderabad कितने दिन देना चाहिये; इसके बाद सेडम और गुलबर्गा में कितने दिन । Bellary के लिये मैं खुद तय कर लूँगा । मैसूर में 58 आदमी हो चुके है । और क़रीब क़रीब सब क़ाबिल (पात्र) है । मैं चाहता हूँ के 4 या 5 यूम वहाँ भी दिये जाएँ और अगर Bangalore में मुझे कोई ठहराने के लिये तैयार हो जावे तो एक या दो यूम (दिन) वहाँ भी दे दूँ । भाई कुमारस्वामीजी का ख़त आया है । उन्होंने मुझसे कुछ सवाल किये हैं । अपने जवाब की नक़ल आप के पास भेजता हूँ । यह सवाल आजकल अभ्यासियो में common है और मैंने बहुत मुख़्तसर (संक्षेपमें) जवाबात दे दिये हैं । Raghavenderao S.P. Hyderabad के वालिद माजिद (पिता) ने, जो Waltair में हैं, बहुत विश्वास के साथ अभ्यास शुरु किया है ।

भाई, स्वामीजी के बारे में आपने खूब (अच्छा) लिखा है । यह हम लोगों की क़िस्मत (भाग्य) है के हमारे नुमाइंदे (प्रतिनिधी) हमको उल्टा रास्ता बताते हैं। कभी ओ वक्त था, के हमें इनसे सही रहेनुमाई (मार्गदर्शन) मिलती थी। कानून क़ुदरत (प्रकृति का नियम) भी है के जिन बातों से उरुज (उत्थान) शुरु होता है, ज़वाल (पतन) आनेपर वही बातें ज़वाल (पतन) का सबब (कारण) बन जाते हैं। अज़ीज़म (प्रिय) नरसप्पा को आप ने बहुत ठीक अमल (अभ्यास) बताया। मुसलमान सूफियों ने इसको `नक्श बरकदम' कहा है। और सूफ़ियों के अंगो में से एक अंग है। उनको आप यह भी लिख दें के Point A पर मुराक़बा (ध्यान) भाई बहनोंवाला, जिसकी तरकीब आप को मालूम है, सोते वक्त ज़रुर कर लिया करें और आप को हर हफ़्ता इत्तला (सूचना) दें के ओ कर रहे हैं। और उसका असर (प्रभाव) बराबर लिखते रहें। मेरी समझ में ये मुराकब़ा (ध्यान) हर नौजवान सतसंगी को करना चाहिये। यह चीज़ वबाके (महामारी) तौरपर फैल रही है। अगर इत्तेफ़ाकसे (संयोग) निगाह (नज़र)

लडकियों पर पहुँच जावे तो उसी के साथ बहन का ख़याल आ जाना चाहिये। ये भी सबके लिये नसीहत (सलाह) है । हम ने अपने पुराने उसूल (नियम) भूला दिये । इसलिये यह चीज़ ज़ियादा नुमायाँ (प्रदर्शित) हो गई। लडकियों से हम देवी कहा करते थे और इस चीज़ को अगर हम फिर revive कर दें तो फिर यह चीज़ हमारी दुरुस्त (ठीक) होने लगेगी ।

नई पोती का नाम अभी कुछ नहीं रखा गया । डॉ. वरदाचारी ने आज उसकी जनम पत्री बनाकर भेज दी है । तिरुमलरावजी ने बडा अच्छा calender मुझे भेजा था, जिसके शुक्रिया का ख़त भी मैंने भेज दिया । Sugarappa व ग़ैर (अन्य) बिरादरान (भाई) सतसंगी से दुआ (आशीर्वाद) कह देना । बच्चों को दुआ । नूरचश्मी (बेटी) गुलाबी बहुत खुश होगी, जब के आपने मेरे चले आने की ख़बर सुनाई होगी । और सब बच्चे भी खुश हुए होंगे ।

डॉ. कुलकर्णी के charge में Training Centre क़ायम करने की आप की राय हुई थी। इसको सोच लीज़िए। इसलिये के उनके गुरु और है। उनको तालीम (प्रशिक्षण) श्री रामचंद्र मिशनही के under देनी होगी। अपनी गुरु की इज्जत करें, इस में कोई हरज (हानी) नहीं। इसका तसफ़िया (निर्णय) करने के बाद मुझे इत्तला (सूचना) दें ताके मैं कारबंद होऊँ (काम शुरू करूँ) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 82 शाहजहाँपुर
D-451-SRCM Date 05.10.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त No.91 TCB मो.21 Sept मौसूल (प्राप्त) हुआ। डॉ. कुलकर्णी देखिये क्या जवाब देते हैं । आप ने जो हालत अपनी लिखी है, क़ाबिले शुक्र (धन्यवाद के योग्य) है। ख़ियाल (विचारों) का तांता बंधना और समझ में न आना यह माने रखता है

के आप की परवाज़गी (उडान) ऊँची हो चुकी है । यहाँ जुनूबी (दक्षिणी) हिंद का time table नहीं मिलता। Delhi से मँगाना पडता है; जहाँ भी बहुत देर करके मिलता है। चुँके (क्योंकि) आप time table भेज देंगे, इसलिये Delhi नहीं लिखा। मुझे उम्मीद (आशा) नहीं के Hyderabad में फ़िलहाल (इस वक्त) इतने सतसंगी हो सके के मुझे एक हफ़्ता देना पडे। ख़ैर (अच्छा), Shri Ramalu जी जैसा जवाब दें, उसके मुताबिक (अनुसार) जो दिन आप तजवीज़ (व्यवस्था) करें, वही programme में रखूँगा। भाई किशनराव ने Shorapur आने के लिये मुझे बहुत ज़ोर दिया है और चिंचोली में Nilkanth वगैरा भी लिख रहे हैं। मेरी कमज़ोरी को देखते हुए, जहाँ तक road journey बचाया जा सके, अच्छा है।

Chincholi में एक हरिजन ने मुझे लिखा है के ओ मय (साथ) दस अपने साथियों के, mission मे शामिल होना चाहते हैं । हरिजन के ख़ियाल से, क्या श्री रामचंद्र मिशन उनको शामिल कर सकेगा ? श्री. भीमसेनराव ने लिखा है के उनको, हम लोगों से अलाहदा (अलग) group में बिठाया जा सकता है । मैंने उनको लिख दिया है के जब हम लोग, मैं, श्री राघवेंद्रराव और Sarnadji एक जगह होंगे तो यह चीज़ तय कर ली जावेगी । पढ़े लिखे लोग, शुमाली हिंद (उत्तर भारत) में हरीजन को साथ मिलाने के लिये बचते हुए कोशिश करते है । मगर अभी कसीर तादाद (बहुसंख्य) ऐसी है के हरिजनोंको चारपाई या खाटपर बैठने नहीं देंगे। यह मामला बहुत समझ-बूझ का है । इसको सोच लेना, फिर आनेपर हम लोग discuss करके एक नतीजे (निर्णय) पर पहुँच जायेंगे। मैंने इस हरीजन के ख़त का कोई जवाब नहीं दिया। अगर तबीयत ने मज़बूर ही किया तो ऐसा जवाब दे दूँगा के जो सही भी हो और मिशन में न इस जवाब में न हाँ हो, न ना हो।

मधुकरराव चिंचोली का कई सफों (पन्नों) का, एक ख़त आया जिसको पढ़कर मुझे शरम मालूम पडी । मैंने इसका कोई जवाब नहीं दिया, न देना चाहता हूँ। मैं यह ख़त privately आप के पास भेज रहा हूँ। इसको पढ़कर जैसा मुनासिब (योग्य) हो कीजिये । ख़त मेरे पास वापस करने की ज़रुरत नहीं। श्री भीमसेनराव और किशनरावजी का ख़त आया के ओ दशहरे में यहाँ आवेंगे। मगर अब तक नहीं आए । Captain लक्ष्मीनारायण Delhi से आ रहे हैं, जो क़रीब एक माह के, मेरे पास रहेंगे। आप को अगर Reality at Dawn या "अनंत की ओर" की ज़रुरत हो तो लिख देना, मैं उतनी ही कापियाँ

लेता आऊँगा । गुरु संदेश का तरजुमा (अनुवाद) पहुँच गया । इसमें मैं चंद (कुछ) और मज़मून (विषय) दाख़िल (शामिल) करना चाहता हूँ, जिसके 50 सफ़े (पन्ने) हो जायेंगे। अब आप अगर इतना ही रखना चाहें, तो आप छपा सकते हैं। और इससे ज़ियादा चाहें तो इंतज़ार (प्रतिक्षा) करना पडेगा और पैसे भी उसमें 500 कापीयों के क़रीब, रु.150/ के लग जावेंगे । मेरा blood pressure बहुत low था और एक दिन बहुत ही low हो गया । फिर Hindustani दवा जवाहिर मोहरा लेनी पडी । जिसने बडा अच्छा काम किया और अब मैं अच्छा हूँ। कोई फ़िकर (चिंता) नहीं । अच्छे के माने यह है, के कोई तकलीफ़ सिवाय क़दरे (कुछ) कमज़ोरी के, काबिले एहसास नहीं (मालुम नहीं होता) । ख़त बंद करते करते मुझे गुलाबी की बहुत याद आ गई और अब मीरा का भी ख़ियाल आने लगा है के ओ अब पैदल चलने लगी होगी । उसके उमरकी लडकी जो प्रकाश की है, ओ तो दौड़ी दौड़ी फिरती है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः M.L. Chaturvedi Judge जो अब retire हो चुके हैं, उनकी ज़बानी मालूम हुआ के Dr. P. Sen ने संन्यास ले लिया है। Shri. Govindappa Master, High School. Chincholi ने अभ्यास शुरु कर दिया है। जब मौक़ा मिलेगा तो, आप से या सरनाड से मिलेंगे। ख़त ख़तम करने के बाद ही S.R. Time Table आ गया। Captain L.N. Srivastava, Delhi से आए और ओ कुछ दिनों रहेंगे। ओ आप को सलाम कहते हैं । श्री. नारायणरावजी का बहुत बहुत शुक्रिया के उन्होने मेरे लिये बंगला किराया पर ले लिया है ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 83 शाहजहाँपुर
D-456 -SRCM Date 08.10.1959

मेरे राघवेंद्रावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज (आप) का मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) No 95 T.C.B. SRCM Dt. 1-10-59 मौसूल (प्राप्त) हुआ । Sedam में, चूंके आपको काम लेना है इसलिए इसका तसफ़िया (निर्णय) आप ख़ुद करें के Ayal Reddy बेहत्तर रहेंगे या Dr. Kulkarni। ज़रा गौर (सोच) कर लीजियेगा के Ayal Reddy में ठोसता कूट कूट कर भरी हुई है जो बडी मेहनत लेगी, तब दूर हो सकेगी । डॉक्टर साहब में अब ठोसता नहीं है बल्कि मामूली तौरपर कुछ जालके traces दिल के क़रीब हैं । हर हाल में Ayal Reddy की ठोसता साफ़ करनी ही होगी। डॉक्टर साहब में मज़हबी इल्म (धार्मिक ज्ञान) भी है और इल्मी लियाक़त (शैक्षणिक योग्यता) काफ़ी है । आप इन बातोंपर विचार कर लीजिये फिर Hyderabad में हम आप discuss करेंगे। वायदा (वादा, वचन) किसी से न करें ।

मैं November के पहले हफ्ते में चलना चाहता था । वैसे तो मैं कुछ देख नहीं पाता; मगर आलू का इंतजाम (व्यवस्था) मुझे करना पडता है। और मेरे रहने से काम ठीक हो जाता है। अब मैं 14 Nov या उसके क़रीब चल रहा हूँ। हाथरस और आगरा रुकूँगा यानी 5 या 6 दिन रास्ते में लग जावेंगे। और Hyderabad, 20 November से पहले न पहुँच सकूँगा। लिहाज़ा (इसलिए) periodical, इम्तिहानात (परीक्षाअें) इस दौरान (समय) ले लीजिये। ख़ियाल यह है के, मैं 21 November 59 को Hyderabad पहुँच सकूँगा। Programme अभी नहीं बना रहा हूँ। अबर मुहीत (आकाश आभ्राच्छादीत) रहता है। क़हतसाली (अकाल) का ज़माना है। धान (चावल) की फसल सब खराब हो गई। अबर (बादल) से शुबहा (संदेह) यह रहता है के, पानी न गिर जावें। क्यों के पानी गिर जाने से रबी और आलू की फसल बोने में, देर हो जावेगी। 14 November तक अगर आलू बोने का मौक़ा न मिला तो सब, मुलाज़िम (नौकरों) पर छोडछाडकर चला आऊँगा।

मैं M. Kishanrao को दो Magazine भेज चुका हूँ। और ओ पता अक्सर (प्राय:) मुख्तलिफ (अलग अलग) लिखते हैं । इसलिये न पहुँची होगी। अब मैंने भीमसेनरावजी को लिखा है के उनका पता दरियाफ़्त (मालूम) करके ठीक ठीक लिखें । यह दोनों साहब दशहरा में आनेवाले थे मगर अभी तक न आ सके। इन्तज़ार (प्रतीक्षा) बराबर कर रहा हूँ ।

श्री. माधवराव साहब के घर का पता मुझे लिख देना । सुना है के नंबर बंगले के बदल गये हैं ।

उर्दू की किताब Dr. K.C.V. के पास भेज दी और उन्होंने foreword भी लिख दिया है ।

जिन साहब ने उसके छपाने का वादा किया था, किसी वजह से ओ अब न छाप सकेंगे । इसलिये अब funds का इंतज़ार (प्रतीक्षा) करना पडेगा ।

मुझे लिफाफे में डॉ. साहब और श्रीरामुलूजी के खुतूत (पत्र) मिल गये । आप मीलाद शरीफ में खूब बोले होंगे और मुसलमान ख़ूब महज़ूज़ (खुश) हुए होंगे ।

Captain L. N. Srivastava तीन रोज़ से आये हुए है । ओ जुनूबी (दक्षीणी) हिंद की रवानगी तक ठहरेंगे । बच्चों को दुआ । सब सतसंगियों से दुआ कह देना ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: अपने एक सतसंगी America गये हैं और ओ 5 साल रहेंगे। मिशन को ओ वहाँ फैलाना चाहते हैं । किताबें मंगवाई हैं । ओ भेज दी गई ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 84 शाहजहाँपुर
D-462 -SRCM Date 09.10.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

कल एक ख़त भेज चुका हूँ । मिल गया होगा। श्री भीमसेनरावजी चिंचोली से कल आ गये। 20 ऑक्टोबर को जायेंगे । मैं 14 नवंबर को चल कर 21 Nov 59 को Hyderabad पहुँच रहा हूँ । यांनी 21 November के पहले नहीं पहुँच रहा हूँ । आप इस दौरान में इम्तिहान (परीक्षाअें) खत्म कर लीजिये । Programme कुछ दिनों के बाद भेजा जावेगा।

बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 85 शाहजहाँपुर
D-488-SRCM Date 28.10.1959

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आप) के दो किता (संख्या) मसर्रतनामें (हर्षपूर्ण पत्र) मौसूल (प्राप्त) हुए । आपने मधुकरराव को ठीक लिखा। मैं अंग्रेज़ी किताब Reality at Dawn की कापियाँ मतलूबा (वांछित), लेता आऊँगा और उर्दू की कापियाँ भी। Efficacy of Rajyoga की 14-15 कापियाँ रह गई हैं । फिर छपने की ज़रुरत है । फिर भी कमज़कम (कम से कम) दो लेता आऊँगा और हिंदी की किताब पाँच उसके साथ चली आवेंगी। श्री. भिमसेनराव 17 Oct को चले गये । बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) ओ काफ़ी महज़ूज़ (खुश) हुए और मुझे भी अंदर अच्छा तबादिला (परिवर्तन) एहसास (अनुभव) में आया। ईश्वर उनको इस्तिक़ामत (स्थिरता) दे ।

कोई हरज़ (हानि) नहीं के वासुदेवराव को कुछ ग़लत बतला गये। बहरहाल (हर हालत में), वहाँ पर ध्यान करने से भी किसी क़िसम (तरह) का नुक़सान नहीं हो सकता । सिर्फ फ़रक इतना रहता है के to the point नहीं रहता । मैं ये और एक दो मुराक़बा (ध्यान) ख़ुद भूल जाता हूँ । इसलिए हाज़िरीन (उपस्थितों) में से किसी से कह देता हूँ। ओ बतला देता है | अब मैं भी याद कर लूँगा । यह गलती मैंने भी अक्सर (प्राय:) की है ।

मीराबाई को अगर सिलाजीत, असली, एक चावल बराबर सुबह दूध में घोलकर जाडों में दी जावे तो जाडों भरमें (शीतकाल में) ओ काफ़ी तंदुरुस्त (स्वस्थ) हो जावेगी और हड्डियाँ strong मज़बूत हो जावेगी। मास्टरसाहब का लडका अब बिल्कुल ठीक है। M. Kishanrao ने अपना पता भेज दिया है। मैं उनको magazine की कॉपी तीसरी बार भेज रहा हूँ और उनको गुलबर्गा पहुँचने की तारीख

की इत्तला (सूचना) दे रहा हूँ। programme हमराह (साथ) ख़त हाजा (इस) भेज रहा हूँ। और कल तक सरनाडजी व कुमारस्वामी व मैसूर भी भेज दूँगा। Trichinapally programme भेज दिया है।

चंद (कुछ) ख़ुतूत (पत्रों) की नक़लें उर्दूसे हिंदी में करवा कर भेज रहा हूँ । अपनी फाइल में रख लीजियेगा; किसी वक्त काम में आ सकती है ।

आँ अज़ीज़ (आप) की हालत बफ़ज़लहू बहुत अच्छी है। अजब पानी की सी हालत है। बुलबुलें ज़रुर उठते हैं । मगर सतह पर ही रहते हैं ।

चिंचोली के हरिजन का ख़त और आया है, जो B.A. Pass है। उसका जवाब भी, उसी अंदाज से दे दूँगा ।

आलू बो चुका । एक गोड (बोना) मेरे सामने लग जावेगी । उसके बाद गोड (बोना) और सिंचाई होते रहेगी ।

Captain L.N. Srivastava देहली वाले, यहाँ मेरे पास मुक़ीम (ठहरे हुए) है । आप को सलाम कहते हैं । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः Hyderabad में मुनशी गुलाम सरवरखाँ से मिलने का इश्तियाक़ (उत्कंठा), ज्युं दिन व तारीख क़रीब आती जाती हैं, बढ़ता जाता है। भाई, अब अगले ख़त में अपने pressure के बारेमें लिखना, ताके मेरा काम शुरु होवे ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 86 शोरानुर (केरल)
D-600 -SRCM Date 15.12.1959

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आप) के भेजे हुवे ख़त मिल गये । और ओ ख़त भी मिल गये जो redirect किये थे। मुझे शोरानुर, मिस्टर मुथा

दत्त के बार बार कहने पर आना पडा। यह जिला मलाबार में है। मुझे उम्मीद है के यहाँ कुछ लोग शुरु करेंगे । मिस्टर मुथादत्त, पारसाल (पिछले वर्ष) मुझे आने के लिये कहते रहे, मगर इस साल मैं आने को मज़बूर ही हो गया । इन्होंने यहाँ तक ज़ोर दिया के हवाईजहाज से मैं चलूं और दूसरे ही दिन बज़रिये हवाईजहाज वापस हो जाऊँ । मगर मैं रेलही से आया। तिरुपती से ओ मुझे अपनी कार पर Madras पहुँचा गये । इन्होंने मुबलग (धन की संख्या) 501, उर्दू किताब के translation के छपाने के लिये दिया है। चुनांचे (इसलिए) मैंने किताब Madras छपने के लिये दे दी है, मुमकिन (संभव) है के कुछ कमी पडे । उसके लिये डॉ. Varadachari की यह तज़वीज़ (व्यवस्था) है के हर centre में जो अपने सतसंगी किताब लेना चाहें, ओ 1-4-0 (1.25 रुपये) फी जिल्द (प्रति कॉपी) के हिसाब दाम centre incharge के पास पेशगी (अग्रिमराशी) जमा कर दें । और रुपये Dr.Varadacharyaji के पास भेज दिया जावे ।

Trichinapally से N. Tyagarajan और K. Subramaniyam भी मद्रास आये थे । उनसे भी यही कह दिया है । मुथा दत्त ने मुझसे यह कह दिया है के मिशन के लिये जब ज़रुरत हो, मुझ से रुपये तलब (पूछ/माँग) कर लें । उनका बहुत बहुत शुक्रिया । ये बहुत बडा आदमी है । मगर मांगने के लिये मेरी ज़बान नहीं। हालांके कबीर साहब ने लिखा है

"मर जाऊँ मांगू नही अपने तन के काज;
परमार्थ के कार में होवे न लाज"

उनकी मैं कुछ थोडीसी service भी कर सका हूँ । जिस में मुमकिन (संभव) है के इनको गुरुमहाराज की ताक़त का अंदाज लग गया हो । उसका हाल ज़बानी बताऊँगा।

सतसंगी तिरुपती में भी बढ़े और दो तीन मद्रास में भी। एक अंग्रेज जिनका नाम H. Jacob है, मुझसे यहाँ मिले, बहुत सवालात हुए, यह जर्मन है । जो जिसने बताया, करते रहे, मगर फ़ायदा न हुआ । आज सुबह, कुछ convincing talk हुई, जिससे उनको संभलने की तरफ रागिब (इच्छुक) कर दिया और ठीक अमल की तरफ तवज्ज़ह (ध्यान) मुतबादिल की (मोड़ दिया) है । ओ शाहजहाँपुर भी आना चाहते थे और मुमकिन है के ओ आवें ।

मैं 16 की शाम को यहाँसे चलकर 17 की सुबह मदरास पहुँच जाऊँगा । और 18 सुबह वहाँ से Vijaywada, बज़रिये G.T., क़रीब 8 बजे तक पहुँच जाऊँगा और 20 December को G.T. से चलकर

22 को इलाहाबाद पहुँचूँगा । वहाँ दो रोज़ रहकर, लखनौ एक दो दिन मुक़ाम करता हुआ, 27 December तक घर पहुँच जाऊँगा । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 87 शाहजहाँपुर
No.E-1-SRCM Date
02.01.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं 26 December 59 बख़ैरियत (सकुशल) वापस आ गया । आप के ख़ैरियत (कुशल) का ख़त न मिलनेपर बहुत तशवीश (चिंता) है। तबीयत, तार देने की चाहती थी, फिर ख़त ही लिखकर दिल को समझा लिया । Vijaywada में Hyderabad वाले राघवेंद्रराव के वालिद माजिद (पिता) मुझसे मिलने आये थे और बीमार थे। बहुत कमज़ोर हैं।

Shoranur का हाल मैंने वहीं से लिख दिया था। दो आदमीयों नें शुरु किया है। मगर कुछ और शुरु करेंगे। दौरा करने की ज़रुरत है। अलाहाबाद में मामला सब ठीक है। कुछ फ़िकर की बात नहीं है। मैंने जज्जसाहब को भी initiation करने के बाद तालीम (प्रशिक्षण) की इजाज़त (अनुमती) दे दी है। वहाँ सीखनेवाला कोई नहीं है। Dr. Hafiz Sayeed बहुत बीमार है। उन्हीके कहनेपर centre खोला गया। बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 88 शाहजहाँपुर
No. E-30 -SRCM Date 12.01.1960

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दो मसर्रतनामे (हर्षपूर्ण पत्र) मौसूल (प्राप्त) हुए। बडी खुशी की बात है के बशिरकत (शामील होने के लिए) उत्सव आ रहे हैं । बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) सरशार (लबालब) हो जावेंगे । मेरी भी हिम्मत उत्सव में भाइयों को आने के लिये मज़बूर (विवश) करने की नहीं चाहती। दिल तो यही चाहता है सब शरीक (शामील) हों । मगर यह गिरानी (मँहगाई) का आलम (स्थिति) और क़लील (कम) तनख्वाहयें (वेतन) । अगर ओ किसी तरह से आ भी जायें, तो बच्चों को तकलीफ़ (कष्ट) हो जावेगी । बाबू शिवमोहनलाल हैद्राबादी, भी उत्सव में आ रहें हैं । उनको आप अपनी Hyderabad पहुँचने की तारीख और वक्त लिख देवें और शाहजहाँपुर की रवानगी का वक्त भी । आप के साथ ओ भी चले आवेंगे, अगर उससे पेश्तर (पहले) उनके आने का इरादा न हो | पता हसबज़ेल (निम्नलिखित) है । उनके लडके की तबीयत (स्वास्थ्य) बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) सम्भल रही है ।

Shri Shivmohanlal,
Retired Head of Dept of Philosophy,
Osmania University, 2-16, Tarnaka,
Hyderabad (Deccan).

श्री शेषाद्री, Dr. Varadachari के रिश्ते में है । उन्होंने मेरे सामने अभ्यास शुरु किया था । मैंने उनसे कह दिया था के वह अपना पता आप को इत्तला (सूचना) कर देवें, ताके आँ अज़ीज़ (आप) जब Hyderabad जावे, उनको इत्तला (सूचित) कर सकेंगे ।

आपने तहरीर किया (लिखा) है के दुनियाकी तफ़क्कुरात (चिंताएँ) दिल में भारीपन पैदा कर देती है । यह दलील (प्रमाण) इस बात की है के, दिल इस हद तक साफ़ हो चुका है के, फूल की ख़ुशबू का बोझ भी उसको गँवारा (सहन) नहीं होता । फिर भी तफ़क्कुरात (चिंताएँ) उडती हुवी शकल (रूप) में होना चाहिये के दिल को उनकी ख़बर (होश, समझ) न हो । यह फ़नाइयत

(लयावस्था) बढ़ने पर, जाती रहेगी । बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) surrender आप में बहुत अच्छा है, जिसकी वजह से प्यालाकी छलकती हुई मय (शराब) टपकती रहती है । यह जुमला (वाक्य) लिखते लिखते श्री नारायणरावजी की याद आने लगी । ईश्वर करे बुलबुल के इश्क की बू उनके मशाम - ए - दिलमें (जहाँ सूँघने की शक्ति होती है) पहुँचने लगे ।

भाई, मैं आप को रुहानी (अध्यात्मिक) मनाज़िल (पड़ाव) तय कराने के लिये बहुत बेचैन रहता हूँ और यह merit आप ही की है । जो surrender के वजह से है । यही बेचैनी, रास्ता साफ़ करने में भी मददगार होगी और देनेवाला तो कोई और है । बंदे (सेवक) को ख़िदमत (सेवकाई) से मतलब ।

बाबू शिवमोहनलाल ने, तिरुपती मेरे लिये तार, transformation करने के लिये, दिया था, जो मुझे इलाहाबाद मिला । मुझे अफ़सोस (दुःख) है के मैं तार से उनका transformation न कर सका, मगर उनकी राहे मारफ़त (अध्यात्मिक मार्ग) में ईश्वर प्राप्ती की बेचैनी ज़रुर ज़ाहिर करता है, जो अच्छा है । मैंने अभी दो रोज़ हुए, उसका जवाब दे दिया और उस में कुछ मंतक (फिलासॉफी) लिखकर सूरज को चिराग़ दिखाया है । मगर भाई, ओ बहुत ही अच्छे आदमी हैं और मोहब्बत करने लगे हैं । मगर भाई, मैं क्या करुँ, इस हक़ीर (तुच्छ) की हड्डियों में रस बाक़ी नहीं रहा । हो सकता है के लोगों को मैं इसलिये पसंद न आता हूँ। अब मैं आइने में क्या मुँह देखना शुरु करुँ ताके अपने आप को देखकर ख़ुद ख़ुश हो लूँ। मगर ख़ौफ़ (डर) यह भी है के अगर ऐसा किया तो अपनी ही तसवीर उसमें ग़ायब न मिले | ढाढस (धैर्य) यह भी है के ग़ायब होने पर भी कुछ मिलेगा। ज़रूर मिलेगा | ग़ायब होनेपर ही मिलता है |

बकुलाबाई की सख़्त अलालत (बीमारी) सुनकर फ़िकर (चिंता) पैदा हुई । ईश्वर उनपर फ़ज़ल (कृपा) करे । रसमन (रिवाज के तौर पर), देख आना अच्छा है और क्या लिखूँ ? एहतियात (सावधानी) सबको रखना चाहिये ।

मुझे अब नूरचश्मी (बेटी) मीराबाई की भी याद, गुलाबी के साथ साथ आने लगी है इसलिये के ओ क़दरे (कुछ) बडी हो चली। मेरा परिवार ज्युँ ज्युँ बढ़ता जाता है, त्युँ त्युँ मुहब्बत में और आलुदा (लिप्त) होता जाता हूँ। मुहब्बत करना है, जब ख़ुदा से नहीं कर सका, तो उसके बच्चों से ही सही।

मैं आँ अज़ीज़ (आप) के आने का इंतज़ार (प्रतीक्षा) करने लगा, गो (मानो) आप चलने से पहले ही आ गये।

जो सवाल के गुलाबी ने किया है के क्या बाबूजी ख़ुदा है, निन्हीने भी किया था के आप भगवान हैं ? मैंने कहा के नहीं । उसने कहा, लोग पूजा करने आते है, इसलिये आप भगवान ज़रुर हैं । यही ख़ियाल गुलाबी के दिल में भी पैदा हुआ होगा। जो लोग, के उत्सव में न आ सके, मुक़र्ररा (नियुक्त) वक्त (समय) में अपने घर पर या जहाँ सतसंग होता है, बैठ लेवें। सरनाडजी को भी कह देना। बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

सर्दी, बसंत तक एतदाल (संतुलन) पर आ जावेगी । फिर भी आप के लिये बहुत होगी । रास्ते का इंतज़ाम (व्यवस्था) कर लीजियेगा । यहाँ सर्दी नहीं लगने दूँगा । सर्दी, Itarsi से शुरु हो जाती है ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 89 शाहजहाँपुर
No E-56 -SRCM Date 09.02.1960

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपा से) आप मय (साथ) पिताजी के, बख़ैरियत (सकुशल) पहुँच गये होंगे । श्री. शिवमोहनलाल भी आप के बाद दूसरे रोज़ रवाना हो गये। शुक्र है के ख़ुश ख़ुश गये और बहुत सी उम्मीदें दिलाकर गये ।

आप को जब मैंने यहाँ तवज्ज़ह दी थी तो कुछ हलका अंदाज़, Central Region में पहुँचने का हुआ था । 5 तारीख की रात में, सब मुक़ामात चीर फाडकर आप पहुँच ही गये और वाक़ई यह आप की ही क़ाबिलियत (क्षमता) थी और मैं मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ । मगर अब ज़िम्मेदारी और भी बढ़ गई, जिसका निभाना आप अच्छी तरह से जानते हैं ।

बाबू सूरजप्रसादजी, लखीमपुर कॉलेज Philosophy Dept के Head हैं और आप से मिले थे, ने लिखा है के जब ओ मेरा ख़ियाल करते हैं, तो Raghavendra Rao की शक़ल बन जाती है । यह एक अच्छी फ़नाइयत (लयावस्था) होने की दलील (प्रमाण) है । मैंने कुछ तवज्ज़ह (ध्यान) देने के लिये बातें बताई थी उसका ख़ियाल रखना । तवज्ज़ह (प्राणाहुति) के वक्त तो मालिक की हैसियत से बैठा जाता है । अपने हालात लिखते रहना । अब क्या एहसासात (अनुभव) है ? असल बात तो यह है के as a teacher मेरी duty तो अब ख़तम (समाप्त) हो गई । अब ओ जाने और आप जाने; मगर चुँके मेरी कुछ आदत ही ऐसी बन गई है के मैं अपने लिए कोई काम तलाश (ढूँढ) ही कर लेता हूँ। इस लिहाज़ से के करना ही पडता है । मकसद ज़िंदगी (जीवन का ध्येय) तो आप का हल (सुलझ) हो ही गया । बच्चे प्रसाद खाकर ख़ुश हुए होंगे । बच्चोंको दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 90 शाहजहाँपुर
No E-77-SRCM Date 15.02.1960

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त No 221/TCB/SRCM मो. 9 फरवरी मौसूल (प्राप्त) हुआ । मेरा post card, central region में पहुँचने की खुशीखब़री का, पहुँच चुका होगा । मुझे ताज़्जुब (आश्चर्य) ज़रुर है के पिताजी को ऐसा ख़ियाल पैदा कैसे हो गया के चौबेजी का मतलब शादी है । उनके समझाने के लिए एक बात यही काफ़ी है के चतुर्वेदियो में शादियाँ सिर्फ़ चतुर्वेदियों में ही होती है । इस लडकी की शादी इसलिये नहीं हुई के यह intestinal T.B. की मरीज़ है । चौबेजीसे मैंने मना भी किया के अपनी लडकीकी तारीफ़ ख़ुद न किया करें । मगर ओ बुढ़े हो गये हैं । दिमाग़ में इतनी समझ बाक़ी नहीं रही और मैं भी बूढ़ा तो नहीं हो गया मगर लोग कहेंगे ऐसा ही ।

मुझे भी उसका खौफ (भय) हुआ और मैंने हजरत क़िबला गुरु महाराजसे प्रार्थना की के बुढ़ापेका असर मेरी इदराक (बुध्दी) और समझ पर न पड़े; ज़िस्म (शरीर) कितनाही लागर (दुर्बल) हो जावे उसकी परवा (चिंता) नहीं । अगर कुछ इशारा आप मुझसे दे देते, तो मैं इस बात को न लाते हुए indirect way मे सिर्फ़ बातोंसे ही ख़ियाल को दूर कर देता। अब मैं उनके लिए एक ख़त लिख रहा हूँ। जिसमें इस मज़मूनको (विषय) touch नहीं कर रहा हूँ । अगर आपकी रायमें (विचार) मुनासिब (उचित) हो तो जहाँ ओ रोनक अफ़रोज (उपस्थित) हो, इस अरीज़ाको (पत्र) भेज दिया जावे । रुपियोंके बाबत मैंने समझ लिया के ओ आपके हो गये और मेरे आनेपर ओ बहूकी नज़र कर दिये जावेंगे। आप तो इस क़दर (इतना) मेरे ऊपर खर्च करते हैं और सफ़र में भी ; मगर मैं कुछ मदद नहीं कर पाता हूँ । दुआ (आशीर्वाद) ज़रुर है । और इसकी पूरी हो जाने पर ही इसकी कुछ क़ीमत होती है। यह सब ईश्वर के हाथ है ।

श्री रामचंद्रराव 12 फेब्रुवारी को मय (साथ) अपनी बीवी और भाई के, हरिव्दार रवाना हो गये | 27 या 28 तक ग़ालिबन (संभवत:) घर पहुँचेंगे । पिताजीकी मज़्जूबाना (तल्लीनता) कैफ़ियत (हालत) जो आपने लिखी है, अपने आप subside होने दीजिए । मैंने उनकी Bellary में भी सफ़ाई की है और यहाँ भी, गो

(यद्यपि) वक्त इसके लिये न था, कुछ, की ज़रुर है । अभी उनमें, फिर भी, सूक्ष्म रुपमें सफ़ाई करना बाक़ी है। अगर यह हो गई तो ओ कुछ के कुछ (बहुत अच्छा) बन जावेंगे। आगे इन्हे तरक्क़ी (प्रगती) देना यह आपका काम रहेगा और आपका फ़र्ज (कर्तव्य) भी है । अच्छा हुआ इस वक्त Rs. 145/- मिल गये। कुछ सफ़रका खर्चा पूरा हो गया। अभी और मिलेंगे scale का इंतज़ार (प्रतीक्षा) है। अब नफ्स (मुख्य) मतलब (बात) पर आता हूँ ।

हमारे यहाँ महात्माओं और संन्यासियोंने हिंदुस्तानकी economic condition का लिहाज़ (ख़ियाल) न रखते हुए पीपों घी हवनमें फूँक दिएँ। और दो महिने, तीन महिने तक 24 घंटे आगमें आहुति पडती रही। ओ, जो महात्मा अपना उरुज (उत्थान, तरक्क़ी) हासिल (प्राप्त) करना चाहता है, ओ हवन ही में हिन्दुस्तानकी संपत्ति फूँकना शुरु कर देता है और हर साल इसीकी ख़बर मिलती रहती है। जुनूबी (दक्षिणी) हिन्द का हाल मालूम नहीं। मुमकिन (संभवतः) ओ लोग भी ऐसा करते हों और जो ऐसा नहीं करते ओ public को कुंडलिनीके चक्कर में डाले रहते हैं। यह सब होते हुए हमारे तरफ़के महात्मा अभी तक किसी एक के भी दिलमें आग न सुलगा सके, बल्के उस चीज़ को ज़रुरत से ज़ियादा फूँक दिया जो उनके बच्चों के काम आता।और उससे दिल व दिमाग़ सही और ठीक बनता। अगर श्री रामचंद्र मिशन अपने प्राणोंकी आहुति देकर किसी एक में भी आग सुलगा सका, तो हजारों यज्ञोंसे बेहतर (अच्छा) काम किया। इस बात को अगर आप दिल में गौर (सोचे) करें तो पता चल जावेगा के आप ने कितनों ही के दिल में यह आग सुलगा दी होगी और कितने और होंगे जिन में आप आग सुलगा सकेंगे और आप भी ऐसे हैं के सीधे सादे एक जुमले (वाक्य) ने, जो किसी वक्त मैंने लिखा था, ऐसा असर किया के आप के बुझे हुए अंगारे में फिर चमक आ गई और ओ ऐसी भडकी के उसके शोले (ज्वाला) बाहर निकलने लगे । अब तो निकल ही चुके, field तयार करना ही होगा और हो रहा है । बस बुझे हुए दिल सामने हो और इसमें लौ (ज्वाला, ज्योत) बाक़ी हो, फिर तो जल ही उठेंगे। आप के काम का दायरा बढ़ाना ही पडेगा और यह न समझना के आप Central Region मुफ्तही में दाखल हो गये। क़ुदरत (प्रकृति) यक़ीन (विश्वास) है, आप से काम लेगी और अनक़रीब (बहुत शीघ्र) आप को काम के लिये तैयार होना पडेगा । बल्के (अपितु) करना ही पडेगा । ज़रा limitation को ढ़ीला कर देना है । अपना हाल तो कुछ लिख ही देना और गौर करना के रुहानियत

(आध्यात्मिक) के नशे से आप किस क़दर (मात्रा में) अलाहिदा (अलग) हो चुके हैं और Reality का फुरैरा (उमंग, जोश) किस तरहसे असर अंदाज (परिणामकारक) हो रहा है। फिर मैं तो लिख ही दूँगा । कुछ काम आप के मुशाहद: (अवलोकन) के लिये इशारतन (संकेतसे) लिखता हूँ और शुरु होता है। मैंने श्री. रामदास, जो आसाम में भी तिजारत (व्यापार) करते हैं, उनको काशीराम की जगह पर मामूर (नियुक्त) करके आसाम के लिये भेजा है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): डॉ. KCV का ख़त आपने यहाँ देखा था। उसके जवाब की नक़ल आप के पास भेज रहा हूँ । (Privately) उसको file में लिख लेना उस में इन बातोंका जबाब है जो preceptor के दिल में अक्सर (प्राय:) उठ सकती है । और Jacob, जिसके बारेमें मैं शोरानुर से लिखा था, उनके ख़त और अपने जवाब की नक़ल भी भेज रहा हूँ । श्री. नारायणरावजी न आ सके इसका मुझे भी अफ़सोस है । मगर ख़ैरबाद जिंदा सोहबत बाक़ी (बचेंगे तो फिर मिलेंगे) । अब तो आप की तबीयत ठीक होगी । मुझे एहतेमाल (आशंका) था के आप की तबीयत ख़राब होगी। लिहाज़ा उसकी दवा साथ कर दी थी । अब की खिलाफ़ मामूल (सामान्यता के विरुद्ध), बसंत के बाद यकबारगी (अचानक) गरमी शुरु हो गई । सब भाईयों को आशिर्वाद ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 91 शाहजहाँपुर
No E-102 -SRCM Date 24.02.1960

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का पिछला ख़त मिल गया और मेरा भी एक बडा लिफ़ाफ़ा जिस में चंद (कुछ) ख़ूतूत (पत्रों) की नक़लें थी, मिल गई होगी। मैं उन सब का जबाब देना चाहता था मगर अब यह न हो सकेगा। इसलिये के आज ही 11 बजे आप का ख़त मिला और मेरी तबीयत (मन) बरहम (तितर बितर / नाराज़) है। मगर आप की goodness की भी इंतिहा (कमाल) हो गई के आपने मलप्पा के लिये दुआ करने के लिये लिखा। तबीयत तो नहीं चाहती थी मगर हालत उनकी stationary तो हो ही गई। आप को या किसी सतसंगी को उनको देखने के लिये जेल में जाने की ज़रुरत नहीं, न कुछ ताल्लुकात (संबंध) रखने की ज़रुरत है। घर पर उसको कभी किसी हालत में आने नहीं देना चाहिए; ख्वाँ (यदि) ओ अच्छा भी हो जावे। इस तरह के देहाती लोगों से परहेज़ रखना चाहिये। सतसंग में लेने की ज़रुरत नहीं।

कुल वाक़यात (घटना) जो आपने लिखे हैं, उनसे तरश्शुह (ज़ाहिर) हो गया के उस में sense मौजूद थी इसलिये उसकी ख़ता (गुनाह, अपराध) ख़ुदा भी माफ़ नहीं करेगा। और आप उसके बेहत्तरी के लिये कुछ करने के लिये मुझे मज़बूर (विवश) न करें। बल्के आप इंतज़ार (प्रतीक्षा) करें के क्या होता है। मेरी तबीयत बहुत बरहम (क्रुद्ध) है और ज़ब्त (सहन, बरदास्त) नहीं हो रहा है। आप अपनी तबीयत (मन) को परेशान (चिंतीत) न करें और बच्चों को परेशानी (दु:ख) से दूर रखें। आप के ख़तको मैने फाड़ दिया। सरनाडजी को लिख देवें के उस नमकहराम (कृतघ्न) को सतसंग मे जगह न देवें और न घरपर आने देवें।

"Pradeep" के editor ने एक ख़त भेजा । उसके जवाब की नक़ल भेज रहा हूँ । अपनी file में, पढ़कर, लगा लीजिये । उनके बीवीने भी दो तीन ख़त भेजे हैं । सब का मैंने जवाब दे दिया। आखरी ख़त के जवाब की नक़ल और भेज रहा हूँ । Editor साहब का नामी गिरामी (विख्यात नाम) विनीत रामचंद्र है । उन्होंने शिवा को गुरु माना है और ख़त के उन्वान के जुमले (आरंभ के

वाक्य) नोट कर दिया हूँ । "At the feet of Shri Babuji (Shri Ramchandraji Maharaj) I humbly dedicate myself, at your sacred feet. This is how it happened."

बच्चों को दुआ । बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे), बहू की तबीयत अब ठीक हो गई होगी । डॉ. Varadachari के दोनों ख़ुतूत (ख़त) पढ़कर रवाना कर रहा हूँ । आप के एक जुमले (वाक्य) पर comment आप को समझाने के लिये करना चाहता था । मगर इस वक्त नहीं हो सका ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः इस घर के मामले की हत्तलवुसअ (जहाँ तक हो सके) publicity न दी जावे ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 92 शाहजहाँपुर
No E-117 -SRCM Date 03.03.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

एक ख़त मैंने 15 Feb 60 को भेजा था। Bellary से undelivered वापस आया । उस में पता Preceptor, Shri Ramchandra Mission Training Centre, XIX Cowl Bazar, Bellary लिखा था और डाक-खाने का remark भी भेज रहा हूँ । ख़त इसी पते से आप को बराबर मिल जाते हैं और ओ ख़त क्यों नहीं मिला? आप डाकखाने से लिख कर दरियाफ़्त (मालूम) करें।

उसके बाद एक ख़त E-102-SRCM Date 24-2-60 रवाना किया था, लिखिये के ओ मिला या नहीं । एक ख़त, मैंने ग़ालिबन (संभवतः) इसी ख़त में Pradeep अख़बार के Editor को जो ख़त लिखा था उसकी नक़ल और उनकी बीबी के ख़त की नक़ल भी भेजी थी । इस ख़त मज़कूराबाला (उपरोक्त) में मलप्पा के बारे में मैंने लिखा था ।

मलप्पा, अच्छा हुआ जेल से छूटकर, जेल में जा पडे । मुझे उनसे कुछ लगाव नहीं । उनके वाक़यात (घटना) सिहामे रुह (हृदयविदारक) हैं । इसलिये के उनमें sense मौजूद थी और माँ और बहन की पहचान है । अगर उन्हे fits भी होते तो ओ उसीमें fit रहें । Mission को ऐसे आदमी की ज़रुरत नहीं जो उसकी बदनामी का बाइस (कारण) हो । ओ निगाह व नज़र को नापाक (अशुद्ध) रखने का आदी (आदत) है वरना ऐसे विचार सरसाम (सन्निपात) delirium में भी नहीं आ सकते थे । अगर कोई फ़क़ीर, पागल या मज्जूब (अवधूत) हो जावे तो एक निगाह में अपनासा दूसरों को बनाता फिरेगा । उससे कोई बात बदमाशी की सरज़द (घटना) नहीं होगी । इसलिये मुब्तदी (नौसिखिया) को मज्जूब (अवधूत) से बचना चाहिये ।

आप का पोस्ट कार्ड No.232/TCB/SRCM मो. 26-2-60 मिल गया । इससे पेश्तर (पहले) जो ख़त मल्लप्पाके हालात का भेजा था और जिसका जवाब मैंने भेज दिया है, फाड दिया । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 93 शाहजहाँपुर
No E-206 -SRCM Date 10.04.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आप) के जुमला (सब) मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिले। अब की जवाब में बहुत देर हो गई । मैं एक हफ्तेके लिये इलाहाबाद मुक़द्दमा के सिलसिले (बारेमें) में चला गया था । अपीलें admit हो गई और मेरी तरफ से चतुर्वेदीजी ने वकील का इंतज़ाम (व्यवस्था) कर दिया । जब छोटे भाई पर तामील (सम्मन या आज्ञा) हो जावेगी, तो उसकी तरफ से भी वकालतनामा दाख़िल हो

जायेगा । यह दुनिया है के रिश्तेदार मुक़द्दमे बेइमानीसे (झूठे दावे) लड़कर हम को नुकसान पहुँचाना चाहते हैं। ईश्वर हमारी मदद करे ।

श्री. M.L. Chaturvedi, High Court से pension लेने के बाद Member of Union Public Service Commission बमुशाहरा (प्रतिमाह) Rs. 3000/- हो गये । 3 March से काम कर रहे हैं । आप से, चूँके (क्योंकि) ताल्लुकात (संबंध) हैं, आप उनको मुबारकबादी (बधाईवाला) का ख़त लिख दीजियेगा। गो (यद्यपि) देर ज़रुर हो गई, मगर मेरा हवाला (सन्दर्भ) दे दीजियेगा के मेरे ख़त से अभी मालूम हुआ है। पता Shri. M. L. Chaturvedi, Member of U.P.S.C., 8-B. Lodhi Estate, New Delhi.

अज़ीज़म (प्रिय) Ramkishan ने बडा अच्छा किया के पानी का पंप खरीद लिया । ईश्वर उनको फ़ायदा पहुँचाये । मेरे ख़याल में महकमा जिराअत (कृषि विभाग) और Planning office, उन्हे कुछ रुपये की मदद देता है । और महकमा (विभाग) sugarcane, अगर वहाँ हो, तो वह भी मदद देता है । आप रामकिशन को लिख दीजिये के इस चीज़ को दरियाफ़्त (मालूमात) करें । यह रुपिया कर्ज़ा नहीं, मुमकिन हो, बतौर इमदाद (मदद के रूप में) दिया जाता हो ।

मेरा अंदाज यह होता है के नारायण शेट्टी और तिरुमलरावजीने सत्संग छोड़ दिया है । तजरुबा (अनुभव) ऐसा हो रहा है के जो लोग ज़ियादा gross होते हैं ओ छोड़ ही देते हैं । grossness (ठोसता) दूर हो जाने के बाद ही अंदर हालत बनाना पडती है । जिसका ओ इंतज़ार (प्रतीक्षा) नहीं करते । दूसरे, Theosophical Society में कुछ लज्जते दिमाग़ी (बौध्दिक स्वाद) ऐसी है के तबीयत वहाँ जाने के लिये बार बार ज़ोर मारती है। अब ओ आपसे किताबें सुनना चाहते हैं । तो अगर आपका जी चाहे तो सहजमार्ग फिलासफी की अज़मत (महत्व) और किताबोंके साथ उनके दिलमें नक्श (अंकित) करानेकी कोशिश कीजिये। ताके मुमकिन है के इसीसे ओ लगे रहे और उनको फ़ायदा होता रहे ।

बहु से जो नफ़रत (घृणा) और गुस्सा पैदा हो जाता है उसको दूर कीजिये । ओ संत, नेक (पुनितात्मा) और भली हैं ।

किताबें पढ़नेका शौक़, कुछ बुरा शौक़ नहीं और आपके लिये तो बडी मालूमात की ज़रुरत है । ताके मिशन का literature आगे बढ़े।

श्री. भीमसेनरावजीने मय (साथ) अपनी बीवी के, 10 या 15 अप्रैल को आने के लिये लिखा है । बड़ी खुशी की बात है ।

Subramaniachari मुझे भी कई ख़त, इसी मज़मून (विषय) के लिख चुके हैं । मैंने उनको लिख दिया के अपने वालिद (पिताजी) से किसीके ज़रिये (द्वारा) यह कहला दो के आप फलाँ लडकी के साथ शादी (विवाह) चाहते हैं । कोई शख़्स अगर ऐसा न मिले तो ख़ुद कहो । इससे आगे मैंने और कोई राय देना मुनासिब (उचित) न समझा । मैंने ओ ख़त जिसमें लडकी का जिकर था कुमारस्वामी को भेज दिया के ओ उनके वालिद (पिता) को मजबूर (विवश) करें के उसकी शादी कर देवें । उन्होंने ऐसा कर दिया । बाप इस तरफ कम मुतवज्जेह (ध्यान देनेवाला) है, इसलिये के ओ दूसरी शादी कर चुके हैं, जो सुब्रमनियम की माँ नहीं है ।

एक लडकी, जिसका हवाला (संदर्भ) मधुकररावने अपनी हिंदी चिठ्ठीमें दिया था, का ख़त आया के ओ पूजा करती है । मधुकरराव का उसमें हवाला (संदर्भ) था, मैंने उसका जवाब दे दिया और लिख दिया के मधुकरराव नहीं मालूम किस ख़यालमें रहते हैं के ईश्वर प्राप्ती के तरफ नहीं जा रहे हैं ।

डॉ. वरदाचारीने कुछ जुमलोंका (वाक्य) जवाब माँगा था । मैंने दे दिया और उसकी नक़ल आपके पास भी भेज रहा हूँ। आप यह पढ़ कर file में रख लीजिए। बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः एक हफ्तेसे दर्द पेट का, शिद्दत (तीव्र) से है । मगर कम हो जाने की सूरत (लक्षण) पैदा हो चली है । कोई फिकर (चिंता) की बात नहीं है । आपके पास (pass) होने की बहुत ख़ुशी हुई ।

मैंने डॉ. Kulkarni को trainer बनाने के लिये दरियाफ़्त (पूछा) किया, कोई जवाब नहीं मिला । उसमें उसके फायदे भी बतला दिये थे । अब आपकी राय हो तो Ayal Reddy की तयारी शुरु की जावे या कोई और बेहत्तर (अच्छा) आदमी सोचिए ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 94 शाहजहाँपुर
No E-234 -SRCM Date 28.04.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के दोनों ख़त (पत्र) मिल गये। मैं एक ख़त नारायण शेट्टी को लिख रहा हूँ। उसकी नक़ल type करके अपने पास रख लीजियेगा। मैंने देखा है के Theosophical Society के पेच व ताब (लपेट) में लोग ऐसे फँस जाते है के तमाम ज़िंदगी (जीवनभर) पाबजूलाँ (कैदी) रहते हैं । बात क्या है, उमदा-उमदा (अच्छे-अच्छे) लेक्चर, वक्तन्-फ-वक्तन् (बार-बार) होते रहते हैं और अकलमंद आदमियों के उसूलात (सिद्धांत) सामने आते रहते हैं । दीगर (अन्य) संस्थाओंमें भी कुछ ऐसा charm है के उसके छोडनेका जी, लोगोंका नहीं चाहता, ख्वाँ (चाहे) उसमें जान हो या न हो। बरअक्स (विरुद्ध) इसके, अपने यहाँ जो आता है ओ शुबहा (संदेह) ही करता आता है और अपनी क़ाबिलीयत (क्षमता) को जाँच का आला (औजार) समझकर इसकी गरमी और सरदी को तौलता रहता है । यहाँ न गरमी है न सरदी है। इसलिये उनका औज़ार काम नहीं करता । तो फिर ओ अपने तखय्युलसे (कल्पना) काम लेते हैं और कोई न कोई नतीजा (परिणाम) निक़ाल लेते हैं और क्यों के ओ शुबहा (संदेह) से दाख़िल होते हैं, लिहाज़ा (इसलिए) वही चीज़ उनको गैरमोतबर (अविश्वसनीय) नतीज़े (परिणाम) पर ले आती है । सच बोलनेवाले बहुत कम मिलते हैं और झूट को सच्चाईसे represent करनेवाले बहुत होते हैं ।

अकलमंद आदमीयों की सब तारीफ़ करते हैं और मैं भी तारीफ़ करता हूँ और कहीं पर मैंने तमस्खुर (मज़ाक़) से यह भी कहा है के कमज़ोर आदमियों की ईश्वर भी मदद नहीं करता और कमज़ोर वही है, जिसको अपने आप पर भरोसा नहीं। अब यह कहता हूँ के बेवकूफ आदमियों के लिये भी ईश्वर ने एक जगह मुक़र्रर (निश्चित) कर दी है और ओ बिहिश्त (स्वर्ग) है। दोज़ख (नर्क) तो गुन्हेगारों की जगह है और नासमझ के लिये बिहिश्त है और अक़लमंदो के लिये बिहिश्ते शद्दाद (शद्दाद राजा का स्वर्ग) [इसकी तल्मीह (संकेत) तो आप को मालूम ही होगी] और मासूम (निष्पाप) के ब्रह्मलोक। मैं समझता हूँ यह divisions सही हैं । अगर इसकी तशरीह (व्याख्या) करुँ तो

बहुत से वरक़ (पन्ने) ज़रुरत होंगे। इसलिये तशरीह (व्याख्या) आप लोगों के लिये छोडता हूँ।

एक मुअम्मा (पहेली) लिखने को जी चाहता है। अल्लाह मियाँ किससे ज्यादा मोहब्बत करते है ? जो उनको एक मरतबा (बार) देख चुका हो, मगर रहे दूर । मैं सोचता हूँ इस पर दो सतरे (वाक्य) लिख दूँ। इस लिये के कहीं, लोग मेरी जगह भी बिहिश्त (स्वर्ग) में न क़ायम कर दें। हम ईश्वर से कब दूर हुए ? जब Source छोडकर हमने मौजूदा शकल (प्रस्तुत रूप) इख़्तियार (धारण) की ; याने कल्ब इन्सानी (मानव शरीर)। हम अब इतनी बडी जगह से निकले और आलमें नासूत (मृत्युलोक) जो इससे बल्लियों नीचे है, में आकर चार चीजोंका पिंजरा (हवा, पानी, आग, मिट्टी) कफ्से उन्सरी (पंचभूतों) में मुक़ीम हुए (रहने लगे) । तो इसकी याद भी हमें रहनी चाहिये ताके हम बंदगी (सेवकाई) के दायरे में रहे और अपनी मौजूदा सूरत (प्रस्तुत रूप), जो बज़ाहिर (प्रकट) उन्सरी (भौतिक) है, उसको समझते रहें । जो जगह के जिसमें हम है, बहैसियत अवसाफ़ इस (गुणों के लिहाज़ से), ईश्वर से कोसों दूर हैं । यानी ईश्वर और इन्सान, इसकी समझ Realisation के बाद भी रहना चाहिये । मुख़्तसर (संक्षेप में) यह, के Realisation (साक्षात्कार) होने के बाद इन्सानी (मानवी) मेयार (मर्यादा) को न छोडें ।

मुझे बड़ी खुशी हुई के बरख़ुरदार (बेटा) प्रकाश बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) अच्छा हो गया । मगर यह फ़िकर (चिन्ता) ज़रुर है के और भाई बहनों को चेचक की ख़लिश(चुभन) न हो जावे और देखा भी ऐसा गया है के एक दूध के बच्चों के, कुछ न कुछ निकल ही आते हैं । इसकी scientific वजह तो यह है के यह बीमारी उठ लगती है यानी छूत की बीमारी । हिंदूओं ने इस मरज़ (बीमारी) को बडी ताज़ीम (इज्जत / आदर) दी है के इसको देवीका निकलना कहते हैं और हमारी तरफ तो इस मरीज की, जिसके चेचक निकली हो, बडी ताज़ीम (इज्जत / आदर) करते हैं । मैं समझता हूँ के इसी वजह सें यह मरज़ Hindustan से नहीं जाता । इसकी आयुर्वेदिक वजह बताता हूँ के माँ की menses की ख़राबी उसकी वजह होती है । इसका नुस्खा (उपाय) तो मैंने कहीं देखा नहीं, जिससे इस बीमारी का तहफ्फुज (बचाव) हो सके मगर मेरा ख़याल, जो इस वक्त पैदा हुआ है; अस्ना-ए-हमल (गर्भवती अवस्था) में अगर माँ को खीर, जो दूध और चावल से बनती है, खिला दी

जावे, तो यह बीमारी मेरी समझसे, बच्चे को नहीं होगी । अगर रोजाना एक मर्तबा (बार) कहीं सिर्फ़ (केवल) खीर ही पर गुज़ारा किया जावे तो यह बीमारी हो ही नहीं सकती । इसकी एहतियात (सावधानी) भी है और मैं आपके भाई को लिख रहा हूँ। ओ यह के जब यह वबा (महामारी) शुरु हो तो बच्चों के गले में कपडेमें एक छः माशे (आधा तोला-6 ग्राम) के क़रीब, ख़ूबकलाँ (a grass of Persia whose seeds are used as medicine) जिसको फ़ारसी में ख़ाकशी कहते हैं, बच्चों के गले में बांध दी जावे और आठवे सातवे दिन उसको बदल दिया जावे, तो इस बीमारी के असरात (परिणाम) बहुत कुछ उसमें रह जायेंगे । किसी बच्चेके, ईश्वर न करे, अगर चेचक निकल आवे तो उसके बिस्तरपर काफ़ी ख़ूबकलाँ बिछा दी जावे इससे जितना माद्दा फासिद (पीप दूषित) है सब खींच कर इसमें शामिल हो जावेगा और चेचक खुलकर निकलेगी । और इसका असर जिल्दपर (त्वचा) आ जावेगा जो खूबकलाँ खींचती रहेगी और ख़तरा नहीं रहेगा । और फिर ओ दुआएँ चीज़ जो जंतर (ताईत) के रुप में मैंने आप को बताई है, इतनी मुफ़ीद (फायदेमंद) साबित हुई है के जिसके गलेमें डाल दी गयी, चेचक निकली ही नहीं और अगर निकल भी आई तो कुछ छींटे से, जिसको बच्चा हँसते खेलते भोग लेता है । मगर हम नहीं कह सकते, एक साइन्सदां के सामने इस जंतर (ताईत) की कुछ value भी समझी जावेगी ।

नासुफ्त: (बिना छेदा) मोती, होली के अय्याम (दिनोंमें) में एक अदद (संख्या एक) निगलवा देने से बहुत फ़ायदा होता है। और चेचक के मरीज़ को भी मोती देना चाहिये। मोती असली ही होना चाहिये।

आप ने जो अपने दोस्त को उनके मरते वक्त तवज्ज़ह दी, मेरी समझमें यह बात आई है के आप ने तवज्ज़ह उनको नहीं बल्के अपने आप को दी । इसलिये उनको फ़ायदा हुआ मगर मामूली (थोडा), और घबराहट इसलिये थी के ओ force आप ही तक महदूद (सीमित) रहा । बात क्या थी, आप ने अपनी concentrated will पैदा नहीं की थी, बल्के (अपितु) ऐसी हालत में आप थे के जैसे सोते वक्त आदमी बडबडाने लगता है और इस का कोई असर (परिणाम) नहीं । जब तवज्ज़ह (प्राणाहुति) दी जाती है, अपने आप को मालिक समझकर दी जाती है और अपनी will और मालिक की will उस वक्त एक होनी चाहिये । और अपने में हिम्मत और भरोसा होना चाहिये। आप में force की कमी नहीं है बल्के (अपितु) उस की utility ठीक

नहीं कर पाते । मैं तो इतनी हिम्मत रखता हूँ और उस में मुझे कभी शुबह (संदेह) पैदा नहीं होता के एक निगाह (दृष्टी) में अगर चाहूँ तो मारिफ़त (अध्यात्म) का पूरा समंदर उँडेल दूँ । कमी आप में नहीं है, मगर हिम्मत और will बांधने की ज़रुरत है । यह ज़रुरत है के जिंदा आदमियों को तवज्ज़ह देने में will और हिम्मत उस के अंदाज़ बनाना चाहिये ।

जनगाँव के भाई श्रीनिवास को मैं भी चाहता हूँ के ओ trainer बने ताके सतसंग और बढ़ने लगे । मगर अभी ओ इस हालत पर नहीं आये हैं के ओ मुझपर और अपनी हालत पर भरोसा कर सकें । आप के पिताजी की यह मोहब्बत है के उसी ख़त को एक सनद (डिग्री सर्टिफिकेट) के तौर पर अपने पास रख रहे हैं । हालांके जिस मतलब से मैंने लिखा था ओ तो आपको मालूम ही है । अगर आप चाहें तो उसकी नक़ल करके अपनी file में रख लें । आप के भाई को काफ़ी (बहुत) मोहब्बत है और उनका शौक़-ए-मुबारक (शौक की बधाई) ।

मैं भी चाहता हूँ के आप कुछ सिध्दीयोंपर लिखें और मैं Risabh Chand से मुवाफ़िकत (सहमत) करता हूँ गो (यद्यपि), मैंने किताब पढ़ी नहीं। बच्चों के चले जाने से ख़ाना बनाने की तकलीफ़ ज़रुर हो गई होगी गो (यद्यपि), आप का चपरासी उल्टा सीधा बना ही देता होगा । Hyderabad से एक साहब किशनरावजी, जिनका पता हसबेजैल (निम्नलिखित) है और उन्होंने मेरे बारे में वासुदेवराव से सुना है; पूजा में शरीक (शामील) होना चाहते हैं । मैं उनको practice लिख देता हूँ और लिखे देता हूँ के ओ आप से ताल्लुक (संपर्क) रखें ।

Kishanrao C/o. G. Damodhar Rao

No.-B-5-368, Vithal Maruti Lane, Sultan Bazar, Hyderabad, A.P.

श्री. भीमसेनराव मय (साथ) अपने बीवी के और श्री मधुकरराव तशरीफ़ लाये हुए हैं और 30 अप्रैल को वापस जावेंगे।

मेरी तबीयत, दर्द कम होने के बाद, कुछ और नासाज (अस्वस्थ, बीमार) हो गई थी। अब आज से अच्छा हो रहा हूँ। इसलिये अब ख़ुतूत (खतों) का जवाब देना शुरु कर दिया है। एक बात लिखने से रह गई, ओ यह है के सफ़ाई वाला मुराक़बा (ध्यान) जो शाम को सतसंगी करते है वह कालिमा और ठोसता को अपनी will से पीछे को force नहीं करते इसलिये अच्छा फ़ायदा नहीं हो रहा है,

आप समझा दें । और सरनाडजी को लिख दें के ओ भी समझा दें और आख़िर पर जब ख़तम (पूरा) करें तो यह confidence हो जावे के माद्दा फासिद (गंद, दूषित) निकल गया। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: Ayal Reddy के बारे में आप की राय सही है । सरनाडजी जब इतने क़रीब हैं तो Sedam में इंतज़ाम (व्यवस्था) करने की ज़रुरत नहीं है । सरनाडजी का ख़त आज ही आया, ओ आप के पास में May के तीसरे हफ्ते में पहुँचेंगे ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 95 शाहजहाँपुर
No E-264 -SRCM Date 12.05.1960

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त मो. 5 May 1960 मौसूल (प्राप्त) हुआ, खुशी हुई । श्री. नारायणशेट्टी जब आपको मिलें तो आप उन्हे समझा दें के बेरंग और बेबू और बेमज़ा होना ही सच्ची रुहानियत (अध्यात्मिकता) है । क्यों के ईश्वर में यह कोई चीज़ नहीं है। अपने यहाँ असलियत पर ले जाने की कोशिश की जाती है अगर रंग रह गया तो ख़ुलूस (शुद्धता) पैदा (उत्पन्न) ही नहीं हुआ । आप सब यह बातें जानते है। उनको किसी दिन बुलाकर यह सब बातें समझा दीजिये, के कोई अभ्यास करें, किसीसे सीखें, अगर मोक्ष पाना है तो बेरंग ही की तरफ (ओर) जाना पडेगा ।

निजाम फंड, हैद्राबाद Dr. K.C.V. से एक दरख़्वास्त (अर्जी) आश्रम के fund के लिये भिजवा दी है । श्री. शिवमोहन लालजी व श्री. रामलूजी और आप के भाई एक जगह होकर अपनी राय मिलाकर इसके लिये कोशिश (प्रयत्न) करेंगे ।

आप ने लिखा है के अंदरुनी गरमी आपमें बहुत बढ़ी हुई थी मगर मोरखा (तारीख) 2 मई का ख़त (पत्र) पहुँचते ही शांत हो गई । मैं समझता हूँ के मेरे ख़त अब ऐसी जगहोंपर भेजने के लायक हो गये जो equator (भूमध्य रेखा) पर वाके (स्थित) है । अब मैं बात बताता हूँ। काबिलियत (योग्यता) तो आप ही की है। ख़त देखते तबीयत में खुशी पैदा हुई और उस खुशी के रवानी (प्रवाह) ने मुसावात (संतुलन / बराबरी) पैदा कर दी । अब मैं वजह लिखता हूँ । Central region के पहुँचने के बाद मैंने कुछ थोडीसी हरकत (गति) ज़र्रात (परमाणुओं) में देदी के ओ energy में तहवील होने (बदलने) लगे । Einstein Theory, यह शख़्स (व्यक्ति) साईन्सदानों की क़िबलागाह (पूजनीय) है । मगर यह चीज़ Hindustan में सबसे ज़ियादा (बहुत) पुरानी है। इसका इस्तेमाल (उपयोग) महाभारत की लड़ाई में ज़रुर मिलता है । मगर रुहानी तालीम (अध्यात्मिक प्रशिक्षण) में यह चीज़ प्राचीन है । और भाई, एक बात उससे भी ज़ियादा है जिससे के, मुमकिन (संभव) है के साईन्सदानों को ख़बर न हो । ओ यह है के energy को

Ultimate में तहवील (परिवर्तन) कर देना । ईश्वर करे ऐसी हस्तियाँ (व्यक्ति) पैदा हो जाए के मुझे अपनी ज़िंदगी में ही इस हक़ीर ख़िदमत (छोटी सी सेवा) का मौक़ा मिले । मैंने चीज़ (ऊपरवाली) आप में start तो कर दी, यानी ज़र्रात (परमाणु) को energy में तबदील (परिवर्तित) करना, मगर ज़र्रात (परमाणुओं) में से material (भौतिक) असरात (प्रभाव) अभी पूरी तौर से दूर नहीं कर सका । इसलिये गरमी महसूस हुई। अब उसपर लगूँगा । लीजिये मैंने एक चीज़ आप को बता दी । Dr. Varadachari तो यह चाहते रहे हैं के मुझको पहले बतला दिया जावे । अब मैंने उन्हे लिख दिया है की मैं जो कुछ अब कर रहा हूँ, अभी नहीं बतलाऊँगा ।

सफ़ाई वाले ध्यान में अभ्यासियों में यह कमी पाई गई के ओ अपनी कुव्वत इरादी (संकल्प शक्ति) से पीछे की तरफ धुवाँ बनने के लिये अपनी system से धक्का नहीं देते । यह बात बतानेवाली है । आप सरनाडजी को लिख दें, मैं भी लिखूँगा ।

अच्छा है आप के भाई Dr. KCV से मिल लें ।

चपरासी खाना ज़रुर बना देता है । मगर दूध व घी इस्तेमाल करते रहियेगा । मैं समझता हूँ के बच्चे इस माह के आख़ीर में आ जावेंगे। सरनाडजी आपके पास आनेवाले भी हैं । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 96 शाहजहाँपुर
No E-283 -SRCM Date 05/08.06.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बतनामा मो. 17 May 60 मौसूल (प्राप्त) हुआ। आपका एहसास (अनुभव), निसबत (के बारेमें) शिवलिंगप्पा व त्यागराजन सही है। एक करीं ठोसता की तह (कठिन ठोसता की परत) सीने में जमा है । दिल से दोनों की ठोसता हट चुकी है । इनके साफ करने की हर तरकीब जो आप को मालूम है, ओ सही है । वैसे अपने will power से इस layer को सीने के दाहिने बाँयें जानिब (ओर) पूरी ताक़त से निकाल कर फेंक दीजिये । इस में मेरा थोडासा तजरुबा (अनुभव) यह है के ज़ियादा सख़्तीसे जब उस ठोसता को खींचाँ जाता है, तो अभ्यासी के सीने में कुछ ख़फ़ीफ़ (थोडासा) दरद पैदा हो जाता है। मैं थोडासा इसका ख़ियाल रखने लगा हूँ मगर इस में देर ज़रुर लग जाती है और दरद दो मिनिट में ठीक हो सकता है ।

Seshadri के ख़त का मैंने जवाब दे दिया और मैंने उनसे पूछा है के अगर उनकी शिकायत normal आ चुकी हो तो मुझे इत्तला (सूचना) दे देवे । यह चीज़ जिससे लोग तंग (दुखी) है, बडी जल्दी normal आ जाती है । मैंने इसका point आप को बताया है । उसका practical तजरुबा (अनुभव), जब आप मुझे मिलें, करने के लिये मैं आप को फिर बताऊँगा ।

मेरी हालत कुछ ऐसी हो गई है के चौबीसों घंटे जुनूबी (दक्षिणी) हिंद के सतसंगियो पर unconsciously तवज्ज़ह (प्राणाहुति) जाती है । इसलिये यह कहा जा सकता है के हर शख़्स (व्यक्ति) क़रीब क़रीब मेरे ज़रिये (द्वारा) से भी फ़ैज़ (लाभ) पाता रहता है ।

हाँ, जिसकी तबीयत (मन) मेरी तरफ झुकी हुई नहीं है उनको फ़ायदा कम होता है ।

स्वामी शिवानंद ऋषिकेश के बारे में मेरी राय बहुत अच्छी है। मगर अभी तक तैतेरीय उपनिषद, जिसकी commentary इन्होंने की है, देखने से पता लगा के जहाँपर के practical चीज़ आ गई है, वहाँ पर ग़लत commentary की है, इसका नतीजा (निष्कर्ष) यह

निकलता है के मन के sphere से ओ अभी बिलकुल पार नहीं हुए । मगर इस गलती का पता चलाना तो अज्ञानियों का काम है। उनकी तह (थाह) तो मुझे बिलकुल ही मालूम है और आप भी जानते हैं, फिर भी ओ saintly आदमी है । मैं अपनी ज़बान महात्माओं के लिये बंद ही रखता हूँ चूँके (क्योंकि) मैं ख़ुद महात्मा नहीं हूँ । इसलिये मुझे हर महात्मा, महात्मा भी नज़र नहीं आता ।

नारायणशेट्टी, अच्छा है के जून के बाद आना शुरु करें। दरहक़ीक़त (वास्तवमें) Theosophical Society मर चुकी है और उसमें pledge देना (क़सम खाना) वाक़ई ऐसा है जैसे मुर्दे की क़सम खाना। मगर कोई बात नहीं, उन्होंने pledge ले ली है। अच्छा है, ज़रा श्री रामचंद्र मिशन में pledge लेकर देखते और उसमें अपने आप को बांध चुके होते फिर मैं तो यह समझता हूँ के transformation हो चुका होता । यह बातें मैं आप को लिख दिया करता हूँ | हर शख़्स (व्यक्ति) के सामने इतना साफ़ कहने के लिये मेरी ज़बान कम खुलती है ।

ज़र्रात (परमाणु) को energy में तहवील (परिवर्तित) कर देना ये तो आपके समझ में आ ही गया और आपने मान भी लिया मगर ultimate में आ जाने की बात समझमें नहीं आई । Efficacy of Rajyog की तरफ अगर ध्यान दें तो समझने में आसानी होगी । Energy का Ultimate ओ ही है और वही हालात है के इसकी originality पैदा हो जावें । यानी ओ अपनी original stage में पहुँच जाए और वहाँ energy और बे एनर्जी एक ही सी हो जाए । यानी जगती हुई हालत में ख़्वाब की कैफ़ियत (हालत) पैदा हो जाए । क्या करुँ इस हदतक तयार आदमी मुझे मिलता ही नहीं, वरना गुरुमहाराज की कृपा से हर atom, सेन्टर का मज़ा देता । मैं तो जिंदा रहते रहते मर चुका, इसलिये अपनी मिसाल (उदाहरण) सामने रखना नहीं चाहता । गो (यद्यपि) ऐसा करने से तारीफ़ गुरुमहाराज ही की होती है । मुझे एकाध दफ़ा उमंग आई के एक ज़र्रा (कण) की energy को किसी खास जगह concentrate कर दिया जावें। मगर इस experiment करने से बडा डर मालूम हुआ। जर्रे (कण) में यही चीज़ नहीं है के इसकी energy से सब कुछ बरबाद किया जावें; उसकी energy अवाम (आम जनता) की तंदुरुस्ती बढ़ाने के लिये इस्तेमाल की जा सकती है । एक barren (बंजर) जगह (जमीन) अच्छी बनाई जा सकती है । ज़मीन में रोइदगी (उगाव) पैदा की जा सकती है । इस में से rays direct (डायरेक्ट)

करने से नुकसान ये हो सकता है के बिला (बिना) धमाके के, जानें हलाक (नष्ट) हो सकती हैं और वही चीज़ जिस्म (शरीर) में mass energy भी पैदा कर सकती है के इन्सान जितना चाहें ताकतवार हो जाए । अभी साइन्सदानों ने दरयाफ़्त (मालूम) ही क्या किया है ? इसमें जो solar system है उसका फ़ायदा और उससे काम लेने की तरकीब़ (उपाय) उनको अभीतक मालूम ही नहीं हुई। इसके attraction का इस्तेमाल (उपयोग) क्या है यह अभी उनके समझ ही में नहीं आया ।

सब scientists, energy के पीछे पडे हुए हैं क्योंकि इससे काम निकालते हैं और इसके पसेपुश्त (back में) जो चीज़ है अगर वहाँ तक पहुँच जाए तो इस atom bomb का काट पैदा हो जाए । मुझे तो कोई ऐसा मिल जाए तब हमारे गुरुमहाराज की काबिलियत (योग्यता) का अंदाजा (अनुमान) लग सकता है । तहरीरे (लिख) देता जाता हूँ, हम उसके बारें में कुछ वक्तन-फ-वक्तन (time to time) कहे हैं और आप के पास नोट भी है । अगर ओ नोट, यानी जो भी आपसे इस मुतअल्लिक (बारेमें) बात हुई वह सहजमार्ग पत्रिका में छप जाते, मैं आइंदा (आगे) उसको develop करता रहता । Dr. Varadachari, energy को Ultimate में लाना यक़ीन (विश्वास) करते हैं । बहुको चौथे छटे दिन आप एक energy बढ़ाने की तवज्ज़ह क्यों नहीं दे दिया करते, ताके कमज़ोरी न दबाये । Dattatrirao बहुत मुहब्बतवाले आदमी है । इसलिये उन्होंने ऐसा पोस्टकार्ड लिखा है। मेरी तबीयत इन दिनों बहुत खराब रही । अब क़रीब क़रीब ठीक हूँ । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 97 शाहजहाँपुर

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

पिछले ख़त का जवाब लिखने के बाद मसर्रतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मो. (दि.) 30 June 1960 मौसूल (प्राप्त) हुआ । त्यागराजन और वालवेकरजी के ख़त पढ़ लिये। आप ख़ुद, वालवेकरजी को जो मुनासिब (उचित) समझें, जवाब दे देवें । बडी ख़ुशी की बात है, सरनाडजी M.A. First Division pass हुए। मैं इनको भी ख़त लिख रहा हूँ । Dr. Varadachari के लडके, नारायण M.A. (Hons) में First Division लाए ।

त्यागराजनने मुझे भी सब हाल लिखा था। ओ मिशन का काम बहैसियत (के नाते) prefect करना चाहते हैं । मैं इस जज्बे (भावना) की दाद (सम्मान) देता हूँ । मगर वहाँ के हालात कुछ ऐसे हैं के मैं अब तक सही नतीजे (निष्कर्ष) पर न आ सका हूँ, के क्या करना चाहिये । अगर अब ख़ुद कोई इस हालात पर आ जावे तो ओ prefect बनाया जा सकता है ।

आपने ऑगस्ट में आने के लिये लिखा है । मुझे बडी खुशी हुई और भाई, घर आने के लिये इजाज़त लेने की ज़रुरत नहीं होती । अलबत्ता (लेकिन) तारीख आमद (आने की) की इत्तलाह (सूचना) यूँ चाहता हूँ ताके मैं हाज़िर रहूँ ।

लडकियाँ radio से बहुत ख़ुश होंगी और मुमकिन (संभव) है कुछ हिंदी भी सीख जावें ।

भाई, जो कुछ आपने तरक्की (प्रगति) की है, मालिक का शुक्र (धन्यवाद) है । यह सब आप की merit (योग्यता) है । अगर मुझमें यह काबू (अधिकार) होता तो कुल (पूरी) दुनिया को, आप ऐसा बना देता । बच्चों को दुआ ।

नया पत्रिका आपको मिल गया या नहीं ?

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 98
No E-330-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 02.07.1960

मेरे राघवेंद्ररावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त मो. (दि.) 17 June मौसूल (प्राप्त) हुआ । जवाब में बहुत देर हो गई। मेरे भाई ने किसी वजह से आने के लिये यूँ ही लिख दिया था । मुक़द्दमात (कोर्ट केसेस) बदस्तूर (जैसे थे) हैं। और कुछ बातें ऐसी हो गई हैं, जिनको मिलनेपर ज़बानी कहूँगा ।

श्री. तिरुमलरावजी का यह शौके मौहूम (कल्पनाप्रसूत लालसा) देखकर ख़ुशी हुई के ओ अपने आप को आप की ज़बानी, representative का ऐलान (घोषित) कराना चाहते हैं । उसका एक जवाब बडा अच्छा है, ओ लिखता हूँ । मिशन का हर मेम्बर मिशन को represent कर सकता है और करता ही है । अब श्री. तिरुमलरावजी का यह कहना के आप, उनके representative होने का ऐलान (घोषणा) करें, बतलाता है के ओ अपने आपको मिशन का मेंम्बर नहीं समझते । इसलिये के उनके दिल ने सही तौर (रीति से) पर अब तक मेम्बर होना तसलीम (स्वीकार) ही नहीं किया । अगर ओ मुझसे पूछते तो मैं यही जवाब दे देता । अब रहा बडे बडे आदमियों के पास जाकर उनको यह बावर करा देना (भरोसा दिलाना) के यह मिशन के representative हैं। यह एक बडी हँसी की बात होगी और इस में आप का किराया रिक्शा भी बहुत खर्च हो जावेगा । लिहाज़ा मुनासिब (इसलिए उचित) तो यही है के ओ अपनी हालत, एतक़ाद (विश्वास) और मुहब्बत (प्रेम) इस हद तक पैदा करें के लोग उनको मिशन का मेम्बर और representative ख़ुद-ब-ख़ुद (अपने आप) समझने लगे । श्री तिरुमलरावजी का मनशा (आशय) representative होना, यह होगा के ओ आप के तरह लोगों को sitting और तवज्ज़ह (प्राणाहुति) देने लगें । इसके लिये उनको वैसी ही हालत (अवस्था) और मुहब्बत (प्रेम) ख़ुद पैदा (उत्पन्न) करना चाहिये, इस हद तक के, मेरी तबीयत (मन) उनसे इस काम को लेने के लिये मज़बूर (विवश) कर दें ।

मुझे यह बडी ख़ुशी है के आप ऑगस्ट में आवेंगे । श्री. भीमसेनराव ने भी लिखा है के ओ पटेल के साथ दशहरा में माह अक्तूबरमें आवेंगे । मैं 7 या 8 सुबह को चार यूम (दिन) के लिये देहली जा रहा हूँ । श्री. Ramulu जी का हैद्राबाद से ख़त आया है के ओ आश्रम के लिये जो निजाम फंड को दरख़्वास्त (अर्जी) दी थी वह ख़ारिज (नामंजूर) हो गई । अब डॉ. वरदाचारीने फिर दूसरी दरख़्वास्त (अर्जी) दी है और उसी ढंगसे जैसा के ज़रुरी है । Shri. Ramulu का ख़ियाल है के इसमें कुछ ज़रुर मिल जावेगा और ओ

कोशिश भी कर रहे हैं । अभी ख़त लिखते लिखते, अंग्रेजी की किताब, जिसका तर्जुमा (अनुवाद) उर्दू किताब से आप ने किया है, छपकर 6 जिल्दें (कापियाँ) पारसलसे Varadachari के यहाँ से आई । बक़ीया (बाक़ी) किताबें मदरास से, बाद को आवेंगी । आप के पास भी कुतुबे मतलूबा (वांच्छीत किताबें) पहुँच जावेगी ।

द्वैत और अद्वैत के सवालात और इस मज़मून (विषय) पर लेक्चरोंने लोगों के दिमाग़ परागंदा (परेशान) कर दिये। लोगोंको रोटी खाकर उसका ज़ायका (स्वाद) मालूम करना चाहिये था और जो रोटी की तारीफ़ (स्तुति) की जाती है; ग़लत या सही ओ ख़ानेसे ही पता चल सकता है। मैंने यह सोचा के मैं भी एक दो लफ़्ज (शब्द) इसपर कह दूँ। वैसे तो भाई, न द्वैत है न अद्वैत है, बस जो है सो है। हमें चाहिये यह, के हमारी हालत ईश्वरी हालत के मुतज़ाद (विरोधी) न रहे । इसको आप क्या कहेंगे। जब तक मुतज़ाद (विरुद्ध) हालत है, तब तक दुई (द्वैत) का शुबह (संदेह) है और द्वैत बराबर क़ायम रहेगा और यह कभी दूर नहीं होगा। यह तय (निश्चित) है के इन्सान (मनुष्य) ख़ुदा (ईश्वर) नहीं हो सकता मगर मुतज़ाद कैफ़ियत (विरुद्ध हालत) उसको दूर ही करनी पडेगी। तो क्या मैं सही हूँ के मुतजाद (विरुद्ध) हालत को दूर ही कर देना अद्वैत में दाखल होना है। अब इन लफ़्जों (शब्दों) पर गौर (विचार) कीजिये। जब हम लफ़्ज अद् और फिर द्वैत कहते हैं तो जहाँसे लफ़्ज अद् निकलता है उस circle के सरेपर हम घूमकर आ जाते है और जब द्वैत समझते हैं तो हमको घूमना नहीं पडता बल्के दोनों आवाजें एक ही किनारे से निकल जाती हैं । मक़सद ये है के जब इन दोनों लफ़्जों के हेरफेर में हम रहते हैं, तो हम अपने ही किनारेपर रहते है । दूसरे किनारेपर हमारी निगाह जा ही नहीं सकती और जब हम इन दोनोंका ख़ियाल छोड देते हैं तो कम से कम इन मुतज़ाद (विरुद्ध) ख़याल और definition में हम नही फँसते । एक फारसी मसल (लोकोक्ति) है के "लैला रा बचश्मे मजनूं ब पदीद"। यानी लैला जो के एक बदशक़ल (कुरूप) लडकी थी उसको देखनेके लिए मजनूं की ही आँख की ज़रुरत है । इसी तरहसें हमें जब ईश्वर को देखना है तो वही जुनून(उन्माद / पगली) भरी निगाहों (आँखों) की ज़रुरत पडेगी ।

आप अपने दोस्त को, जिन्होंने मुझे सलाम लिखा है, जब ख़त लिखें, तो मेरा भी सलाम लिख देना । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)

रामचंद्र

पुनश्चः श्री. नारायणराव के बारे में कुछ हाल नहीं मालूम हुआ । लिखिये, ओ अभ्यास कैसा कर रहे हैं ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 99 शाहजहाँपुर
No E-340-SRCM Date 05.07.1960

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

श्री. माधवरावजी की अलालत (बीमारी) का आज ही तार मिला। बडी फ़िकर (चिंता) पैदा हो गई । ईश्वर उनको ज़ल्द (शीघ्र) सेहत (स्वास्थ्य) देवे । मैंने दुआ (प्रार्थना) करना शुरु कर दी है । हालत की इत्तलाह (सूचना) देते रहिएगा । सेहतयाबी (स्वास्थ्य लाभ) में आप ख़ुद मेरी तरह मदद कर सकते हैं । आप जैसे अभ्यासियों को साफ़ करते हैं के नतीज़तन् (फलतः) धुएँ की शकल में पीछे निकल रही है । आप उनके साथ में यह अमल (प्रक्रिया) कर सकते हैं के यह मरज़ (बीमारी) धुएँ की शकल (रूप) में निकल रहा है। मगर अपनी कुव्वते इरादी (संकल्प शक्ति) से जिस्म (शरीर) से घसीटकर पीछे की तरफ धुवाँ बनने के लिये ले आये, जैसा के मैंने अभ्यासियों को अभी हाल में बताया है । आम तौर पर (साधारणतः) जिसको नींद नही आती और दिमाग़ (मस्तिष्क) में ख़ुश्की (शुष्कता) पैदा हो जाती है उसके लिये यह अमल (प्रक्रिया) है के, ये ख़ियाल बाँधे के ऊपर से नन्ही फुवार (showers) ठंडी गिर रही हैं । Insanity (पागलपन) नहीं है । मगर कोई आदमी उनके पास हर वक्त रहना चाहिये और निगरानी (देखभाल) रखना चाहिये। यह एहतियातन (सावधानी) लाज़िमी (ज़रुरी) है । इसमें Homeopathic दवा ज़ल्द (शीघ्र) फ़ायदा (लाभ) करती है । Dr. Varadachari ने एक ही खुराक (मात्रा) में यह मरज़ (रोग) रफ़ा (दूर) कर दिया था । मेरे दफ़्तर में एक शख्स को एक साल नींद नहीं आई । मैंने उसे Homeopathic डॉक्टरी दवा करने लखनौ भेजा । उसे आराम हो गया । आप Dr. Varadachari

को भी symptoms लिख दीजिये, मुमकिन (मुमकिन) है, ओ कोई दवा बता दें । आदमी होशियार है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 100

शाहजहाँपुर
Date 13.07.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आज सुबह पाँच यूम (दिन) बाद, देहली से वापसी पर, आप का ख़त मो. 6 जुलाई मिला, जिसमें मुशर्रह हालात (समाचार विस्तारसे) अज़ीज़म (प्रिय) माधवरावजीके लिखे हुए थे । आप के तार आने से ही मैंने प्रार्थना शुरू कर दी, असर (परिणाम) ज़रूर (अवश्य) हुआ होगा । मैं इसके लिये तो बाबू शिवमोहनलाल को जवाबी तार दे रहा हूँ के मुझे इत्तलाह (सूचना) दें । मैंने एक ख़त आपके तार के जवाब में, हैद्राबाद के पतेसे आप के पास भेजा था, जिसमें रुहानी (अध्यात्मिक) तरकीबें (उपाय), उनके इलाज की सब लिख दी थी, इसलिये के आप मौक़े (घटना स्थल) पर थे, ओ मैं जानता हूँ के आप को नहीं मिला । उस में ये भी तहरीर (लिखा) था के Homeopathic इलाज से बहुत ज़ल्द (शीघ्र) फ़ायदा (लाभ) होता है। एक case Dr.Varadachari ने एक ही ख़ुराक (मात्रा) में अच्छा कर दिया था । मेरे ऑफीस में एक मुलाज़िम (कर्मचारी) था जिसे एक साल तक नींद नहीं आई। मेरे कहनेपर उसने लखनौ में Homeopathic इलाज शुरु किया और उसे सेहत (स्वास्थ्य लाभ) हुई । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः उर्दू किताब का अंग्रेजी तरजुमा (अनुवाद) छप चुका है। ग़ालिबन (संभवतः), आप के पास ज़ल्द (शीघ्र) ही पहुँच जावेगा । अभी मेरे पास भी नहीं आया। सिर्फ़ 6 जिल्दे (कापियाँ) बतौर (रुपमें) नमूना आई हैं ।

अज़ जानिब (की ओर से) ईश्वर सहाय, दुआ (आशीर्वाद) । हालात श्री. माधवरावजी, सुनकर बडी तशवीश (चिंता) पैदा हुई । मालिक अपना फ़जल (कृपा) करें । यक़ीन (विश्वास) है के अब तक हालत ज़रुर संभल गई होगी। इलाज तो जारी ही होगा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 101 शाहजहाँपुर
No.-E-345-SRCM Date 15.07.1960

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैंने 13 July 60 को एक ख़त आँ अज़ीज़ (आप) को भेजा था, नहीं मालूम, जगह ब जगह (जगह-जगह) strike (हड़ताल) की वजह (कारण) से पहुँचा या नहीं। मैंने एक तार उसी तारीख को श्री. शिवमोहनलाल को निसबत दरयाफ़्त हालत, अज़ीज़म माधवराव (प्रिय माधवराव की हालत के बारेमें मालुम करने के लिए) दिया था। उसका भी कोई जवाब नहीं आया। यह तार express reply paid था। वजह strike (हड़ताल) मालूम होती है। आप को जो कुछ हाल मालूम होवें, बवापसी डाक (लौटती डाकसे) मुत्तला फरमायें (सूचित करें)। आज श्री. शिवमोहनलाल साहब को भी ख़त लिखा है। श्री. सरनाड का भी ख़त आया था। ओ भी आप के साथ अगस्त में आने का इरादा कर रहे हैं। मैं देहली 4 या 5 यूम (दिन) के लिये चला गया था। चार छे आदमी बड़े बड़े, मिलने आए और 4 आदमियोंने शुरुआत भी की। मगर करनेवाले उनमे से एक या दो मालूम होते हैं। एक शख़्स (व्यक्ति) मुसम्मी (श्रीयुत) सूरजनारायण, जो आंध्र प्रदेश के रहनेवाले हैं और Asstt. Secretary, Government, Andaman, Port Blair में है, ओ करनेवाले मालूम होते है और आख़िर July में एक हफ़्ते के लिये आ भी रहे हैं। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 102
No.-E-388-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 26/28.10.1960

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के कुल (सब) ख़त (पत्र) मिल गये । ख़तों के जवाब न दे सका । वजह (कारण) क्या लिखूँ । सुस्ती (आलस्य) इस क़दर (तरह) घिरी के जिस्म (शरीर) के साथ उसकी भी ख़बर नहीं । नक़ाहत (दुर्बलता) इस क़दर (इतनी) के हाथ उठाने का जी नहीं चाहता था । लोगों को ख़ुदा की गोद पसंद आती थी और मुझे चारपाई भली । मेरे राघवेंद्रराव, क्या मैं नाकारा (निकम्मा) तो नहीं हो गया ? अगर ऐसा है, तो आप लोगोंको, सुस्ती (आलस) दूर करनेके लिए दुआ (प्रार्थना) करनी पडेगी । ख़ैर (अच्छा),चूंके (क्योंकी) अब सफ़र (यात्रा) का वक्त (समय) आ गया, इसलिए कमज़ोरी (दुर्बलत:) से तो नजात (मुक्ति / छुटकारा) मिल रही है। सुस्ती (आलस) क़दरे (कुछ) कम है मगर पीछा नहीं छोडती । दक्कन भारत के सफ़र (यात्रा) के लिये Central Railway time table देहली से दस्तयाब (प्राप्त) हो गया । मगर Southern Railway वहाँ नहीं है। अब पुराने time table से programme बना लूँगा । श्री. ईश्वर सहाय सख़्त बीमार हो गये थे । मगर अब अच्छे हो रहे हैं । बल्के (अपितु), पहले से बहुत बेहतर हैं । अब programme में एक दिक्कत (अड़चन) यह भी है के बाबू शिवमोहनलाल 27-28-29 नवंम्बर 60 मेरा Hyderabad आना पसंद करते हैं । ताके मैं उनके लडके की शादी जो उन तारीखों में है, शरीक (शामील) हो सकूँ । श्री. मंजूनाथ Iyer मुझे January 61 में चाहते है इसलिये के उनके लडके का M.B.B.S. का practical इम्तिहान (परीक्षा) 2 December लग़ायत (से) आख़ीर December 60 है । Dr. KCV के यहाँ मैं किसी महिने या तारीख मे पहुँच जाऊँ, उन्हे कोई एतराज़ (आपत्ति) नहीं हैं। मगर उनकी तहरीर (लिखने) से यह पता लगता है के ओ बडे दिन की तातील (छुट्टियों) में, मेरा वहाँ होना पसंद करेंगे, ताके ओ हर वक्त मेरे पास हाज़िर रह सकें। इसलिये मास्टर साहब को बुलाने के लिये लिखा है । अगर ओ न आ सकें तो मैं ख़ुद जाऊँगा और मैं चला गया होता मगर आलू अपने सामने खेत

तयार कर के बुवाना चाहता हूँ। और यह दूसरी या तीसरी नवंम्बर तक हो सकेगा । और इस लिहाज़ (ख़याल) से नवंम्बर के तीसरे हफ़्ते में जाना हो सकेगा ।

मैंने आप को 6 कापियाँ भेजी थी, जो नहीं मिली। दोबारा फिर भेजी गई, जो मिल गई । तिरुमलरावजी ने एक कापी, जिस में आप का मज़मून (लेख) miracle पर है, मंगवाई थी । ओ पोस्टकार्ड पर पता साफ़ न होने की वजह से आप के पते से भेज दी गई और उनके ख़त का जवाब बराहेरास्त (सीधे) उनके पास भेजा गया ।

Siddanna ने मिशन छोड दिया है । उसकी नक़ल ख़त मय (साथ) जवाब बग़रज़े मुलाहिज़ा (देखने के लिए) हमरिश्ता (साथ में) है । Mr. Patki ने एक ख़त भेजा था, जिसकी नक़ल मय (साथ) जवाब के हमरिश्ता (सलग्न) है । दूसरा ख़त जो उनका आया, उसमें उन्होंने लिखा है के आप मुझे अपना disciple बना लें । मैंने उनको लिख दिया के बिरादराना हैसियत (भाईचारे के रिश्ते) से मैं तालीम (प्रशिक्षण) देता हूँ । Banglore में श्री. R. Seshadri के यहाँ ठहरुँगा ।

ज़िला वरंगल में श्रीनिवासरावजी वकील का, जिनका पता आप लिखें हैं, कोई ख़त नहीं मिला । अभ्यास तो ओ कर रहे होंगे । क्या यह मुनासिब (उचित) होगा के एक रोज़ के लिये अगर मौक़ा (समय) हुआ तो मैं वहाँ चला जाऊँ ?

सैलाब (बाढ़) यहाँ दो आये, मकान के चारों तरफ पानी था और फाटक के अंदर थोडी दूर तक पानी आ गया था । खेत की फ़सल (पैदावार) कुल जाती रही और फ़सल (पैदावार) अब की अच्छी होने की उम्मीद थी, मकान को कोई नुक़सान नहीं पहुँचा ।

भाई, आयल रेड्डी साहबने बडा काम किया है । बहुतसे ग्राहक पत्रिका के बना दिये, और अब मुझे उम्मीद है के पत्रिका ज़िंदा रहेगी । ईश्वर उनको इसका अजर (फल / इनाम) देवें । भाई माधवरावजी की सेहत कुल्ली (पूर्ण स्वस्थ) होना चाहिये । उनको soothing और ठंडी, दिमाग़ पर हलकी तवज्जह (प्राणाहुति) ये ख़याल करके, के दिमाग़ ठीक हो रहा है, देना चाहिये ओर तवज्जह देने से पहले कुल मरज़ (बीमारी) जिस्म (शरीर) से घसीट करके बाहर फेंक देना चाहिये ।

एक बात बहुत private तौर पर आप से दरियाफ़्त (पूछना) करना चाहता हूँ । इस साल आपके भाई साहब के यहाँ

ठहरना नामौजूँ (अनुचित) तो नहीं रहेगा ? इसलिये के घरके लोग परेशान होंगे ।

किताब Commentary, जिसका आपने तरजुमा (अनुवाद) किया है, Hindustan Times, New Delhi of 16-10-60 में review निकल गया । मुमकिन (संभव) है के Hindu में भी निकल गया हो इसलिये के M/s Higgin Bothams, Madras ने एक नमूने की कापी मँगवाई है और Astrological Magazine जो Banglore से निकलती है, उसके Editor ने एक किताब review के लिये मँगवाई है और लिखा है के इस magazine का नाम आप अपने यहाँ दरज (लिख) कर लीजिये ताके हर किताब, मैं इस magazine में review के लिये भेज सकूँ ।

Dharwad के श्री विनीत रामचंद्र राव ने लिखा के ओ मुझे Bellary मिलेंगे और अपने घर पर भी मुझे ले जायेंगे ।

मैं इन stations पर जाना चाहता हूँ और जो underline है, उसको अगर वक्त ने इजाज़त दी; इसलिए के अब की बसंत पंचमी 21-1-61 को पड़ रही है।

1) Hyderabad 2) Vijaywada 3) Dist Warangal Shriniwas Rao 4) Rajam Pet 5) Dharwad 6) Sedam 7) Bhutpur 8) Gulbarga 9) Bellary 10) Tirupati 11) Madras 12) Trichinapally 13) Shoranur 14) Bangalore 15) Mysore 16) Selam

बच्चों को दुआ। गुलाबी से दरयाफ़्त (पूछ) करके लिखना के मैं उसके लिये यहाँ से क्या चीज़ लाऊँ । दशहरा के तातील (छुट्टियों) में मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) अभ्यासी लोग आए हैं । Ramchandrarao, Bhimsenrao और पटेल साहब (गुलबर्गा) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 103 शाहजहाँपुर
No.-E-400-SRCM Date 31.10.1960

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

कब्ल अजी (इस से पहलेवाला) मेरा ख़त पहुँचा होगा । Programme भेज रहा हूँ । एक नकल श्रीपती सरनाइ को भेज रहा हूँ और एक आयल रेडडी को । अब की Shri. Manjunath Iyer चूंके (क्योंकि) मुझको जनवरी में चाहते हैं, इसलिये programme बनाने में बड़ी मुश्कील (कठिनाई) पडी और सफर व तकलीफ़ दोनों बढ़ गई । मैं शिवमोहनलाल साहब के लडके की शादी में एक यूम (दिन) के लिए शरीक (शामिल) हो सकूँगा । मैं एक नकल programme, धारवाड श्री. Ramchandra Rao Vineet को भी भेज रहा हूँ। मैंने उन लोगों के नाम इसलिए लिख दिये के आप दोबारा न भेजें । श्रीनिवासराव को भी भेज दूँगा। मगर आप एक ख़त भी मेरी आमद (आने) का लिख दीजियेगा। नूरचश्मी (बेटी) गुलाबी से मेरी आमद (आगमन) की ज़रुर इत्तलाह (सूचना) दे देना । बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 104 शाहजहाँपुर
No.-E-442-SRCM Date 07.11.1960

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला । मैंने programme 31 October 1960 को भेज दिया है, मिल गया होगा । मल्लप्पा का ख़त मेरे पास भी आया था। मैंने फाडकर फेंक दिया । अब जब आप के पास ख़त आया, तो मैंने आपके ख़त का जवाब दे दिया, जिसकी नकल हमरिश्ता (साथ) है । मल्लप्पा को कोई साहब, मेरी आमद (आने) व रवानगी (जाने) की किसी जगहपर इत्तलाह (सूचना) न देवें । इसलिए के ख़बर पाकर अगर ओ कहीं मुझसे मिलने आए तो मुझे उनको फौरन (तुरंत) वापिस करना पडेगा ।

ईश्वर करे, अज़ीज़म (प्रिय) माधवरावजी अब अच्छे हो जाये । उनको देखकर मैं मालूम कर सकूंगा के उनको किस तरह इलाज की ज़रुरत है और किस डिगरी के suggestions की ज़रुरत है । मैं और आप व ईश्वर सहाय सब मिलकर दुआ (प्रार्थना) करेंगे । मास्टर साहब अब तंदुरस्त (स्वस्थ) हैं । मुझे क़वी (काफ़ी) उम्मीद है के उनकी ख़राबी repeat नहीं हुई होगी । मैंने programme में आप को कम दिन दिये इसलिये, के समझता था के आप को कोई शिकायत नहीं होगी । श्री. मंजुनाथ ने मुझे जनवरी 61 में चाहा जिसकी वजह से बडी दिक्कतें (अड़चने) पैदा हो गई। सफ़र double हो गया और तकलीफ़ (कष्ट) भी जियाद: और दो तीन दिन बेकार सर्फ़ (खर्च) होंगे । जिसकी वजह (कारण) से उत्सव के लिये बहुत देर से पहुँच रहा हूँ । मैं Hyderabad में श्री. माधवरावजी के यहाँ ठहरुँगा ।

मुझको नये time tables एक अंग्रेजी और एक हिंदी के, मिल गये । इसलिये अब programme में timings सही है ।

श्री. कुमारस्वामीने ग़ालिबन (संभवत:) मकान बदल दिया । मगर मुझे इत्तलाह (सूचना) दी, जबके programme मैं पुराने पतेपर भेज चुका था । खुदा जाने programme मिला या नहीं । मैंने post card के जवाब में Vijaywada पहुँचने का वक्त लिख दिया है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः अभी मिस्टर M.L. Chaturvedi का ख़त आया है के ओ मेरी seats और sleeping accommodation G.T. में reserve करा देंगे । मेरे दामादने भी मेरे साथ चलने के लिये कहा है । मगर अभी उसका कुछ ठीक नहीं । 500 मील से ज़ियादा पर sleeping accommodation वैसे ही देते हैं। बिला दाम व पैसा reserve हो जाती है । मैं Rs. 200/- आपके पास भेजूँगा, ताके रास्ते में रुपये कुछ कम लाना पडे ।

डॉ. कुलकर्णी को आप लिख दीजिए के धारवाड, मेरे जाने की, अपने दोस्तों को इत्तलाह (सूचना) दे देवें और यह के मैं Vineet Ramchandrarao के यहाँ ठहरुँगा, ताके मुमकिन (संभव) है के कुछ लोग मुझसे मिलें । Aurobindoji के पैरवी करनेवालों (अनुयायी) से पढ़े हुए लोगों को निपटना मुश्कील (कठीन) होता है, और बेपढ़े, जैसा मैं हूँ, कुछ दिक्कत (अड़चन) न पडेगी ।

आपके Commentary की तरजुमे (अनुवाद) की Shri. Manjunath ने बडी तारीफ़ (प्रशंसा) की है । It looks like original.

मुझे बडी ख़ुशी है के वालिद साहब (पिताजी) इस हक़ीर (अदने) से मिलकर मेरी इज्जत अफ़ज़ाई (सन्मानित) करेंगे।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 105 शोरानूर (केरल)
No.-F-8-SRCM Date 03.01.1961

बिरादर अज़ीज़म
दुआ (प्रिय भाई, आशीर्वाद) |

हम लोग, यहाँ से कल शाम की गाडीसे, मदरास के लिये रवाना हो जावेंगे । हमें इत्तलाह (सूचना) मिल गई है के Madras में हमारी वापसी सफर (यात्रा) के लिये टिकट खरीद कर लिये गये हैं । और reservation भी deluxe गाडी से हो गया है । हम 9 जनवरी की शाम को 16.45 बजे रवाना होकर वर्धा, 12 बजकर 30 मिनटपर दोपहर के वक्त पहुँचेंगे । आप इसके मुताबिक (अनुसार) Shri. Valvekar को इत्तलाह (सूचित) कर दें । वर्धा पहुँचने की तारीख 10 जनवरी होगी। हम लोग sleeper coach डिब्बे में मिलेंगे ।

देहली से जज्जसाहब के लडकेने तीन अदद (संख्या) फोटो आप के लिये, हसबे फरमायश आँ अज़ीज़ (आपकी इच्छानुसार) भेजें है । ओ यह फोटो हम लोगों को देहली में दे देना चाहते थे मगर भूल गये । लिहाज़ा (इसलिए) बज़रिये (द्वारा) डाक भेजे हैं । ओ आपके पास भेज रहा हूँ ।

शोरानूर में हमें बहुत मायूसी (निराशा) रही । गालिबन् (संभवतः) लोगों को पहले से इत्तलाह (सूचना) न हो सकी, खैर, मालिक की मरज़ी ।

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं यहाँ मुक़र्रर (निश्चित) तारीख पर आ गया और कुछ दमा और दर्द कमर की शिकायत (तकलीफ़) तिरुपती में हो गई थी, ओ चल रही है। मगर बहुत कम है । यहाँ आना क़रीब क़रीब बेसूद (व्यर्थ) हुआ । सिवा इसके के मुथादत्त से मुलाकात (मिलना) हो गई और खूब आराम करने को मिला ।

कारण शरीरका जो सवाल था, ओ मैंने Dr. Varadacharya से लिखवाकर मँगवा लिया है । उसको मैं पत्रिका में छाप दूँगा। Dr. Varadacharya को Mr. Rajgopalan ने लिखा था के Sahaj Marg and Modern Psychology पर एक किताब लिखें । ओ तय्यार है । चाहता तो मैं यह हूँ के यह

Seventh School of philosophy बनें, मगर यह उस वक्त हो सकेगा जबके learning को foremost न रखा जावे । और हमारे ideas आपस में clash न होने पावे । आप ने लिखने का ढ़ंग अच्छा इख़्तियार (अपनाया) किया है के पत्रिका में देना शुरु कर दिया है । और एक शख़्स (व्यक्ति) D. Malusekharan जो Madura के हैं, ओ आप की तहरीरात (लेख) बहुत पसंद करते है । इसलिये के ओ जल्दी समझमें आ जाते है और भगती बढ़ाते है । तिरुचनापल्ली एक बडा कठिन देस है। हर शख़्स (व्यक्ति) वहाँ preceptor बनना चाहता है । Naikaran की तहरीक़ (आन्दोलन) वहाँ ज़ियादा चल रही है, फिर भी चार पाँच आदमी शामिल हुए है। वहाँ preceptor न बनाना ही अच्छा है । Madura जो Trichy के क़रीब (पास) है, इस में Malusekharan को preceptor बनाया जा सकता है । मगर वहाँ सतसंगी नहीं है । अगर सतसंगी बढ गये तो वहाँ जैसी राय आप की होगी, वैसा कर दूँगा ।

मैं 11 जनवरी को शाहजहाँपुर पहुँच रहा हूँ ।आप अपना कुल हाल और, और changes vibrations की बाबत जो कुछ भी समझमें आवे, मुझे लिखकर ज़रुर भेज देवें । मीरा का massaging बराबर जारी रखा जावे और तेल की मालिश भी । उसका हाल भी मुझे लिखना । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः R. Seshadri भी उत्सव में शरीक (शामिल) होंगे ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 106 शाहजहाँपुर
No.-F-39-SRCM Date 13.01.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं 12 तारीख की दोपहर को यहाँ पहुँच गया। 11 की रात को सर्दी बहुत थी। इसलिये सतसंगियों ने लखनऊ रोक लिया था। यहाँ cold wave आजकल आई हुई है, जो शायद दो तीन दिन में subside हो जावेगी । Seshadri 15 तारीख को Madras से G.T. से चलकर 17 की शाम को यहाँ पहुँच जावेंगे । ओ हमें Madras में भी मिले थे। Efficacy of Rajyoga छप गई है । कुछ मैं अपने साथ ले आया हूँ और कुछ Seshadri के कहनेपर Madras छोड दिया हूँ । ओ अपने साथ ले आवेंगे, इसलिये के उनके पास 1st class का टिकट होगा और फ़ाजिल (अतिरिक्त) किराया न पडेगा । मैंने शोरानुर से एक ख़त भेजा था, मिल गया होगा | अपना हाल जो कुछ एहसास (अनुभव) हो लिखना, यह भी लिखो के Efficacy of Rajyoga आप के पास कितनी भेजी जावें। मीराबाई का हाल लिखना और मैं तो बहुत मजबूर (विवश) हूँ । वरना इच्छा शक्तिसे काम ले लेता, वजह (कारण) आप को बता दी थी । Massaging बराबर जारी रहे, अब गुलाबी के साथ मीराबाई का ख़ियाल भी आता है । Madras में Shri. Savaiyya भी मिले थे मगर सिर्फ़ रवानगी के रोज़ (दिन) । श्री. माधवरावजी का हाल लिखना। ओ अस्पतालसे वापस आए और सर्वीस पर गये या अभी नहीं ? बच्चोंको दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 107 शाहजहाँपुर
No.-F-67-SRCM Date 30.01.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मो. 19-1-61 मौसूल (प्राप्त) हुआ । श्री रामचंद्रराव मय (साथ) अपने बीवी के और अपने भतीजा श्रीपादराव और आयल रेड्डी उत्सव में शरीक (शामिल) हुए । श्री R. Seshadri भी 17-1-61 को आये और ये सब के सब, उत्सव में शरीक (शामिल) हुए ।

श्री रामचंद्रराव मय (साथ) अज़ीज़ान (प्रियजन) देहली यूम आज़ादी (स्वतंत्रता दिन) में शरीक (शामिल) होने के लिये और Queen Elizabeth के ज़ियारत (दर्शन) के लिये 25 Jan. को चले गये। देहली में बहुत से आदमी भीड़ में कुचल (दब) गये। अब और फ़िकर (चिंता) पैदा हो गई। उनके ख़त का, ख़ैरियत (कुशल) से पहुँच जाने का, इंतज़ार (प्रतीक्षा) है।

मिस्टर Seshadri को मजबूरन (विवश होकर) initiate 25 Jan. को, रामचंद्रराव के जाने के बाद, करना पडा । और उनसे कह दिया के इसको confidential रखें । उन्होंने अपनी रात की नींद हराम कर दी और रोना भी शुरु किया और हर वक्त यही ख़ियाल । नतीजा यह हुवा के मेरे दिलपर pressure बढ़ने लगा और तबीयत initiation के लिये मज़बूर करने लगी। उनको तिरुपती में इजाज़त दे दी, यह मैं आप को लिख चुका हूँ । ओ मदरास में भी मेरे साथ रहे ।

Subramaniyachari मुझे वाक़ई (सच ही) Madras मिले थे और वक्त के लिहाज़ से दो चार बातें कही, जो बोलने में शुमार (गणना) नहीं हो सकती हैं ।ओ जितनी देर मेरे सामने रहे, मुझे यह मालूम होता था, के कोई मुज़रिम (अपराधी) Guilty बैठा हुआ है । और मेरी तवज्ज़ह (प्राणाहुति) का कोई असर (परिणाम) नहीं हुआ । मेरा दिल अब भी उनसें नहीं मिलता, साफ़ लिख ही दूँ, शादी तो उनकी हो गई उसी लडकी से, मगर शादी होने से पहले ओ शादी के ताल्लुकात (संबंध) उससे पैदा कर चुके थे, जो एक sin है ।

भाई दत्तात्रया की नागहानी (अचानक) मुसीबत (संकट) पड जाने का अफ़सोस (दुःख) हुआ । एक तो वैसे ही मुसीबत (कष्ट) में अख़राजात (खर्च) की वजह (कारण) से रहते है । दूसरे, उसमें भी खर्च करना पडा।

मद्रास में Major Lingam और Professor Rajagopalachary ने शुरु किया । Professor, Dr. KCV के दोस्त हैं ।

मुझे बडी ख़ुशी हुई के भाई माधवरावजी अच्छे हो गये और यह ठीक है। मगर मैं अब भी देखभाल रखता हूँ और कुछ न कुछ करता रहता हूँ । जब पूरा इतमिनान (विश्वास) हो जायेगा, तब देखभाल की ज़रुरत नहीं रहेगी । आप जब Hyderabad जावें, तो श्री. रामलूजी को अगर मौक़ा (अवसर / वक्त) हो तो इत्तलाह (सूचना) कर देवें। मुमकिन (संभव) है कुछ लोग शुरु करें, इसलिये के श्री. रामलूजी ने Mr. Annaiah Naidu, Tirupati अपने खुसूर (ससुर) को लिखा था के लोगों ने किताबें पढ़कर पसंद की है । और लोग शुरु करेंगे । ख़त का मौक़ा (अवसर) नहीं तो telephone जो माधवरावजी के क़रीब लगा हुवा है, इत्तलाह (सूचित) कर दिया कीजिये । मीराबाई के massaging जारी होगा । मेरी राय यह है के tailbone, के जहाँपर खराबी बतलाई है, सेंक (foment) लें। हफ्ते में 4 या 5 रोज़ कर दिया करो । मैं क्या करुँ के जहाँ पर ख़राबी है, वहाँपर centre खुल जाने के ख़ौफ़ (भय) से तवज्ज़ह (प्राणाहुति) नहीं दे सकता ।

आपने बडा उमदा (अच्छा) जुमला (वाक्य) लिखा है के आपके सामने होते हुए आप के दर्शन के लिये तड़प जाता हूँ । बिलकुल यही जुमला (वाक्य) कस्तुरी ने भी लिखा है । इससे ज़ाहिर होता है के हक़ीकत (वास्तविकता / परम सत्ता) में किस क़दर (मात्रा में) आप दखल (प्रवेश) पा चुके हैं ।

राहे तलब में (खोज में) ऐसे ख़ुद रफ़्ता (आत्मविस्मृत) हो रहे है ।

मंजिल को हम पहुँच कर मंजिल को ढूँढते हैं ।

एक ख़ियाल पैदा हुआ के मैं दूसरोंकी मुसीबत (कष्ट) झेलने क्यूँ तैयार रहता हूँ । मगर यह ख़ियाल ठीक नहीं । इसलिए के कोई मेरी मौजूदा (वर्तमान) हालत को भोगने के लिए तैयार नहीं होता ।

Savaiyya मदरास में मिले थे। उनको बहुत clean करनेकी ज़रुरत थी । कुछ किया और सरनाडजी को भी लिख दिया । पता नहीं के यह preceptor क्या किया करते हैं, के पास रहते हुए भी सफ़ाई के तरफ़ तवज्जह (ध्यान) नहीं करते ।

Chinmayananda 25 January से 5 February तक Chittoor में बोलेंगे । डॉ. KCV के एक रिश्तेदारने इंतज़ाम (व्यवस्था) किया था । डॉ. को एतराज़ (आपत्ति) था, मगर ओ न माने । आपका मज़मून (लेख) उत्सवमें पढ़ दिया गया और पत्रिका में छपेगा । बेहतरीन मज़मून (अच्छा लेख) है। इसको प्रदीप में छपवा दीजिए । अब आप writer हो गए । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः आपने जितनी तकरीरें (भाषण) Theosophical Lodge में की हैं, उतनी public platform पर होती, तो सैकड़ों आदमी पैरो (अनुयायी) हो जाते।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 108 शाहजहाँपुर
No.-F-79-SRCM Date 08.02.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

ख़त मोरखा (दिनांक) एक्कम (एक) फेब्रुवरी 61 ई. मौसूल (प्राप्त) हुआ। यहाँ Seshadri के आनेसे पहले बेहद (बहुत) सरदी (जाड़ा) रही। उनके आने के एक रोज़ पहले बहुत ही कम हो गयी और जब तक ओ रहे, निहायत (बहुत) ही कम सरदी रही और उनके जानेके बाद सरदीने सब कसर (कमी) पूरी कर ली । एक हफ्ते तक अबर (बादल) रहा । बारिश (वर्षा) भी खूब हुई और ओले भी गिरे । आज मतला (आकाश) साफ़ हुआ । Simla में बरफ़ इस क़दर गिरा के below 7^0 temperature freezing point रहा । नतीजा (निष्कर्ष) यह निकला, दक़नी भाईयों की मदद क़ुदरत (प्रकृति) ही करती है । R. Seshadri का एक बहुत मुहब्बत का ख़त आया |

उन्होने दौरान क़ियाममें (यहाँ रहते वक्त) मुझे खूब study किया है और इस क़दर (इतना) अच्छा impression ले गये के मुझे गलतीसे ख़ुदा समझ बैठे । मगर भाई,

"सदा ए कुनकी हक़ीक़त का मुद्दआ हूँ मैं ।
मुझे न सुन के बहुत दर्द की सदा हूँ मैं ।"

("प्रथम क्षोभ के आवाज़ की वास्तविकता का तात्पर्य हूँ मैं
मुझे न सुन के बहुत दर्द की आवाज़ हूँ मैं ।")

शेषाद्री का transformation देख कर उनका घर का घर अभ्यास करने लगा । और उनके वालिद (पिता), जैसा के उन्होंने लिखा है, बिलकुल बदल गए । मगर बहुत कमज़ोर हैं, और दिल वगैरे का मर्ज़ (रोग) है । इसलिए अबतक कोई तरकीब (उपाय) समझमें नहीं आई के उनकी किस तरह से ख़िदमत (सेवा) की जावे ।

आप जमाँ और मकाँ (स्थल - काल) के क़ुय्यूद (बंधन से) से पाक (निर्लिप्त) हो चुके हैं । मगर कुछ दिन बाद मैं कह सकूँगा के आप उससे क़तई मुबर्रा (पूर्ण मुक्त) है । रह गई भीष्म पितामह वगैरा की बात, यह चीज़ मेरे अबतक ख़ियालमें नहीं है और न उसके बारेमें सोचा ही है। हाँ, एक परदा ज़रुर ऐसा है और ओ मुझे मालूम है के यह उसके चाक (फाड़) कर देने से, इन्सान जब चाहे मर सकता है । मगर यह परदा मैंने गलतीसे एक गैर आदमीका चाक कर गया था । उस वक्त गुरु महाराजने कहा कि यह फलाँ (अमुक) परदा है । चुनांचे (इसलिए) आपने एक bondage ग़ालिबन (संभवत:) रख दिया है । मैं जाने क्या क्या लिखना चाहता हूँ । मगर जब लिखने बैठता हूँ सब कुछ भूल जाता हूँ । मैं 11 Feb. को लखीमपुर वास्ते (के लिए) शिरक़ते (शामील) शादी दुख्तर (बेटी) श्री ईश्वर सहाय जा रहा हूँ । 11-12, दो रोज़ रहकर मौजा कुकरा 3 रोज़ (दिन) रहूँगा और वहाँ से लखीमपुर वापस होकर शाहजहाँपुर 21 Feb. तक वापस हूँगा ।

जर्मनीसे एक ख़त आया है । उसने Reality at Dawn को जर्मन ज़बान में तरजुमा (अनुवाद) करनेकी इजाज़त माँगी है । नक़ल मय (साथ) जबाब इरसाल (संलग्न) है । मैंने Dr. KCV को भी उस ख़त की नक़ल भेज दी है । जवाब उस वक्त तक तैयार न था । इसलिए नहीं भेजा । मेरी रायमें इजाज़त दे देना चाहिए ।

नूरचश्मी (बेटी) मीराबाईका हाल लिखना। मेरी तंदुरुस्ती (आरोग्य) खूब बढ़ रही है। इसलिये की mustard oil की मालिश बराबर कर रहा हूँ। अबकी आप आवेंगे तो जबरदस्ती दो सेर तेल आपके साथ भिजवा दूँगा ताके बच्चे मालिश करें और खासकर बहू जो बहुत कमज़ोर है । बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

तीन रोज़ (दिन) हुए, Trichy से ख़बर आई के Thyagarajan पागल हो गये । मैंने बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) उनको सँभाल दिया । यह ख़बर अभी 8.45 P.M. बज़रिये (द्वारा) तार मिली । मैं तीन माह तक उनके सेहतके (स्वास्थ्य) लिए दुआ न करना चाहता था । उन्होंने बहुत बड़ी गलती की है। मगर यह अपनी बदनामी समझकर, case जल्द ले लिया । उन्होंने जितना हासिल किया सब जाया कर दिया और अब receptive भी नहीं है । मगर अब उस गलती को मैं क्या लिखूँ ?

शेषाद्री का दौरा बीदर में भी रहता है। आप शंभूराव को लिख दीजिए के जब शेषाद्री आवें तब लोग उनसे सतसंग करें और उनको उनका पता भी लिख दीजिएगा।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 109 शाहजहाँपुर
No.-F-131-SRCM Date 10.03.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दो ख़त मौसूल (प्राप्त) हुए । बहूकी अलालत (बीमारी) का हाल सुनकर फ़िकर (चिंता) हुई। ईश्वर सेहत (स्वास्थ) देवे । दिमाग़ी आराम देने के लिए आप काफ़ी (पर्याप्त) थे, फिर भी कुछ मिला ही होगा। मीराबाई नूरचश्मीका (बेटी) ख़ियाल अक्सर (प्राय:) लगा रहता है । इसलिए के उसको दूसरे घर जाना है। Massage तो जारी रखिये, ख़ुसूसन (विशेषत:) कमरके नीचे । मैंने श्री. Manjunath Mysore से दरख़्वास्त (अनुरोध) की थी के ओ नारायण तेल आपको भेज देवें । क्योंके उन्होंने मेरे लिए भेजनेके लिए लिखा था । और मुझे ज़रुरत नहीं थी इसलिए के मेरे दर्द तो पेटके अंदर है । आनेपर, कमरके नीचे और टांग और हाथमें उसके, ख़ूब मलें ।

मुझे ख़ुशी हुई के अज़ीज़म (प्रिय) माधवराव, तूले उमरहू (दीर्घायु हो), कालेज जाने लगे । अब भी थोडा थोडा उनके लिए कुछ कर देता हूँ । आँ अज़ीज़ (आप) अपनी भावज से, अब शीरीनी (मिठाई) के हक़दार (अधिकारी) हो गये ।

बडा अच्छा हुआ के श्री सरनाडजी, श्री रामदासजी के क़दमबोसी (पैर-चूम) कर लिए । ओ वाक़ई बहुत अच्छे आदमी हैं और मैं उनकी क़दर करता हूँ । मगर भाई, मैं अपनी निगाह (आँख) को क्या करुँ जो गुरु महाराज के क़दम (चरण) चूम चुकी है । उन्होंने कतरे (बूँद) को दरिया (नदी) समझ लिया है और आगे नहीं बढ़ते और उनकी कुछ इसमें ख़ता (दोष) भी नहीं। मगर मैं ओ ज़बान कहाँसे लाऊँ (छोटे मुँह बडी बात) के उनसे कहूँ के अभी दिल्ली दूर है, सिर्फ़ रेत (sand) की नमी से इश्क की गरमी शांत कर ली है।

यह आप क्या ख़ियाल कर रहे हैं । आप तो पागल को अच्छा कर सकते है न के खुद अपने आपको पागल होने की उम्मीद दिलाएँ । जिसको आप पागलपन समझ रहे हैं, ओ तो एक मोहब्बत (प्रेम) की हालत (अवस्था) है । उसे ख्वाँ (चाहे) आप blind wisdom कह लीजिये या समझने के लिये refined madness कह लीजिये । वैसे ये कुछ अजीब (अनोखी) चीज़ है । अच्छा, तो आप

Thyagarajan को अच्छा कीजिये । तरीक़ा (पध्दति) वही के पागलपन को जिस्मसे निकालकर बाहर फेंक दीजिए और intellect improve कीजिए ।

अच्छा, तो मैं अब नहीं कहता, इसलिए के, कुव्वतेइरादी (संकल्पशक्ति) अगर बिला शक और शुबहा (बिना आशंका व संदेह) के और तेज़ (मजबूत) नहीं बाँधी तो मरज़ (बीमारी) कुछ आमिल (करनेवाला) पर असर (परिणाम) कर जाता है ।

आप सब सतसंगियों की सफ़ाई के तरफ ज़ियादा कोशिश करें। Transmission तो एक रुहानी (अध्यात्मिक) नशा पिला देना है । जो और नशों से ज़ियादा कार आमद (फायदेमंद) है । Field अच्छा उसी वक्त बनेगा जब के चक्रों और सूक्ष्म शरीर की सफ़ाई करेंगे।

श्री आयल रेड्डी, Sedam, ने लिखा है और उन्होंने आपको भी लिखा होगा के ओ एक board मक़ानपर लगाना चाहते हैं। जो सही चीज़ हो, ओ उसको लिख देना। मैंने अपना suggestion दे दिया है। आप जो मुनासिब (उचित) समझें उनको लिख देवें। Branch दरहक़ीक़त (वास्तवमें) Gulbarga है जो Sedam में काम कर रही है।

Shri Ramachandra Mission, Branch Sedam, Gulbarga.

Shri. Ramachandra Mission, Branch
Gulbarga, Sedam.

Mr. Robert Koch ने, जैसा आप चाहते थे, क़रीब (लगभग) शुरु कर दिया है। उसके ख़त की नक़ल और अपने जवाब की नक़ल मुलाहिज़े (देखने) के लिए भेज रहा हूँ। अपनी file में रख लीजिए । ख़ुदा जाने, मैं जवाब ठीक लिखता हूँ। यहाँ कोई मदद देनेवाला नहीं है । आप बाबू शिवमोहनलाल, Hyderabad, का ख़ास ख़ियाल रखें और उनकी अंदरुनी सफ़ाई भी करते रहें, ताके ओ चल निकलें ।

बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 110 शाहजहाँपुर
No.-F-196-SRCM Date 24.04.1961

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आप) के सब मसर्रतनामे (प्रेमपूर्ण पत्र) मिल गये। 10-12 यूम (दिन) दर्द शिकम (पेट) की शिद्दत (तेज़ी) ने बहुत परेशान (व्याकुल / हैरान) किया । अब दर्द normal आ गया है । यानी उस हदमें आ गया है जिसको मैं बरदाश्त (सहन) कर लेता हूँ । बड़ी ख़ुशी की बात है के बहू तंदुरुस्त (स्वस्थ) हो रही है । दिलकी ताक़त तो उसकी बढ़नी ही चाहिये । लडकियों को, जो आपके वालिद (पिता) साहब घरपर ले गये हैं ओ इन मानों मे अच्छा है के आबो हवा (हवा-पानी) तबदील (बदल) हो जावेगी और दूध व घी गाँव में खाने को अच्छा मिलेगा, मगर उनकी वालिदा (माँ) को उनकी याद आती होगी ।

भाई दत्तात्रीराव के ख़रीदार, मक़ान क़ानूनन ख़ाली नहीं करा सकता । यहाँ तो किरायदार एक एक हजार रुपये लेकर खाली करते हैं। भाई माधवरावजी का ख़ियाल ही ख़ियाल है के ओ कुछ बीमार है, one percent ख़फ़ीफ़ (थोडासा) बाक़ी है । उसकी तरफ मैं कभी कभी देख लेता हूँ । ईश्वरने चाहा, यह भी नहीं रहेगा। Dr. K.C.V. की बडी लडकी की शादी 26 मई को है । इसलिये अगर उनसे इतमिनानसे (फुर्सत / अवकाश) मिलकर मीराबाई का हाल कहना है, तो उससे कबल (पहले) या बाद जाना ।

भाई सरनाडजी दाँत निकलवाने में जल्दी न करें। मैं उनकी कुछ एहतियात (सावधानी) बतलाऊँगा । तजरुबे (अनुभव) में यह आया है के लोगों ने पायोरियाके वजहसे दाँत तो निकलवा दिये मगर दाँत भी गये और तंदुरस्ती (स्वास्थ्य) भी न हुई ।

मैं अप्रैल ता (से) जून, बाहर नहीं जा रहा हूँ । इसलिये के इन अय्याम (दिनों) में मेरे पास vacation वाले लोग आते हैं और मैं तो घरसे जल्दी वैसे भी नहीं निकलता ।

बाबू शिवमोहनलाल साहबने चतुर्भूज सहाय के बारे में इस्तिफ़सार किया (जानना चाहा) था । उस ख़तकी नक़ल और

उसके जवाब की नक़ल हमरिश्ता (संलग्न) है। चतुर्भूज सहाय अपनी इन्तकाल (मृत्यु) से बहुत पहले रुहानियत (आध्यात्मिकता) खो चुके थे और जिन्होने मुझे representative नहीं माना और न मेरी जाँच की, के आया (क्या) यह हालत मुझमें मौजूद (स्थित / विद्यमान) है ? उनकी सब ताक़त (शक्ति) हज़रत क़िबला (गुरु महाराज) ने सलब (छीन) कर ली और उन्होंने इतना काम बिगाड़ा, जितना के किसी को उनसे उम्मीद (अपेक्षा / आशा) न थी। लालाजी की जो खूबी है, उसमें ग़लत तौर पर (रीति से) अपने आपको बड़ा करके दिखाया है और जो लफ़्ज़ (शब्द) मेरे लिये हज़रत क़िबलाने (गुरु महाराजने) कहे थे, जिसका मेरे पास सुबूत (प्रमाण) भी है, ओ उनको मालूम होनेपर, अपने लिये, दूसरोंपर ज़ाहिर (बताए) किये ।

भाई, यह विनीतजी खूब (अच्छे) निकले। मैं उनसे काम लेना चाहता था। इसलिये के ओ एक बहुत उमदा (अच्छे) और बाअसर (प्रभावशाली) आदमी है । और पहिले ही ख़त में मुझे लिखा था के I entirely surrender to thee। मैं समझता हूँ के उनकी बीवीने उनको मजबूर (विवश) किया होगा । मैंने उनके बीवी के बारेमें भी उनसे कह दिया था के एक तरह का उनके बीवी में पागलपन है । यह भी उन्होंने अपनी बीवीसे कह दिया और ये उनको नागवार (अप्रिय) गुज़री (लगा) होगी । मैं कुछ कुछ सीधा सादा हैवान (प्राणी) ऐसा हूँ के मेरी सादगी (भोलेपन) के वजह (कारण) से लोग समझ लेते हैं के मैं कुछ माल नहीं हूँ और सही भी है । मैंने एक ख़त उनको लिखा है जिसकी नक़ल हमरिश्ता (संलग्न) है ।

धारवाड का centre तो फ़िलहाल (इस समय) नहीं खुल सकता। आपको ख़ुद (स्वतः) करना है काम । आपसे जो लोग बन रहे हैं अच्छे निकल रहे हैं, मसलन (जैसे) आयल रेड्डी, सरनाडजी । यह ज़रुरी है के आपको काम करनेका मैदान नहीं मिला मगर मैदान आप बना रहे हैं । साई बाबाने एक मंदिर Madras में बहुत अच्छा बनवा दिया है और एक मद्रासी उनको मिल गया जो मोतक़िद (श्रद्धालु) हुआ और उसने चंदा (दान) दिया । Governor K.M. Munshi उनके ही चेले (शिष्य) हैं । यह समझमें नहीं आता के यह ओ सिध्दी है, के मूर्ती आ जाती है । अगर मैं उन्हे देख लेता तो देखता के मूर्ती कैसे बुलाते हैं । इन लोगों ने public को वाक़ई (सच भी) ख़राब कर दिया । बच्चों को दुआ। श्री

रामचंद्रावने 25 April को आनेके लिये लिखा है मय (साथ) हमराहियों (साथियों) के ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 111 शाहजहाँपुर
No.-F-242-SRCM Date 23.05.1961

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दोनों ख़त मिल गये । 26 April को श्री. रामचंद्रराव और श्री. भीमसेनराव और शामराव आए । यह शामराव ओ लडका है जो सेडम में मुझे मिला था और उसको एक आँखसे कम दिखाई देता था। अब ओ ठीक है । 4 मई को श्री गुंडेराव, श्री. शंभुराव और श्री. गोपालराव जो आपके साथ Hyderabad में पढे हैं, और उनकी धर्मपत्नी और बच्चे भी आए, 19 मई को सब लोग चले गए ।

विनीत रामचंद्रराव के ख़त की नक़ल मैंने आपको भेजी थी, मिल गई होगी । उसका जो जवाब उन्होंने दिया है, उसकी नक़ल और उसके जवाब की नक़ल जो मैंने दिया है, आपके मुलाहिज़े (देखने) के लिये भेजता हूँ। मैं यह नुकूल (प्रतिलिपियाँ) इसलिये भेजता हूँ के एक तो यह आपके centre से मुतालिक (संबध्द) हैं, लिहाज़ा (इसलिए) हर बात आपको जानना चाहिये। दूसरे, इससे तज़रुबा (अनुभव) भी बढ़ता है, तो आइंदा (आगे) कामकी policy इख़्तियार (अपनानेमें) करने में मदद रहेगी। मुझे सरनाडजीने भी लिखा है, उनकी बीवी को साईबाबा ज़ियादा अच्छे लगे, लिहाज़ा (इसलिए) विनीतजी को भी मजबूरन (विवश होकर) उनसे उपदेश लेना पड़ा और जब साईबाबा का ख़ुदा होने का इन्हे यक़ीन (विश्वास) हो गया तो फिर उनकी तारीफ़के पुल Pradeep में ओ बांधना ही चाहा । Dr. Varadachari ने एक review किया था उसमें उन्होंने अपनी राय वही दी, जो आपने पिछले ख़तमें दो लफ्जों

(शब्दों) में दी थी । विनीतजी ने मुझे भी उनके जाँच के लिये लिखा था के ओ लाइंतिहा (बहुतही) बडे है और फिर मुझसे जाँच माँगते हैं । असलमें (वास्तवमें) विनीतजीने अपने दिलको सराय (मुसाफिर खाना) बना दिया है, जहाँ हर मुसाफिर (यात्री) टिक जाता है । ओ ध्यान तो, जैसा उन्होने लिखा है, मिशनका कर रहे हैं, जिसको ऐसा समझ लो के रोटियाँ तो हम आप की खाते हैं और दूसरेके नमक-ख़्वार (स्वामिभक्त) रहते है। ख़ैर (अस्तु), जो कुछ सही ।

Mr. Patki ने कुछ लफ़्ज़ (शब्द) सख़्त लिखे हैं और लुत्फ़ (मज़ा) यह है के, हमारी कोई ख़ता (गलती) नहीं होती मगर यह बरतावा (आचरण) लोग रवाँ (जारी / प्रचलित) रखते है । वैसे privately कहता हूँ के पतकी को खून की बीमारियाँ है, जो मुझे पहले मालूम न थी । उनको तो पहलेही से न लेना चाहिये था । जब तक के हम लोगों की तबीयत (मन) उनको लेने को मज़बूर (विवश) न कर देती । Seshadri उनके घर तवज्जह (प्राणाहुति) देने जाते थे, मगर ओ उनके घर नहीं जाते थे । Seshadri ने मुझे लिखा था के उसे भी कह दीजिये के मेरे यहाँ आया करें । मैंने लिख दिया के एक मर्तबा (बार) आप चले जाया करें और एक दफ़ा (बार) ओ चले आया करें । दूसरे, उन्हे कुछ sex के दौरे हुए थे । मैंने उनको लिख दिया था के आप इस हालत में constant remembrance शुरु कर दिया करें और कुछ न कुछ restraint (संयम) आपको करना ही होगा । यह चीज़ भी उनको नागवार (अप्रिय) हुई और रानडे ने उन्हे इसी बातपर फटकारा (डाँटा) था और ओ छोड बैठे । मेरी समझमें नहीं आता के मैं लोगों की ख़ुशामदी (चापलूसी, झूठी प्रशंसा) में क्यों लगा रहता हूँ ? उनके ख़त की चंद (कुछ) लाईने पेश (प्रस्तुत) करता हूँ, जो के गुस्से में लिखी गयी है ।

"Regarding other things I have no desire to enter into arguments with you. Better they are left over for a frank and full discussion when you are here next. Till then, let us wait."

बडा अच्छा हुआ के आपके भाई हनमंतराव अब अच्छे हैं । Capt. L. N. Srivastava के बारेंमे आपने पूछा है, उनकी दाढ़ी उतनी ही बढ़ी है जो आप फोटो में देखे हैं । Prof. Shivmohanlal ने, जो डॉ. चतुर्भूज सहाय के बारेमें इस्तिफ्सार (जानना चाहा) किया था, ओ मैंने उन्हे भेज दिया और उसकी

नक़ल आप को भी भेज दी । शिवमोहनलाल का तबसे कोई जवाब नहीं आया, उनके ख़त इतनी देरमें कभी नहीं आते थे । श्री मिसरीलाल चतुर्वेदी government कामसे 21 मई को सुबह Hyderabad पहुँच गये । मैंने सबको ख़त लिख दिया के उनसे सतसंग करें। ओ 25 सुबह को देहली वापस आ जावेंगे ।

भाई नारायणराव का रायचुर तबादिला हो गया तो इस लिहाज़से (विचार) तो बुरा लगा के आपका साथ छूट गया मगर अच्छा है के वहाँ भी सतसंग बढ़े । उनको कुछ free pamphlet प्रचार के गरज़ (उद्देश्य) से दे दिये जावे । बहुकी तंदुरस्ती (स्वास्थ) की मुझे फ़िक्र (चिंता) रहती है, ईश्वर उसे तंदुरस्त (स्वस्थ) रखे ।

प्रोफेसर साहब ने जो faith के बारे में सवाल किया है के realization के बाद होता है। ये तो ऐसी बात हुअी के पहले बच्चा पैदा हो जाना चाहिये फिर शादी की जावे। आप प्रोफेसर साहबसे क़तई (बिल्कुल) न घबराइये । ओ philosopher (दार्शनिक) ज़रुर है, जिसकी बुनियाद (नींव) शक (संदेह) है और आपकी philosophy (दर्शन) की बुनियाद (नींव) उसपर है जिसपर के देरपा (टिकाऊ) इमारत बन सकती है । Faith के बारेमे मैंने भी खतों में लिखा है, जो याद न रहने की वजह (कारण) तरह तरह (अलग अलग) की ताज़ा (नई) definition दिया करता हूँ । अब ख़ुदा जाने मैंने क्या लिखा है, ख़ैर, फिरसे सही ! Faith ही existence या बुनियाद (नींव) है जिसपर realization की शुरुआत होती है । Indian Philosophy की introduction में जो वेदान्त का बयान है सफ़े (पन्ने) 419 इसमें लिखा है, According to the Vedanti also "An initial faith is necessary for religious life and thought." Reality at Dawn में भी मैने faith के बारें मे कहा है । Faith ओ अटूट लड़ी है जो के जुड़ जाने पर हटती ही नहीं। जिस अभ्यासीने faith नहीं लिया, तरक्की (प्रगति) कर ही नहीं सका । अगर ओ कोई सवालात (प्रश्न) करे तो मेरे पास भेज देना। मैं अपने views आपको लिख दूँगा और बिला (बिना) सवालात के मेरा कुछ कहना मुश्किल है। इसलिये के मैंने इल्म (ज्ञान) को बाला-ए-ताक (अलग) रखकर गुरु महाराज की कृपासे realization किया है। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 112 शाहजहाँपुर
No.-F-332-SRCM Date 16/18.07.1961

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद) |

आप के सब ख़त मिल गये और इमरोज़ फ़रदा (आज-कल) करते करते जवाबमें इतनी देर हो गयी । आप ग़ालिबन (संभवतः) Banglore गये होंगे । मैंने ये ख़बर (समाचार) सुनकर आप को तार दे दिया था ताके आप Shri Seshadri के यहाँ जाकर पैसे ख़राब (व्यर्थ / नष्ट) न करें । इसलिये के Seshadri जी 2 July को यहाँ आ गये और अब 17 July को रवाना होकर, एक दिन Delhi क़ियाम (ठहरकर) करते हुए वापस Banglore जा रहे हैं । Mr. पतकी ने मिशन छोड ही दिया, वजह (कारण) लिख चुका हूँ । अब ओ किसी ऐसे महात्माकी तलाश (खोज) में है, जो उनको senses के enjoyment में ढील देता रहे और रुहानी तालीम (आध्यात्मिक प्रशिक्षण) भी। आपने लिखा है के विनीत जी और पतकी को मुहब्बत है । सो Patki तो मेरे ख़िलाफ (विरुद्ध) है, हाँ विनीतजी ज़रुर कुछ वक्त (आदर / अवसर) रखते हैं, मगर मजबूर (विवश) हैं । तलवार बेम्यान (नंगी) की तारीफ़ (स्तुति) हमेशा (सदैव) की गई है, हालाँके (यद्यपि) उसका काम काट ही करना है | अब उसको इस्तेमाल (उपयोग) करने के लिये अक़ल (विवेक) चाहिये, के उसका वार दुश्मन (शत्रु) पर हो और दोस्त या अपने ऊपर नहीं । यहाँ तलवार का इस्तेमाल (उपयोग) अपने ही ऊपर होता है। अपनी इच्छा शक्ती अपनेही खात्मे (अंत) के लिये इस्तेमाल (प्रयोगमें लाई) की जाती है ।

मैंने सुना है के भाई रामचंद्रराव साकिन (निवासी) भूतपुर साई बाबाके पास गये और इसमें कोई हरज (हानि) नहीं, न मुझे कोई एतराज़ (आपत्ति) है। यह ज़रुर है के जो कच्चे होते है, ओ मायावी चीज़पर जल्दी लुढक जाते है । उनके जाने का मक़सद (उद्देश्य) अगर हो सकता है तो यही, के उनके कोई बच्चा नहीं है।

और यह बात उन्होने एक मरतबा (बार) मुझसे भी कही थी । अगर आप चाहे तो अपनी तरफसे लिख देवें के अगर उनकी धर्मपत्नी womb पर meditation करें तो यह आरजू (इच्छा) पूरी हो जावेगी और जो शामवाला मुराक़बा (ध्यान) हम लोग करते है उसको इस तरीके से करें के जितनी खराबियाँ (दोष) womb में है, धुवें की शकलमें (रूप) निकल रही हैं। बल्के (अपितु) उनको अपने विचारोंसे धुवाँ बनने के लिये बाहर फेंके । Womb पर ध्यान करते वक्त मक़सद (उद्देश्य) तवलीद (पैदा) बच्चा होना चाहिये। मगर रुहानियत (आध्यात्मिकता) इससे कोसों दूर है । मक़सद बरारी (उद्देश्य पूर्ति) के बाद उन्हे रुहानियतपर (आध्यात्मिकता) लाना मुझे लोहे के चने हो जावेगा । मैं इस तरीके (पद्धति) को आज़मा (परख) चुका हूँ और सही बैठा और जिसका मतलब (उद्देश्य) हल (पूर्ती) हो गया उसने लौटकर मुझे सलाम भी न किया । सलाम का भूखा न था मगर तहज़ीब (शिष्टाचार) का दिलदादा (प्रेमी) हूँ ।

नगीना (आभूषण) के बारे में जो आपने दरियाफ़्त (पूछा) किया के हर एक को दिया जावे । बहुत सोचा और Seshadri और मास्टर साहब के सामने भी ये चीज़ पेश (रखी) की गयी । नतीजा (फल) यही निकला के उसको अंगुठी या locket में न जुडवाना ही अच्छा है । लोग मुझपर एतराज (आपत्ति) कर सकते हैं और ये चीज़ भद्दी यूँ मालूम होती है के इससे solidity का सबक दूसरों को मिलता है। वैसे जब आप आवें तो दो चार लिये आईयेगा । श्री. नारायण शेट्टी की तारीफ़ करनेके लिये कुछ नगीने (आभूषण) पड़े रहे । मुझसे, आप के कहने पर, Shri Gopalrao ने भी इजाज़त (अनुमति) मांगी है । मजकूरा बाला (उपर लिखा हुआ) जवाब उन के लिये भी है । गैरज़रुरी (अनावश्यक) दिखावा जहाँतक हो सके हमें न करना चाहिये ।

सरनाडजी का तबादिला (स्थानांतरण) मैसूर, दो हफ्ते (सप्ताह) में, हो जावेगा। वहाँ मैं Reality at Dawn का amendment भेज दूँगा । मैंने उनको ऐसा ही लिख भी दिया है । मुझे बडी ख़ुशी है के आप एक्कम(एक) सप्टेंबर को आ रहे हैं । Raichur के लोगोंने सतसंग बढ़ाने की कोशिश शुरु कर दी है । और अब श्री. नारायणरावके पहुँच जाने की वजह (कारण) से काम और जल्दी होगा । भाई, श्री. आयल रेड्डी साहब की तारीफ़ें (स्तुति) जगह जगह से आ रही है के ओ दौड दौड कर लोगों को फ़ायदा पहुँचाते है। भाई शेषाद्रीजी का दौरा Bijapur भी होता है । Dr.

Kulkarni का पता मालूम नहीं, वरना मैं उन्हे बता देता । चूँके (क्योंकि) उनका दौरा म्हैसूर State में रहता है, लिहाज़ा (इसलिए) जहाँ जहाँ सतसंगी हैं, उनको फ़ायदा पहुँच सकता है । आप उनका पता मुझे लिख दीजिए। मैं Seshadri और Dr. Kulkarni दोनोंको लिख दूंगा । बडा अच्छा हो के आप के साथ रामकिशन भी आवे और अगर श्री. नारायणराव भी आने की हिम्मत बांधे, तो और भी अच्छा है ।

आपने अपनी हालत ख़ूब (बहुत अच्छी) लिखी है । **आप पहली Ring of splendour में घुसने की कोशिश कर रहे हैं,** मगर आपका बस नहीं चल रहा है और नहीं मालूम मैं क्यों इस जगह पर आपको नहीं ले जा रहा हूँ । सोचने से पता चलता है के मैं ये कहता हूँ के या तो आप अपने आप वहाँ पहुँच जावें या आप में ख़ुद ऐसी ताक़त पैदा हो जावे और बहुतसी अंदरुनी चीजें ऐसी हो जावें की उनकी तरफ फिर तवज्जह (ध्यान) न करना पडे । इसके बाद आप आगे बढें । ये बडा अच्छा है के अब आप आ भी रहें है ।

Dr. Varadachari ने वेद के आधार पर बड़ा उमदा (अच्छा) मज़मून (लेख) लिखा है और उसमें divinisation के बारें में अपनी राय ज़ाहिर की थी और मुझसे भी उसके बारे में राय चाही थी । मैंने उनका मज़मून (लेख) और divinisation जो उसी में था, दोनों को मद्दे नज़र (ध्यान में) रखते हुए अपना मारुज़ा पेश (निवेदन प्रस्तुत) कर दिया । अब मैं उसको Mr. Robert Koch के पास Germany भेज रहा हूँ के अगर ओ मुनासिब (उचित) समझें तो German ज़बान (भाषा) में तरजुमा (अनुवाद) करके किसी अपने यहाँ के अखबार (समाचार पत्र) में शायाँ करा (छपने को) दें। इसकी एक नक़ल आपके पास भेज रहा हूँ । Dr. Varadachari के पास पहले ही भेज चुका हूँ। मगर चूँके (क्योंकि) अखबार (समाचार पत्र) में शायाँ कराने (छापने) का इरादा है, लिहाज़ा (इसलिए) इसको और improve कर दिया है । आप चूँके (क्योंकि) philosopher और साधक हैं, इसलिये राय देने के लिये भेज रहा हूँ । इसे अपने पास ही रख लीजियेगा ।

मुझे मीराबाई की फ़िक्र (चिंता) रहती है के कैसे ही ओ अच्छी हो जाती । मास्टर साहब व कस्तूरी और उनकी माँ आये हुए है । लखनौ के भी चंद (कुछ) सतसंगी आये थे और चले गये । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्चः): ये के आपने Hilum Shadow का तरजुमा (अनुवाद), दहर, ठीक दिया है । बेहतर (अच्छा) ये होगा के दहर के आगे bracket में लफ़्ज़ (शब्द) (Hilum Shadow) भी लिख दिया जावे । Ganeshan ने Trichy से ख़त भेजा है के ओ मिशन में फिर आना चाहता है । उस ख़त में अपनी गलतीका अफ़सोस (दुःख) और ख़ता (अपराध) की माफ़ी का ही ज़िक्र (उल्लेख) नहीं है। मैं ख़त आप के पास भेजता हूँ । पढकर अपनी file में लगा लीजिए। इसका जवाब मैं नहीं दे रहा हूँ । और उनको लेना मसलहत (उचित बात) नहीं है । ओ अब receptive भी नहीं है, और न मेरी तबीयत रुजू (मन प्रवृत्त) हो सकती है ।

Seshadri कल रात को घर जाने के लिए Delhi रवाना हो गये। ओ 24 July को अपनी duty resume करेंगे । बडे मुहब्बत के आदमी है ।

हमारे ख़ुतूत (खतों) का एक जगह कर लेना व नक़ल कर लेना अच्छा है। फिर आप जिसको चाहे आसानी से दिखला सकते है । अगर खो भी जाए तो असल आप के पास रहेगी ।

Shri. Shivamohanlal मेरे ख़ियाल को बहुत पसंद करते हैं ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 113 शाहजहाँपुर
No.-F-371-SRCM Date 09.08.1961

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

यहाँ बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) सब ख़ैरियत (कुशल) है । मेरा इन दिनों blood pressure बहुत low हो गया था । अब रफ़्ता रफ़्ता (धीरे-धीरे) ठीक हो रहा हूँ । आपके दोनों ख़त मिल गये। जन्माष्टमी का बरत एक्कुम (एक) September को रहेगा । मैंने आयल रेडडी व श्री. किशनराव और श्री. भीमसेनराव को इत्तलाह (सूचना) दे दी है । आपके ख़त का जवाब देनेसे पहले मैं

अपने मतलब (स्वार्थ) की बात कह दूँ । ओ ये के मैं एक गुंतपंगलू का पात्र चाहता हूँ । सुना है के Bellary में यह पत्थर अच्छा मिलता है । एक, मैं अपने साथ श्री. रामचंद्रराव के यहाँ से लाया था । ओ मैंने बडी लडकी को दे दिया । दूसरा, छोटी लडकी की शादी में देना चाहता हूँ । जो उम्मीद है के इस साल जाडो में हो जावेगी । एक जगह से बातचीत चल रही है । और उम्मीद कवी (काफ़ी) है के हफ्ते अशर में (सप्ताह या दस दिन) हो जावेगी । अगर पत्थर लाने में दिक्कत (अड़चन) पडे, क्यों के दूर का रास्ता है, तो फिर देखा जावेगा ।

मैंने बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) आपको 6 August की 11.30 बजे रात को पहली Ring of Splendour पर रख दिया । आपको घबराहट और परेशानी (व्याकुलता) सिर्फ इसलिए थी के आप आगे जाना चाहते थे । मगर अपने काबूसे (शक्ति) नहीं जा पाते थे । Teacher की सिर्फ यहाँ पर ज़रुरत (आवश्यकता) ला-हक़ (अनिवार्य) है और एक symptom भी higher region में ज़ियादा होता है के आगे न बढने की वजह से घबराहट और परेशानी होती है । तबीयत अभ्यासी की ज़ोर मारती है । मगर ऊपर किसी तरह नहीं जा पाती जब तक के कोई आदमी ऐसा न मिल जावे के जिसको ऊपर के region पर काबू command हो ।

जब गुरु में चेले की फनाइयत (लयावस्था) काफ़ी अच्छी हो जाती है तो गुरु आगे पहुँचानेमें बेचैन हो जाता है, उस वक्त जब के मुरीद (शिष्य) आगे जाना चाहता है मगर नहीं जा पाता । एक सवाल का जवाब, जो हर एक के दिल में उठ सकता है, उसका भी जवाब दे दूँ । वह यह है के, अगर गुरु राहे मुल्क बका (अमरलोक प्रस्थान किया) हो जावे तो चेला higher region में कैसा बढेगा जबके उसको ज़रुरत (आवश्यकता) हो । गुरुका liberation है तो मदद ज़रुर मिलेगी बशर्ते के (यदि), मुरीद ने दीनी (आध्यात्मिक) हालत ऐसी पैदा करली के उसकी आवाज़ गुरु तक पहुँच सके । और गुरु तक आवाज़ उन लोगोंकी जल्दी पहुँचती है जो उससे initiate हो । अलावा (सिवा) इसके सज्जादा नशीन (उत्तराधिकारी) और खलीफा (प्रतिनिधी) - Trainer (प्रशिक्षक) - भी होते है, जो अभ्यासी की ज़रुरत पूरी करते रहते है ।

मुझे बडी खुशी होगी के आप के साथ श्री. वाळवेकरजी और दूसरे लोग साथ आवे । आपको जितना मौक़ा (अवसर) होवे बखुशी

(खुशीसे) खातिर क़ियाम करें (चाहे जितना वक्त ठहरें) और फ़ायदा तो आप अपने साथ ही लाते हैं ।

अपने गुन्हाओंसे (अपराधोंसे) तौबा (पश्चाताप) करके, अगर कोई शख़्स (व्यक्ति) आता है और उसका रुझान (झुकाव) मारिफ़त (आध्यात्मिकता) के तरफ है, तो ले लेना चाहिए मगर आगे गुन्हा (अपराध) न करें । कुछ दिनों तक अगर अपनी गुन्हाओं (अपराधों) की माफ़ी की मराकब: (ध्यान) करें तो वह जल्द साफ हो जाता है । इसमँ गुनाहों के माफ़ी की दुआ और रोना धोना भी शामिल है। कुरान शरीफ में लिखा है (हदीस) के जब कोई बंदा अपनी गुन्हा के माफ़ी के लिये दुआ (प्रार्थना) करता है और रोता है तो मुझे शरम आती है। और मैं उसे फिर अपनाता हूँ ।

साईबाबा की तस्वीर एक साहबने भेजी थी। उसमें उनकी तंदुरस्ती (स्वास्थ्य) और खूबसूरती और मुस्कराहट ज़रुर charming थी। तबीयत भी मुलायम मालूम होती थी । इन बातों को देखकर हर शख्स (व्यक्ति) को उनसे मोहब्बत करने की तबियत चाहती है । मगर रुहानियत (आध्यात्मिकता) के बारे में आपकी राय सही है। "क़बीर सब घर अंधा मैं किसे समझाऊँ" । हम लोगों की निगाह (दृष्टी) वहदत (एक ईश्वर) पसंद (प्रिय) नहीं रही । कुछ environment (वातावरण) ने असर (प्रभाव) डाला, कुछ सोहबत (संगत) ने ख़राब किया । कुछ मगरिबी (पश्चिमी) तहज़ीब (सभ्यता) ने असर (प्रभाव) जमाया, कुछ इन चीज़ो से उभरी थी तो ग़लत तालीम रुहानियत (आध्यात्मिक प्रशिक्षण) ने हमारा काम तमाम कर दिया (नष्ट कर दिया) । असर (प्रभाव) ये हुआ के हम सैंकडो कोस पीछे रुहानियत (आध्यात्मिकता) के जा बैठे ।

अब आपका सवाल रह गया के एक जुर्म (अपराध) की चार सज़ाएँ कैसी ? मैंने चाहा इसको philosophically भी जवाब दूँ । मगर कोई लिखनेवाला नहीं मिला इसलिये सीधे सादे पैरायामें (ढंग) लिख देता हूँ ।

इन्सान (मानव) मांजूने मुरक्कब (एक मिश्रीत वस्तु) है | जब कोई अच्छा या बुरा काम करता है तो दिमाग़ सोचता है और कल्ब (हृदय) तसफ़िया (निर्णय) करता है और इन्सानी आलात (मानवी औजार) काम करना, जिस जिस के मुतअल्लिक (संबंधित) होता है, शुरु कर देते हैं। ये दोनों चीज़ों में दिल (हृदय) व दिमाग़ (बुद्धि) की इआनत (मदद) रही । जिस

आलेने (औजार) काम किया ओ भी मुज़रिम (अपराधी) रहा और चूँके ये जिस्म (शरीर) का एक हिस्सा है, लिहाज़ा (इसलिए) उसकी भी ज़िम्मेदारी रही । बुरा ख़याल सोचा तो गोया, मंडल में उस ख़ियाल का नक्श(छाप) बना दिया । उसकी सज़ा क़ुदरत (प्रकृति) अलग देगी। जुर्म (अपराध) के लिहाज़ (अनुसार) से उसको ख़राब योनी मिले या दोज़ख (नर्क)। जिस हद तक दोज़ख (नरक) में सज़ा मिलनी चाहिये थी मिल गयी । बाक़ी दुनियामें पैदा होकर भोगता है। दिमाग़ को जो काम ख़राब मालूम हुआ और गिलाँ (खेद) हुआ, दिमाग़ को सज़ा । उसका नतीजा ख़राब हुआ यह दिल को सज़ा मिली और society (समाज) ने भी hoot किया। दोज़ख (नरक) नसीब हुई, क़ुदरत (प्रकृति) की सज़ा मिली इसलिये के वायु मंडल ख़राब किया । तीसरी सज़ा जो जिस्म (शरीर) और मुतालिकीन (उसके संबंधितों) को मिली । ग़रज़े के (सारांश यह कि) जो लोग या जो क़ुवाएँ इस्तेक़ाब (इंद्रियाँ) जुर्म (अपराध) में मददगार थे सब को सज़ा मिली। ख़त ख़ुद लिख रहा हूँ, ज़ियादा वाज़ेह (स्पष्ट) नहीं हो रहा है। फिर कोई लिखनेवाला मिला गया तो लिखुँगा ।

देखा जमाले यार तबीयत मचल गयी
आँखो का था क़ुसूर छुरी दिलपे चल गयी ।

बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: डॉ. K.C.V.का ख़त आया था । आपका ख़त बहुत दिनों से वहाँ नहीं पहुँचा । इसलिये ओ आपकी और बच्चों की ख़ैरियत (कुशल) जानने में फिकरमंद (चिंतित) हैं । उन्हे लिख दीजिएगा ।

Sd/Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 114 शाहजहाँपुर
No.-F-466-SRCM Date 22/23.09.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दोनों ख़त मिल गये । आपने नर्तक के लिये जो आयल रेड्डी को लिखा है, ओ ठीक लिखा है । Seshadri जब यहाँ थे, ओ मुझसे कहते थे के उनका तबादिला (स्थानांतरण) मदुरा होगा । सरनाडजी का तबादिला अगर Bangalore हो जाता तो बड़ा अच्छा होता । मैं सरनाडजी के ख़त का जवाब अभी नहीं दे सका । अब दो एक रोज़ में दे दूँगा । सुस्ती और कमज़ोरी, जवाब न देनेकी वजह (कारण) है। श्री. आयल रेड्डी ने जो आपको ख़त लिखा उसकी नकल मुझे भेज दी थी । उनको मैंने जो उनके ख़त का जवाब दिया है, उसकी नकल अपने file में, गौरसे पढकर, रख लीजिए । आज Dr. Varadachari का ख़त आया | ओ सख़्त (बहुत) बीमार है। ईश्वर उनको जल्द (शीघ्र) सेहत (स्वास्थ्य) देवे ।

आपको जो मैंने दुनिया के लिये attract करने के लिये बताया था उसके लिये इतना सख़्त (कठोर) तरीका (विधि / शैली) आप इस्तेमाल (प्रयोग) न करें । बल्के (अपितु), एक हलका तसव्वुर (ध्यान) बाँधे के कुल दुनिया इस मिशन की तरफ attract हो रही है । इसमें अगर तवज्जह (प्राणाहुति) की ज़रुरत (आवश्यकता) है तो ख़ुद-ब-ख़ुद (अपने आप) ओ काम होता रहेगा और न इतनी मेहनत करो के दिल घबरा उठे । जबतक दिलमें तकलीफ़ (कष्ट) है, अपने आपको आराम दो और इस काम को मुल्तवी (रोक) रखो । यह आपको रियाही यानी वायु विकार (Vayu vikar) है | यह किसी रुहानी (आध्यात्मिक) मदारिज (स्थिति) की वजहसे (कारण) नहीं है, इसका आप इलाज करें । अगर कुछ दिनों आप चाँवल बचा सके, तो यह दर्द ख़ुद-ब-ख़ुद (अपने आप) ठीक हो जावेगा । अगर चाँवल न बचा सके, तो कुछ दिनों मूँग की खिचडी मठ्ठे के साथ खावें। इलाजसे गफलत (असावधानी) नहीं करना चाहीये। और तंदुरुस्ती अच्छी रखने की हमेशा कोशिश करना चाहिए | क्यों के आपको अभी बहुत काम करना है । जिसके लिए उम्दा तंदुरुस्ती (अच्छा स्वास्थ्य) होना लाज़िमी (ज़रुरी) है |

आपने ये जो सवाल किया है के मालिक की हैसियत (स्थिति) से किस हदतक effective (प्रभावी) हो सकता है । उसका जवाब तो मैं ये देना चाहता हूँ के बिलकुल (पूरी तरह) effective (प्रभावशाली) होता है और मालिक की हैसियत (स्थिति) लेने से मतलब (अर्थ) यह होता है के मालिक ही काम कर रहा है । राघवेंद्रराव काम नहीं कर रहे हैं, जो सही भी है अगर invertendo (उलट फेर) का मसला (सिद्धांत) लगा लिया जावे तो मालिक बंदा (सेवक) और बंदा (सेवक) मालिक हो जाता है । मतलब ये है के दोनों अपनी हैसियत खो बैठते है और फिर जाने क्या हो जाता है । अगर आप दुआ (प्रार्थना) भी कर सकेंगे तो भी वही बात होगी । तवज्जह (प्राणाहुती) जायेगी और उसको आप रोक नहीं सकते। इसलिये दुआ (प्रार्थना) करना आपके लिये आसान है । बात वही हो जाती है । भाई आप काम करें, मगर ख़ियाल के तेज़ीमें अपना दिल इस क़दर (इतना ज्यादा) न लगा दें, तबीयत घबराने लगे । हलके हलके रुजू होना (ध्यान देना) ज़ियादा असर (परिणामकारक) रखता है । हमें ईश्वर ने दिल व दिमाग़ दिया है । तो इसके लिए थोड़ाही दिया है के उसको मजदूरों की तरह से लगा दे? ख़ियाल के तेज़ी में दिलको हमातन (संपूर्णतया / समग्र) लगा देनेकी वहाँ ज़रुरत पडती है जब किसी सल्तनत (राष्ट्र / शासन) को तह-ओ-बाला (उलट देना) करना होता है । या किसी ख़ित्तेको (क्षेत्र) ईश्वर के हुकम से बरबाद (नष्ट) करना हो । आप कहीं नोट कर लें मुझे याद नहीं रहेगा और जब मैं मिलूँ तो मुझसे पूछ लें के काम में ताकत की utility किस हद तक और कहाँ कहाँ और कैसी करना चाहिए और पूछने की भी ज़रुरत नहीं । जिस काम को आप करेंगे और हलके हलके उस तरफ रुजू (ध्यान देना) होंगे तो उसका असर (परिणाम) जो इस काम के बनाने में हो रहा है, उसको देखने से ख़ुद अनुभव हो जायेगा ।

मुझे जब पेट का दर्द ज़ियादा (अधिक) हो जाता है तो दिल में भी तकलीफ़ (कष्ट) बढ़ जाती है । ओ हवा दिल की तरफ टकराने लगती है । मैं आपको दो दवायें लिखता हूँ जो वाक़ई (वास्तव में) दवायें नहीं हैं बल्के (अपितु) गिज़ायें (आहार) । एक कप पानी गरम कीजिए और उसमें एक नींबू कागजी निचोड़ लीजिए । पानी, चाय के तरीके से गरम होना चाहिए । फिर पी लीजिए । इस तरह दिन में दो एक बार करीए । दूसरा नुस्खा (विधि) जो काशीराम नेचरोपथी में दिल और मेदा (आमाशय / पेट) की ताकत

के लिए दिये हैं ओ ये है और ये खाना खाने के बाद एक तोला के क़रीब पिया जाता है । जितना निंबू का अर्क (रस) हो उतनाही अदरक का अरक (रस) और उतना ही शहद खालिस (शुध्द) मिलाकर रख लीजिए । चूँके (क्योंकि) वहाँ गरमी पडती है, लिहाज़ा (इसलिए) चार-पाँच रोज़ के लिए तयार कर लीजिए और इस्तेमाल (प्रयोग) कर लीजिए । सुबह को एक मील के क़रीब क़रीब बिना नाश्ता और चाय पिये हुवे हलके हलके ज़रा टहल लिया कीजिए । टहलने में अगर तबीयत (मन) न लगे तो गुलाबी को साथ ले लिया करें । मीरा तो इतना चल न सकेगी ।

मुझे आपके दर्द की ज़ियादा (अधिक) फिकर (चिंता) हो रही है। ईश्वर करे के ख़त पहुँचते पहुँचते आपको सेहत (स्वास्थलाभ) हो जावे और एक पोस्ट कार्ड, ख़त पहुँचतेही मुझे अपने हाल का लिख दीजिएगा । मास्टर साहब के हमराह (साथ) मैंने उनकी बीवी को इलाज कराने के लिए बुला लिया है । उनको high blood pressure और anaemia की शिकायत थी। रफ़्ता रफ़्ता (धीरे-धीरे) सेहत (स्वास्थ लाभ) हो रही है। उन्हे एक महिने से कुछ ज़ियादा (अधिक) ही रहना पडेगा। पित्र पक्ष में श्राध्द करने ओ चार- पांच यूम (दिन) के लिए चले जावेंगे । Mr. M.L. Chaturvedi, 3 October से 5 Oct. तक मद्रास में Government के काम से रहेंगे । बंबई का दौरा उनका ख़तम (पूरा) हो गया और कल ओ Calcutta से Delhi वापस आ जावेंगे । हवाई जहाज का सफ़र (यात्रा) है । उडते हुवे चंद (कुछ)घंटो में मद्रास पहुँचेंगे । मैंने कुछ लोगों को मद्रास में लिखा है के उनसे मिलें और सतसंग करें ।

ईश्वर सहाय आप को नमस्ते कहते है । श्री. भीमसेनराव ने लिखा है के ओ ख़ुद, कुछ सेडम और बीदर के लोग, दशहरा की तातील (छुट्टी) में गरीबख़ाने (मेरे घर) पर आवेंगे । बडी ख़ुशी की बात है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 115 शाहजहाँपुर

No.-F-490-SRCM Date 28.09.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

बाद दुआ (आशीर्वाद) के वाज़ेह (ज्ञात / मालुम) हो के मेरा ख़त, जिसमें एक नक़ल, आयल रेड्डी को जो मैंने जवाब दिया था, मिल गई होगी। Dr. Varadachari बहुत बीमार हैं । दस बारा यूम (दिन) से खाना नहीं खाया है । सर में शदीद (तीव्र) दर्द है । और डॉक्टर दाहिनी आँख में glaucoma बतलाते हैं । ओ ख़त नहीं लिख सकते । उनके लड़के, नारायण, तूले उमरहू (दीर्घायु हो), ने लिखा है। ईश्वर सेहत (स्वास्थ्य लाभ) देवे । आप भी उनके सेहत (स्वास्थ्य) के लिए बिला (बिना) नागा (छुट्टी) दुआ (प्रार्थना) करते रहिए ।

एक अहम (मुख्य) ख़बर (समाचार) ये है के एक सतसंगी जो बहुत अच्छे Homeopathic, Mukarji डॉक्टर थे ; और railway में मुलाज़िम (कर्मचारी) थे । अपने ससुराल में मय (साथ) बच्चों के पुरलिया W. Bengal में रुख़सत (छुट्टी) पर थे, वहाँ सुबह 7 बजे तारीख 12 September 61, heart fail हो गया जिससे हम लोगों को दिली सदमा (हार्दिक दुःख) पहुँचा । उन्होनें 4 या 5 लडके छोडे । बडा लडका VIII Class में पढ़ रहा है । उनकी गुज़र (निर्वाह) का कोई साधन नहीं । उनके साले से, जो Matric है और Arts सीख़ रहा है, उम्मीद (आशा) है के नौकरी मिल जाने पर कुछ मामूली (थोडीसी) मदद कर सके । ईश्वर उन सब पर अपनी कृपा रखे और गुज़ारे (निर्वाह) की शक़ल (उपाय) पैदा कर देवे । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 116 शाहजहाँपुर
No.-F-500-SRCM Date 30.09.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त आया। बडी खुशी की बात है के आप अब बेहतर (पहले से अच्छे) हैं । जब आप बिलकुल (पूर्ण) तंदुरुस्त (स्वस्थ) हो जावें, तब आप इत्तलाह (सूचना) देवें ताके मैं भी थोडा थोडा आप पर काम करना शुरु कर दूँ । शुक्र (धन्यवाद) है के मेरी दुआ (प्रार्थना) ने काम किया और इसका हाल भी आपने वैसा ही लिखा है । मेरी दिली आरज़ू (हार्दिक इच्छा) है के नूरचश्मी (बेटी) मीराबाई अच्छी हो जावें । मैं तो उसके लिये बेकार साबित हुआ। वजह (कारण) बता दी थी। मगर उसको फ़ायदा ज़रुर होगा । श्री. वाळवेकरजी का ख़त मेरे पास भी आया था, जवाब दे दिया । ओ बहुत अच्छे आदमी हैं । अच्छा हुआ के आपने मिशनको महाराष्ट्र में फ़ैलानेको लिखा । सरनाडजी धारवाड आ गये । उनको भी ख़त लिख रहा हूँ । आयल रेड्डी का ख़त अपनी file में एहतियातसे (सावधानीसे) रखिएगा । अब ग़ालिबन (संभवतः) ओ ठीक हैं। उनका ख़त आने पर मैं उन्हें एक ख़त और लिखूँगा, जिसके असर (प्रभाव) से ओ आइंदा (आगे कभी) इस बातको सोचे ही नहीं ।

कल मैंने एक ख़त आप के पास रवाना किया है के डॉ. Varadachari को glaucoma का शुबह हो रहा है । मैंने V. Mohanrao, जो आँख के surgeon है, उनको तार देकर तिरुपती भेजा था । उन्होंने जाँच करके तार दिया है, जो अभी मिला, के उनको Glaucoma नहीं है बल्के Neuralgia है । आप दुआ (प्रार्थना) कीजिए और ओ अच्छे हो जावेंगे ।

दशहरा की तातील (छुट्टी) में भीमसेनराव और कुछ लोग बीदर और सेडम के, यहाँ आवेंगे । मास्टर साहब के घरमें, यहाँ इलाज हो रहा था । रफ़्ता रफ़्ता (धीरे धीरे) सेहत (स्वास्थ्य लाभ) हो रही है। वाळवेकर के जिसम (शरीर) के अंदर कुछ खियाली जालसे पडे हुवे हैं । इसकी सफ़ाई की ज़रुरत है । आप ज़रा उस तरफ तवज्जह (ध्यान दें) करें । नरसप्पा का ख़त आया के उनके अफ़सर को उन लोगों ने ऐसे नाख़ुश कर दिया जो नरसप्पा की मातहतीमें (अधीन) काम कर रहे थे और नरसप्पा उनका बडा ख़ियाल रखता था । यह ज़माने की हालत है । अगर यह सही है तो उनसे गुन्हा का कफ़ारा (प्रायश्चित) भी नहीं । नरसप्पा के तीन महिनेसे तनखा (वेतन) नहीं मिली है और ताज्जूब (आश्चर्य) है के

Government का महकमा (विभाग) कैसा जिस में माहवार तनख़्वाह (वेतन) न मिलें । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 117 शाहजहाँपुर
No.-F-509-SRCM Date 03.10.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बाद दुआ (आशीर्वाद) के वाज़ेह (ज्ञात / विदित) हो के श्री. आयल रेड्डी का उस ख़त का जवाब आया है जिसकी नक़ल मैंने आँ अज़ीज़ (आप) के पास भेजी थी । उनको काफ़ी पश्चाताप और शरमिंदगी है । मैं समझता हूँ के आप ने उनको माफ़ कर दिया होगा । अगर ऐसा है तो मुझे लीखिए के आप ने उनको माफ़ कर दिया ताके मैं भी अपना ख़ियाल बदल दूँ । इस बात की जल्द (शीघ्र) इत्तलाह (सूचना) दीजिए । श्री. आयल रेड्डी ने लिखा है के 8 oct 61 को उनका शाहजहाँपुर आनेका इरादा है। इसकी माने दोनों हो सकते है के या तो ओ 8 oct शाहजहाँपुर पहुँचें या ओ इस तारीख को चलें । अब आपकी सेहत (स्वास्थ्य) कैसी है ? उसका हमेशा ख़ियाल रखो । मुझे आपसे बहुत काम लेना है । मैं तो अपनी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य), बीमारी के नज़र (भेंट चढ़ा) कर बैठा । अब मैं बच्चों को तंदुरुस्त (स्वस्थ) देखना चाहता हूँ ताके मेरा जी ख़ुश रहे। नूरचश्मी (बेटी) मीराबाई का कुछ फ़ायदा और बढ़ा होगा। ईश्वर उसको सेहत (स्वास्थ्य लाभ) देवें । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 118 शाहजहाँपुर
No.-F-524-SRCM Date 09.10.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज (आप) का तीसरी Oct का लिखा हुआ ख़त मिल गया और 30/ रुपये का मनीऑर्डर भी | 5/- रुपये मैंने कुमारस्वामी के यहाँ के लिए रख लिये और Rs. 25/- Mr. Mukarji के यहाँ के लिये । आपने अच्छा किया के ऐसे वक्त पर उनको मदद पहुँचाई । इसमें वापसी का कोई सवाल नहीं । मगर ये ख़ियाल ज़रुर होता है के आप की तनख्वाँ (वेतन) इतनी क़लील (थोड़ी) है के ईश्वर ही की कृपासे बच्चों का गुज़ारा (निर्वाह) अच्छी तरह से हो पाता है । Rs. 50/- मैं यहाँ के मिशन की तरफसे भेज चुका हूँ। Rs. 50/ मिशन की तरफसे लखीमपुर से आज चले गये होंगे कल तक मैं भी आपके Rs. 25/- भेज दूँगा । Dr. Varadachari का मदरास से ख़त आया था जो किसी दूसरे से लिखवाया हुआ था । वहाँ की जाँच से भी मालूम हुआ के उनको Glaucoma नहीं है । मगर तकलीफ़ (कष्ट) किसी खास वक्त (समय) में ज़ियादा (अधिक) रहती है और ओ रातमें 11.30 से 1.00 बजे तक । मदरास में चतुर्वेदीजी किसी सरकारी कामसे गये है । मैंने कुछ सतसंगियों को उनसे मिलने के लिए लिख दिया था । चुनांचे (इसलिए) ओ लोग मिले और Dr. Varadachari भी उनके साथ थे । वहाँ सत्संग भी हुआ। श्री. ईश्वर सहाय कल लखीमपुर से, 4-5 दिन वहाँ रहने के बाद, वापस आ गये। उनके घरमें (पत्नी), बगरज़ इलाज (उपचार हेतु) अभी यहीं है । और पहले से इफ़ाका (आराम) भी है । श्री. शिवलिंगप्पा और तीन आदमी और, 8 तारीख सुबह को सेडमसे यहाँ के लिये चल दिए हैं । मुझसे लोग जुनूबी (दक्षिण) हिंद के दौरे का प्रोग्राम माँग रहे है । मगर अभी मैं कुछ नहीं कह सकता इसलिये के छाया की शादीकी जहाँ बातचीत हो रही है, उन्होंने final जवाब दशहरे तक देने का कहा है । उसके बाद सूरते हालत (वस्तुस्थिति) जैसी हो, उसपर गौर (ध्यान में रखते) करके जाने के बारे में तय (निश्चित) किया जावेगा ।

भाई दत्तराज नर्तक के ख़त आ रहे हैं, जो ज़ाहिर (स्पष्ट) करते हैं के ओ मोहब्बत (प्रेम) के साथ अपने आपको अच्छा बनाने और आला (बहुत अच्छी) तरक्की (उन्नति) में लगे हैं । उनके ख़ुतूत (पत्रों) के जवाब मैंने दिये हैं । उनकी नुक़ूल (प्रतिलिपियाँ)

भेज रहा हूँ। File में रख लीजियेगा । Reality at Dawn, का तरजुमा (अनुवाद) Mr. Robert Koch जर्मन ज़बान (भाषा) में जाड़ोंके (सर्दी) मौसम में शुरु करेंगे ।

यहाँ तक तो Reuter की ख़बरें (समाचार) रही। अब जी चाहता है के मैं कुछ अपने दिल की ख़बर (समाचार) लूँ। अब इसका तलाश (खोज) करना आपका काम रहा के ओ कहाँ है। मैं कुछ ऐसा थक गया हूँ और इख्तिसार (संक्षेप) पसंद हो गया गया हूँ के महात्माओंकी हालत (दशा) का इशारा (संकेत) करने के लिये एक ही लफ़्ज़ (शब्द) से दो लफ़्ज़ (शब्द) बना लिये । जब हम किसी ऐसे महात्मा को देखने के लिए जाते है जो वाक़ई (सचमुच) महात्मा है, उसके लिए लफ़्ज़ (शब्द), दर्शन ठीक होगा और ऐसे वैसे हुए यानी पंचकल्याणी [पंचकल्याणी शाईस्ता (शिष्ट) ज़बान (भाषा) में इस्तेमाल (प्रयोग) नहीं होता] ; मगर जिस माने (अर्थ) में यह लफ़्ज़ (शब्द) आता है, ओ ये है, जिसमें हर रंग मौजूद (विद्यमान) है । और महात्मा के बारेंमे तो आपको मालूम है के इसमें कोई रंग नही होता | तो पंचकल्याणी महात्माओंके लिये लफ़्ज़ (शब्द) दरसन ठीक हैं । चुनांचे (इसलिए) मैं यह दोनों लफ़्ज़ (शब्द) दर्शन और दरसन जो जिसके लिये fit है इस्तेमाल (प्रयोग) किया करुँगा । इस लफ़्ज़ (शब्द) की (मसख़रा पन में) strength मर्द और मर्दुवा समझना चाहिये।

आपने जो मज़मून (लेख) भेजा है ओ अच्छा है और सबसे ख़ूबी (विशेष) की बात ये है के आपके लफ्जों (शब्दों) में ज़िंदगी (जान) पैदा हो गयी। श्री. ईश्वर सहाय भी इसे देख लेंगे, ओ ठीक ही है । अपनी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) का ख़ियाल रखो और बादामका छोंका 5 या 7 अदद (संख्या), जैसा मैंने आपको बताया था उसे रोज़ पीते रहिये तो बहुतसी चीज़ें जो दिमाग़ के अच्छा होने के लिये ज़रुरी है इससे मिलती रहेगी। बादाम तोडकर भीगों दी जावे और सुर्ख़ (लाल) छिलका उतारकर उनको बारीक पीस लिया जावें और इसमें 5 या 7 काली मिरच (मिर्च) शामिल कर ली जावें। फिर कढ़ाईमें घी डालकर बादाममें दो या तीन औंस पानी में हल (मिलाकर) करके आग पर पका ली जावे। शक्कर या मिसरी मिला कर सुबह के वक्त इस्तेमाल (उपयोग में लावे) की जावे। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये के श्री. M.D. Jahagirdar का भी ख़त आया । चंद (कुछ) जुमले (वाक्य) मैंने लिख ही दिये, जिनकी आगे नक़ल (कॉपी) किये देता हूँ । इन ख़तों के जवाब देना मुश्किल (कठीन) पड जाता है, जिसमें कोई जवाब देने लायक बात न हो । ख़ौफ़ (डर) की वजह (कारण), खाँ खाँ जवाब इधर उधर से लाकर लिखना पडता है । इसलिये के जवाब न मिलनेपर लोग तक़ाजा (माँग) करते है ।

Sd. /- Ramchandra

आपके ख़त आने से पहले मैं V. Mohan को जवाब लिख चुका था । इसमें भी क़ाबिले जवाब (उत्तर देने योग्य) कोई बात न थी, फिर भी लिख दिया ।

Sd. /- Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 119
No.-F-554-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 31.10.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दो मोहब्बतनामें (प्रेमपूर्ण पत्र) मौसूल (प्राप्त) हुए । एक कार्ड और एक लिफ़ाफ़ा मिला। एक हफ्ते के लिए M.D. Jahagirdar, शंकरराव, रामचंद्रराव पूजार, आयल रेड्डी और शिवलिंगप्पा आये थे । उसके बाद भीमसेनराव और Sharnappa | अब ये सब चले गये । आज आयल रेड्डी के ख़तसे मालूम हुआ के सिद्रामप्पा रायकोड, रामचंद्रराव भूतपुर और कुछ और साहिबान 27-29 तारीख तक शाहजहाँपुर रवाना हो जायेंगे । श्री आयल रेड्डी रायचुर जाएँगे । श्री आयल रेड्डी से गुज़श्ता (बिता हुआ) क़िस्सा (बात) नहीं छेडा । सिर्फ़ इतना कह दिया के श्री. राघवेंद्ररावजी को अपना भाई समझो और उनका हुक्म मेरा हुक्म। बक़ीया (बचा खुचा) जिस हालतपर लाना है उसको बज़रिये (द्वारा) ख़ुतूत (पत्रोंके) लाता रहूँगा। यह सतसंग बढ़ाने के लिए दौड़धूप अच्छी कर रहे हैं। रायकोड के पटेल, कनडी ज़बान (भाषा) के

तर्जुमा (अनुवाद) जो Reality at Dawn का हुआ है, रुपिये देने के लिए तैयार है। Reality at Dawn के दोबारा छपनेके लिए आयल रेड्डी कहते थे के बीदर के दो तज्जार (व्यापारी), मुमकिन (संभव) है, रुपिये देने के लिये तैयार हो जावे। My Vision का तरजुमा (अनुवाद) कानडी ज़बान (भाषा) में ठीक होना चाहिए। और Reality at Dawn का तरजुमा (अनुवाद) भी ऐसा होना चाहिए के ओ पूरे माने (अर्थ) दे जावें और फिर मुझे भी दरयाफ़्त (पूछ) कर लिया जावें। सरनाडजीने कुछ बातें इस किताब के thought की निसबत (बारेमें) मुझसे पूछी थी। मैंने उसका जबाब दे दिया था। उनको कुछ इख़्तिलाफ़ (मतभेद) था । उसका जवाब अब तक नहीं मिला । जवाब आनेपर मैं उनको लिखकर जहाँ जहाँ मैंने इज़ाफ़ा (वृद्धि) किया है, भेजना चाहता हूँ । आप भी उनको लिख दीजिये के इन मामलों को जल्द तय कर लें ताके press के लिए कॉपी तैयार हो जावे ।

आपने Dr. Varadachari को अपनी हालतका expression (अभिव्यक्ति) बहुत उमदा (अच्छा) लिखा है के I am finding myself where I am not (मैं अपने को वहाँ पर पा रहा हूँ जहाँ मैं नहीं हूँ) | इसका मतलब ये है के egoism is almost dead.

मैं इस साल जुनूबी (दक्षिण) हिंद का दौरा (यात्रा) न कर सकूँगा वजह (कारण) ये है के छाया की शादी की जहाँ गुफ़्तगू (बात) हो रही है, उन्होंने Nov. 61 के आख़री हफ़्ते में लड़की को देखकर जवाब देने को कहा है | इन साहब को, जो लडके के असल बाप हैं, मैंने लडकी देखने का मौक़ा (अवसर) दिया । उन्होंने लडकी पसंद की मगर अब इसपर मचले (अड़े) है के उनकी बीवी भी लडकी देखकर पसंद करे। चुनांचे (इसलिए) Nov. के आखीर हफ़्ते में आवेंगे । उनकी बीवी भी लडकी पसंद कर लेगी । तब December में मेरी जानिब (ओर) से पहली रसम (रिवाज) अदा (प्रस्तुत) होगी और ओ January या February में शादी करेंगे। लडका बहुत अच्छा है और बाप भी D.S.P. grade के आदमी हैं । आप दुआ (प्रार्थना) कीजिए के शादी तय (निश्चित) हो जावे । लडकी की शादी overdue हो चुकी है । इस शादी के बाद मैं सब फिकरोंसे (चिंताओंसे) बरी (मुक्त) हो जाऊँगा । दो लडकों की पढाई रह जावेगी, जो चलती रहेगी ।

Shri. Dattaraj Nartak रुहानियत (आध्यात्मिकता) से अच्छी दिलचस्पी (रूचि) रखते हैं । उन्होंने मिशन बढ़ानेके लिए मुझे दरियाफ़्त (पूछा) किया था के क्या ईसाई और मुसलमान मिशनमें लिए जा सकते हैं? क्या ये ज़रुरी है के मिशन में जो आये ओ गोश्त (मांस) खाना छोड़ दें ? अगर यह लाज़िमी (ज़रुरी) है तो मेरा एक दोस्त हरिजन है, उससे मैं गोश्त (मांस) छुडवाकर मिशनमें शामिल कर लूँ । मैंने उसका जवाब दिया है, उसकी नक़ल prefects & preceptors के रहनुमाई (मार्गदर्शन) के लिए भेज रहा हूँ । आप इसकी नक़ल (प्रतिलिपि) एक श्री आयल रेड्डी के पास भेज देवें और एक सरनाडजी के पास । मैं चाहता हूँ के इसकी नक़ल (प्रतिलिपि) सिवाय तालिम कुनिंदगान (प्रशिक्षक) के और किसी को न दी जावे । श्री. भिमसेनराव इसकी नक़ल (प्रतिलिपि) माँगते थे, मैंने मना कर दिया । नहीं मालूम, और सत्संगी इसका क्या interpretation (अर्थ) करें और किस तरह put up (प्रस्तुत) करें ।

आपका जाये क़ियाम (निवासस्थान) central region की पहली ring (वृत्त) पर है। वहाँ की potency (शक्ति) से आप घुलमिल चुके हैं। मगर जब tendency (प्रवृत्ति) दूसरी ring पर जाने की देखूँगा, तब दूसरी रिंग पर बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) पहुँचा दूँगा। जब आगे जाने के लिए tendency develop होती है, कुछ बेचैनी और झुंझलाहट बढ़ती है। जैसा के आप ring पर आनेके पहले तजरुबा (अनुभव) कर चुके हैं। जब इज्तिराबी (व्याकुलता) मुरीद (शिष्य) में बेहद बढ़ जाती है और अगर गुरु उसको आगे न ले जावे, तो गुरु को भी बेचैनी बढ़ने लगती है और ओ बगैर मुरीद (शिष्य) को दूसरी सीढ़ीपर पहुँचाये हुए रह ही नहीं सकता। मगर इसके बतलानेका ये मनशा (अर्थ) नहीं के आप बेचैनीका ख़ियाल बाँधने लगे और झुंझलाहट पैदा कर लें । आजकल दरद शिकम (पेट) मौसम के तबादिले (बदलाव से) के वजह से बहुत बढ़ा हुआ है और उसी दरदके हालतमें ख़त लिख रहा हूँ । जब ज़ब्त (सहन) नहीं होता तो लेट जाता हूँ और फिर ख़त लिखना शुरु कर देता हूँ । इसलिए मुमकिन (संभव) है के अल्फाज़ की (शब्द) बंदिश (रचना) ठीक न ला सकूँ । मतलब (अर्थ) तो अदा (प्रस्तुत) हो ही जावेगा ।

अच्छा हुआ के आप Bijapur चले गये। कुछ सतसंगी, डॉक्टर साहब के असर से (प्रभाव) बढ़ेंगे । मगर स्वामीजी के दरसन आपको न हो सके यह भाग (भाग्य) की बात है। स्वामीजी भी

बेचारे क्या करें। उनके मुरीदें (शिष्य) उनसे मख्खीके तरह चिपके रहते हैं । Public को भी जैसी वह है, वैसेही उनको संत मिल जाते हैं। चूँकि (क्योंकि) तादाद (संख्या) एक कसीर (बहुत) उनके साथ होती है जिसकी वजहसे उनकी क़दर (इज्जत) बढ़ जाती है । अकबर ने क्या खूब कहा है

क़दर दानों की तबीयत का अजीब रंग है आज
बुलबलों को है यह हसरत (खेद) के हम उल्लू न हुए

शाहजहाँपुर में सैलाब (बाढ़) बहुत मामूली था । Patna और लखनौ में बहुत ज़ियादा था ।

मास्टर साहब मय (साथ) अपने अहलिया (पत्नी) के 1½ माह रहे । हकीम के इलाज से फ़ायदा हुआ मगर उमूर ज़रुरी खानादारीके (घर का प्रबंध) वजहसे लखीमपुर जाना पड़ा । औरतों में ममता नहीं छूटती इसलिए उनका हक़ (अधिकार) रुहानियतमें (अध्यात्मिकता) मरदोंके मुकाबिले (तुलनामें) में कम है । मास्टरसाहब अपने लडकेके पास आजकल बरेली है और चंद (कुछ) दिन और रहेंगे । बफ़ज़लहू (ईश्वराकृपा से) मीरा अब रुबा सेहत (स्वस्थ) होगी । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 120 शाहजहाँपुर
No.-F-598-SRCM Date 27.11.1961

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

दोनों ख़त मिल गये । मैं सीतापुर होता हुआ ब तारीख 23 November 61 लखनौ चला गया था और वहाँसे 26 Nov 61 वापिस हुआ । 26 Nov 61 को, 24 Nov 61 का आया हुआ तार मिला । ओ Dr. K.C.V. ने भेजा था के उनकी लडकी पद्मिनी जिसकी हाल ही में शादी हुई थी 23 Nov की रात को वैकुंठबास हो

गई। ईश्वर उनके रुहको (आत्मा) शांती देवे । यह ख़बर सुनकर सख़्त (कठोर) सदमा (आघात) हुआ । आप एक condolence letter भेज दीजिए। मैं उनके ख़तोंका जवाब दे रहा हूँ , और सरनाडके ख़त का भी ; जो इस ख़त के एक या दो दिन बाद मिलेगा । बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 121 शाहजहाँपुर
No.-F-602-SRCM Date 30.11.1961

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़के (आप) दोनों ख़त मिल गये । मैं सीतापुर एक रातके लिए गया था । और फिर दूसरे दिन लखनौ, प्रकाश के साले की शादी में चला गया । Dr Mahendra जो अपने सतसंगी हैं और बहुत अच्छे eye specialist हैं, उनसे मैंने नूरचश्मी (बेटी) मीरा की squint के बारेमें राय ली । उन्होंने कहा कि पहले आँख की exercise कराना लाज़िमी (ज़रुरी) है वरना (अन्यथा) operation भी बेकार होगा और squint develop हो जावेगा । उन्होने कहा के मैं दवासे एक माह में अच्छा कर दूँगा। दवा के साथ आँख की exercise लाज़िमी (ज़रूरी) होगी । Operation भी उन्होने कामयाबी (सफलता) के साथ किये हैं । वहाँ आप का एक पैसा भी खर्च नहीं होगा। श्री. सुरेशचंद्र अब वहीं सीतापुर कालेजमें प्रोफेसर हैं। वहाँ आप जितने दिन चाहें रह सकते हैं ।

श्री. M. D. Jahagirdar का एक ख़त आया है । ओ बडे मोहब्बतके आदमी मालूम होते है । उन्होंने लिखा है, "आज बतारीख 25-11-1961 को आपके चरणोंकी क़सम खाकर, मैं अपनी ज़िंदगी आपको वक़्फ़ (अर्पण) कर दिया हूँ । आजसे ये रुह (आत्मा) और जिस्म (शरीर) आपका है । जैसा चाहिए आप इस्तेमाल (उपयोग) कर सकते हैं । " इनका तबादिला

(स्थानांतरण) Dharwad को होनेवाला है। मैंने जो यहाँ आनेवालों के नाम लिखे थे, उन्हीं नामों में ज़रुर गडबड कर गया । मेरी याददाश्त (स्मरणशक्ति), जिसपर किसी वक्त नाजाँ (गर्व) थी , chloroform के असर (प्रभाव) से बहुत खराब हो गई है । नाम तो याद ही नहीं रहते मगर खैर (अच्छा) मालिक का शुक्र (धन्यवाद) है कि अपना नाम नहीं भूलता ।

श्री. सरनाडजी का ख़त आया था जो बजिन्सिही (बिल्कुल वैसा ही) मय (साथ) जवाब के भेजा जाता है। ताके सरनाडजी जब आपको मिले तो आप मुनासिब (उचित) तौर (रूप) पर समझा सकें । जब उनका ख़त मिला तो पहला ख़याल मुझे भी यही आया कि ऐसा न हो के सरनाडजी, साईबाबा की तरफ झुक जावे। असलमें विनीतजी के मकान में मुझे उनका रहना पसंद नहीं आया। वहाँपर मिशनका काम ओ अगर करें, तो आज़ादी (स्वतंत्रता) से न कर सकेंगे। मगर जब मकान नहीं मिला तो मजबूरी (विवशता) थी। अब उनको जब मकान खातिरख्वाह (मनपसंद) मिल जावे तो बदल लेना चाहिये। सरनाडजी की अकलमंदी (होशियारी) तो यही होगी के उनको मिशनमें फिर convert कर लें और मिशनकी teachings और मक़सदे ज़िंदगी (जीवन का ध्येय) हासिल (प्राप्त) करनेका तरीक़ा (पद्धति) बारबार सामने रखें ।

भाई, मैं miracles कहाँसे लाऊँ । उस तरफ तवज्जह (ध्यान) ही नहीं रही । आप लोग जब चाहते हैं, तो कोई बात ऐसी हो जाती है। हालाँके (यद्यपि) मेरे गुरू महाराजने यही कहा है के तुममें miracles करने की ताकत (शक्ति) मौजूद (उपलब्ध) है । जिसपर मेरा पूरा यक़ीन (भरोसा) है । मगर उस तरफ तबीयतही (मन) नहीं । दूसरे, हमेशा teachings ही लोगोंको attract कर सकती है । Christ उम्रभर miracles दिखलाते रहे मगर अपने उमरमें कुल 12 चेले (शिष्य) बना सके । उनमें से एक ऐसा वफ़ादार (इमानदार) निकला कि जिसने उनको सलीब (सूली) दिलवाई । उनके ज़िंदगी के बाद उनकी teachings ने कुल दुनिया को रागिब (आकर्षित) कर लिया । यह ज़रूरी है के उस वक्त ईसा को मदद यह भी मिली के हिंदु लोग समंदर पार करना मज़हब (धर्म) के ख़िलाफ़ (विरुद्ध) समझते थे ।

एक बात मैं कह ही डालू के मैं गुरू महाराज की बख़्वाहिश (इच्छानुसार) और मेहेरबानी से जो miracles कर सका हूँ, मौजूदा (इस) वक्त में कोई न कर सका । मगर उसको जान कौन सकता है,

ओ जिसकी आँखे हो और भाई, क़ुदरत (प्रकृति) के काम के लिए मैं ऐसा करने से मजबूर (विवश) होता हूँ । अगर साईबाबा की तालीम (प्रशिक्षण) क़ुदरत (प्रकृति) के काम में हारिज (बाधा) हुई तो यक़ीन (निश्चय) समझिए के वह तीन मिनिट में miracle करने की ताक़त सब ग़ायब (लुप्त) हो जावेगी । और ये इतनी सहल चीज़ है कि आप भी दमज़दन (क्षणभर) में कर सकेंगे । मैं भी उनके दरसन करना चाहता हूँ । मगर ख़ुदा जाने पुटपर्ती मेरे स्टेशनोंसे कितनी दूर रह जाती है । ख़ैर (अस्तु), यह सब वक्त की बात है ।

सतसंगी भाईयोंने मुझे दरख़्वास्त (निवेदन) की है कि मैं जुनूबी (दक्षिण) हिन्द का दौरा (यात्रा) ज़रुर करुँ । मैंने उनके धारस के लिए लिख दिया है के बसन्त पंचमी उत्सव के बाद मैं सोच कर लिखूँगा। श्री. दत्तराज के बारे में डॉ. Kulkarni की राय सही मालूम होती है। मगर ऐसा करते करते अगर दिलमें लग गई तो रास्तेपर आ जावेंगे।

Reality at Dawn मेरी समझमें सत्योदयम ही रखना अच्छा रहेगा। जब एक किताब के नाम का तरजुमा (अनुवाद) अच्छा मौजूद है तो वही मुख़तलिफ़ (भिन्न भिन्न) ज़बानों (भाषा) के तरजुमे (अनुवादमें) में इस्तेमाल (प्रयोग) किया जा सकता है । My vision का तरजुमा (अनुवाद) भविष्यवाणी अच्छा मालूम होता है और मतलब (उद्देश्य) यही है । एक सतसंगी ने उस का तरजुमा (अनुवाद) अन्तरदृष्टि भी बतलाया है मगर यह इतनी अच्छी मानें (अर्थ) नहीं देता । मैं, सरनाडजीने जो तरजुमा (अनुवाद) किया है उसको विनीतजी के तरजुमें (अनुवाद) से अच्छा समझता हूँ । आप दोनों तरजुमे (अनुवाद) देख लेवें ।

विनीत रामचंद्रारावसे परमिशन की युँ (इसलिए) ज़रुरत मालूम नहीं होती के उन्होंने मेरी इजाज़त (अनुमति) से कानडी ज़बान में तरजुमा (अनुवाद) अपने ' प्रदीप ' में छापा है और तरजुमा (अनुवाद) श्री. सरनाडजी करके भेजते रहे । जिनको ख़ुद मैंने इजाज़त, तरजुमा (अनुवाद) करने की दी थी । अब शुक्रिया (धन्यवाद) उनका इस पैरायामें (तरह) अदा (प्रस्तुत) किया जा सकता है के Editor मॅगजीन ' प्रदीप ' बहुत ख़ुशीसे मेरे तरजुमें (अनुवाद) को छापते रहे है । और ये बात आपस में discuss भी कर लेना। उसके बाद जो तय (निश्चित) पावे यहाँ भी discuss हो जावेगा।

आपका एहसास (अनुभव) जो अपनी हालत (आध्यात्मिक स्थिति) का है ओ सही है । Shri. Valvekar जी ने constant remembrance के बारेमें पूछा है । मैंने यही मुनासिब (उचित) समझा के मैं उनको लिख दूँ के आप से यह बात समझ लेवें ।

आप अपनी आँखोंकी की बिनाई (दृष्टी) बढ़ाने के लिए अगर अरकमुंडी, जो हैद्राबाद में मिल जावेगा, हमराहे (साथ) शहद इस्तेमाल (उपयोग) करें तो बहुत मुफ़ीद (फायदेमंद) पडेगा । दर्जा (श्रेणी) अव्वल (प्रथम) यानि कशीद (अर्क) की पहली बोतल मिल जावें तो निस्फ (आधा) छटाक हमराहे (साथ) शहद ख़ालिस (शुद्ध) एक तोला बवक्त सुबहा काफ़ी होगा । कदरे (कुछ) यह अरक ठंडा होता है इसलिए यहाँ गरमीयोंमे इस्तेमाल (प्रयोग) किया जाता है । यह दिल व दिमाग़ को भी तरावत (ठंढक) बख़्शता (देता) है ।

Dr. Varadachari का ख़त अभी मौसूल (प्राप्त) हुआ । उनकी लडकी पद्मिनी की मौत, बिच्छू काटने पर हुई। घर में कोहराम (मातम) मचा हुआ है । किसी को सबर (संयम) नहीं आता । ईश्वर सबको सबर (धैर्य) अता (प्रदान) करे । वाक़ई (सच भी) यह बडे सदमें (आघात) की बात है । मैंने इसकी इत्तलाह (सूचना) आप को बज़रिये (द्वारा) पोस्टकार्ड दी थी । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 122 शाहजहाँपुर
No.G-5-SRCM Date 04.01.1962

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के ख़त (पत्र) सब मिल गये। मगर मैंने ज़वाब (उत्तर) इसलिए नहीं दिया के आप operation में होंगे । और ख़त (पत्र) मुमकिन (संभव) है के आप न पढ़ें और इसलिये इज्तराबी (बेचैनी) पढ़ने के लिये बढ़े । Shri. Dattaraj की तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) बहुत ख़राब (बिगाड़ा हुआ) है। और उन्होंने लिखा है कि उसकी वज़हसे (कारण) बहुत फ़िक्र (चिंता) रहती है । मैंने भी लिखा है कि मेरी तंदुरुस्ती बहुत ख़राब है मगर मुझे फ़िक्र (चिंता) युँ (इसलिए) नहीं रहती कि आप लोगों को मेरी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) की फ़िक्र (चिंता) है । उन्होंने surrender करना अपने आपको लिखा था, इसलिए मैंने लिख दिया। मतलब (अर्थ) उसके न समझे होंगे । यह जुमला (वाक्य) पुरमाने (अर्थपूर्ण) है । श्री. चनबसप्पा अब तक नहीं आए । मुमकिन (संभव) है ओ वापिस चले गये होंगे ।

मैंने डॉक्टर को consult करके लिखा था के आँखों की exercise (व्यायाम) ज़रुरी है । और बाद में operation, नहीं मालूम वहाँ के doctor ने आपको बतलाये या नहीं। मीराबाई बच्ची है वरना अगर exercise (व्यायाम) आँख़ की कर सके तो अभी सिर्फ़ उसीसे ठीक हो सकती है ।

आपने सरनाडजी को समझा दिया, अच्छा हुआ और आपके समझाने का असर (प्रभाव) भी पडा जैसा के उनके ख़तसे साबित (प्रमाणित) हुआ । उन्होंने state of realization और Sahaj Marg के तरीके पर किसी अख़बार Kanerese में कुछ देना चाहा और मुझे लिखा के आप अंग्रेजीमे लिखा करें । मैं अंग्रेजी बहुत ही कम जानता हूँ । हाँ इतना ज़रुर है की गुरु महाराज आबरु (लाज) रख लेते हैं । उनका कहना करना ही पडा और मैंने उनको भेज दिया और उसकी नक़ल आपके मुलाहिज़े (देखने) के लिये भेजता हूँ । पढ़कर अपने file में रख लेना । मुमकिन (संभव) है आप की speech के लिये भी कुछ matter मिलें। ज़रा गौर (ध्यान दे) कर के बिला (बिना) जानिबदारी (पक्षपात) अपनी राय से आगाह (सूचित)

करना । अगर आप की राय में ठीक हो तो जिस को चाहे आप दिखा सकते हैं ।

बडी ख़ुशीकी बात है के आप एक्कुम (एक) January 62 में क़रीब 11 बजे रात को गुरु महाराज की कृपासे दूसरी ring पर पहुँच गए। रुजहान (झुकाव) आप का दूसरी ring पर जाने का हो चला था। मुबारक (बधाई) !

इस साल बसंत पंचमी उत्सव 9 फरवरी 1962 को है । छपे हुए फार्म अक़ब (बादमें) से भेजे जावेंगे । आयल रेड्डी के पास 100 ग़ालिबन (संभवत:) कापी होंगे। आप की दुआ (प्रार्थना) का असर है के नूरचश्मी (बेटी) छाया की शादी (विवाह) तय (निश्चित) हो गई । तारीख अभी मुक़र्रर (निश्चित) नहीं हुई । बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 123 शाहजहाँपुर
No.-G-18-SRCM Date 07.01.1962

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बसंत पंचमी इस साल 9 फरवरी 1962 को है । उत्सव 8 फरवरी 1962 , 6:30 बजे सुबह से 10/2/62 सुबह 7:30 बजे तक रहेगा । जो भाई शरीक (शामील) न हो सकेंगे, आप के यहाँ वक्त (समय) मुक़र्ररा (निश्चित) पर बैठ लेवें । मैं 25 invitation card बज़रिये (द्वारा) book - post भेज रहा हूँ । आप सिर्फ़ (केवल) Bellary और Hyderabad के सतसंगियोंको जारी करें (भेजें) । बाक़ी मैंने 100 Ayal Reddy के पास भेज दी है । ओ सब जगह जारी (भेजेंगे) करेंगे और सरनाडजी के पास ओ ख़ुद, और जागीरदार के पास मैं भेज दूंगा और विनीतजी के पास भी एहतियातन (सावधानी के दृष्टिसे) भेज दूँगा । श्री. Valvekar जी को आप भेज देवें और रामकृष्णराव को और अपने वालिद माजिद (पूज्य

पिताजी) को भी आप ही भेजें । और जिसको मुनासिब (उचित) समझें, आप भेज देवें ख्वाँ (चाहे) ओ सतसंगी हो या नहीं । यहाँ सर्दी (ठंड) इन्तेहाई (चरम सीमापर) थी । कानपुर और अलाहाबाद में temperature below freezing point हो जाता था । अब ओ शिद्दत (तीव्रता) नहीं है । ताहम (फिर भी) सरदी (ठंढ) ज़ियादा (अधिक) है । Dr. KCV जी Jaipur 17 Jan. को जा रहे है। और एक रोज़ के लिये यहाँ भी आवेंगे । मैंने उनको लिखा है के अगर मज़बूरी (विवशता) न हो तो सरदी (जाड़ों) में सफ़र न करें । बच्चोंको दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 124 शाहजहाँपुर
No.G-28-SRCM Date 08.01.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

ईश्वर का शुक्र (धन्यवाद) है के उसने मेरी दुआ (प्रार्थना) कुबूल (स्वीकार) कर ली । मैं हिरासाँ (निराश) था के अब तक आप औलाद नरीना (पुत्रप्राप्ति) से बहरावर (लाभान्वित) नहीं हुए । ईश्वर करे बच्चे की उम्रदराज़(दीर्घायु) हो और जच्चा (माँ) और बच्चा बख़ैरियत (कुशल) रहे ।

कल ही एक ख़त और 25 अदद (संख्या) निमंत्रण पत्र बज़रिये (द्वारा) बुकपोस्ट Hyderabad व Bellary व श्री. वाळवेकरजी को भेजने के लिये रवाना किये, मिल गये होंगे । तारीख उत्सव 8 Feb 62 से 10 Feb 62 रहेगी। कुमारस्वामी भी आ रहे हैं । उनकी बीवी बीमार हैं । अब कुछ सुधर रही है । मैंने 100 अदद (संख्या) श्री. आयल रेड्डी को सब जगह आपके branch में भेजनेको लिख दिया है । आप कोई ज़रुरी (आवश्यक) हिदायत (सूचना) अगर चाहें तो उनको भेज सकते हैं। ओ ख़त (पत्र) भी मिला होगा, जिसमें श्री. सरनाडजी के लिये मज़मून(लेख) मैंने भेजा है । गुलाबी को भाई की ख़ुशखबरी (शुभ समाचार) सुनकर बहुत खुशी

हुई होगी । उस को मिठाई ख़िलाना चाहिए। मीरा तो अभी बच्ची है। ईश्वर सब को खुश रखे । बच्चों को दुआ(आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 125 शाहजहाँपुर
No.G-95-SRCM Date 23.01.1962

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) नविश्ता (लिखा हुआ) 15 Jan. 62 मौसूल (प्राप्त) हुआ । नूरचश्मी (बेटी) छाया की तारीख शादी 8 March 62 मुक़र्रर (निश्चित) है। अब यह कुल ज़माना (पूरा समय) काम की मसरुफ़ियत (व्यस्तता) का है। इस शादीसे कुछ nervous (आशंकित) सा हो जाता हूँ । वजह (कारण) यह के लडके के वालिद (पिता) कुछ अंग्रेजी टाइप के आदमी है । पाबंदी (समय की नियमबध्दता), औक़ात (मान, मर्यादा) और उसी लिहाज़से (अनुसार) ख़ातिरदारी (आतिथ्य) चाहते हैं । वैसे बजाए ख़ुद (स्वयं) ओ माकूल (सभ्य) आदमी है । गो (यद्यपि) उस जातेपाक (ईश्वर) से उम्मीद (आशा) है के आप के दरवाज़े पर आते ही वह बात नहीं रहेगी । आप दुआ (प्रार्थना) कीजिये के यह कारे-खैर (शुभ-कार्य) खुश उस्लूबी (भद्रता) से अंजाम (संपन्न) होवे ।

मुझे बज़ाहीर (स्पष्ट रूपसे) अगर किसी कमजोरी का एहसास (अनुभव) होता है तो कम पढ़ा होना । इसलिये मैं क़ाबिल (विद्वान) साथियोंसे राय लेता हूँ के मज़मून (लेख) ठीक है या नहीं । इसलिये के गैर लोग जब उसको पढ़े तो ख़राब (बुरा) impression (प्रभाव) न ले जावें । बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) जो लिखता हूँ उसकी सदाक़त (सत्यता) में शक (संदेह) नहीं होता । Quotations मेरे पास ज़रुर नहीं है। इसलिये मज़मून (लेख) को बढा भी नहीं पाता । अब आपने इसको पसंद किया है तो अब ज़रुर

अच्छा है । एक बात ये भी है के मज़मून (लेख) कैसी ही अच्छी कलमसे निकल जावे ओ मुझे बहुत मामूली (साधारण) और घटिया (कमतर) मालूम होता है । इसलिये के मैं अब आपकी, Dr. Varadachari, Babu Suraj Prasad, Babu Shivmohanlal, Sarnad वगैरा की आँखे देख चुका हूँ। और मैं बडा ख़ुशक़िस्मत हूँ के ऐसे लोग सत्संग मे मौजूद हैं । मगर भाई, शुक्र (धन्यवाद) है गुरु महाराज का, के आपने मुझमें experimental knowledge में कोई कसर (कमी) नहीं छोडी । यह सब आप ही की तारीफ़ (प्रशंसा) है और मेरी तारीफ़ (परिचय) ये है जैसा के मैं ऊपर बयान कर चुका हूँ के पढे लिखों के सामने अबजद खान (मुब्तदी) (नौसिखिया) हूँ । या बस, पढे लिखोंके सामने दस्तख़त (हस्ताक्षर) कर लेता हूँ । श्री. सरनाडजी को भी मज़मून (लेख) पसंद आया होगा । मैंने invitation विनीत रामचंद्रराव को भी भेज दिया था ।

यह सैय्यारे या सितारे जो मिल रहे हैं उनसे लोग यहाँ और वहाँ बहुत ख़ायफ़ (भयभीत) हैं । किसी मुसलमानसे पूछिये तो ओ यही कहेगा के जो ख़ुदाकी मर्ज़ी (ईश्वरेच्छा) है वही होगा। यह हमारा ईमान (विश्वास) और यह मुसलमानोंका। असल (वास्तव) में हमलोग बहुत गिर चुके हैं, जिस क़ौम में भरोसा (विश्वास) जाता रहा और खौफ़ (डर) पैदा हो गया। Dattaraj जो surrender कर चुके हैं, एक हँसीकी बात है, लिखते हैं की मुझे उन ग्रहोंके असर (प्रभाव) से बचायें । मैं जब अपनी हिफ़ाजत (बचाव) ख़ुद नहीं करना चाहता, तो किसकी कर सकूँगा ? जितनी panic है उस हदतक सितारे मिले भी नहीं है । काश, कि ये सब अच्छी तरह मिल जावे तो एक operation सख़्त (कठोर) तो हो जाता । कभी तबीयत घूम गई तो उसके बारे में लिखूँगा । यहाँ महात्मा लोग ग्रह शान्त करने के लिए हवन और यज्ञ कर रहे हैं । मैं समझता हूँ के ग्रहों के असरात (प्रभाव) बजाय शान्त करने के ओ ख़ुद हम पर ला रहे हैं । इसलिये पीपों घी आग के नज़र हो रहा है, जो हमारे बच्चों के काम आता । यह सिर्फ़ शोहरत (प्रसिद्धी) पसंदी है । और हमारी तरफ जो महात्मा उरुज (ऊँचाई) हासिल करना चाहते हैं, तो ओ पहला काम यही करता है के एक माह तक चोबीसों घंटे हवन करता है । इनमें कम education होने की वजह से और ख़ुदग़रज़ी (स्वार्थ) की वजहसे, Hindustan की economic condition को बजाय सुधारने के, ख़राब करते हैं । और हमारे यहाँ की public भी ऐसी

है के इन बातोंसे उनकी शोहरतमें (प्रसिद्धी) चारचाँद लगा (बढ़ाना) देती है ।

S.R. Mukarji के family को मैंने यहीं रोक रखा है; दो बच्चे और उनका एक साला यहीं है । और दो बच्चों को मैं बसंत पंचमी के बाद बुला रहा हूँ । बच्चे बांगला नहीं जानते इसलिए उनके पढ़ानेका यहीं कहीं इन्तज़ाम (व्यवस्था) करना है । साले को भी नौकरी मिल जावेगी । Bus service की interview में बमुश्किल तमाम (बहुत कठिनाई से) आ चुका है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः श्री. शिवमोहन लालका ख़त आया है । उनको eczema एक्जिमा की शिकायत बहुत बढ़ गई है । और पेट में दर्द भी रहता है ।

अबकी बहुत सख़्त पाला (हिमतुषार) गिरने से 15 बिघा आलू जो मैंने बोये थे सब ख़राब हो गये । पत्तियाँ और शाखें सब मुरझा गये और यह सब लोगोंका बैंगन और मिरचे सब जाते रहे और कसीर (बहुत) नुक़सान (हानी) हुआ ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 126 शाहजहाँपुर
No.-G-139-SRCM Date 02.03.1962

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त मौसूल (प्राप्त) हुआ । बच्चे के नाम के लिये जैसी बुजुर्गोकी (बड़ोंकी) राय हो, ठीक है । अब शादीके दिन बहुत क़रीब हैं क्यों के 8 March मुक़र्रर (निश्चित) है । मास्टर साहब काम की देखभाल कर रहे हैं और ओ क़रीब 10 यूम (दिन) से यहीं मुक़ीम (ठहरे हुए) हैं । हमारे हाथ पैर तो चलते ही नहीं । लेकिन mind ज़रुर काम कर रहा है । आप दुआ (प्रार्थना) कीजिये ये काम ख़ुशउस्लूबी (भद्रता से) अंजाम (संपन्न) पा जावे । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 127 शाहजहाँपुर
No.-G-154-SRCM Date 21.03.1962

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दोनों मसर्रतनामे (हर्षपूर्ण पत्र) मिल गये । पार्सल जिसमें एक साडी और Rs.20/- थे, ओ भी मिल गया । और रुपिया जिस हिसाबमें भेजा था उसी में लिया गया ।

शादी आप लोगोंकी दुआसे (आशीर्वाद से) ख़ुशउस्लूबी (भद्रता) से अंजाम (संपन्न) हुई । ईश्वर करे लडके और लडकी ख़ुश (प्रसन्न) व खुर्रम (हर्षित) रहे । श्री. आयल रेड्डी व गोपालराव शादी में शरीक (शामील) हुए और उन लोगोंने काममें बहुत मदद दी । श्री. राजगोपालन भी देहलीसे आये और शरीक हुए ।

श्री. Gopalrao जबसे आये initiation के ख़यालात (विचार) दिल में गूंज रहे थे । हत्ता (यहाँ तक) के Gopalraoji ने यह सवाल उठा ही दिया । ओ दीक्षाके क़ाबिल (योग्य) भी थे मगर मेरे लिए यह एक मुश्किल (कठीन) बात पड गई के एक को दीक्षा दी जावे और दूसरे को न दी जावे । मजबूरन (विवश होकर) दोनोंको initiate करना पडा । मुझे इन दोनों के बारें मे और ख़ुसूसन Ayal Reddy के बारें में आपसे दरियाफ़्त (पूछ) कर लेना चाहिये था । जबके हर बात उनके बारे में आपके राय से की गई मगर मौक़ा (अवसर) न था । पस (अंतत:) दोनोंको 15 March में कर लिया । Ayal Reddy का अंदरुनी system अभी दीक्षा देने के लायक न था । मगर faith क़ायम है तो ठीक हो जावेगा । Ayal Reddy Rs. 700/- किताबोंके छपाने के लिये दे गये और Rs. 150/- उनके पास जमा है। इससे श्री. ईश्वर सहाय की किताब, जो तयार है, छपवा दी जावेगी । इसके बाद Reality at Dawn, जो ख़तम हो गई है, उसपर गौर (विचार) किया जाएगा । और फंड्स आनेपर छपवा दी जायेगी ।

आप के वालिद माजिद (पूज्य पिताजी) वाक़ई (सचमुच) मुझ से मुहब्बत रखते हैं । इस याद आवरीका (याद करनेका) शुक्रिया (धन्यवाद)। किताब का तरजुमा (अनुवाद) जिस प्रेस में ख़र्चा कम पडे उसमे ही देना चाहिए, मगर छपाई अच्छी हो । और proof दो मरतबे (बार) लेना चाहिए और proof गौर (ध्यान) से देखना चाहिए । और जब कुल (पूरी तरह) सही होकर परचा (कागज़) मिल जावे तो छापने को देना चाहिये । Blocks वहीं बनवाये जावें और मैं अपना coloured photo भेजना नहीं चाहता । पटेलसाहब के पास रुपये तयार हैं और ओ हर वक्त मिल सकता है । आप आयल रेड्डी को लिख दीजिए । मगर उनसे उतनाही रुपया लिया जावें, जितना किताब के लिये ज़रुरी हो ।

श्री. सरनाडजी का ख़त आया है । अभी मैंने ज़वाब नहीं दिया । उनमें grossness बढ़ी हुई है । आप अपना कुछ वक्त दें, देकर साफ कर दें और उनसे हाल मँगवाते रहें । इबारत ख़त (ख़त की लिख़ाई) हस्बे जैल (निम्नलिखित) है ।

"The onslaught of evil ideas is becoming too unbearable. Faith in spirituality itself is shaking owing to the absence of abiding experience."

बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) दोनो लडकियोंकी शादी हो गई और फ़िक्र (चिंता) दूर हो गई। अब मैं मिशन का काम ज़ियादा करना चाहता हूँ। मगर सुस्ती जाती ही नहीं। दुआ (प्रार्थना) कीजिये के मैं तेज़ हो जाऊँ। Shri. Rajgopal, Selam सहजमार्ग philosophy पर जुनूबी (दक्षिण) हिंद में जगह-ब-जगह लेक्चर देना चाहते है। उन्होंने लिखा है के आप लोगोंको इत्तिला (सूचना) दे देंवे। आप भी ख़ास ख़ास जगह लिख दीजियेगा। उनका पता हसबे जैल (निम्नलिखित) है।

Shri. V. Rajgopal M.A., Salem Junction, Salem.

बच्चोंको दुआ | (आशिर्वाद)

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 128 शाहजहाँपुर
No.G-184-SRCM Date 11.04.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मर्सरतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला। माधवरावजी तो अपनेही है फिर अपनानेका सवालही क्या। उनके ख़तसे, जो अच्छा हुआ के आपने भेज दिया, यह ज़ाहिर होता है के बहुत emotional हैं । Emotional होना कोई बुरी बात नही, हाँ यह जरूर है के बागडोर (नियंत्रण) दिलसे नही छूटना चाहिए। मगर उनके case में यह जरूरी है के emotion कुछ सम हालत में ले आना चाहिए। इसलिये आप उनके विचारोंको और जो उभार (उत्तेजना) ज़रुरत से ज़ियादा पैदा होता है रफ़्ता रफ़्ता (धीरे धीरे) निकालते रहीए । मुझे जब ख़याल आया तो मैं भी यही कर दूँगा । ओ आदमी बहुत मुहब्बती और अच्छे हैं ।

आप रंगीन फोटोको छोडकर जिस फोटोका चाहे block बनवा लीजिये । मगर मेरी यह भी ख़्वाहिश (इच्छा) है के जिस फोटो का

block बनवाया जावे उस में हार गलेमें पडा न होना चाहिये । सरनाड का एक ख़त मेरे पास आया था जो गीता के एक श्लोक के बारे में था के ओ इसका मतलब (अर्थ) नहीं समझे हैं । उसमें लिखा था ।

"I have doubt in Bhagawatgita in VII Chapter, 11th verse, the Lord says that he is sexual urge or passion unopposed to Dharma, in beings. Kindly explain how passion can be made Dharmic or unopposed to Dharma. The commentators explain that, "sexual urge or passion or lust is Dharmic which finds satisfaction in one's wife and that too with the motive of begetting offsprings". Naturally if this motive of begetting children, is not there the coitus becomes a sinful act. I am ashamed to admit that I have committed this sin and that is pricking me very much."

मैंने इस आखरी जुमले (वाक्य) का जवाब तो दिया नहीं, मगर कृष्ण भगवान का गीता में कहने का जो मतलब (अर्थ) था, जो मेरी समझ में आया, मैंने लिख दिया । उसकी नकल आप के पास भेज रहा हूँ ताके फाईल में रख लें । मुमकिन (संभव) है किसी वक्त काम आवे । Dr. Varadachari Jaipur आये हुए हैं। दो यूम (दिन) को शायद 12 तारीख या 13 तारीख को यहाँ भी आयें । आप अपने सफरसे वापस आ गये होंगे । मैं मई में आसाम जाने का इरादा (विचार) कर रहा था; मगर अब मुमकिन (संभव) नहीं मालूम होता । इसलिये के श्री. रामदासजी, जो वहाँ के खास (मुख्य) आदमी हैं, बक्सर में एक मिल, अपनी क़ायम (स्थापित) कर रहे हैं । जिसमे दो या ढाई महिने से कम न लगेगा । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 129 शाहजहाँपुर
No.G-218-SRCM Date 03.05.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मर्सरत नामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला । Sidramappa ने किताब का canarese में तरजुमा (अनुवाद) करने के लिये कहा था । और वायदा (वचन दिया) किया था के उसकी कुल छपाई देंगे । और ओ तयार भी हैं । ऐसी हालत (स्थिति) में उनसे लेने में कोई हरज (हानि) नहीं । किताब के title page पर emblem ज़रुर होगा । मैंने ये Sarnadji को भी लिख दिया है । आप के पास जो Rs. 22/- magazine के जमा हैं, ओ आप अपने पास रखें । जब ज़रुरत होगी मंगवा लिये जावेंगे ।

Dr. Varadachari दो यूम (दिन) के लिये आये थे । मुमकिन (संभव) है ओ एक माह के बाद फिर आवें । ओ Government के तरफ से बुलाये गये हैं । श्री. भीमसेनराव व रामचंद्रराव और मधुकरराव एक्कुम (एक) मई को आये हुए हैं । और 6 मई को वापस जावेंगे । अबकी उनका ज़ियादा (अधिक) क़ियाम (ठहरना) न हो सका । इसलिए के भीमसेनराव के लडके की शादी 18 May को है । अच्छा हुआ के आप कुछ station का दौरा कर आये । इसमें सतसंगियोंको तेज़ी पकडने के लिए एक तरहका injection लग गया । छाया, कल अपनी ससुराल जा रही है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 130 शाहजहाँपुर
No.G-234-SRCM Date 23.05.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुझे आप का एक लिफ़ाफ़ा मो. (दिनांक) एक्कम (एक) मई 1962 और दूसरा postcard 18 May 62 का मिला | K.C.V. दोबारा 20 मई को यहाँ आये और कल चले जायेंगे । उनके पास क़िबला (पूज्य) लालाजीसाहब का फोटो block मौजूद (उपलब्ध) है । उनको, सरनाडजी का पता दे दिया है। ओ 28 May को तिरुपती पहुँचने के बाद block वहाँ भेज देंगे । मैंने Sarnadji को भी इत्तिला (सूचना) दी है ।

मुझे रामकिशन के वालिद (पिताजी) के स्वर्गवास हो जाने का रंज (दुःख) हुआ । ईश्वर उनके रुह (आत्मा) को शान्ती दे ।

`अनंत की ओर ' का अंग्रेजी तरजुमा (अनुवाद) हो गया है । मगर अभी छपा नहीं है, जो मैं भेज देता । बडी ख़ुशीकी बात है के आप अगस्त में आ रहे हैं । मैं सप्टेंबर में आसाम जाने का इरादा (विचार) कर रहा हूँ, अगर ये मेरा सफ़र आसाम के मौसम के मुआफ़िक़ (अनुकूल) हुआ । इस लिए के एप्रील से जुलाई वहाँ चाय के बाग़ान का काम शुरु हो जाता है । और ये सब अपनी तिजारत (कारोबार) में मशगूल (व्यस्त) हो जाते हैं । आपने जो मज़मून (लेख) अंग्रेजी में `सहजमार्ग' के लिये भेजा है, बहुत अच्छा है । और उसके बारेमें मैंने Bellary में आपको बहुत कुछ समझाया है । लफ़्ज़ (शब्द) concentration ने मज़मून (लेख) को ज़रा गड़बड़ (अनियमित) कर दिया है । उसको मौक़े पर (ठीक जगह) लाना चाहिये था ताके लोग समझ सकें । मैं इस को सही करके आप के पास भेज दूँगा । फिर उसको अपनी इबारत (लेख) में जिस तरहसे चाहो कर लेना । श्री. ईश्वर सहाय यहीं हैं और कस्तुरी भी। Dr. Varadachari को देखने आई हुई हैं । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

ॐ तत् सत

Serial No. 131 शाहजहाँपुर
No.G-291-SRCM Date 07.07.1962

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके ख़त मिल गये । इस Government का अज़ीब (विचित्र) हाल है के क्लर्कोंका हाथ ऐसा है के आपके pay scale रोके हुए हैं । मुझे याद है के एक मरतबा (बार) British Govt के जमाने (काल) में पेन्शन के कागज़ात कुछ लोगोंके साल भर तक नहीं आए । पेन्शनर्स लोग दरख़्वास्त पर दरख़्वास्त (निवेदन) देते रहे । नतीजा (परिणाम) ये हुआ के एक ऑफिसर इसकी तहक़ीक़ात (जाँच) के लिये मुक़र्रर (नियुक्त) हुआ । और शाहजहाँपुर के भी एक दो ऐसे केसेस थे इसलिये ओ यहाँ भी आया । नतीजा ये हुआ के उसके दो माहके बाद कागज़ात मंजूर हो कर आ गये और ग़ालिबन (संभवतः) क्लर्कोंका तदारूक (दंड) हुआ । आप अपनी association की तरफ से department को move करते रहें और अगर rules इजाज़त (अनुमति) दें तो higher authorities को भी ये तहरीर (लिखिए) कीजिये । इसमें मुमकिन (संभव) है के जल्दी (शीघ्र) हो जाए ।

बरखुरदार (बेटा) उमेश इस साल F.A. में II Division पास हो गया है । उसकी चूँकि (क्योंकि) Commerce है और Shahjahanpur में Commerce सिर्फ F.A. तक ही है; B.A. के लिये दूसरी जगह भेजना लाज़मी (ज़रुरी) है, जो मेरे लिये दुशवार गुज़ार (कठीन / मुश्कील)अमल (काम) है । और न भेज सकुँगा । Lakhimpur में B.Com. मौजूद (उपलब्ध) है । जहाँ के मुझे सिवाय फीस और जेब खर्च के और कुछ खर्च न करना पडेगा । मगर वहाँ का commerce का नतीजा (परिणाम) बहुत खराब रहता है; इस साल दसमें सिर्फ (केवल) एक III Div. में पास हुआ है । उमेश की तबियत Lucknow जाने की है । मगर ये अमर (कार्य) मुहाल (असंभव) है । ईश्वर के भरोसे पर सिवाय Lakhimpur भेजने के और कोई चारा (उपाय) नहीं । ये और बात है के शायद (कदाचित) गैब (भाग्य) से और कोई बात बन जावे । आपके जो तबादिले (स्थानांतरण) की ख़बर है, देखिये ये कब तक होता है ।

Bellary में आपने इतनी मेहनत की और सैकडों speech दी । मगर मेहनत के लिहाज़ से (अनुसार) उतना फ़ायदा न हुआ । मुमकिन (संभव) है आपको Banglore जाना पडे और Bellary से Bangalore को मैं अच्छा समझता हूँ । और वहाँ आपकी speeches का नतीजा अच्छा हो सकेगा । Bellary में अबतक कोई आदमी ऐसा न बना के आप के Bellary छोडने के बाद, एक centre मिशनका किसी के मातहत (आधीन) खोल देता ।

बडी खुशी की बात है के Kannada ज़बानमें (भाषामें) Reality at Dawn छप गई । मैं ये चाहता हूँ के पाँच जिल्दें (कॉपी) Dr. Varadachari के पास भेज दी जावे और पाँच जिल्दें (कॉपी) पटेल साहब को जिन्होंने यह छपवाई है, free दी जावे | अगर ओ इससे ज़ियादा (अधिक) चाहे, तो इन्कार (मना) नहीं करना चाहिये । मेरे पास दस जिल्दें काफ़ी होंगी । इसलिये के मुमकिन (संभव) है के कोई मुझसे बराहेरास्त (सीधे तौर पर) तलब (माँगे) करें, जैसा के तमीलवाली किताब में हुआ । सरनाडजी जितनी कापी चाहें, बेचनेके लिये रख लें । सरनाड और आप मिलकर कन्नड अख़बारोंमे इसको review के लिये ज़रुर भेजें ताकि लोगोंको पता चले । यह बडी ख़ुशीकी बात है के आप August में आ रहे हैं । और ज़ियादा खुशीकी ये बात है के आप के हमराह अज़ीज़ माधवरावजी भी होंगे । श्री. गुंडेरावजी का ख़त (पत्र) आया है । इस में लिखा है जन्माष्टमी में ओ भी आवेंगे । नूरचश्मी (बेटी) छाया अपनी ससुराल में है । मुमकिन (संभव) है के आप के आने तक ओ भी आ जावें । श्री. ईश्वर सहाय की किताब (पुस्तक) अब बिल्कुल तैयार है। जिसको आप देख भी चुके हैं । अब छपने को जल्द (शीघ्र) भेजी जावेंगी । इसके रुपये का इन्तज़ाम (व्यवस्था) आपके centre से हो चुका है ।

जब मैं अंदर की तरफ फिरता हूँ यानी झुकता हूँ (Peep) तो जमाँ (अनेकता / दुनिया) ग़ायब (लुप्त) का मज़मून (दशा / अवस्था) है और जब बाहर निगाह (दृष्टी) फेरता हूँ तो वही अंदरुनी (आंतरिक) असर (प्रभाव) बाहर खुला हुआ मालूम होता है । और जब मैं बहकता (भटकता) हूँ तो हर जगह ईश्वर ही ईश्वर बहुधा हुआ (अनेक रूपमें) मालूम होता है । मगर भाई, जब उसके दाहिने बाये देखता हूँ तो कायनात (सृष्टि) के सब रंग मिज़ाज़ (स्वभाव) व हरकात (कार्य) सामने आ जाते हैं । कभी ये सोचता हूँ कि इस गिराव की वजह (कारण) क्या है। इस रंग में कौनसा रंग

शामील हो गया है जिसने ये चड़कभड़क पैदा कर दी , तबीयत में चटपटापन आ गया । निगाहें दूसरी तरफ दौड दौडकर नहरें और परनालियाँ बना बैठे । ये क्या है और इस की ज़िम्मेदारी किस पर है ? ऐसे environment किसने पैदा कर दिया ? अल्लाह मियाँने या ख़ुद आपने ? और कौन ओ लोग है जो उन्हींको जिला (चमक) देते रहे। जवाब मिलता है के ईश्वर ने हमारी घुट्टीमें (शुरु से ही) आज़ादी (स्वतंत्रता) पैदा कर दी ताके हम हर मामलात (कार्य) से आज़ाद रह कर अपनी असल आज़ादी (स्वतंत्रता) पर रुजू (ध्यान दें) हों । मगर हवादसे ज़मानाने (समय के दुर्भाग्य से) ने उसका रुख कुछ और ही कर दिया । हमारी तबीयत असल (मौलिक) आज़ादीसे (स्वतंत्रतासे) फेर गई और sense की तरफ दौड़ पड़ी और हम को गिज़ायें (पोषण) भी ऐसी मिली के उसी तरफ तरक्की रही । अब जिनका रुझान sense की तरफ हो गया ओ इसमें डूबे और उभरे भी तो निसबतन (साथ में) वैसी ही चीजें क़ायम (स्थापित) की , जिन्होंने sense को तक़वियत (बल) दी और उसके ऊपर न उठने दिया । और उनको मिल भी ऐसे ही गये और उनको ऐसी ही बातें बताई जिनको उन्होंने पसंद भी किया । इसलिये के यह बातें इस लिहाज़ (ख़याल की) थी कि, जो centre इन्होंने बना रखा था, उसको तक़वियत (बल) पहुँचाती थी । ऐसा कैसे हो गया ? उन लोगोंकी सोहबतसे, जो इन्द्रियोंमे ही में थे और अपने आपको आसमान की तरफ देखना बताते थे जो हमारे यहाँ के महात्मा हैं । हम आप चाहते है के लोग इस centre को छोड दें, जो बना चुके हैं । मगर ओ छोडने को तब तयार हों जब के इन्हींका बनाया हुआ centre भी Divine centre में मौजूद (उपस्थित) हों । लफ़्ज़ (शब्द) बहुत सख़्त (कठोर) होंगे मगर लिखना ही पडता है के बकरीयोंकी बागडोर (नियंत्रण) भेडियों के हाथमें हो गई और कुल शीराज़ा (व्यवस्था) बिख़र गया । अब भाई, ज़रा सोचो तो सही के शरीफुलनफ्स (सज्जन) जो बहुत कुछ जिम्मेदार हो सकते हैं, हम में से किस किस किसम के हैं। और उन्हीं में से हम किसीको गुरू समझ लेते हैं । उनके अकसाम (प्रकार) हसबजेल (निम्नलिखित) हो सकते है । गुरू सिफली - गुरू किताबी - गुरू अज़ली - गुरू फ़ज़ली - गुरू अज़ली फ़ज़ली ।

गुरू सिफली (क्षुद्र विद्या) ओ है जो भूतप्रेत की पूजा बताते हैं और झाडफूक करते हैं। किताबी (ग्रंथ) गुरू वह है जो महज़ (केवल) किताबें पढ़कर दूसरोंको उसीके अमल (अभ्यास / साधन)

बताते हैं । उन्हे इससे कुछ मतलब (सरोकार) नहीं के यह अमल (अभ्यास) किसके लिये है और किन-हालातोंमें मुफ़िद (फायदेमंद) हो सकता है ।

गुरु अज़ली (मूल) ओ है के जो आपको अमल (अभ्यास / साधन) बताते चले ताके आप भी इस दायरेमें (क्षेत्र) कमाल (पूर्णता) हासिल (प्राप्त) कर सकें बशर्ते (शर्त ये) की दरमियानी (बीच) भंवर में अभ्यासी न फँस जावे । जहाँ से निकालना इनकी ताक़त के बाहर है । लफ़्ज़ अज़ली (मूल) मैंने यूँ लिखा है के उनको कुछ इब्तदाई हालत (मूल स्थिति) की हवा लगी हुई होती है ।

और फ़ज़ली (अनुग्रहीत) गुरु ओ है के जिनपर ईश्वर की Grace (कृपा / अनुग्रह) हर वक्त रुजू रहता है । और ओ उस Grace (कृपा) को दूसरे को सुधारने के लिए जब चाहे तब रुजू कर दें । एक क़िस्म (प्रकार) और भी हो सकती है मगर इस क़िस्म (प्रकार) का इन्सान (मनुष्य) मुश्किल (कठिनाई) से मिलेगा ।

उसको अज़ली फ़ज़ली (मूलानुग्रहीत) कहते हैं कि जो इन्तेहाई (अत्यंत) इब्तिदाई हालत (मूलस्थिति) में पहुँचा हुआ है और ज़ातसे (भूमा) चिमट चुका है, तो हमें तो भाई, ऐसे गुरु की तलाश करना चाहिए और अगर यह न मिल सके तो फज़ली (अनुग्रहीत) गुरु पर ही इक्तिफ़ा (संतोष) कर लेना चाहिए ।

किताबी (ग्रंथ) गुरुमें हर तरह के शकूक (शंकाएँ) पैदा किये जा सकते हैं। हो सकता है कि उसका आचरण दुरुस्त (ठीक) न हो । मगर फज़ली (अनुग्रहीत) और अज़ली फज़ली (मूलानुग्रहित) गुरुमें इसका इमकान (संभावना) नहीं । उस को आप कहते रहें मगर न सुननेवाले नहीं सुनेंगे । बकौले (अनुसार) कबीर `सब घर अंधा किसको समझाऊँ ' । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 132 शाहजहाँपुर
No.G-326-SRCM Date 30.07.1962

मेरे राघवेंद्रराव्जी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) आया । बडी खुशीकी बात है के चंद (कुछ) सतसंगी आपके साथ आ रहे हैं । उन्होंने मुझे फरदन् फरदन् (अलगसे) भी लिखा है। दस किताबें कानडी भाषा की मुझे मिल गई । जितने अख़बारोंमे इसका review हो सके, यह अच्छा है । सतपाल जो लखनौ में थे, उनका तबदिला (स्थानांतरण) पठानकोट को हो गया है । उन्होंने जन्माष्टमी में आने के लिए लिखा है । आपका लखनौ पहुँचने का time हैं वह आप श्री. नसीबचंदजी को, जिनका पता मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) है, लिख देवें । वहाँ के सतसंगी आकर आपसे मिल लेंगे और आप चूँकि (क्योंकि) सफ़र के थके मांदे होंगे, आपको आराम पहुँचाने की कोशिश करेंगे । Quarter No. II-15-F-Baraha Railway Colony, Lucknow.

मैं भी 4 तारीख को लखनौ जा रहा हूँ और इलाहाबाद होता हुआ तीन चार रोज़ में वापस आ जाऊँगा । एक तक़लीफ (कष्ट) मैं आपको फिर देना चाहता हूँ के पारसाल (पीछले वर्ष) आपने गुंतपंगलू का पत्थर और एक पत्थर का पटा जिसमें फूल बने हुए थे, दिया था । ओ मैंने बडी लड़कीको दे दिया । अब यही दो चीज़ें छोटी लड़की को भी देना चाहता हूँ । अगर आप बा आसानी (सुविधा से) साथ ला सकें तो लेते आईयेगा । वैसे मैं भी अपने साथ ला सकता था । मगर मेरे साथ असबाब (सामान) ज़ियादा (अधिक) होता है ।

ख़त लिखाते लिखाते एक ख़याल (विचार) आया । कमज़ोरी (दुर्बलता) और सुस्तीका मेरे, ये हाल है के अगर पेटमें खाना बिला (बिना) मूँह चलाये हुए पहुँच जाये तो मैं बडा ख़ुश होता । मसलन (जैसे) मैं कहीं जाना चाहता हूँ, तो कमज़ोरी (दुर्बलता) और सुस्ती ऐसी हायल (सवार) होती है के यहाँ तक टालता हूँ के जाना ही नहीं । अलाहाबाद जानेके लिये दो सालसे एक साहब बुला रहे हैं ; यह कहकर के यहाँपर चंद (कुछ) लोग शुरु करना चाहते है । मगर कमज़ोरी (दुर्बलता) इजाज़त (मंजूरी) नहीं देती ।अब इस वक्त 4 तारीख को जानेका इरादा (विचार) कर लिया । अब न कोई कमज़ोरी (दुर्बलता) है, न सुस्ती, न कोई और रुकावट । यह बात मैंने इसलिये लिखी के अगर ईश्वरप्राप्तीकी will ऐसी ही बांध ली जावे तो इन्सान चल ही पडे ।

पिछले ख़तमें मैंने गुरु के अकसाम (प्रकार) लिखे थे। इसमें और भी क़िसमें हो सकती थी मगर मैंने यूँ नहीं लिखी के ओ श्री. अरविंदजी (Aurobindo) के consciousness की तरह कई हिस्से हो जावेंगे । और मुमकिन (संभव) है के consciousness का con लगाकर एक concave भी बन जावे । मैंने गुरु अज़ली (मूल) लिखे थे । इसमें एक बात लिखनेसे यह रह गई थी के उनकी इब्तिदाई हालत (मूल स्थिति) जिसमें मद व ज़ज़र (ज्वार - भाटा) नहीं होते, ज़रुर है । मगर इनमें यह ताकत नहीं होती के दूसरेको अपनी अंदरुनी हालत से सेंक सकें (foment) और फज़ली (अनुग्रहित) में यह चीज़ मौजूद (विद्यमान) होती है के ईश्वरकी Grace (कृपा) को अभ्यासीमें मुन्तकिल (संचारण) कर दें । उनकी दो divisions हैं। एक बाइख़्तियार (प्राधिकार) और एक बेइख़्तियार (पराधीन)। जब Grace बेइख़्तियार (पराधीन) फज़ली (अनुगृहित) पर आती है उसका हिस्सा ओ दूसरेमें मुन्तकिल (संचारित) कर देता है। इससे पेश्तर (पहले) ओ ऐसा नहीं कर सकता और जो बाइख़्तीयार (प्राधिकार) होते हैं ओ जिस वक्त चाहें उसकी Grace (कृपा) को लाकर दूसरे में मुन्तकिल (संचारित) कर दें । अपने Sahaj Marg में हर अभ्यासी बाइख़्तीयार (प्राधिकार) होता है । इसलिये के System of Training ऐसा ही है । और अज़ली फज़ली (मुलानुग्रहित) का कहना ही क्या ओ तो जो चाहे चश्मेजदन में (पलक झपकने में)कर सकता है । और ऐसा फक़ीर शाज़ व नादिर (दुर्लभ) ही होता है ।

अब चेलों की भी किस्मे (प्रकार) सुन लीजिये ।

मतलबी – फसली – अहली – मुरीद - मुराद । मतलबी (स्वार्थी) चेले ओ है के उन्हे कहीं मालूम हो गया के श्री. राघवेंद्रावजी महात्मा और ख़ुदापरस्त (ईश्वरभक्त) हैं, तो ये जानकर के उनके सतसंग में शामील होकर काम अच्छा बनेगा , वैसे ये दुनियादारी अगराजसे (इच्छाओं) तालुक (संबंध) रखनेवाले काम न करेंगे , बस सतसंग मे शामील हो गये, सिर्फ़ काम बनानेकी गरज़से (उद्देश्य) । और फिर ख़ुशामद दरामद (प्रशंसा) वगैरासे काम बना लिया । अगर काम बन गया तो ओ रेंग (रह) गये और अगर न बना तो भी मुँह मोडकर चले गये । उनको मेहनत (साधना) और लगाव (प्रेम) से वास्ता (संबंध) नहीं ।

फसली (लहरी) ओ है के जब कभी मौसमकी ख़ुशगवारीसे दिलमें कुछ उमंग (लहर) आ गई तो चले आये या किसी किसी दिन

पूजामें बैठ लिये । दिली लगाव (हार्दिक प्रेम) बिलकुल नहीं । और अहली (पात्र) ओ हैं के जिनमें आला (श्रेष्ठ) पूजाका संस्कार मौजूद (उपस्थित) है और ओ चाहते हैं के पूजा करें और जारी रखते हैं । और इन्हीमेंसे तरक्की (प्रगति) करके मुरीद (विद्यार्थी) की हालत पर आ जाते हैं । और कुछ ऐसे भी है जो शुरु से ही मुरीद (विद्यार्थी) की हालत लेकर चलते हैं । मुरीद ओ है जिसको गुरुसे बेहद (अत्यंत) मोहब्बत (प्रेम) हो और हर वक्त उससे connected संबधित रहे । और इनमें हर खूबी (गुण) मौजूद (उपस्थित) होती है, जो एक चेले (विद्यार्थी) में चाहिए । अब मुरीदोमें से एक आधे (कोई) शेरदिल ऐसे भी निकलते है के जो मुराद (गुरुअर्थी) की हैसियत (स्थिती) ले लिये हैं । मुराद की हैसियत ये है की गुरु का ओ object of love (प्रेम पात्र) हो जाता है । यानी उसकी नज़र उसी पर रहती है। दूसरे मानोंमे के जैसे मक़सद (उद्देश्य) पर इन्सान की निगाह (दृष्टी) रहती है वैसे ही गुरुकी निगाह (दृष्टी) उसपर रहती है । इसको मतलूब (इष्ट) या माशूक (प्रियतम) भी कह सकते है। और ऐसे लोग शाज़ोनादिर (दुर्लभ) ही पाये जाते है ।

इस ज़माने (काल) में मुरीद (विद्यार्थी) बहुत मुश्किल (कठिनाई) से मिलते हैं और इस तरह से गुरु भी मुश्किल से । क़िबला लालाजी साहबने मुझे एक ख़त में लिखा था के इस जमाने में मुरीद (विद्यार्थी) ख़ाल ख़ाल (थोडेसे) नज़र आते हैं । और मुराद (गुरुअर्थी) शाजोनादिर (दुर्लभ) ।

मैंने चंद अकसाम (प्रकार) गुरु और चेलोंके क़ायम (निश्चित) करके हर बात वाज़े (स्पष्ट) कर दी । मुमकिन (संभव) है के लोगोंको समझाने और लेक्चर वगैरामें मदद देवें । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 133 शाहजहाँपुर
No.-G-341-SRCM Date 01.08.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बाद दुआयें (आशिर्वाद) वाज़े (विदित) हो के मेरा लिफ़ाफ़ा मिल गया होगा । अब आप सबके आनेका इन्तज़ार (प्रतीक्षा) कर रहा हूँ । बाबू शिवमोहनलाल एक अरसेसे (बहुत समयसे) बीमार हैं । उनके घुटनेपर पानी उतर आया है, जो एक मरतबा (बार) निकाला भी जा चुका है । उनके, plaster पलास्टर बंधा रहता है । और चारपाई पर पड़े रहते हैं । जब आप Hyderabad पहुँचें और आपके पास अगर वक्त हो तो उनको देखते आना । दूसरी बात ये है के मौक़ा (अवसर) मिलनेपर 20 या 25 डब्बी सिगरेट चारमिनार लेते आना । यहाँ अक़सर (प्राय:) मुश्किलसे (कठिनाई) मिलता है । जन्माष्टमीका बरत (उपवास) 21 ऑगस्ट को है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 134 Lucknow
Date 24.10.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके सबके सब ख़त मिल गये । उसमें ज़रुरी बातें जो क़ाबिले (योग्य) जवाब है, ज़रुर दूँगा । मैं 28 Sept. को आसाम से वापिस हुआ। और 5 October को लखनौ, दांत बनवाने के लिए आना पडा। तबसे यहीं पडा हूँ । उम्मीद है 29 October को छुटकारा मिलेगा । उसके दस यूम (दिन) बाद हर चौथे रोज़ (दिन) और बुलाया है जो मुझे न हो सकेगा । इस वजह (कारण) से जुनूबी (दक्षिण) हिंदका programme नहीं बन सका । आलूकी बुआई का काम अभी वैसा ही पडा है । और उसमे देर हो रही है ।

घर पर जाकर आलूकी बुआई का हिसाब लगाकर programme बनाऊँगा । उम्मीद (आशा) है के देहलीसे 16-17 November को निकल सकूँ | अबकी Bijapur जाने के लिये सतसंगी ज़ोर दे रहे हैं । मैं कोशिश करुंगा के जा-सकूँ मगर आप तहरीर फ़रमायें (लिखिए) के मेरा जाना क्या Bijapur ज़रुरी (आवश्यक) है ? एक गुना मोहब्बत (प्रेम) और दिलचस्पी (अभिरुचि) है के इतना दूर दराज़ (बहुत दूर) का सफ़र कर लेता हूँ । वरना ज़िस्मानी (शारीरिक) कमज़ोरी (दुर्बलता) इस क़ाबिल (योग्य) नहीं के सफ़र (यात्रा) कर सकूँ । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: आपकी पहुँच दुसरी ring पर है ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 135 शाहजहाँपुर
No.G-556-SRCM Date 12.12.1962

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके सब ख़ुतूत (पत्र) मिल गये । सबसे पहले मैं आपके आख़री ख़त का जव़ाब (उत्तर) देता हूँ, जो ज़रुरी (आवश्यक) है । अपने scale तय (निश्चित) होने के लिए जो भी आप कोशिश करना चाहें, आप कर सकते हैं । और सही बातके लिए Sahaj Marg हारिज (बाधा डालनेवाला) नहीं होता । आपको इजाज़त (अनुमति) है। जैसा ज़रुरत (आवश्यकता) हो, करें । मैंने अपना आनेका इरादा (विचार) जुनूबी (दक्षिण) हिन्द, क़ायम (दृढ / स्थायी) रखा है । उम्मीद है फरवरी या मार्च तक आ सकूंगा । इसलिये जो लोग के इस वज़हसे (कारण से) आना चाहते है के मैं वहाँ नहीं पहुँच रहा हूँ, तो मैं पहुचूँगा ही । ओ यहाँ आने के लिये हरवक्त welcome है और यह झोपड़ा आपके लिए हमेशा हाज़िर (प्रस्तुत) है । मगर वक्त (समय) बहुत मुश्किल (कठीन) है । ख़याल (विचार) ये भी होता है के जब मुझसे मुलाक़ात (भेट) अनक़रीब (शीघ्रही) होनेवाली है जो इतना पैसा सफ़र (यात्रा) मे क्यों खर्च किया जावे जिससे तक़लीफ (कष्ट) हो जावे । मुकद्दमात (कोर्ट के दावे) की तारीख ग़ालिबन (संभवतः) Jan में पडेगी और मैं यह डर रहा था के कहीं उत्सवके दिनोंमे तारीख न पड़ जावे ।

मुझे खुशी हुई के अब सरनाडजी ने भी मिशन की सेवा करनेकी ठान ली है | ईश्वर मालिक है। और फिर खुशी हुई के Laxmi Narasimhan आपके पास आये और पूजा करनेका वायदा (वादा) किया । सच पूछो तो मिस्टर पदकी उस लायक नहीं है के सतसंग में रखा जावे । अंदर इन्तेहाई (बहुत अधिक) ठोसता भरी हुई है । और उनके विचार भी शुध्द नहीं है । ये बात उनसे मुलाक़ात (भेट) होनेपर मालूम हुई और उन्होंने मुझे लिखा भी और सख़्तीसे (कठोरता से) लिखा की तावक्ते (जब तक) के मुझसे आपके discussion न हो जावे मेरा पूजासे ताल्लुक (संबंध) न रहेगा (या कुछ इस तरह से लिखा था) तो भाई शेर -

दोज़ख़ (नर्क) मुझे मंजूर है ऐ मुनकर नकीर

लेकीन नहीं दिमाग़ सवाल व जवाबका ।
(मुनकर नकीर - दो फरिश्ते जो मुसलमानों के मतानुसार कब्र में मुर्दों से पूछताछ करते हैं ।)

सहजमार्ग पत्रिका उनके पास जाना बंद हो गई। ये याद नहीं के क्यूँ हुई । उन्होंने याद दे - हानी भी नहीं की और चंदा तो ग़ालिबन (संभवतः) नहीं भेजा होगा । लिहाज़ा (इसलिए) मेरा Banglore जाना तो इस वक्त न हो सकेगा। अच्छा तो यही है के ओ मुझसे मिलने की कोशिश न करें और मैं चाहता भी यही हूँ । मुझे ये भी मालूम हुआ के ओ गुरु के तलाश में इधर उधर मुझसे मुलाकात के बाद गये भी है । मुमकिन (संभव) है के कोई मुझसा सादालू (भोला) न मिला हो ।

श्री. आयल रेड्डी जो दूसरे के character का पता चलाना चाहते हैं, ये अच्छा है; ताक़त (शक्ति) तो मौजूद है । मगर उसको इस्तेमाल नहीं करते या करना नहीं चाहते। अंदरकी तरफ देखें और सोचें; कुछ अभ्यासके बाद दिल रहनुमाई (मार्गदर्शन) करने लगेगा । Character का तो पता मुझे भी बडी मुश्किलसे चलता है और अगर चलता है तो बहुत दिनों बाद और ओ भी इत्तेफ़ाक़से (संयोग) । इसलिए के न मैंने इसपर मश्क़ (मेहनत) की और न यह ख़याल (विचार) ही पैदा हुआ । ये बल्के (यद्यपि) मेरे हज़रत क़िबला गुरुमहाराजमें था के उनके सामने एक निगाह (दृष्टी) में हर आदमी एक खुली हुई किताब था । तजरुबा (अनुभव) बतायेगा के बाज़ (कुछ) ठोसता पत्थरकी सिल की तरह होती है, ओ यह आसानीसे मालूम हो सकता है। इसके मानें यह, के इसका तोडना दुश्वार (कठीन) है । और उतनी मेहनत इसपर की भी क्यूँ जावे और आप इसे अगर ले भी लें, ओ आपको छोड देगा । हाँ अगर भगती (भक्ति) की आग किसी तरीके से भड़क जावे जो किसी accident से ज़ियादातर (अधिकतर) होती है, तो सबकुछ हो सकता है । मैं कोशिश (प्रयत्न) करूँगा के मैं Bijapur जा सकूँ । तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) की वज़हसे (कारण) हिम्मतमें कमी रहती है। और जब चल पडा तो हिम्मत ही हिम्मत है। इसकी वजह (कारण) मालूम है क्या है ? मैंने सुस्ती की वजह से ये आदत डाल ली, यह तय (निश्चित) करके, के मेरा जिस्म (शरीर) कमज़ोर (दुर्बल) है। इस कमज़ोर (दुर्बल) ख़याल (विचार) का ये असर (परिणाम) है। आप लोगोंको ख़ुदा इस ख़याल से बचावे।

आपको जो massaging बताया था, उससे बीनाई (देखने) में कुछ फ़ायदा हुआ ? अगर न हुआ तो छोड देना ही अच्छा है। Thyagrajan ने जो कैफ़ियत (हालत) अपनी, बज़रिये (द्वारा) चिठ्ठी (पत्र) आपको इत्तलाह दी (बताई) है, उसमे कोई असलियत मालूम नहीं होती बल्कि (अपितु) सिर्फ़ imagination है। और ओ इस ख़याल (विचार) के मातहत (अधीन) के उन्होंने खूब तरक्की (प्रगति) की है। उनकी जो हालत थी उन्होंने ओ भी नहीं रखी। मैं नहीं समझता हूँ के हज़रत मुसा तिरुचनापल्लीमें पैदा हो गये हो | मुमकिन है के उन्हें और कहीं जगह न मिली हो इसलिये मजबूरन तिरुचनापल्लीमें क़दम रखना पडा हो ।

Shri. R. Seshadri मदरास, के वालिदमाजिद (पू. पिताजी) का इन्तेकाल (देहान्त) हो गया था । ओ बाद फराग़ते कारे मय्यत (मृत्यु के बाद के क्रियाकर्म होने पर) मय (साथ) अपनी बीवीके यहाँ आये और दस दिन रहे और अपनी बीवी को भी मुझसे initiation करा दिया । ओ बेचारी यहाँ सर्दी लग जाने से बीमार भी हो गई थी । मगर अच्छी हो कर गई ।

Will और desire के समझाने के लिये श्री. अरविंदजी (Aurobindo) की तरह मुझे division करना पडेगा । इसके division (विभाजन), मैं अंग्रेजी में ही कर रहा हूँ । अव्वल (प्रथम) animal plane, दुव्वम (दूसरा) mental plane, सुव्वम (तीसरा) spiritual plane, यह ख़्वाहिश (इच्छा) की किस्में (प्रकार) है । ख़्वाहिशात (इच्छाअें) नेक (अच्छी) भी होती है और ख़राब (बुरी) भी । ख़राब ख्वाहिशात (इच्छाएँ) sex, passions वगैरासे ताल्लुक (संबंध) रखती हैं । लालच वगैरा भी इसमें आते हैं । और mental plane में जो ख़्वाहिशात (इच्छाअें) होती हैं इसमें अपनी तरक्की (प्रगती), अपनी बढ़ाई, अपनी क़ाबिलियत (योग्यता) का राज़ छिपा हुआ होता है । अब जब ये चीजें spiritual plane में पहुँच जाती है तो वहाँपर अपनी duty की याद आ जाती है । दाम (जाल) से निकलने की फ़िक्र (चिंता) हो जाती है। ईश्वर प्राप्तीकी तरफ तबीयत (मन) मायल (झुकाव) हो जाती है । ये वही चीज़ है जिस का ताल्लुक (संबंध) कभी animal plane से रहा था, इसलिए चूँके (क्योंकी) duty (कर्तव्य) शामिल है, इसको ख़्वाहिश (इच्छा) कहना ग़लत होगा |

Will (संकल्प) का ताल्लुक (सम्बंध) mental plane से यूँ है कि आप मक़सद (उद्देश्य) को सोचकर इस तरफ ख़ियाली action शुरु करते हैं । और ये आख़िर तक चली जाती है। और हर region में इसको नई ज़िंदगी मिलती चली जाती है । चेतना शुध्द शक़ल होती चली जाती है और शुकुकसे (संदेहोंसे) नज़ात (मुक्तता / छुटकारा) मिलती जाती है, उतनी ही तेज़ ये काम करती है । यानी इसकी potency बढ़ती जाती है । अब इससे दुनियादारी के काम किसी अहाते (मर्यादा / सीमा) के अंदर, जिसको महामाया कहते हैं, अच्छे होते हैं । इसके बाद इसकी शक़ल (रुप) ऐसी हो जाती है के जैसे बिलकुल (पूर्ण) तत्व ही तत्व या जौहर ही जौहर हो गई हो । किसी शख़्स (व्यक्ती) को दमज़दन (क्षणभर में) में रुहानियतका (आध्यात्मिकता) कोई हिस्सा पार करा देना, इस तक पहुँचे हुए आदमी के लिए बिलकुल आसान है । Unfailing will (अमोघ संकल्प) उस वक्त होती है जब इन्सान (मनुष्य) ब्रह्मनिष्ठ हो जाता है । मगर भाई ये will जैसा जो develop होकर अब आया है, उसी कामों में मदद करता है जो ज़ियादातर (अधिकतर) ईश्वरीय है । अगर इन्सान (`अनंत की ओर' में आपने पढ़ा होगा) शक (संदेह) की बुनियाद (नींव) ख़तम (नष्ट) कर दें तो फिर will में ताक़त ही ताकत है । मगरीबी (पाश्चात्य) philosophy हमेशा doubt पर मबनी (आश्रित) होती है और मशरकी (पौर्वात्य) philosophy में उसका गुज़र (प्रवेश) नहीं । शक (संदेह) का साथ रखना ऐसा है जैसे चोर को घर में रखना । असल में भाई, अभ्याससे ये सब बातें अपनेआप पैदा हो जाती है, तरीका (पद्धति) सही हो और रहनुमा (मार्गदर्शक) कामिल (निपुण)। ठोसता को अलाहदा (अलग) करें और लताफत (सूक्ष्मता) में अपना क़ियाम (निवास) करता चले ।

मैं कल 13 Dec को Lucknow जा रहा हूँ । मैंने जो दाँत बनवाये हैं जो कुछ तकलीफ़ (कष्ट) देते हैं, उनको ठीक करानेके लिये डॉक्टरने 3 या 4 रोज़ वहाँ रहने के लिये कहा है | उसके बाद 2-3 रोज़ के लिये मैं अलाहाबाद जाऊँगा । इस वक्त (समय) मुकद्दमे के काम के अलावा (सिवाय) वहाँ 3 सतसंगी भी बढ़ गये हैं । और इस वक्त (समय) मैं इन्हीके वजह (कारण) से जा रहा हूँ। प्रकाश के लड़के और लड़कीके ख़सरा (चेचक) निकल आया था । लड़का बिलकुल ठीक है । लड़कीमें अभी ख़सरेकी गरमी मौजूद है, जो कल या परसों तक ठीक हो जावेगी । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च:

बिरादरम तस्लीम (प्रिय भाई, नमस्ते |),

एक किता (संख्या) नक्शा (फॉर्म) वास्ते हिसाबे सालाना (वार्षिक हिसाब के लिए) भेज रहा हूँ | 1962 का हिसाब माहवार मुस्तब (ठीक) करके इस नक़्शे (फॉर्म) में इन्दराज (लिखकर) करके जिस क़दर जल्द हो इख्तिताम-ए-साल (वर्ष के अंत में) हो सके भेज दीजिये | बसंत 30 जनवरी को पड़ रहा है | लिहाज़ा (इसलिए) उत्सव कि कारवाई 29 जनवरी सुबह 6.30 से 31 जनवरी सुबह 7.30 तक जारी रहेगी | हवन 30 जनवरी को 9.00 बजे सुबह होगा | उसी के मुताबिक (तरह) invitation cards में तहरीर (लिख) कर देना है | मिशन का हिसाब मुस्तब (ठीक) करने में काफ़ी वक्त लग जाता है | और अक्सर (प्राय:) बाज़ (कुछ) जगह से दरियाफ़्त तलब बातें (मालूम करनेवाली) रह जाती है | खैर, ख़त ओ किताबत (पत्र व्यवहार) में वक्त लगता है | लिहाज़ा (इसलिए) चाहता यह हूँ की जिस क़दर जल्द हो सके हिसाबे सालाना (वार्षिक हिसाब) के पर्चे (कागज़ात) यहाँ आ जाये तो अच्छा है |

दुआगो (शुभचिन्तक)
ईश्वर सहाय

****

ॐ तत् सत

Serial No. 136 शाहजहाँपुर
No. H-127-SRCM Date 27.02.1963

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके सब ख़ुतूत (पत्र) मिल गये । जवाबमें देरी हुई । मैं बीमार भी काफ़ी (बहुत) दिनों रहा और कुछ कामोंका चक्कर ऐसा लगा रहा के जिससे तमाम (सारे) ख़ुतूत (पत्रों) का जवाब देना था , पडे रह गया । मैंने एक ख़त नम्बर H-10 मो. 3 Jan 63 भेजा था, जो आपको मौसूल (प्राप्त) नहीं हुआ । मुमकिन (संभव) है के Bellary के नीचे Mysore State या South India लिखना रह गया हो । उस ख़तमें संस्कार के बारे में लिखा था और ये कि आप अपने संस्कार कुल भोग चुके हैं । अब दो डोर ऐसे मालूम होते हैं, आत्माके मुक़ाम (स्थान) पर, जिसमें दूसरे करमोंका tension रहता है ताके ज़िंदगी क़ायम (बनी) रहे । दूसरे will power की research निहायत (बहुत) उमदा (अच्छी) दी थी और विचारोंके बारें मे बहुत कुछ philosophically deal किया था । जो मुझे अब याद नहीं । इसमें 14 या 16 सफ़े (पन्ने) थे, आप वहाँ के post master को लिखिए । मुमकिन (संभव) है के dead letter office में वगैरा मिल जावे । मेरे पास भी वापिस नहीं हुआ है । मैंने Feb. या मार्च में आने का इरादा (विचार) किया हुआ था । मगर मैं अब इस दरमियान (बीच) में न आ सकूँगा । इसलिए 15 May के बाद इन्तज़ार (प्रतीक्षा) कीजिये । आप चुँके, Vijaywada, मुझको मिलने को आना चाहते हैं, जब तारीख तय (निश्चित) हो जावेंगी, आप को इत्तलाह (सूचना) दूँगा, ताके वहाँ कुछ speeches भी हो सके । श्री. माधवरावजी की तबीयत (स्वास्थ्य) अब ठीक रहती होगी। लिखना। बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये के जो बातें Sarnadji ने पूछी हैं, दोबारा लिखकर भेज दीजिये । ओ ख़त कहीं misplace हो गई है ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 137 शाहजहाँपुर
No.-H-197-SRCM Date 21.05.1963

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

अबकी तो महिने हो गये, ख़ुतूत (पत्रों) के जवाब ही न दिये । कुछ कमज़ोरी जिस्मानी (शारीरिक दुर्बलता), कुछ इफ़कारे (चिन्ताएँ) दुनियावी और कुछ तसाहुली (आलस) इसकी जिम्मेदार है । High court मुझे कई बार जाना पडा और नतीजा (परिणाम) इसका अच्छा ही हुआ के तसफ़िया (निर्णय) हो गया, जिसको मैं अरसे (बहुत दिनों) से चाहता था । यह फिकर (चिंता) तो कतई (बिलकुल) दूर हो गई ।

एक साल आपने आलूमें फ़ायदा होनेकी दुआ (शुभकामना) दी थी। उस वक्त अच्छा आलू पैदा हुआ । दो सालसे नुकसान हो रहा है ; और इस साल सबसे ज़ियादा (अधिक)। बाक़ी एक जगह जहाँ खेती ज़ियादा (अधिक) है, प्रकाश ने पानीका इंजन लगाया है और ओ 15 दिनसे काम कर रहा है। ये तो घरका हाल है। अब अपना हाल लिखता हूँ। क़रीब क़रीब 4 महिने से आठवें या सातवें दिन दस्त (पाखाना) और पेचिश (मरोड़) का एक बाद दिगरे (दूसरा) दौरा (रोग का आक्रमण) हो जाता है । अबतक दफ़ईय: उलवक्ती (अल्पकालीन निवारण) के लिये कुछ दवा खा लेता था जब दौर (फेरा) होता था । अब ब़ाक़ायदा (विधिवत) इलाज शुरु कर दिया है । और दवाई जुनूबी (दक्षिण) हिंद में भी साथ रखनी पडेगी। लोगोंको अल्लाहमियाँ पर एतबार (विश्वास) नहीं और मुझे अपने तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) पर एतबार (भरोसा) नहीं । तंदुरुस्तीपर एतबार (भरोसा) न होना कमज़ोरी की अलामत (लक्षण) है और अल्लाहमियाँ पर एतबार (भरोसा) न होना रुहानी (आध्यात्मिक) ख़ुदकुशी (आत्महत्या) की अलामत (लक्षण) है । कहीं तो लोग ये कहते है के फ़सलें अब ठीक नहीं होती। इसके माने ये हुए के अल्लाहमियाँ बहुत बूढ़े हो गये हैं । इसलिए किसी किसी कामोंकी याद नहीं रहती । मगर ओ यह नहीं समझते की आपको जो ताक़त (शक्ति) अल्लाहमियाँ ने दी है उस ताक़त (शक्ति) से आपने उसके

कामों में क्या गड़बड़ी डाली है । Actions तो proportionally जारी ही हैं । अब हम लोगोंने ख़िलाफ़ (विरुद्ध) क़ुदरत (निसर्ग) काम करते करते ख़ला (वातावरण) में ओ गड़बड़ी पैदा कर दी है के इसके मुताबिक़ (अनुसार) जो actions हुए इससे अपना ही गला कटता रहा। अब इन चीज़ोंकी सफ़ाई की ज़रुरत है। जो, कुछ तो हो ही रही है और कुछ होगी। और ये सब आप ही लोगोंको कुछ ना कुछ करनी होगी और नादानिस्ता (अनजानेमें) हर saint कुछ ना कुछ करता रहता है । मुझमें हिम्मत है और गुरुमहाराजकी कृपासे उसमें कुछ कमी नहीं और हिम्मत कैसी के दूसरे second की ज़रुरत न पडेगी | इन बातोंको इसलिए लिख दिया के आप लोगोंमे भी हिम्मत पैदा हो जावे । मगर मैं इसलिए नहीं करता के जिन लोगोंने अपनी ताकतों के खराब इस्तेमाल से यह गडबडी जो पैदा की है, उसका ख़मयाज़ा (बुरा परिणाम) उनको भुगत लेने दो, क्योंके Nature भी यही कहती है । Destruction होना ही है और हो रहा है और यह इसका कारण है ।

Dr. Varadachari ने अपने 3 मार्च के ख़तमें लिखा है, "You have not shown any inkling of the future in your letters to me or others. Aurobindoneons are saying that there will be very great changes this year or in 1967." ख़ुदा जाने क्या होनेवाला है । अरविंदोनियन जो कुछ भी कह रहे हैं वाक़ियात (घटनाओं) को देखकर कह रह हैं । इन में किसी में ये ताक़त नहीं के Nature को पढ़कर कुछ कह सकें, लिहाज़ा (इसलिए) मुझे न उनके 1963 ई. पर एतबार (भरोसा) है ना 1967 ई. पर । Mother ज़रुर अच्छी हैं, मगर उनकी भी निगाह outer layer पर रहती है । और superconscious state को उसी outer layer पर call करती हैं । इसलिए जो वाक़िया (घटना) क़रीब होनेवाला है उसका पता चल सकता है। और कायदा (नियम) ये है के जितनी depth की बातें दरियाफ़्त (मालुम) करनी चाहिये, उतनी ही गहराई में जाना चाहिये और इस वक्त जो Nature का level है वैसा ही अपना level भी क़ायम (निश्चित) करना चाहिए । Nature के vibrations इस वक्त बहुत mild है जिसकी वजह यह मालूम होती है, के आगे जो वाक़ियात (घटनाअें) होनेवाले है उनमें power दी जा रही है । क्यों के dim vibrations में power सबसे ज़ियादा (अधिक) होती है ।

मेरी attraction Bijapur के तरफ क़तई (बिलकुल) नहीं हुई । फिर भी ख़याल (विचार) रखा के programme में लगा लूँ । और गदग के लिये इतनी तेज़ attraction है के तबीयत (मन) वहाँ जाने के लिये मजबूर (विवश) कर रही है । मगर तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) ने इतना मजबूर (विवश) कर दिया के इस कशिश (आकर्षण) पर ग़ालिब आ गई (हावी हो गई) । और मैंने जागिरदार को भी लिखा के अगर ओ इजाज़त (अनुमति) दें, तो मैं Gadag न जाऊँ और मैं खुश हुवा के उन्होंने मेरी मर्जीके (इच्छा) मुताबिक़ (अनुसार) कहा । आप उनको इत्तलाह (सूचित) कर दें के जिस स्टेशनपर ओ चाहें, मुझसे मिलें । मैंने क़ियाम (ठहरने) के दिन भी कम कर दिये बवजह (कारण) तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) । Programme Ayal Reddy और Sarnad को भेज दिया है । माधवराव को भी अपनी आमद (आनेकी) और क़ियाम (ठहरने की) की इत्तलाह (सूचना) दे चुका हूँ । और Vijaywada को बज़रिये (द्वारा) ख़त इत्तलाह (सूचना) दे दी है। अब programme भी भेज दूंगा । जैसे जैसे ख़त लिखने का इत्तिफ़ाक़ (संयोग) पडते जावेगा तारीखोंसे इत्तलाह (सूचित) करता जाऊँगा । Reality at Dawn के जर्मन translation के prologue (प्रस्तावना) का अंग्रेजी तरजुमा (अनुवाद) आप के पास भेज रहा हूँ । देख लीजियेगा । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये है के आपने Sarnad को ठीक जवाब (उत्तर) दिया है। हर preceptor इनपर अमल (कार्यान्वयन / लागू) कर सकता है । बशर्ते (इस शर्त पर) के ओ इस काम को rashly (जल्द बाजीमें) न लें और इसके reaction की जांच रखें के उसकी capacity से ज़ियादा (अधिक) तो नहीं हो गया है । जब मैं वहाँ जाऊँ तो यह सब बातें याद रखें ; मैं सब इसके तरीके (पद्धति) और कहाँपर उसकी ज़रुरत (आवश्यकता) है, बताऊँगा ।

Sd/Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 138 शाहजहाँपुर
No.-H-231-SRCM Date 28.05.1963

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दोनों ख़त (पत्र) आज इसी वक्त (अभी अभी) मौसूल (प्राप्त) हुए, और मालूम हुआ, आपका Hassan तबादला (स्थानांतरण) हुआ है । Programme जैसा के आपने लिखा है, Bellary का ही रहेगा । और मैं अवकाते मुऐयना (निर्धारित समयपर) पर मय (साथ) श्री. ईश्वर सहाय Bellary पहुँचूँगा। Vijaywada में मैं ये चाहता हूँ के आप की speech हो जावे । उसके लिये मैंने श्री. कुमारस्वामी को भी लिखा था के ओ बराहेरास्त (सीधे) आपसे इस speech के बारे में लिखें अगर ओ public meeting का इन्तज़ाम (व्यवस्था) कर सकते हैं, मुमकिन (संभव) है उन्होंने लिखा है । मैं चाहता था की आप अब Bellary न रहें इसलिये के आप की क़ाबिलीयत (योग्यता) की वहाँ के सतसंगियोंने कोई दाद न दी । मैं 45 इसवी में Hassan उतरा था और वहाँ से एक मंदिर देखने को बेलूर चला गया था । श्री. ईश्वर सहाय की किताब जो मदरास में छप रही थी ओ क़रीब क़रीब छप चुकी है । मैंने Dr. Varadachari को लिखा है के मेरी गैरहाज़री में किताबें यहाँ न भेजी जावें बल्के (अपितु) मेरे वहाँ आने तक इन्तज़ार (प्रतीक्षा) किया जावे । Dr. की speech जो गुलबर्गा में हुई थी उसकी नक़ल (कॉपी) उन्होंने मेरे पास भेज दी है । अपने साथ लाऊँगा । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 139 शाहजहाँपुर
No.H-312-SRCM Date 23.07.1963

मेरे राघवेंद्रावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं बख़ैरियत (सकुशल) 21 July को यहाँ पहुँच गया । एक दिन Lucknow यूँ ज़ियादा लग गई के मुझे श्री. ईश्वर सहाय व बरख़ुरदार (बेटा) उमेश की आँख़े, एक अपने सतसंगी eye specialist को दिखाना थी । मास्टर साहब की एक आँख मे मोतिया बिंद की शुरुआत बताई है । बरख़ुरदार (बेटा) उमेश जो Lucknow में B.Com Final में है उसके बारेमें यही बताया है के सीधे आँखकी रोशनी जा रही है । आप दुआ (प्रार्थना) करें की ओ ठीक हो जावे । यहाँ आनेपर मालूम हुआ के बरख़ुरदार सर्वेश गिरने की वजह से उसी रोज़ बायें हाथ की हड्डी में crack हो गया है। Plaster चढा दिया गया है। कोई फ़िकर (चिंता) की बात नहीं है। मैं जब Bellary से चला तो Guntakal के आगे मुझे दस्त आना शुरु हो गये। उस के बाद station पर दही मिल गया। उसमें दवा खाने से बंद हो गये। और Tirupati में Dr. Kuppuswamy की दवासे मैं बिलकुल ठीक हो गया। Orai में रुकनेसे कुछ सतसंगी बढ़े हैं, और जुनूबी (दक्षिण) हिंद में हर जगह भी बढ़े हैं । Madras में एक दूसरा centre, Shri. Viraraghvan के under, जो की Sheshadri के बहनोई हैं, खोल दिया गया । आरोग्य आश्रम, मदरास, में Dr. Varadachari की speech हुई। मैं समझता था ये कोई बड़ा आश्रम होगा । मगर वहाँ सिर्फ 6 या 7 आदमी थे और क़रीब 25 हमारे साथ थे । उनकी speech पूरी न होने पाई थी के वहाँ के महंत श्री. व्यंकटेश आनंद ने इन्हे रोक दिया और उनकी speech तमाम रही । इस बिना (कारण) पर, के अभी और लोगोंको बोलना है । ओ speech, सहजमार्ग पर थी । मेरे पास आ जानेपर मैं भेजूँगा । Tiruchinapalli में गणेशन मिले थे और कई दफ़ा (बार) मिले और खुशामदाना तौर (प्रशंसा करते हुए) से मैंने उनको सतसंग में बैठने न दिया और न उनको लेने को तय्यार हूँ ।

मैंने एक सतसंगी के हाथ, जिसका तबादिला (स्थानांतरण) Hassan हो गया है, एक ख़त भेजा था । ग़ालिबन (संभवतः) मिल गया होगा ।

मैंने Tiruchinapalli में आधा घंटा स्वामी चिन्मयानंद की तक़रीर (भाषण), गीतापर सुनी । देखने से मालूम हुआ के न उनमें कोई spiritual power है न hypnotic । मगर इतनी तारीफ़ (प्रशंसा) ज़रुर करुँगा के लोगोंके सुधारपर उनकी निगाह है ।

अब अपनी रुहानी तरक्क़ी के बारें में जो समझ में आवे, लिखें । मैं कुछ दिनों बाद लिखूँगा । हालत आप की क़ाबिल शुक्र (धन्यवाद देने योग्य) है ।

मीरा का हाथ और पैर के बारे में मैं जो बताया था आप कर रहे होंगे । और लिखिये के उसको कितना फ़ायदा हुआ । रामकिशनराव को ताकीदन (ज़ोर देकर) लिख दीजिये के पूजा पर ज्यादा ध्यान रहे ।उनके अंदर पूजा न करनेकी वज़हसे grossness बढ़ गई है ।

बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: जन्माष्टमी का बरत (उपवास) 12-8-63 को मनाया जावेगा।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 140 शाहजहाँपुर
No.H-454-SRCM Date 30.09.1963

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बडे अफ़सोस (दुःख) की बात है के श्री. शेषाद्री के बडे भाई Shri R. Krishnamachari बमुक़ाम (स्थित) Madras ने 29 Sept 63 को इस जहाँ (दुनिया) से रुख़सत फ़रमाई (चल बसे) । ईश्वर उन की रुह (आत्मा) को शांती देवे । आप श्री. Seshadri को मातम-पुरसी (शोक-संदेश) का ख़त लिख देवें । ओ ग़ालिबन (संभवतः) मदरास में ही होंगे । पता-

15 Alamell Mangapuram, Mylapur, Madras.

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 141 शाहजहाँपुर
No.-H-497-SRCM Date 10.10.1963

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बच्चे की पैदाईश (जन्म) का हाल सुनकर बहुत खुशी हुई । ईश्वर उसकी उम्रदराज़ (दीर्घायु) करे और ज़च्चा (माँ) बच्चा खुश खुर्रम (प्रसन्न) रहे । आप के सब ख़त मिल गये । और मैं सब का जवाब दे रहा हूँ । आपने जो मोहर (रबर स्टाम्प) के बारे में लिखा है, ओ आप बनवा लें और Hassan के बाद चाहे मैसूर, चाहे South India लिखवा दें । मास्टर साहब का मोतिया बिंद, बफज़लहू (ईश्वर कृपासे), दवासे अच्छा हो रहा है। उमेश की आँखों के बारे में वाक़ई (सच ही) miracle हो गया । 8 यूम (दिन) के अंदर उस की निगाह (दृष्टी) अच्छी हालत पर आ गई और एक medical college के होशियार डॉक्टर को दिखाने से मालूम

हुआ के आँख में कोई बीमारी नहीं है । बल्की (अपितु) कमज़ोर (दौर्बल्य) है । ओ भी बफज़लहू (ईश्वर कृपासे) ठीक हो जायेगी मगर आप की दुआ (प्रार्थना) की ज़रुरत है । लडकी के हाथ पैर के बारे में आपने लिखा था के बहुत फ़ायदा है । तो उस अमल (काम) को उस वक्त तक जारी (चालू) रखीये जब तक पूरी सेहत (स्वास्थ्य) न हो जावे ।

Sarnadji का ख़त मेरे पास भी आया था । उनके बारे में finding आपको मैंने Bidar में दी थी । उनकी सफाई की बेहद (अत्यंत) ज़रुरत है । कुछ थोड़ा थोड़ा काम मैंने भी शुरू कर दिया है। उन्हे खफ़ीफ़ (थोड़ासा) फ़ायदा भी है । उनपर आप मेहनत कीजिये। रामकिशनजीने जो बेचैनी लिखी है, उनकी सफाई करते रहीये; और दिलमें सुकूनी (शांती की) तवज्जह (प्राणाहुति) दीजिये । नरसप्पाने जो अपनी शिकायत लिखी है उनको लिख दीजिये के Point A पर भाई बहनोंवाला मुराक़बा (ध्यान) शुरू कर दें । तरीका (पध्दति) आप को मालूम है । दोरेस्वामी जो Bangalore में है उनके पास आप जरूर जायें, जब आपको Bangalore जाने का इत्तिफाक (संयोग) पडे । ओ बडे मुहब्बती (प्रेमी) आदमी है और चार पाँच सतसंगी भी वहाँ है । अगले tour में मुझे Hassan तो आना ही है । जहाँ तक हो सका, मैं कमसे कम एक दिन दोरेस्वामी के यहाँ ज़रूर क़ियाम (निवास) करूँगा। Sarnad के बारे में एक बात रह गई । ओ ये के उन्होंने चीन के हमले (आक्रमण) के मुताल्लिक (संबंधमें) जो फ़िकर (चिंता) ज़ाहिर की है, उसमें एक मसला (लोकोक्ति) याद आया के, "काज़ी जी क्यों दुबले, शहर के अंदेशे (चिंता) से"। बजाय इसके, अगर उनको ये फ़िक्र (चिंता) होती, कहीं खराब (evil) वृत्तियाँ हमला (आक्रमण) न कर जावें , और उस से हिफ़ाज़त (सुरक्षा) की फ़िक्र (चिंता) होती, तो बहुत अच्छा होता । आपके वालिद माजिद (पू. पिताजी) को सुकून (शांति) की बहुत जरूरत है । और बुढापे (वृद्धावस्था) में खास तौर पर सबको जरूरत पडती है। मगर कहीं आप यह न कह बैठे के मैं बूढा (वृद्ध) हो रहा हूँ ; उसकी ज़रूरत मुझे भी होगी । तो भाई, ये बात यूँ ग़लत होगी के मैं कभी जवान हुआ होता, तो बूढा भी होता । श्री. रामचंद्र मिशन तो ज़रुर फैलेगा और खासकर वहाँ, जहाँ के आप हैं । इस में अपनी इच्छाशक्ती मजबूत रखिये और कोशिश किये जायें। मुझे आपकी pay scale मुक़र्रर (तय) हो जाने की निसबत (बारेमें) ख़ुशी हुई। आप को जितना रुपया मिला है उस को

लडकियोंकी शादी के लिये जहाँ तक हो सके हिफ़ाज़त (सुरक्षित) से रखें और आइंदा (आगे) किफ़ायतशारी (मित व्यय) से हत्तुलवसी (यथाशक्ति) काम लें। पिछली मरतबा (बार) मेरे यहाँ न होने से, पत्रिका सब ग़लत छप गया था। आप के मज़मून (लेख) को इस नंबर में दोबारा ले लिया गया है। मैं रेलवे रसीद (railway receipt) भेज रहा हूँ। इसमें किताबें बतफ़सीले जैल (निम्नलिखित ब्यौरे से) है।

Sahaj Marg Magazine	5	Copies
Efficacy of Rajyoga	10	Copies
Ten Commandments	10	Copies
Peep into Sahaj Marg	10	Copies
Anant ki Or	5	Copies

Polytechnic का magazine मुझे मिल गया । आप जो मेरे ख़ुतूत (पत्रों) का तरजुमा (अनुवाद) कर रहे हैं और उसके लिये जो दुआके (आशीर्वाद) तालिब (इच्छुक) है, ओ ठीक है । मगर मैं एक बात बताये देता हूँ के अपने ऊपर trust करनेपर हर एक बात सही आती है ।

और कहीं ये बात पैदा हो जावे के कोई शख़्स (व्यक्ति) अपने ऊपर trust करे और उस के यह बात समझमें न आवे के लफ़्ज़ (शब्द) `अपना' किससे refer कर रहा है, तो जो कहेगा ओ सही होगा ; और जो लिखेगा ओ सही होगा। आप के मायने (अर्थ) में Self ग़ायब (लुप्त) है । मैंने S.N. Chabbi का जुमला (वाक्य) पढ़ लिया । ओ जो कुछ करते हैं, करने दीजिये । कुछ फ़ायदा ज़रुर ही होगा । Dr. Varadachari ने एक मरतबा (बार) यह तजवीज़ (व्यवस्था) की थी के मिशन का हर member अपना एक छोटा photo और पुश्त (पीछे) पर मय (साथ) नाम और पता के अगर Head Office भेज दे तो बहुत सी आसानियाँ पैदा हो जावें। मगर मैं इस के ज्यादा मुवाफ़िक (पक्षमें) नही हूँ। यह S.N. Chabbi को ग़ालिबन(संभवतः) मैं पहचानता हूँ। मगर ओ अगर फोटो अपना भेज दें तो बडा अच्छा हो। अलावा (सिवा) इसके, आप उन्हें जैसा बनाना चाहें बना सकते हैं । एक दिक्कत (कठिनाई) मुझे ज़रुर पड़ी है के transfer वाले आदमी को जब preceptor बनाया जाता है तो उसकी जगह जल्दी खाली (रिक्त) हो जाती है और फिर मुझे दूसरे की तलाश (खोजना) हो जाती है।

Bellary में आपने organiser कौन बनाया है उसका नाम और पता मुझे भेज दीजिये । श्री. नारायणरावको भी लिखा है के उन्होंने आप के consultation से रायचुर में किसको organiser बनाया है । ओ रायचुर गये हुए है । वहाँ से आकर लिखेंगे । Dr. Kulkarni के बारेंमे लिखा है के ओ बिलकुल दिलचस्पी (रूचि) नहीं ले रहे है । और ये ख़याल (विचार) ठीक ही है के ओ साईबाबा के फेरे (चक्कर) में पड गये हैं । हमारा आपका, सबका मतलब (उद्देश्य) ये है के उनको रुहानी (आध्यात्मिक) फ़ायदा हो । तो अगर उनको साईबाबासे फ़ायदा होता है तो कोई हरज (आपत्ति) नहीं । साईबाबा में ओ बात नहीं रही जो पहले थी । रुहानियत में ओ पहिले भी सिफ़र (शून्य) थे और अब भी हैं और अब यह miracle भी रुख़सत (ख़तम) हो रहे हैं । हमें साईबाबासे कोई मतलब (संबंध) नहीं । ओ जो चाहें किये जावें। मगर जब इनसे नुकसान होना लोगोंके लिए शुरु हो रहा है और शैतानी हरकत (कार्य) से ओ बाज़ न आये (छोड़ना / त्यागना) तो हो सकता है के मुझसे मतलब (वास्ता) हो जावे । थोडे दिनोंके बाद जब miracles ख़ैरबाद (बिदा) कह दें तो मुमकिन (संभव) है के ओ उपदेश शुरु कर दें । मैं 21 Oct. को आसाम जा रहा हूँ। Reservation के लिए नसीबचंद को रुपिये भेज दिये है । मेरे साथ मास्टरसाहब, काशीराम और हरदत्तसिंग जा रहे हैं ।

अब मैं आप को मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ , के आपने 13 Sep. 63 को 4 बजकर 58 मिनिटपर बवक्ते (समय) शाम Central region की चौथी ring पर क़दम रख दिया है। आप को अब न meditation की ज़रुरत है न किसी पूजा की। मैंने ध्यान सुबह को एक घंटा और शाम को आधा घंटा रखा है । लिहाज़ा (इसलिए) ये 1.1/2 घंटे का वक्त आप का बचा दिया है । इस वक्त को, जितना दिमाग़ सहुलियतसे (आसानीसे) इजाज़त दे, दूसरों की रुहानी (आध्यात्मिक) तरक्की (उन्नति) देनेमें सर्फ़ (खर्च) कीजिये । हफ्ते में कमसे कम एक दिन ऐसा ज़रुर होना चाहिये के आप अपने centre के कुल भाईयोंको तवज्जह (प्राणाहुति) दें। इसका ये मतलब (अर्थ) नहीं के हर एक को individually दें । आप मजमूआ (इकठ्ठा) तौर पर सब को एक साथ ले सकते हैं। और फिर उसमें से जिसको individually देना चाहें, ले सकते हैं ।

मैं जब मदरास में था तो कुछ दिल के points की research Dr. साहब ने मुझे दी थी। मैंने उसी वक्त research करके उस को समझा दी मगर एक point की research जो centre में है

उस वक्त ज़ियादा (अधिक) न खुल पाई। अब मैंने इनको एक माह से ज़ियादा हुआ भेज दी है। उसकी नक़ल भेज रहा हूँ। यह research मेरी बिलकुल सही है । इसे समझ लीजियेगा और file में लगा लीजियेगा । कस्तूरी मुझे देखने यहाँ आई है। कल वापिस जा रही है। आप को प्रणाम कहती है ।

हम ने आसाम के लिये कुछ pamphlet छपवाये है, जो out lines of Sahaj Marg का तरजुमा (अनुवाद) है । लफ़्ज़ (शब्द) आख़ीर में कुछ और बढ़ा दिया है । दो तीन रोज़ में आ जावेगी । एक कापी आप को और एक सरनाडको और एक Ayal Reddy के पास भेजूँगा । Pamphlet देखकर यह राय (मत / विचार) क़ायम कीजिये के आया (क्या) ये मुनासिब (योग्य) होगा की उसका Kannada तरजुमा (अनुवाद) भी करा दिया जावे । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये कि शाम को सफ़ाई का अभ्यास जो बताया गया है, उससे लोगोंमें फ़ायदा नहीं दिखता । वजह ये है के ओ उसको ग़लत करते हैं । आप अपने मातहत (अधीन) Centre पर जो लोग के सतसंग करते है उनको इत्तलाह (सूचना) कर दें । और जो आपको मिलें उनको जबानी भी समझाते जावें । दर हक़ीक़त (वास्तव में) grossness पर meditation शुरु कर देते हैं । और ख़ियाल (विचार) ये करते हैं के पीछे की तरफ धुंवे की शकल (रूप) में grossness जा रही है । चाहिये यह, के उसको ख़याल के इशारे से पीछे धुवाँ बननेके लिये फेंकते जावें ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 142 शाहजहाँपुर
No.-H-517-SRCM Date 18.10.1963

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

क़ब्लअज़ी (इससे पहले) एक लिफ़ाफ़ा रवाना (भेज) कर चुका हूँ; जिसमें किताबों की रेल्वे रसीद थी, मिल गया होगा । Programme भी उसी में रख दिया था ।

मेरे पास Bidar से एक ख़त Shri. B. L. K. Murthy का आया था। उसमें Shri. Godbole के बारे में लिखा था के उनको trainer बना दिया जावे। जब तक आप की राय (विचार) नहीं, मैं इस बारे में कुछ नहीं कर सकता। Shri. Ayal Reddy बहुत अच्छा काम कर रहे हैं। और ऐसी हालत में दूसरा और trainer की ज़रूरत मालूम नहीं होती । मैं अपनी ज़रूरत के लिए गुरू महाराज की ताक़तसे चंद (थोड़े) दिनोंमें trainer बना दिया करता हूँ। मेरी जरूरत (आवश्यकता) तो इस वक्त (समय) रफ़ा (समाप्त) है । अब अगर Shri. Godbole दूसरे की खिदमत (सेवा) करने के लिए सरगरदाँ (निछावर) हो, तो ओ अपने आपको तय्यार करें ।

Shri. B. L. K. Murthy का ख़याल (विचार) नेक (अच्छा) है और मैं उनकी तारीफ़ करता हूँ। मुमकिन (संभव) है आप Shri. Godbole को जानते हों । पहले ओ मिशनकी service जैसी ओ कर सकते हैं शुरू कर दें, ताके मुझे भी कुछ उनके बारे में अंदाज लग जाये । इस बारे में जो ख़त व किताबत (पत्रव्यवहार) हुई है ओ आपके पास file में रखने के लिये भेज रहा हूँ । इससे आप को आगे सोचने की मदद मिलेगी और वाक़िफ़ हाल (हालात से परिचित) रहेंगे । मैं 21 Oct को आसाम वगैरा जा रहा हूँ । Programme आप को भेज दिया है। आजकल मैं कमज़ोर (दुर्बल) बहुत हूँ। मगर मजबूरन (विवश होकर) इरादा (निश्चय), ईश्वर के भरोसे पर कर ही लिया ।

बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

आपकी रायमें (विचार) उस बच्चे का नाम P. Ramprasadrao कैसा रहेगा। मगर यह North Indian नाम है। ईश्वर उसकी बडी उमर अता (दे दें) करे और खुश व खुर्रम (प्रसन्न) रहे।

Sd/ Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 143
No.-H-547-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 21.11.1963

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बच्चे के इन्तकाल (मृत्यु) की ख़बर सुनकर दिली सदमा (धक्का) पहुँचा । ईश्वर की मर्ज़ी में कोई चारा (उपाय) नहीं । इसलिए मजबूरन (विवशतः) सबर (संयम) किया । ईश्वर उस की रुह (आत्मा) को शान्ती देवे और आप लोगोंको सबर (धैर्य) अता करे (दे दें) । मैं, मुमकिन (संभव) है, इतना कर सकता के उस की soul को आप के यहाँ फिर उसी फारम (रूप) में दोबारा भेज देता जैसा के Mudaliar की नवासी के मर जाने पर वही soul फिर उन के घर में वापस हुई | चुँके (क्योंकि) यह Mudaliar की लड़की की पहली ही लड़की थी , उनके घरके लोग उस वक्त कानपुर में थे ; मेरे पास इस्तदुआ (प्रार्थना) से आये के इस लड़की की मुजस्सम (साक्षात्) उसी form (रूप) में दे दीजिये। मैंने कहा के मेरे लिये ये मुमकिन (संभव) नहीं । यह सिर्फ कृष्ण भगवान ही कर सकते थे के अपने गुरु का लड़का जो समंदर मे डूब गया था, मुज़स्सम (साक्षात् / सशरीर) लाकर वापस कर दिया था। हाँ इतना मुमकिन (संभव) है के वही soul दोबारा आप के यहाँ पैदा हो और फिर ऐसा ही हुआ ।

मौजूदा (वर्तमान) लड़की जिसका नाम Chokkabai है, उस में वही soul है और शकल (चेहरा) भी वही है। ख़त मिलनेपर मैं इस बच्चे को कई तवज्जह (प्राणाहुति) दे चुका था, जिस में बहुतसी बातें जो जिसम (शरीर) रखने के लिये ज़रुरी थी साफ हो चुकी थी । इसके बाद मुझे ऊपर का ख़याल पैदा हुआ। उससे पूछा तो ओ आने को तैयार नहीं । ये चीज़ उसको दोबारा लाने में हायल (अड़चन) हो गई । और जो चीज़ मिट चुकी ओ दोबारा पैदा करना अच्छा नहीं है । ईश्वर करे बहूका ग़म (दुःख) ग़लत (दूर) हो और उससे बेहेतर शकल (चेहरा) देखनेको मिले । आमीन (ऐसा ही हो) । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 144 शाहजहाँपुर
No.-H-629-SRCM Date 17.12.1963

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त मिल गया। बच्चे का ख़्याल (विचार) और उसके मरनेका अफ़सोस (दुःख) मेरे दिलसे अभी तक नहीं हटा । इसलिए मैं आपको आसाम और Calcutta के हालात नहीं लिख सका । और जाने क्या क्या कामकी बातें लिखना चाहता था जो न लिख सका । और सब भूल गया । मैं चाहता हूँ के मेरे दिलमें जो रंजके साथ बच्चेका ख़याल बैठ गया है निकल जावे । मगर ये उस वक्त मुमकिन (संभव) हो सकेगा जब आप लोगोंके दिलसे ये ख़याल निकल जावे ।

बसंत पंचमी उत्सव 18 Jan. 64 से ता 20 Jan रहेगा। आप Raichur के किसी ख़ास सतसंगी को लिख देवे के ओ सबको शिरकत (शामील होने) की दावत (आमंत्रण) दे देवें । मैंने नारायणरावजी को भी लिखा है । और Bellary के किसी ख़ास (विशिष्ट) सतसंगीको इत्तलाह (सूचना) दे दें के ओ सबको शिरकत (शामील होने) की दावत (आमंत्रण) दे देवें । मुझे पता नहीं के आपने Bellary में और Raichur में कौन organiser मुक़र्रर (निश्चित) किया है। इसलिये उन लोगोंको कुछ नहीं लिख पाता । अच्छा है के भाई माधवरावजी भी आपके साथ आवे । मुझे ख़ुशी होगी । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 145 Camp. Madras
No.-I-25-SRCM Date 09.01.1964

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं यहाँ से 11 Jan- को वापिस जा रहा हूँ । Vir Raghavan यहाँ पर जो preceptor हैं , उनका काम बहुत अच्छा है । Dr. Varadacharya भी यहाँ आ गये और 11 तक रहेंगे । उनकी एक speech भी आज के लिये arrange की गई है। यहाँ हर जगह कुछ ना कुछ सतसंगी बढ़े हैं, और Tiruvannamalai में 60 के क़रीब आदमी हो गये । तिरचिनापल्ली बिलकुल (पूर्णतः) खामूश है । उस तरफ भी कुछ तवज्ज़ह (ध्यान) करना चाहिए । बच्चे बफ़ज़लहू (ईश्वराकृपासे) सब अच्छी तरह होंगे। करीगौडा व दूसरे सतसंगी आप के पास आते हैं या नहीं ? उनसे कभी मौक़ा (अवसर) मिला तो मिल भी लिया कीजिये । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 146 शाहजहाँपुर
No.-I-367-SRCM Date 06.08.1964

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके ख़त बराबर मिलते रहे । मगर जवाब किसी का न दे सका । अब जो ख़त मिला है इससे यह तरश्शुह (ज़ाहिर) होता है के अब ख़त का जवाब ज़रुर जाना चाहिए ताके परेशानी (चिंता) न पैदा हो। पहले मैं अपनी कहानी लिखता हूँ । क़रीब क़रीब चार माह से कुछ ज़ियादा हो गये मैं सीतापुर गया था । वहाँ कमरमें दरद इतना पैदा हो गया के उठना बैठना मुश्किल (कठीन) था । चार छह दिन बाद कुछ हलका पड गया। मगर बाई टांग के joint (कुल्हा) और ankle में दरद इतना रहा के ज़ियादा (अधिक) चल फिर नहीं सकता था। और चलने में मज़बूतीसे पैर नहीं पडता था, और कुछ लंग (लंगडना) भी हो गई । Doctor ने Barene ख़ाने को दी मगर कुछ फ़ायदा नहीं हुआ । फिर एक हकीम अच्छा मिल गया । उसका इलाज शुरु किया । उसकी दवासे कुछ फ़ायदा हुआ। इसके बाद Delhi से जज्ज साहब का ख़त आया के उन्होंने 7 July से charge छोड़ दिया

है । और ओ आख़री July तक Delhi छोड देंगे और मुझे बुलाने के लिये भी ख़त ऐसा लिखा के मैं इन्कार (मना) ही न कर सका । मैं वहाँ 4 रोज़ रहकर 23 July को वापिस आया । यहाँ आनेपर मालुम हुआ के बरखुरदार (बेटा) सर्वेश की बाई कलाई की दोनो हड्डीयाँ टूट गई है जो यहाँ set नहीं हो सकी । चुनांचे (इसलिए) मैं और मास्टरसाहब 24 July को इसे लेकर Banaras गये ।

वहाँ अस्पताल में मेरे एक अज़ीज़ (मित्र) orthopedics है । उन्होंने हड्डी set कर दी । रास्ते में एक हादसा (घटना) ये हुआ के मैं पेशाब को गया और गाडी में एक साहब मेरा handbag लेकर उतर गये । उसमें अलावा दीगर (और) सामान के, मेरा चष्मा और denture और कुछ मिठाई और दो रुपये नक़द थे । Banaras में 4 रोज़ रहा । इस असना (बीच) में पेट के दर्दका शदीद (सख़्त) दौरा हो गया जो अबतक क़ायम है । अभी तक कोई दवा ठीक से फ़ायदा नहीं कर रही है। मगर अब फ़ायदा ज़रुर होगा । बरख़ुरदार (बेटा) उमेश B. Com पास हो गया और उसने Chartered Accoutancy को Delhi में दाखला लेने का ख़याल बांधा जो 4 साल का course है । मजबूरन (विवश होकर) उसको उसकी बहन छाया के पास भेजना पडा जो Delhi में है । इसमें कई हफ्ते कोशिश (प्रयत्न) करनी पडी । अब एक ने वायदा किया है । ग़ालिबन हो गया होगा । ख़त आनेपर मालूम होगा । सर्वेशने high school पास करके यहीं college में दाखला लिया है । गरज़के (सारांश यह कि) बहुतसी बातें ऐसी बेज़ारगी (असहायता) की हालत में जमा हो गई जिसका संभालना ईश्वरके हाथमें है । मैंने कुल कहानी सुना दी । अब आगे बढता हूँ । जन्माष्टमीका बरत आपने ठीक लिखा के 30 August को है । मैं बरत (उपवास) ऐसा चाहता हूँ के शामको कुछ थोडासा दूध, फल या मीठे चावल खा लिये जावे। यह सुनकर बहुत खुशी है के बहू और बच्चे भी यहाँ आनेका इरादा कर रहे हैं । मैंने आपसे कहा था के आपकी तनख़ा Rs 600/- हो जावेगी तब बच्चोंको बुलाऊँगा। भाई माधवरावजी के लडका पैदा होने की निसबत (बारेमें) खुशी हुई, ईश्वर उसकी उम्रदराज़ (दीर्घायु) करे ।

मेरा इरादा (विचार) जुनूबी (दक्षिण) हिंद में दौरे (यात्रा) का Nov के तीसरे हफ्ते से है । आपके यहाँ चूँके (क्योंकि) सतसंगी नहीं है तो बस आराम ही आराम करूँगा । मगर सतसंगी बढाने की तरकीब (उपाय) मैं लिखता हूँ । आप एक meeting arrange करें इसमें अपनी जान पहचान और college के

staff को मदऊ (आमंत्रित) करें और Sahaj Marg के बारे में उन्हें समझा दें । और किसी किसीको किताबें और pamphlet भी पढने दें । उसके बाद जब कुछ दोस्त और मददगार मिल जावे या कोई platform किसी तरह का मिल जावे तो public speeches भी होना चाहिए । और जैसे के Vijaywada में एक P.T.I. ने किया था के मेरी आनेकी ख़बर जो date हो उसपर मुझसे मिलनेके लिये एक notice बतौर इत्तलाह (सूचना के रूप में) के, बाँट दिये जावे । सोचने से कुछ और भी तरीके आपके ख़याल में आवेंगे ।

एक साहब बीदर के श्री. अंजय्या तीन रोज़ रहकर चले गये । इससे पहले भी मई और June मे कई भाई आये थे उसमें श्री. रामचंद्रराव, भीमसेनराव और रामचंद्र पुजार भी थे । और मसला (बात) initiation पेश (प्रस्तुत) हुआ । रामचंद्र पुजार तो बहुत कुछ ठीक है और भीमसेनराव को initiate करना जैसा के मैंने Bellary में कहा था, मुमकिन (संभव) न हो सका इसलिये के उनके भाई रामचंद्रराव भी यही चाहते थे, जो के इसके क़तई (बिल्कुल) अहल (पात्र) न थे । अब अगर एक को किया जावे और एक को न किया जावे तो आपस में अनबन (झगड़ा) पैदा हो सकती है । इसलिये मैंने मजबूरन (विवशतः) यह कहा के अगर रामचंद्रराव अपने भाई की सिफारिश करें तो यह मुमकिन (संभव) हो सकता है । चुनांचे (इसलिए) उन्होने दरख़्वास्त (निवेदन) की और मैंने मजबूरन (विवश होकर) वायदा कर लिया । मगर कुछ लोग और भी ऐसे आ गये के जिनके होने की वजह से मैंने इनको initiate न किया । पर गोपालरावने मेरी समझ से कई आदमियोंसे कहा है । इस को तो राज़ ही (गुप्त) में रखना चाहिए क्यूँके तजरुबा (अनुभव) ऐसा ही बताता है । वैसे तो initiate होने से उनका बहुत फ़ायदा है इस लिहाज़ (ख़याल) से के यहाँ हर चीज़ power से की जाती है । मगर मुश्किल (कठिनाई) ये पडती है के इस के अहल (पात्र) कम मिलते हैं । कहीं कहीं मुझे मुरव्वत (संकोच) से भी काम लेना पडता है । अगर ठीक आदमी मिल जावे तो मुझे कभी आर (संकोच) नहीं हो सकता ।

आपने एक ख़त में लिखा है के कोई ऐसी तरकीब (उपाय) हो जाती, के मिशन को ज़रुरत के लिए रुपया मिलता रहता, और बडे दिलसे लिखा था । इतना ख़याल करने का नतीजा (परिणाम) यह हुआ के उसके बाद ही Shri. Raghvendrao S. P. ने दस हजार रुपये आश्रम के लिये भेज दिये। तीन हजार पहले ही मौजूद (पास)

थे। इस में छोटासा hall बन जावेगा । काम जारी है । मगर बरसात की वजह से कुछ देर सी हो रही है । श्री. Ayal Reddy ने भी इसके लिये कुछ फंड इकठ्ठा (जमा) करने का लिखा था मगर ओ अभी अपनी मुसीबतोंकी (कठिनाईयों) वजह (कारण) से इस काम को न कर सके । उन्होंने August में आनेको लिखा है । ओ सुरमा जो मैंने आपको दिया था उससे कुछ बीनाई (आँखों) को फ़ायदा हुवा ? इस के लगाने से कोई हरज (हानी) नहीं, अगर फ़ायदा हो तो मेरे आनेसे पहले मुझे लिख देना ताके और शीशी लेता आऊँ ।

महेन्द्रकरजी जो Hyderabad से उत्सव में आये थे, उन्होने एक आदमी जो circuitous route पर सफ़र (यात्रा) कर रहा था और जिस का नाम प्रभाकर वर्धन है, मेरे पास आने की तलक़ीन (सलाह) दी । ओ मेरे पास 22 दिन रहे और ओ रामदासजी Mangalore के जो थे उनकी practice " मरा मरा " और " राम राम " की कर रहे थे । उसके लिये मै private तौर पर लिखता हूँ के character भी unblemished नहीं था । मैंने दो मरतबे (बार) उनको तवज्जह (प्राणाहुति) देने की कोशिश (प्रयत्न) की। नतीजा (परिणाम) यह हुवा, उल्टा injection मुझे लगा , और मेरा दिल जलने लगा । और जितने दिनों ओ यहाँ रहे और ओ जब सामने बैठे तो दिल जलता ही रहा । यहाँ 22 दिन मैंने बड़ी तकलीफ़ (कष्ट) से काटे । बहुत बातोंके बाद ओ कहे के ओ सिर्फ transmission लेने आये थे । बाक़ी राम राम की रट से मतलब (उद्देश्य) था । इस दौरान में मैं Sitapur गया, जहाँ public gathering थी और ओ भी साथ थे। मेरी हैसियत उनकी निगाह में ऐसी थी जो साकी की है के, शराब पिलादी और फिर कुछ मतलब (संबध) नहीं। उन्हे ये ख़याल न था के Sahaj Marg मे कितनी ऊँची कैफ़ियत (हालत / अवस्था) पैदा हो सकती है। आख़िर को मैंने सतसंग में जो गुफ़्तगू (बातें) शुरु की उससे वे बंबार्ड हुवे और Sahaj Marg follow करने को तैयार हो गये। मैंने उनको लेने से मना कर दिया और Kumaraswamy को लिख दिया के ये शख़्स (व्यक्ति) लेने के क़ाबिल (योग्य) नहीं है। उस को बहुत deep operation की ज़रुरत है जो सिर्फ Nature ही दे सकती है। मान लीजिए हम आपमें से कोई deep operation दे तो ये बहुत मुश्किल (कठीन) काम है। इसलिये के हर वख़्त की देख भाल और संभालना Nature के मुताबिक (तरह) नहीं हो सकता।

Sahaj Marg पत्रिका छापखानेसे बहुत देर से अक़सर (प्रायः) छह छह माह बाद मिलती है । और लोग मुझे अक्सर (प्रायः) तकाज़ा (तगादा) करते है । मुश्किल (कठिनाई) तब ही दूर हो सकती है जब ईश्वर अपना press दे दे । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः वालिद साहब (पिताजी) को फ़ालीज (लकवा / पक्षघात) किस तरफ गिरा है, दाहिनी या बायें तरफ ?

****

ॐ तत् सत

Serial No. 147 शाहजहाँपुर
No.-I-401-SRCM Date 09.09.1964

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप के वालिद माजिद (पू. पिताजी) का स्वर्गवास हो जाने की ख़बर सुनकर बहुत अफ़सोस (दुःख) हुआ | मजबूरन (विवश होकर) सबर (संयम) किया। ईश्वर उनकी रुह (आत्मा) को शान्ती देवे और आप लोगों को सबर (धैर्य) अता (दें) फरमावे ।

मैने ताजियत (शोक) का ख़त इसलिए अभी तक नहीं भेजा के आप सब अपने वतन (गाँव) गये होंगे ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 148 शाहजहाँपुर
No.-I-435-SRCM Date 13.10.1964

मेरे राघवेंद्रावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज (आप) का ख़त मौसूल (प्राप्त) हुआ। मैं आपके भाईके यहाँ, ठहरना चाहता हूँ। मगर Mrs. Kumarswamy की मुहब्बत (प्रेम) और मुरव्वत (लिहाज़ / विचार) का दबाव दिलपर ज़रुर है। Mr. Jogarao जन्माष्टमी में यहाँ आये थे । ओ मुझे अपने यहाँ ठहरने की दावत (आमंत्रण) दे गये है । मैंने उनसे कह दिया था के ये बात Shri. Raghavendrarao तय (निश्चित) करेंगे, चुनांचे (इसलिए) आपने सब तय कर ही दिया । लिहाज़ा (अतः) अब और कहीं ठहरने का सवाल पैदा नहीं होता । Kumarswamy के यहाँ जगह भी काफ़ी न होगी । इस लिहाज़ (कारण) से ओ मुझे मज़बूर (विवश) भी न कर सकेंगे । आप 300/- रुपये का चेक न भेजिये, जागीरदार को लिख रहा हूँ के इतना बोझ उनके ऊपर मैं डालना नहीं चाहता। लिहाज़ा (इसलिए) उसका Payment मिशन की तरफ से होगा । उनके मुहब्बत (प्रेम) के जज़बेकी (आवेश) तारीफ़ (प्रशंसा) ज़रुर है के ओ पूजाकी कमरे की वजह से इतना खर्च कर रहे हैं । मगर पूजा के लिए एक हज़ार का sofaset किसी के ख़याल (विचार) में नहीं आता । इसलिये के ओ समझते है के पूजाके लिए हमवार (समतल) जमीन ही होना चाहिये और उसके लिए चटाई और पट्टा ही काफ़ी है । उतनी उमदा (अच्छी) चीज़ के लिए कमरा और हिफ़ाज़त (रख-रखाव)भी वैसे ही होना चाहिये । इसके माने ये हुए के उल्टा दिलपर बोझ पैदा कर लेना चाहिये ।

मुझे जुनूबी (दक्षिण) हिंद से वापस हुवे क़रीब क़रीब 1.1/2 साल हो गया। मैं कुछ Centre खोलना चाहता हूँ और उसके लिये कुछ लोगों से वायदा (वादा) भी कर दिया है। उसमें से एक Shri Raghvendra Rao S.P., दूसरे Dr. Parthasarathy, Vijaywada के है। जिनको फ़िलहाल (इस समय) Kumarswamy के कहनेपर शरतिया (प्रतिबंधित) इजाज़त (अनुमति) सतसंग के लिये दे दी है। वैसे मैं पूरी (पूर्ण) इजाज़त (अनुमति) भी दे सकता था और तय्यार भी कर सका था। मगर Mr. Mudaliar तजरुबेने (अनुभव) जो आप को भी याद होगा, जल्दी करना मुनासिब (उचित) न समझा । तीसरे, नारायणराव Bijapur के है जिसे मैं वायदा (वादा) कर चुका हूँ । चौथा, एक नया ख़याल पैदा हुआ और उसके लिये आप पर छोडता हूँ के श्री. गुंडेराव को भी क्यूँ न इजाज़त (अनुमति) दे दी जावे अगर इस राय से आप मुवाफ़िक़

(सहमति) करे तो उनकी grossness जो सीने पर एक तह (परत) की शकल (रूप) में जमा है, निकाल ने की कोशिश करें और मुझे इत्तलाह (सूचना) दे दें । इन सबके लिये सालभरसे मैंने touch ही नहीं किया । उसके बाद कई महिने बीमारी में जाया कर दिये। मेरी समझमें नहीं आता के इन सब को सफर के दौरान में ही तय्यार करना पडेगा जैसा के अक्सर (प्रायः) किया है। मेरी तंदुरस्ती (स्वास्थ्य)अभी तक अच्छी नहीं है। मगर 20 Nov. को यहाँसे चलने का इरादा (विचार) कर दिया है । हो सकता है के एक दिनकी देर हो जावे । Time table जदीद (नया) अभी नहीं मिला है। मिलनेपर programme बना दूंगा । मैं संगारेड्डी ज़रुर जाऊंगा क्योंके SP से वायदा (वादा) कर चुका हूँ ।

मैंने Raichur अपने programme में लिखा था मगर आपके ख़त आनेपर वहाँका इरादा (विचार) ख़तम (समाप्त) कर दिया । मगर मेरी बजाय, आपको जाना पडेगा, 3 रोज़ के लिये और ये आप 4 महिनेमें कभी कर सकते हैं । क्योंके वहाँ organisation की ज़रुरत (आवश्यकता) है । मेरे programme पहुंचने पर आप Raichur के सतसंगियों को इत्तलाह (सूचना) दे देवें के मुझे Sedam में मिलें और ये कोई बात भी नहीं है के मैं उन लोगों के लिये 1600 मील सफ़र कर के आता हूँ और ओ 250 मील न आ सके। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये है के मैं Chanapatna शायद ज़रुर जाऊँ क्योंके मैसूर से Banglore के रास्ते में पडता है।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 149 शाहजहाँपुर
No.-I-495-SRCM Date 28.10.1964

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आप) का मोहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिल गया। Programme भेज रहा हूँ। मैंने programme की कापी आप के circle मे मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) बिरादरान (भाईओं) को भेज दी है।

1) Shri. Kumarswamy Hyderabad
2) Shri. Raghavendra Rao Sangareddy
3) Shri. Gopalrao Bidar
4) Shri. Ayal Reddy Sedam
5) Shri. S. A. Sarnad, Gulbarga
6) Shri. Narayanrao Bijapur
7) Shri. M.D. Jahagirdar Channapatna
8) Shri. Doreswamy Banglore
9) Shri. Manjunath Mysore

इसके अलावा (अतिरिक्त) जहाँ जहाँ सतसंगी हों, आप Ayal Reddy को लिख देवें। ओ इत्तलाह (सूचना) कर देंगे । Raichur के लोगों को आप इत्तलाह (सूचना) कर दें के जो station उनके क़रीब हो वहाँ आकर मुझसे मिल लें । मैंने गुंतपंगलू pot एक अभ्यासी को present करने का वायदा किया है और मैंने सुना है के ये Raichur और Bellary में अच्छे मिलते है । जहाँसे मुनासिब (उचित) हुआ इंतजाम (व्यवस्था) कर लें । जो किताबों की ज़रुरत हो, तहरीर (लिखें) करें ताके लिए आऊँ । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: गुलबर्गा से रवानगी (प्रयाण) 7-16 पर, Madras Bombay Janata Express III Class No. 14 up से है। यह गाडी होटगी 9 बजकर 48 मिनिटपर पहुंचती है । और वहाँ से 10 बजे Solapur Hotgi Passenger 239 Up रवाना होती है, जो Bijapur 1.08 पर पहुंचती है । इस में Margin बहुत कम है । मगर चारा (उपाय) नहीं । दूसरी गाडी, Gulbarga से 16.31 पर चलती है मगर उससे भी Hubli में सिर्फ 8 minute का margin है । तीसरी गाडी, 15.36 पर चलती है । इससे connection ही नहीं मिलती। बाक़ी या सब गाडियाँ रात में 2.00 बजे के बाद जाती है, जो बहुत तकलीफ़ दे (कष्टकारक) ही होगी । अब अगर connection

नहीं मिल पाता है तो हमें Hotgi में दूसरी गाडी 19.00 पर मिलेगी। अगर वहाँ, बस वगैरा का रास्ता है तो मौक़े पर देखा जायेगा । ग़ालिबन (संभवतः) Gulbarga से Bijapur तक सडक का रास्ता ज़ियादा (अधिक) दूर का न होगा ।

Bijapur से रवानगी 6.41 पर Solapur - Hubli Passenger 231 से है, जो हुबळी 16.50 पर पहुँचेगी । वहाँ से Miraj Bangalore Passenger 18.20, पर रवानगी होगी जो Harihar, Dawangiri, Birur से गुज़रती हुई Arsikere, 4.25 पर पहुँचेगी । वहाँ Arsikere Mysore Passenger 279 से 7.55 बजे रवाना होकर Hassan, 9.25 पर पहुँचेंगी ।

Dr. Varadacharya का ख़त आया था। उनको गौहाती (Assam) 3-4 Feb. को जाना है। चुनांचे (इसलिए) programme में तबदीली (बदलाव) कर के उनके पास भेजा है। अगर उस को approve करते है तो programme तबदील (बदल) हो जावेगा। मगर इस तबदीली (बदल) का असर Bangalore तक कुछ न पडेगा। Bangalore पहुँचने और वहाँ से रवानगी (प्रयाण) की तारीख वही रहेगी ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 150 शाहजहाँपुर
No.-I-508-SRCM Date 07.11.1964

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

Programme के बारे में श्री. ईश्वर सहाय ने ख़ुद लिखा है, जो हमरिश्ता (संलग्न) ख़त हज़ा (यह) है, बक़ीया (बाक़ी) खतों का जवाब मैं दे रहा हूँ । आँ अज़ीज़ (आप) गुनहगार तो कभी न थे । और अगर गुज़श्ता (पिछले) जनम में आप होंगे भी तो ओ गिलाफ़ (आवरण) तो उतर चुका । अब गुनहगारी का ज़िकर (चर्चा) भी क्या और फिर अगर गुनहगार फर्ज़ (मान) ही कर लिया जावे, साथ

ही साथ उस की रहमत (दया) भी है । किसी शायर ने कितना अच्छा कहा है

"गुनहगारोंको पूछा जो उसकी रहमतने,
बहुत खफ़ीफ़ (लज्जित) हुवे जो गुनहगार न थे।"

एक अदब (शिष्टता) की निशानी (चिन्ह) है के ओ अपने आप को गुनहगार समझे मगर ये ख़याल (विचार) मुसलमानी है । मुमकिन है, अपने यहाँ ऐसा न कहा गया हो। इसमें एक शरीफाना (सभ्यता की) बात ज़रूर है के जब हम अपने आप को गुनहगार समझेंगे तो हमारा दिल उसकी रहमत (दया) की तरफ कशिश (आकर्षित) ज़रूर करेगा । और ऐसी हालत में हम ज़ियादा (अधिक) फ़ायदा उठा लेंगे के जब के हम अपनी पूरी आस (आशा) उसकी रहमत (दया) पर लगा देते हैं, जो शरणागत का एक जुज़ (भाग) है। जब हम बड़ी चीज़ की तरफ रूजू (झुकते) होते हैं तो अपनी हालत क़ुदरती (प्राकृतिक) तौर (रूप से) पर उस वक्त बहुत नीची हो जाती है। यहाँ तक के उसकी रहमत (दया) निगाह (दृष्टी) में रहती है । और हम कुछ नहीं रहते। इसके माने ये हुए कि उसकी रहमत (दया) के लिए रूजू (झुकाव) होने को ख़ला (जगह) बना देते हैं । ये तो बात रही हक़ीक़त की, जिसका अंदाजा मुहक्किक़ (अन्वेषक) ही कर सकता है ।

अब आपकी बात आती है । जब ख़त पहुँचा, एहसास (अनुभव) हुआ और मिलने की घड़ियाँ नज़दीक ही मालूम हुई । इस कुर्बत (सामीप्य) के ख़ियालने एक धक्का ख़ुद ब ख़ुद दे दिया जो मोहब्बत के ज़ोर का था । इसने जिसम की हर लडी हिला दी | बड़ाई का ख़ियाल होना ही चाहिए था, इसलिए के कोई बड़ी चीज़ ख़यालमें थी। अब बड़ी चीज़ जब ख़यालमें थी तो जब तक उसका opposite ख़यालमें न होगा, बड़ाई के ख़ियाल का destruction नहीं हो सकता। अब जब बडी चीज़ आप के ख़ियाल में थी तो उसने एक छोटी चीजपर असर (प्रभाव) डाला और ये ओ चीजें थी जो इन्सान (मनुष्य) के साथ ही साथ किसी न किसी हालत में कुछ न कुछ रहती ही हैं । इसलिए इन चीजोंपर जो उसका shock लगा ओ थोडी देरके लिये magnify हो गई । हक़ीक़त यह नहीं है जैसा के आपने लिखा है। मुहब्बत की तारीफें तो हर जगह मिलती है । महाभारत में हिकायत (कहानी) है के जब श्री कृष्णजी, विदुरजी के यहाँ गये उस वक्त विदुरजी की बीवी नंगी नहा रहीं थी । कृष्णजी की आवाज़ सुनते ही इतनी अज़खुद रफ़्ता (आत्म विस्मृत) हो गई के

वैसे ही किवाड (द्वार) खोलने चल दी। कृष्ण ने अपना पीतांबर डाल दिया और ओ केले की छिलका खिलाने लगी। इस तरहसे गूदा तो नीचे फेंकती जाती थी और छिलका खिलाते जाती थी । जब विदुरजी आये तो कहा के छिलका खिला रही हो और गूदा फेंकती जाती हो, उसे होश आ गया और ओ गूदा खिलाने लगी । कृष्ण भगवान ने कहा के जो छिलके मे स्वाद था ओ गूदेमें नहीं है । तो जब मोहब्बत (प्रेम) और भक्ती इस दर्जे (स्तर) काबू (अधिकार) पा लेती है तो ऐसा हाल जो विदुरानी का हुआ था, ओ कम तरक्की याफ्ता (कम उन्नतिवाले) में हो सकता है। जिसकी एक मिसाल (उदाहरण) दोरेस्वामी है । और आप जिस हैसियत (स्थिति) में हैं उसी हैसियत (स्थिति) के लिहाज़ (अनुसार) से असरपजीर (प्रभावित) हुए । बाक़ी कोई खास बात नहीं थी । और न ये बातें काबिले (योग्य) नोट (टिपण्णी) है ।

Thyagarajan के ख़ुतूतों (पत्रों) के जवाब देनेकी जरूरत नहीं, बल्की ख़त रखने चाहिये । मेरे पास भी बे सर व पैर के ख़त आते रहते हैं । और Dr. Varadachari के पास भी ।

श्री. मंजुनाथजीने मुझे भी लिखा है के मैं चिकमंगलूर जाऊँ । मगर मेरी तंदुरस्ती इस क़ाबिल (योग्य) मालूम नहीं होती के मैं बेकार मारामारा फिरूँ । उनका ख़ियाल ये है के मेरे जानेसे कुछ बरकत (फायदा) पैदा होगी। मगर बरकत रिक्कतसे (सेवासे) पैदा होती है। रिक्कत (सेवा) तो आप समझेही होंगे, मतलब ये है के prayer और भगती से ही बरकत (फायदा) पैदा हो जाती है । और इस वक्त मैं कमज़ोर (दुर्बल) भी हूँ । अक्सर (प्रायः) दमे की शिकायत भी हो जाती है । बाक़ी मरज़ (बीमारियाँ) तो टांग फैलाये बैठे रहते है । Dr. Parthasarthy Vijaywada ने मुझे कुछ दवाईयाँ भेजी है । और Vijaywada में कुछ injection देनेका भी इन्तजाम (व्यवस्था) कर रहे हैं । यह उनकी मोहब्बत (प्रेम) है । और जो आपके सतसंगी doctor हैं, दवाईयाँ उन्होंने भी भेजी है जिसके खाने की नौबत (बारी) नहीं आई । क्योंके कहीं और पिछला मर्ज़ औद कर (वापिस) आता है, कहीं कुछ और बात पैदा हो जाती है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह के Voice of the East का पहला Volume तय्यार हो गया। Dr. Varadachari ने Sahaj Marg a New Darshan और Sahaj Marg and Modern Pscychology तय्यार करके मेरे पास भेज दी है ; उसके छपने की फ़िकर (चिंता) हो रही है। Ten Commandments (English) ख़तम (समाप्त) हो गई और Peep into Sahaj Marg भी सिर्फ पचास अदद (संख्या) रह गई है।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 151 शाहजहाँपुर
No.-J-81-SRCM Date 13.02.1965

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

इस साल बसंत पंचमी में क़रीब 25 आदमी व औरतें शामिल हुए । और यह देखकर मुझे बहुत ख़ुशी हुई । बफ़ज़लहू सब लोग मुतमय्यन (संतुष्ट होकर) गये । नारायणराव भी आये थे । अब सब चले गये । सिर्फ शेषाद्री और उनकी बीवी मौजूद (उपस्थित) हैं । ओ 17 February को जावेंगे । मैं जुनूबी (दक्षिण) हिंद के दो आदमियों को बना चुका यानी आप और Dr. Varadachari को । बहुत थोडा काम रह गया है । और अब आप दोनों की तालीम (प्रशिक्षण) ईश्वर ने अपने हाथ में ले ली है। इसलिए आप दोनों अब मेरे हाथ से निकल गये। एक वक्त था जब के आप को मेरी ज़रुरत (आवश्यकता) थी और एक वक्त यह है के मुझे आप की ज़रुरत (आवश्यकता) है । मैंने चाहा के अब दो आदमियोंको और लूँ । इसलिये के और कोई आदमी इस क़िसम की तालीम (प्रशिक्षण) के लिये fit नहीं मिला । एक तज़रुबे (अनुभव) की बात लिखता हूँ के जब दो आदमियोंको लिया तो Seshadri की बीवी अपने आप बढने लगी । यानी मियाँ (पति) और बीवी (पत्नी) साथ ही साथ। लिहाज़ा (इसलिए) जो automatic आ गई। दूसरे सरनाडजी को मुंतख़ब किया (चुना)। जब शुरु करना चाहा तो उन में unconscious resistance मिली और जब तक ये दूर नहीं होती तब तक ओ ऐसे न बन सकेंगे जैसे बनने चाहिये । खींच खाँच कर ऊपर

ले जावें, ये और बात है । Speciality नहीं पैदा होती । इसलिए आप इसको सोचकर और समझकर दूर कीजिये। तब ऐसा हो सकेगा ।

मैंने आपका ध्यान वगैरा छुडवाकर 1.1/2 घंटा वक्त बचा दिया है । ओ आप मिशन के खामोश कामों में लगा दीजिये । और duty मैं आपको दे भी आया हूँ । अपने ऊपर जितना confidence होगा उतना ही अच्छा काम होगा ।

आप को Bidar का हाल मास्टरसाहबने Hassan में सुनाया था । और उन्होंने उन लोगोंको समझा बुझा भी दिया था । मगर मुझे कोई फ़ायदा नहीं मालूम होता, हालाँ के (यद्यपि) गड़बड़ आदमी दो चार ही होंगे । मगर भाई, एक मछली कुल तालाब को गंदा कर देती है । हम मिशन में ऐसी बातें नहीं चाहते और न ऐसे शखसोंकी (व्यक्तियों) हमें ज़रुरत है। हमें तो सतसंग बढाना है, गिरोह बंदी (गुट बंदी) नहीं क़ायम करना है। मैंने एक ख़त शंभूराव को लिखा है। उसकी नक़ल हमरिश्ता (संलग्न) है। यह ख़त मैंने Gopalrao के हाथ भेज दिया। आप उसमें जो मुनासिब (उचित) बात हो, कीजिये और मुझको सलाह दीजिये ।

Initiated members की list में मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) नाम और बढा लीजिये और Sarnad को लिख दीजिये के ओ अपनी list में भी बढ़ा लें और दत्तराज को भी बता दें और पंपापति को कुल फेहरिस्त (सूची की) नक़ल कर दे दें |

Mrs. Dattaraj - Pampapati Gulbarga,
Narayanrao Bijapur, Shivlingappa,
Bhimsenrao, Ramchandra Pujari

बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 152 शाहजहाँपुर
No.-J-150-SRCM Date 25.03.1965

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का मोहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला । ये सुनकर फिकर (चिंता) हुई के आपने क़लील (बहुत कम) तनख़ा (वेतन) होने की वजह से बहुत तकलीफ़ (कष्ट) उठाई । आप को लिखना चाहिए था ताके कोई सूरत (परिस्थिति) ऐसी पैदा की जाती जिससे उस तकलीफ़ (कष्ट) में कुछ कम पड जाती । लिखना, अब तो यह बात नहीं है ? Sarnad का भी ख़त आया था । ओ ऊँची तालीम (उच्च प्रशिक्षण) के ग्रहण करने के लिए अपने आपको लायक बना रहे हैं । इससे कुछ न कुछ फ़ायदा ज़रुर हो जाता है मगर ओ unconscious resistance आप ही रफ़ा (समाप्त) कर सकेंगे । submission उनमें ज़रुर है । मगर इस में उनका दिल शामिल नहीं है । और ओ उसको कर पा नहीं रहे है । Dr. Varadachari, Delhi में 3 रोज़के लिये हैं । March 25 से 27 तक के लिये । 28 March की सुबह Shahjahanpur पहुँच रहे है । उसी रोज़ शामको यहाँ एक meeting का इन्तज़ाम (व्यवस्था) किया है। 29 मार्च को मैं उन्हे Sitapur ले जा रहा हूँ। शाम को meeting वहाँ arrange है। 30 को 10 बजे तक यहाँ आकर, शाम की गाडी से वापस Delhi चले जायेंगे। और 31 की सुबह को Delhi पहुंच कर, उसी दिन शाम को वापस मकान चले जावेंगे ।

Bidar के बारे में आपने Sarnadji को तहक़ीक़ात (जाँच-पड़ताल) के लिये लिख दिया । अच्छा किया । मैंने भी आप का हवाला (संदर्भ) देते हुए उन्हे लिखा है । वहाँ के अच्छे सतसंगी कुछ घबराये हुए भी हैं । इस डरसे के यह centre न बंद किया जावे । और एक साहबने, जिस को privately लिखता हूँ, X और X का नाम लिखा है । बक़िया (बाक़ी) एक दो ने, X और X का नाम लिखा है। X तो अब ठीक होंगे । X और X अभी उसी हवा में हैं । X इस क़दर ठोस है, ओ सतसंग में सिवाय इस के, कि थोड़ा सुरुर (हल्का नशा) पैदा हो जावे, कोई फ़ायदा नहीं उठा रहे हैं । मैं उनको कुछ ठीक करना चाहता था। मगर जब मैंने काम शुरु किया , X

को मैं भूल ज़रुर ही गया। X का इस field में होना किस हद तक मुमकिन (संभव) है ? और मैंने उन की हालत बहुत बिगड़ी हुई भी पाई । उन से भी कह दिया और शायद Hassan में आपसे भी जिक़र (चर्चा) किया हूँ । X ने अपनी initiation का जिक़र (चर्चा) बहुत लोगों में किया और ओ समझने भी लगे होंगे के initiation होने की वजह (कारण) से ओ preceptor बनने के हक़दार (अधिकारी) हैं । और यही असर (प्रभाव) X पर पडा और ओ भी initiation चाहने लगे । मैंने एक ख़त X को लिखा है, जिसकी नक़ल आप को भी भेज रहा हूँ । Sarnad को लिख ही देना के ओ तहक़ीक़ात (जाँच) करें और उनकी इसलाह (सुधार) की कोशिश करें और इसलाह (सुधार) मुमकिन न हो तो सिवाय about turn के कोई इलाज (उपाय) नज़र नहीं आता । ख़ैर (अस्तु), ये आप पर छोडता हूँ । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) । मीरा को massaging जो बताया था, हो रहा है या नहीं ?

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 153 शाहजहाँपुर
No.-J-217-SRCM Date 25.04.1965

मेरे राघवेंद्रराव़जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपके दो ख़ुतूत (पत्र) मिल गये। मैंने एक थाली और दो कटोरी फूल (एक मिश्र धातु) के भेजे थे । ओ Bijapur से बज़रिये (द्वारा) Narayanrao आप के पास पहुँच जावेंगे । इन में ख़टाई का एहतियात (सावधानी) रखा जाता है । मगर पीतल से देर में ख़राब होती है । दही जितनी देर के आप खाना खाते हैं, इस में रख सकते हैं । दूध रखनेसे खराब नहीं होता | ये धातु brittle होती है । लिहाज़ा (इसलिये) फ़रश पर गिरने से फौरन (तुरंत) टूट जाती है । इस में सिफत (गुण) ये है, जितना आप माँजे उतनी ही

चमकदार और सफेद निकलती आवेंगी । और ये पीतलसे दुगनी क़ीमती है ।

यहाँ शिवलिंगप्पा, रामचंद्र पूजार और BLK Murthy Bidar वाले ठहरे हुए हैं । Chanbasappa मय (साथ) अपने बीवी के, कल चले गये । Sarnadji ने मुझे लिखा है के Bidar में कुछ ग़लतफ़हमी (ना समझी) थी जो ठीक ठाक कर दी । फिर भी थोडीसी watch रखना चाहिए । मेरी समझमें Gujarati के दिल में अभी तक कोई फ़रक पैदा नहीं हुआ ।

उत्सव के मौक़े (वक्त) पर Executive Committee ने अपने सालाना meeting में यह पास किया है के मिशन का जाती (अपना) press होना चाहिये। इस वक्त मेरे पास सिर्फ 3000/- रुपिये हुए है। कुल (संपूर्ण) खर्चेका अंदाजा 15000/- है। सब centres को इस resolution की इत्तलाह (सूचना) दे देना चाहिये। दूसरा यह, के इस साल से magazine का चंदा मुबलिग (शुल्क धन) Rs 4/- सालाना कर दिया है । लिहाज़ा (इसलिए) अब इस के मुताबिक (अनुसार) लिया जावे और सब centres पर इत्तलाह (सूचना) भी कर दीजिये ।

आपने जो भी जवाबात दिये हैं, ओ जैसे सवालात थे वैसे ही जवाबात है। और ठीक है । इस में बेहुदगी (अशिष्टता) का कोई सवाल नहीं । Dr. K.C.V. जब यहाँ आये थे उनकी एक speech शाहजहाँपुर में हुई और दूसरी Sitapur में। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): जिसका initiation हो जाता है अक्सर (प्रायः) उनमें से बाज़ (कुछ) ऐसे satisfied हो जाते हैं, गोया (जैसे) अब उनको कुछ करना बाक़ी नहीं रह गया - गाय वैतरिणी उतार देगी और गुरु भवसागर। Ramchandra Pujari भी बहुत ज़ियादा (अधिक) satisfied है और ये नुक्स उनमें भी आ गया और Gopalrao का तो हाल (स्थिति) ये हुआ के उनको initiation की रऊनत (घमंड) आ गई । और अपने आपको खास अभ्यासियोंमें समझने लगे । और दूसरोंके यही मानने के लिये समझाने लगे । नतीजा (परिणाम) यह हुआ उनकी हालत इतनी बिगड गई के पूरी तौर से अब भी नही संभली। बडी शेखी (शान) के साथ Dr.

Varadachari से भी कहा के मैं initiate हो गया और यह भी कह गुज़रे (चुके) के उन्होंने इस के कहने को मना किया है। उसने कहा, पता नही के उनसे या किसी और से के यह बहुत disobedience है के मना कर दिया गया था तो मुझसे क्यों कहा ।

Umesh Delhi में है । आजकल बुख़ार तेज़ में मुब्तला (ग्रस्त) है । अच्छा हो जावेगा। कोई फ़िकर की बात नहीं । उधर छाया जो के Delhi में है, उस के शौहर (पति) के Typhoid का relapse हुआ है। वह छुट्टी लेकर कानपुर चले गये हैं । अभी कुछ पता नहीं मिला मगर उम्मीद (आशा) है बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) ओ ठीक होंगे ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 154 शाहजहाँपुर
No.-J-265-SRCM Date 26.05.1965

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) नूरचश्मी (बेटी) मीराबाई अब अच्छी होगी । बरख़ुरदार (बेटा) उमेश जो के Delhi में है, तेज़ बुख़ार में मुब्तला (ग्रस्त) हुआ। उसके बाद low fever रहने लगा, जिसको के क़रीब एक माह हो गया। अभी ठीक नहीं हुआ । डॉक्टर खून में E.S.R. की कमी बतलाते हैं । इसी हालत में उसको ऑफिस जाना होता है और audit करने बाहर जाना होता है । इसलिए के हाज़री (उपस्थिति) कम न हो जावे। नूरचश्मी (बेटी) छाया, Delhi से कहीं 1 1/2 माह कानपुर गयी है। मेरे दामाद को भी low fever की शिकायत थी। इसलिए ओ June तक रुख़सत (छुट्टी) पर है। उमेश अकेला है। मास्टर साहब और बरख़ुरदार (बेटा) सर्वेश को दो हफ्ते के लिए भेज दिया था। मास्टरसाहब बरेली आ गये। अब एक दो यूम (दिन) में वापस आ जावेंगे। मैं न जा सका इसलिए के जुनूबी (दक्षिण) हिंद के साथी आ रहे थे। आज इस वक्त जब के ख़त

लिख रहा था, मास्टर साहब आ गये और ओ भी बहुत कमज़ोर हैं। दरद शिकम (पेट) की शिकायत थी। अभी खाना नहीं खा रहे है । 29, 30, 31 मे (May) मैंने Sitapur में एक जलसा (उत्सव) मुनअकीद किया (प्रस्तावित) है । अच्छा हुआ Bidar का मामला सुधर गया ।

कानडी ज़बान के तरजुमे (अनुवाद) में foreword किसी क़ाबिल (विद्वान / योग्य) आदमी से आप लिखवाना चाहते है । मैं इससे इत्तफ़ाक (सहमत) करता हूँ। मगर कोई ऐसा आदमी मिल जावे जो ठीक ठीक लिख सके । Shri Yamunachar मैसूर के क़ाबिल (विद्वान) आदमी हैं । और ओ Dr. Varadachari के दोस्त हैं । उनको मैंने जलसे (उत्सव) के वक्त Reality At Dawn दी थी और दीगर (दूसरी) किताबें भी मैं Shri Manjunath को, उनको देने के लिए दे आया था। ग़ालिबन (निश्चितही) उनको दे दी गई होगीं । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 155 शाहजहाँपुर
No.-J-291-SRCM Date 10.06.1965

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

श्री. गुंडेराव का तबादिला (स्थानांतरण) Sindhnoor हो गया है। मैंने उनको लिखा है के Koppal के कोई interested अभ्यासी को organiser कर देवें और उससे सतसंग के बारे में ख़तो किताब़त (पत्रव्यवहार) रखें, उनको जब मौक़ा (समय) मिले, दौरा (यात्रा) करना चाहिए। नहीं तो तबादिले (स्थानांतरण) के बाद सतसंगी ज़ौक व शौक़ (रूचि और रसिकता) खो बैठते हैं।

Efficacy of Raj yoga के Canarese तरजुमा (अनुवाद) में foreword किसका रखना चाहते हैं । Bangalore में जिसने किसी क़िताब (पुस्तक) का review, Deccan Herald में किया है, उनका अगर आप मुनासिब (उचित) समझें, foreword ले

सकते हैं, अगर आपको यह यक़ीन (विश्वास) हो जावे के ओ अच्छा करेंगे। उनका नाम ग़ालिबन (शायद) डॉ. गुरुनाथ या कुछ ऐसा ही है। ओ Bangalore के सतसंगीयो से रसम (मेल-जोल) मानने लगें है।

मास्टर साहब Delhi गये थे । उमेश की तीमारदारी (शुश्रूषा) से ओ ख़ुद बीमार हो गये । पेट का दरद व जिसको डॉक्टर कोलायटीस बतलाते हैं, मुबतला (ग्रस्त) रहे । अब अच्छे हो रहे हैं । आजकल ओ लखीमपुर हैं । उमेश को एक हकीम को दिखलाया है । Doctor low fever को दूर नहीं कर सके । अभी हाल मालूम नहीं हुआ है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 156 शाहजहाँपुर
No.-J-304-SRCM Date 25.06.1965

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला। बडी ख़ुशी की बात है के बहू और बच्चे भी मेरे साथ Banglore चलेंगे। मैं इस साल Kolar Gold Field देखना चाहता हूँ। और उसके लिये इजाज़त (अनुमति) लेनी पडती है। और उसके लिए Doreswamy को लिख दिया है। इसलिए बेहतर (अच्छा) होगा के अपने लिए और बहू और बच्चों के लिए उनको इजाज़त (अनुमति) के लिए लिख देवें। ये सब के लिए एक नई चीज़ होगी। और जो ज़रुरी (आवश्यक) हिदायत (सूचना) Banglore के लिए हो, ओ भी Doreswamy को लिख दीजिए।

मैंने S.P. को programme भेजा है, मगर, पुराने पतेसे। मेरा इरादा (विचार) वहीं ठहरने का था। मगर सतसंगियों को दूर होने की वज़ह (कारण) से Kumaraswamy के यहाँ ठहरुँगा।

हो सकता है, मैं Vijaywada से Hyderabad जाने पर Secunderabad चंद (कुछ) घंटो के लिए S.P. के यहाँ रुक जाऊँगा। या दरमियान मुक़ाम (वास्तव्य काल में) उनके यहाँ चला जाऊँगा। बच्चोंको दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 157 शाहजहाँपुर
No.-J-339-SRCM Date 20.07.1965

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का ख़त मिल गया था। बच्चे की पैदाईश की बहुत खुशी हुई। ईश्वर करे उसकी उम्रदराज़ (दीर्घायु) हो और ख़ुश खुर्रम (प्रसन्न) रहे। कानडी का तरजुमा (अनुवाद) छप गया। और Doreswamy, Bangalore से आये थे और ओ किताब मुझे दिखाई। छापा अच्छा है। और जो गलतियाँ इसमें हो गई हैं, ओ आप की राय (मत) ठीक है, के सेडम भेजकर हाथसे दुरुस्त (ठीक) कर ली जावें। एक गलती अहम (मुख्य) है के जहाँ पर मिशन की List of Publication दी हुई है उसमें Dr. Varadacharya ने जो talks on Efficacy of Raj Yoga पर दी है, उसकी entry इसमें नहीं है। मैंने Doreswamy को राय ये दी है के एक परचे (कागज़) पर किताब (पुस्तक) और उसके मुसन्निफ (लेखक) का नाम छपाकर उसमें आखीर में चस्पाँ कर दी (चिपकायाँ) जावें। और यह काम बहुत ज़रुरी है। इसको आप ताकीद (ज़ोर देकर कहना) कर के करा दें । और डॉ. गुरुमुर्ती का जो foreword, ओ अंग्रेजी में मय (साथ) उसके तरजुमा (अनुवाद) बज़बान (भाषा) कन्नड़ छपवाकर लग जाना चाहिए। Doreswamy से भी मैंने कह दिया है और आप भी ताकीद करके यह सब काम करवा लें और अपना इतमिनान (सुनिश्चित) कर लें, के सब हो गया। अब की कृष्णजन्माष्टमी 20-8- को है। जागीरदार ने भी आने को लिखा है और Ayal Reddy और Kumarswamy की बीबी के भी आने की उम्मीद है ।

Press लगानेका मामला अभी pending है। Press का ख़ब्त (पागलपन / जुनून) हम लोगोंकी ज़रुरत (आवश्यकता) ने जगा दिया। ऐसा हुआ के अब से चार साल पहले एक शख़्स ने कहा के जब तुम press खोलना चाहो, तो दो हजार रुपये मैं देने को तैयार हूँ।

मैंने उनसे कहा के तुम अपने पास रखो, जब मिशन के पास रुपया हो जावेगा तो मैं ये भी तलब (बुला) कर लूँगा। अब की उत्सव में उसने ज़बरदस्ती दो हजार रुपये दे दिये तब मिशनकी Executive Committee ने यह resolution रख दिया और ओ पास हो गया । और ये बात सबसे ज़ियादा (अधिक) आसान थी। और कुछ लोगोंने रुपये देने का वायदा (वचन) भी किया और ओ सब resolution सतसंग के बाद सुना दिया गया । मगर ताज्जुब (आश्चर्य) यह हुआ के अब की जुनूबी (दक्षिण) हिंद के ख़ास ख़ास लोग हर जगह के मौजूद (उपस्थित) थे । उसका जिक्र (चर्चा) भी अपने अपने centre पर न किया । उनको चाहिये यह था के मिशनके अहकामात (आदेश), रुदाद (वृतांत), फैज (कृपा) की हालत (स्थिति) सब सतसंगियोंको अपने अपने यहाँ जिक्र (चर्चा) करते और लोगोंको बताते । मैं उसके estimate की नक़ल आप के पास भेज रहा हूँ और एक नक़ल Ayal Reddy के पास भेजूँगा । जैसा मौक़ा महल (स्थान और समय) हो, उसके मुताबिक (अनुसार) काम करें । किसी को मजबूर (विवश) न किया जावे । इसका चंदा (दान) बिलकुल (पूर्णतः) voluntary (ऐच्छिक) है । Kumarswamy ने मुझे लिखा है के वहाँ Hyderabad में response नहीं मालूम होती है । लिहाज़ा (इसलिए) वहाँ लिखने की ज़रुरत नहीं । एक शख़्स (व्यक्ति) मुसम्मी (श्रीमान) रमेश साकिन (निवासी) Hyderabad, जो बसंत पंचमी में यहां थे, ने Rs. 500/- भेज दिया है। ये कह करके, मैं अपने वालिद (पिताजी) के नामसे यह रुपये शिवानंद आश्रमको ऋषीकेश भेजनेवाला था। मगर इन चार रोज़में मुझे जो फ़ायदा (लाभ) हुआ है ओ कई बरस स्वामी शिवानंद को follow करने में नहीं हुआ । इसलिये मैं अब इस मिशनसे सरोकार (संबंध) रखुँगा और इसीको support करुँगा । आप श्री. नारायणराव को अपनी तरफ से Bijapur लिख देवें । मुमकिन (संभव) है गुजराती लोग कुछ इसमें मदद दें । बाक़ी आप जैसा मुनासिब (उचित) समझें, सिर्फ़ अपने branch में करें ।

मैं इस ज़माने (समय) में मजबूरन (विवश होकर) दौरे (यात्रा) पर रहा । मास्टर साहब Delhi में उमेश की तिमारदारी (शुश्रूषा) करते करते खुद बीमार हो गये । अब कुल (पुरे) ढाई माह बाद लखीमपुरसे इलाज करानेके बाद वापस हुए हैं । अब तबीयत ठीक है । मगर एक बड़ी तकलीफ़ (कष्ट) यह हो गयी के एक आँख में cataract क़रीब क़रीब mature हो आया है । और दूसरी आँख में

भी बीनाई (दृष्टी) कुछ कम है । Cataract इसमें भी बन रहा है । बरखुरदार (बेटा) उमेश, दो ढाई महिने low fever मुब्तिला (ग्रस्त) रहा । मगर जबसे आपने ख़त लिख दिया है के ख़त पहुँचते पहुँचते उमेश का बुखार जाता रहेगा तबसे बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) बुख़ार नहीं है। Collitis उसे थी। उसमें कुछ कमी ज़रुर है। मगर अभी पूरी सेहत (स्वास्थ्य) नहीं हुई। ओ भी बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) ठीक हो जावेगी। श्री. राजेंद्रकुमार, जो छाया के शौहर (पति) है और Delhi में है, तीन माह से रुख़सत (छुट्टी) पर है। उनको Typhoid का relapse हो गया था । उसके बाद कानमें कई फुनसियाँ निकली और कानमें operation हुआ। अब ओ क़रीब क़रीब ठीक हैं। मगर कमज़ोर (दुर्बल) अभी बहुत है | और परेशानी (कष्ट) ये है के हमारे छोटे बहनोई जो लखनऊ में हैं, ओ दो माहसे बीमार थे । उनको medical college में, जहाँ के उनका लडका पढ़ता है, दाख़िल किया गया है। डॉक्टर को cancer का शुबह: (संदेह) है इसलिये tests हो रहे हैं। मैं कल उन्हें देखकर वापस आया हूँ । ईश्वर उनको सेहत (स्वास्थ्य लाभ) दे ।

मैं जब जुनूबी (दक्षिण) हिंद का सफर (यात्रा) कर रहा ,था तो खाली वक्त में कुछ सोचने लगा के कोई ऐसी तरकीब (उपाय) मालूम हो जाती के इन्सान (मनुष्य) हैवानियत (पशुता) छोडकर इन्सान (मानव) बन जाता। जब चारों तरफ अपने में और creation में देखा तो मुझे दो dynamo नज़र (दिखाई दिये) पडे। एक तो dynamo of individual creation और दूसरे dynamo of universal creation। गौर (विचार) किया तो मालूम हुआ। और अफ़सोस (दुःख) ये हुआ श्री. अरविंदजी (Aurobindo) जो दुनियाका transformation करना चाहते थे, उनको dynamo of universal creation का पता नहीं था वरना (अन्यथा) मुमकिन (संभव) है, उनका हाल लिखकर कुछ अपनी ताकतसे कुल दुनियाँ के फलाह (कल्याण) और बहबूदी (भलाई) के लिये इस्तेमाल (उपयोग) कर देते । इस dynamo को तो मैंने छोड ही दिया। इसके इस्तेमाल (उपयोग) करनेके लिये इस वक्त (समय) तक मुझे तो ताकत मालूम होती है ओ Special Personality में ही मालूम होती है । इसमें डर भी ये है के अव्वल (पहले) तो हर बेवकूफ महात्माका यहाँ तक ख़ियाल पहुँच ही नहीं सकता । अपने यहाँ इस हैसियत (स्तर) तक दो तीन आदमी निकल सकते हैं। जो इसको इस्तेमाल (उपयोग) कर सकें। मगर उनको मैं इशारा (संकेत)

इसलिये नहीं देना चाहता के वहाँपर ठहराव के लिये ख़ास ताक़त (शक्ति) देनी होगी । इसलिये के अपनी ज़िंदगी कहीं इसी में शामिल न हो जावे ।

अब लेता हूँ dynamo of individual creation। यह अपनी गुरु महाराज की बरकत (कृपा) से मैं हल कर सका हूँ और हज़रत (गुरु महाराज ने) ने भी एक solution बताया है जो निहायत (बहुत) ही अच्छा है और मैंने जो सोचा है ओ भी ठीक है और इसका हजरत क़िबला (गुरुमहाराज) भी मवाद (प्रमाणित) करते हैं । इस solution में danger नहीं है। और हजरत क़िबला का जो बताया है ओ बहुत ज़ियादा (अधिक) effective (प्रभावी) है जिसमें आमिल (कर्ता) को बहुत alert रहने की ज़रुरत (आवश्यक) है । मैंने observation के लिए दो-तीन cases भी लिए हैं। मगर देखना ये है के यह अमल (क्रिया) एक ही मरतबा (बार) तमाम ज़िंदगी के लिए काफ़ी है या बार-बार कुछ मुद्दत (समय) के बाद फिर करने की ज़रुरत (आवश्यकता) है । जिनको मैंने तवज्जह (प्राणाहुति) दी है ओ मुख़्तलिफ (अलग-अलग) changes पैदा करने लगी है । मगर क्या changes होंगे ये जब चीज़ सामने आयेगी तो पता चलेगा । कुछ बातें तय (निश्चित) करने के बाद सब preceptors को बताऊँगा । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

ये तरीका (प्रणाली) nuclear method है। मुकर्रर (पुनश्च) ये है के मैंने Shri. Vithalrao Advocate, Raichur को Shri. Narayanrao Bijapur की suggestion पर provisional permission (इजाज़त शर्तीया या इजाज़त सगीर (छोटा) / गैर) दे दी । ओ एक हफ़्ता मेरे पास रहे थे । मैं आप को लिखने के लिए भूल गया। आपकी मनशा (इच्छा) है कि मैं इस साल Raichur अपने जुनूबी (दक्षिण) हिंद के दौरे में रख लूँ । आप के कहने से ऐसा कर लूँगा मगर चूंके Bijapur भी जाना है इसलिए route फिर double हो जाता है ।

अब की रास्ता आप निकालेंगे और जाना मैं Shri. Gunderao के यहाँ चाहता हूँ ।

Sd / Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 158 शाहजहाँपुर
No.-J-367-SRCM Date 05.08.1965

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप को यह सुनकर बडा रंज होगा के मेरे छोटे बहनोई, जो Lucknow में थे 27 July को स्वर्गबास हो गये । बहन पर दो सदमे एक के बाद दीगर (अन्य) ही पड गये । उनकी लडकी accidently आग से जलकर मर गई और उसके 8 या 10 माह बाद उसके वालिद (पिताजी) का इंतकाल (स्वर्गवास) हो गया । हमारी बहन सरकारी मुलाज़िम (कर्मचारी) है, बस यही गुज़र अवकात (जीवन-यापन) का ज़रिया (मार्ग) है । खेती बहुत है। मगर वहाँ के लोग इतने सरकश (उद्दंड) है के हडप करना चाहते हैं । ईश्वर मदद करेगा । लड़का आख़री साल dental surgery में पढ़ रहा है ।

जन्माष्टमी 20 August को है । Dodabasappa Yadgir से आये हुए हैं और ग़ालिबन (संभवतः) जन्माष्टमी तक रहेंगे । एक Scotland निवासी संन्यासी मेरे यहाँ ठहरे हुए है । यह महेश योगी के cult के पैरो (अनुयायी) है, 2-3 साल से । अभी 6 माह हुअे तब Scotland से आए हैं और हृषिकेश में स्वामी शिवानंद के आश्रम में ठहरे हैं । M.D. Jagirdar भी आ रहे हैं । अगर आपकी राय हो और मिशन के अभ्यासी नये उनको मिल सके तो मैं उनको इजाज़त शर्तिया दे दूँ । मैं इसमें अपनी राय (मत) कोई नहीं रखता । मेरा एक suggestion है, अब आप राय (मत) क़ायम कीजिए और इत्तिला (सूचित) कीजिए । मेरा पिछला ख़त मय (साथ) press estimate के ग़ालिबन (निश्चित ही) मिल गया होगा । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 159 शाहजहाँपुर
No.-J-401-SRCM Date 01.09.1965

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपा से) आप बख़ैरियत तमाम (सकुशल) Hassan पहुँच गये होंगे और बच्चे सब ख़ुश व खुर्रम (प्रसन्न) होंगे । Gujrati का Bidar से ख़त आया है । जिसको ग़ालिबन (शायद) आपने भी पढा है । इसमें एक बात ये थी के misunderstanding जो Bidar में थी, ओ Sarnadji ने समझा बुझाकर दूर कर दी, मगर अभी दिल से erase नहीं हुई । मुझे अफ़सोस (दुःख) भी हुआ के कौनसी ऐसी बात जबरदस्त है जो दिलसे erase नहीं हुई । मैं समझता हूँ यह गुजराती का ही दिल है जिसमें कोई बात अब तक बैठी हुई है । इसलिए मैंने उनको एक ख़त लिखा जिसकी नकल आप के पास भेजी जाती है, इसलिए के कुल (पूर्ण) record आपके पास मौजूद हैं ।

Seshadri का तबादला (स्थानांतरण) मद्रास हो गया। मगर बच्चे अभी April तक Trichy में रहेंगे, इसलिए उन्होने कहा है के Trichy भी मेरा programme रहे । Seshadri की बीवी बीमार रहती हैं । और आजकल ओ अपने घर, इलाज के लिए गई हैं । Swamy John 6 Sept को फिर आ रहे हैं । उनकी तबीयत मेरे पास रहते हुए अच्छी लगती है । मगर ओ खाली बैठना नहीं चाहते । काम कोई ऐसा नहीं मालूम होता है जो उनको दिया जा सके ।

अभी क़रीब एक हफ्ते से कम हुआ तो मेरे दिलमें ख़याल ये उठा के हर सतसंगी अगर मिशनको अपना समझने लगे तो जितनी दिक्कतें (अड़चनें) मिशन के काम में पड रही हैं, ओ सब जाती रहें । जब बच्चों को हम अपने बच्चे ख़ियाल करते है तो उनके आराम के लिए हर तकलीफ़ उठा लेते हैं । इसलिए जितने मिशन के preceptor है उन सबमें यह तहरीक (प्रस्ताव) कीजिए, ओ सतसंग में सब पर वक्तन-फ-वक्तन (समय-समय पर) ये चीज़ impress करते रहें । इससे फायदे आप सोचें तो पता चलेगा । बात बिलकुल छोटीसी है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः Shri Narayan Rao, Bijapur को ज़रा तेज़ करते रहिये । ताके ओ सतसंग बढाने की कोशिश करते रहें ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 160 शाहजहाँपुर
No.-J-571-SRCM Date 15.10.1965

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त आया था। Shri Raghavendra Rao S.P. ने चूँके Secunderabad में मकान ले लिया है जहाँ पर सतसंगी को दूर पडता है, इसलिए Kumarswamy के यहाँ ठहरूँगा। आप चुंके छुटटी ले चुके हैं, मुमकिन (शायद) के earned leave कम वाज़िब (उचित) हो; ऐसी हालत में आप मुझे Bijapur और Mysore में जरूर मिलें। इसमें रुखसत इत्तेफाकिया (आकस्मिक छुट्टी) से भी काम चल सकेगा और इससे ज़ियादा (अधिक) स्टेशनों पर अगर आप जा सकें तो मुझे ऐनराहत (सचमुच सहायता) है ।

Programme भेज रहा हूँ। बच्चों को मेरी आमद (आने) की इत्तलाह (सूचना) कर देना और मेरी उनसे दुआ (आशीर्वाद) कह देना।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह है के मैं हर centre को जहाँ मेरा क़ियाम (निवास) है अपना programme भेज रहा हूँ। अब की Time Table जल्द मिल गया था। उससे programme जल्द तयार हो गया ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 161 शाहजहाँपुर
Date 23.11.1965

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद)।

अभी बज़रिया टेलीग्राम, इत्तला (सूचना) मिली है के डॉ. वरदाचारी के घर मे (पत्नी) आज इंतकाल (स्वर्गवास) फरमा गईं | निहायत (बहुत) अफ़सोस (दुःख) हुआ | मालिक की मर्जी में चारा ही क्या | कल उनकी अलालत दौरे पैरालिसिस (पक्षाघात की बीमारी) और नाजुक हालत की इत्तला बज़रिया तार (तार द्वारा सूचना) मिल चुकी थी | मालिक मरहुमा (दिवंगता) की रूह (आत्मा) को शांती अता फरमा दे (शांती प्रदान करे) |

दुआगो (शुभचिन्तक)
ईश्वर सहाय

****

ॐ तत् सत

Serial No. 162 शाहजहाँपुर
No.-K-463-SRCM Date 24.10.1966

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त आया। जुनूबी (दक्षिण) हिंद के दौरे (यात्रा) के बाद यह पहला ख़त मैं आपको लिख रहा हूँ । जब के दौरा (यात्रा) फिर दरपेश (प्रस्तुत) है। मेरी तबीयत क़रीब क़रीब एक माहसे खराब चल रही है । वही पुरानी शिकायत दर्द की है और साथ साथ कभी कभी दस्त भी आ जाते हैं । कुछ पहले से इफ़ाका (स्वास्थ्य लाभ) जरूर है मगर कमजोरी और नकाहत (निर्बलता) क़रीब क़रीब बदस्तूर (जैसे के वैसे) है । और दरद अक्सर (प्रायः) ज़ियादा (अधिक) बढ जाता है। वैसे मैंने 19 Nov. से जुनूबी (दक्षिण) हिंद के दौरे का programme बनाया है और 21

Nov को Delhi से रवानगी है। इसको अभी finalise नहीं किया है। इसलिये के तंदुरूस्ती (स्वास्थ्य) और दरद (दर्द) दोनों की हालत अभी देखना है । मैंने इस मरतबा (बार) Bijapur और Gulbarga छोड़ दिया है । इसलिये के दर्दसे नज़ात (छुटकारा) मिलनेपर भी इतना सफर करना दुश्वार (मुश्किल) होगा । आपकी राय (मत) ठीक थी के Bijapur और Mysore छोड़ दूँ । आपको याद होगा के मैंने आपसे कहा था के यह जो 70 आदमी जमा कर रखे हैं, ये रखने के क़ाबिल (योग्य) नहीं हैं, सिर्फ दो चार आदमी मैं चाहता था । ओ अच्छा हो गया के सब चिडीयाँ उड गयी। अब वहाँ मुझे मिशन दो चार आदमीयोंसे फिर से start करना है । और जो scheme मैंने बनाई थी वह आपसे मैसूर में ही बता दी थी के गोपालरावसे काम लेना शुरू करूँ । बाक़ी मिलने पर ज़बानी सब discuss कर लूँगा ।

Gujarati इस मर्तबा (बार) बिजापुर जाने के लिये इस वजह (कारण) से ज़ोर दे रहे थे, Hubli में उनके भाई के यहाँ मैं दावत (भोज निमंत्रण) खाऊँ। अब उसको मुहब्बत समझिए या अकलमंदी।

ये सही है के जितना homely आपके यहाँ महसूस करता हूँ, दूसरी जगह यूँ (इस तरह) मुश्किल (कठिनाई) है, के बच्चे सब बहले हुए हैं और खाली बैठे उनकी बोली समझते तो नहीं मगर छेड-छाड तो करते रहता हूँ । और इससे तबीयत बहली रहती है । और तबीयत यही चाहती है के आपके पास ही ठहरूँ । मगर जगह किल्लत (कमी) की वजह (कारण) से श्री. विठ्ठल राव के यहाँ ठहरना ही मुनासिब (उचित) है । वैसे आप जो तय (निश्चित) कर दें मुझे मंज़ूर (स्वीकार) है । श्रीकंठय्या मुझे पारसाल (पिछले साल) तिरूपती में मिले थे, उनमें receptivity बिलकुल नहीं थी और उसकी वजह भी उनको बतादी गयी और उसको उन्होंने मंज़ूर भी किया । आपके पास ओ बैठे होंगे, आप दो तीन तवज्जह (प्राणाहुति) में यह बात दूर कर सकते हैं । ओ बहुत अच्छे आदमी हैं और मिशन में लेने के क़ाबिल (योग्य) हैं ।

ईश्वर करे लडकियोंको अच्छा घर और वर मिले और आप परेशान न हो, ऐसा ही होगा। आपने लिखा के लोग आपके पैर छूते हैं, इससे आपको शर्म आती है। यही बात मैंने क़िबला लालाजी से कही थी, तो आपने बड़ा उमदा (अच्छा) जवाब दिया। ग़ालिबन (संभवत:) आपने ये फरमाया (बताया) था के जब पैर छूते हैं तो

तुमको ख़ुशी होती है या ना खुशी या अपनी कदरदानी (प्रतिष्ठा) का एहसास (अनुभव) और अपनी अज़मतका (महत्ता) ख़ियाल (विचार) । मैंने जवाब दिया के इनमें से कोई बात पैदा नहीं होती । एक बूतसा (मूर्ती) बना खडा रहता हूँ । आपने फ़रमाया (बताया), तो फिर जिसके पैर छूए जाते हैं उसके ओ पैर छूते हैं। अपने यहाँ की पुरानी प्रणाली है के खासकर महात्माओं या अपने से बडे के पैर छूते हैं । इस पर मैं पूरा मज़मून (लेख) लिखना चाहता था । मगर ख़त बहुत तवील (लंबा) हो जावेगा । लिहाज़ा (इसलिए) छोड दिया । वहाँ आने पर अगर याद रहे तो मैं कुल समझा दूँगा । हाफ़िज़ ने एक पेशीन गोई (भविष्यवाणी) की है । जो अब सही हो रही है, के एक ज़माना (समय) ओ आवेगा जब गधे के सरपर ताज रखा जावेगा यानी ना अहलोंकी (नालायाकों की) क़दर (सन्मान) होगी, ओ हो रही है । परख (पहचान) जाती रही और आप तो बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपा से) बिलकुल इसके अहल (सुयोग्य) हैं के पैर छूए जावें और ये भी है के पैर छूनेवालोंको touch से फ़ायदा होगा । लिहाज़ा (इसलिए) इसी बहाने (हेतु) उनका हक़ (अधिकार) उनको मिलने दीजिए। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): किशनरावजी Bijapur में मिले थे और मेरे एहसास (अनुभव) को बज़रिये (द्वारा) ख़त सही बताया था । संम्भले मालूम नहीं होते और इस क़ाबिल न रहे के Meditation में बिठाया जावें । मैंने उनसे कह दिया था के राघवेंद्रराव जो कुछ कहें ओ करो । मौजूदा (विद्यमान) हालत (परिस्थिति) में मुझसे फैज (लाभ) नहीं मिल सकता । अपने तर्ज़ (स्वभाव / आदत) को उन्होंने अबतक नहीं छोडा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 163 शाहजहाँपुर
No.-K-537-SRCM Date 28.11.1966

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मेरी तबीयत (स्वास्थ्य) अभी तक ठीक नहीं हुई । गो (यद्यपि) पहले से क़दरे (कुछ) बेहत्तर (अच्छा) हूँ । जिन साहब ने शग़ल राबता (गुरु का ध्यान) किया था और बजाय कुछ के कुछ चीज़ सामने आई । उनको study करने की ज़रुरत (आवश्यकता) है । इसलिये एक अजीब (विचित्र) बात सामने आई, जो सुनने में आया किसीके तजरुबे (अनुभव) में आज तक नहीं आई । क्या यह शंकर के उपासक तो नहीं रहे है ?

मैं सहजमार्ग philosophy पर copyright ले रहा हूँ । Sahaj Marg in Outlines में ओ add करके छपवाऊँगा । उस वक्त तक जबतक के मैं इसमें ये मज़मून (विषय) बढा न दूँ, Canarese तरजुमा (अनुवाद) न छपवाया जावे ।

James Kidd ने, जो America का था एक वसीयत (मृत्यु के बाद संपत्ती की आर्थिक व्यवस्था) की है, जो 28 अक्तुबर 66 के National Herald में निकला है के ओ दो लाख dollar उनको मिलेंगे जो scientific proof उस रुह (आत्मा) के बारे में दे देवें, जो मौत (मृत्यु) के वक्त ज़िसम (शरीर) छोडती है । ओ ये रुपिया उसे भी दिया जा सकता है जो existence of soul में research कर रहा है । उसका session 18 मार्च 66 से शुरु होगा और 8 आदमी इसको contest भी करेंगे । आप भी कोशिश करें । श्री. C. राघवेंद्रावजी सिकंद्राबाद 6th Dec. 66 को मय (साथ) बीबी बच्चों के Shahjahanpur आ रहे हैं । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 164 शाहजहाँपुर
Date 05.01.1967

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बडे अफ़सोस (दुःख) का मुक़ाम (बात) है के बतारीख 2 जनवरी 1967 बवक्त 8.50 P.M. Shri. Ishwar Sahai (Master Sahab) आज़ाद मुतलक़ (स्वर्गवासी) हो गये और दुनियासे बेलौस (बेदाग / पाक-साफ) गए, वही तनहा (अकेले) सब काम मिशन का मय (साथ) press के सम्भाले हुए थे । अब मैं दिक्कत (अड़चन) में पड गया ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 165 शाहजहाँपुर
No.-89-SRCM Date 25.01.1967

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद) ,

इस साल Basant Panchami उत्सव 13-2-67 से 15-2-67 तक रहेगा । आप शिरकत (शामील होने) के लिये सब भाईयोंको मदऊ (आमंत्रित) कर दें । श्री. गुंडेराव को Sindhanoor के पते पर invitation भेजा है । क्यूँके उनका दूसरा पता register में दरज़ (लिखा) न था। आप भी उन्हे लिख दें ।

जो लोग शाहजहाँपुर न आ सकें ओ मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) वक्त (समय) पर एक जगह पूजा के लिये इकठ्ठा (एकत्र) बैठ जाया करें तो अच्छा रहेगा ।

13-2-67	6.30 ता (से) 7.30 सुबह
	6.30 ता (से) 7.30 शाम
14-2-67	6.30 ता (से) 7.30 सुबह

6.30 ता (से) 7.30 शाम
15-2-67 6.30 ता (से) 7.30 सुबह

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 166 शाहजहाँपुर
No.-C-323-SRCM Date 04.05.1967

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं आप के पास programme भेज रहा हूँ। मेरे साथ दो आदमी और आ रहे है। एक J.R.K. Raizada जो History के lecturer है और दूसरे उमाशंकर, जो Sitapur के preceptor हैं। Reservation 23 May 67 के लिये हो गया है। Long journey के लिये अब एक महिने पहले से reservation होता है। Shri. Sarnadji अपने गाँव मल्ली में है। ओ Hyderabad आना चाहते हैं। उनको एक programme की नक़ल भेज दीजिएगा । पता उन्होंने लिखा था, अगर मिल गया तो भेज दूँगा । इस ख़त को Shri. Gopalrao लिख रहे हैं ; उनको पता मालूम है । मैं कापी भेज दूँगा । अब आपको भेजने की ज़रुरत नहीं । मजिद (अधिक) एहतियात (सावधानी के) एक postcard डाल दीजिएगा, गाँव का वास्ता (संपर्क) है ।

मैं Hyderabad में एक हफ़्ता दे रहा हूँ । क्योंकि आपके हमनाम S.P. हैं, मेरी जांच कराकर नुस्खा तजवीज़ (दवाई लिखवाने की व्यवस्था) करा देंगे । मुझे दस्त और पेचीश (मरोड़) की शिकायत अक्सर (प्रायः) हो जाती है । अब इसलिये कमज़ोरी भी ज़ियादा (अधिक) है । आप अपने अतराफ (आसपास के) सतसंगियोंको इत्तला (सूचना) दे देवें और एक साहब जो पारसाल (पिछले वर्ष), मुझको Raichur और Koppal में मिले थे जो Railway Police Guntakal में है, उनका पता मालूम हो, तो उन्हे भी मालूम करायें । Gujarati हमारे पास 25 रोज़ रहकर चले गये ।

डॉ. K.C.V. आजकल बहुत कमज़ोर हो गये है। Diabetes कुछ बढ़ी हुई है और कुछ आँखों की trouble ज़ियादा है। अच्छा है के उनकी ख़ैरियत (कुशल) आप भी मालूम कर लें, मेरा reference दे कर के उनसे मालूम हुआ है। बच्चों को इत्तला (सूचना), मेरी आने की कर ही दीजियेगा, ओ बहुत ख़ुश होंगे। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 167 शाहजहाँपुर
No.-G-410-SRCM Date 20.07.1967

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रत नामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला। आँ अज़ीज़ (आप) की आमद (आने) की ख़बर सुनकर ख़ुशी हुई। मैं शाहजहाँपुर हाज़िर मिलूँगा। Gift deed शायद इस वजह न हो सका होगा के शायद उनका लड़का मदरासे न आ सका होगा। जितनी जल्द हो जावे अच्छा है इसलिये के एक बात मुकम्मिल (पूरी) हो जानेपर उस तरफ ख़ियाल नहीं जायेगा। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 168 शाहजहाँपुर
No.-G-456-SRCM Date 21.08.1967

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

उम्मीद (आशा) है के आप बख़ैरियत (सकुशल) रायचुर पहुँच गये होंगे । और बच्चे भी खुश व ख़ुर्रम (प्रसन्न) होंगे । Shri. Ayal Reddy मय (साथ) अपने तीन साथियोंके आये हुए हैं । उनके साथी Delhi और Agra एक एक दिन रुक कर वतन (अपने गाँव) को रवाना होंगे । श्री. कृष्णमूर्ती मय (साथ) अपनी अहलिया (पत्नी) के Agra आ गये हैं ।

तरीक़ा तालीम (प्रशिक्षण पद्धति) का pamphlet जो आपने सही किया था और मैंने कुछ लिखाया भी था ओ नहीं मिल रहा है । आप एहतियातन (सतर्कता के तौर पर) देख लेवे के कहीं गलतीसे आपके तरजुमे करदा ख़ुतूत के बजाय (अनुवाद किए पत्रों के बदले) तरीक़ा तालीम (प्रशिक्षण पद्धति) का pamphlet तो नहीं चला गया है ? इसलिये के ख़ुतूत का तरजुमा (पत्रोंका अनुवाद) मेरे पास रखा हुआ है। अगर चला गया हो तो बज़रिये (द्वारा) registered parcel, भेज देवें । तशवीश (चिंता) हो रही है । बहु को काम सिखा देना । औरतोंको उनके मुअल्लिम (प्रशिक्षक) होने की वजह (कारण) से ज़ियादा आराम होगी । यह बात सब पर ज़ाहिर (प्रकट) कर देना चाहिये ताके सबको मालूम हो जावे । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 169 शाहजहाँपुर
No.-G-457-SRCM Date 21.08.1967

मेरे श्री. राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आज अभी एक ख़त डाला है के Method of Training Part II, आप के पास गलती से तो नहीं चला गया है । वह मिल गया । अभी J.R.K. Raizada आ गए तो मालूम हुआ के उन्होंने रख लिया था। अब मेरे पास है । बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 170 शाहजहाँपुर
No.-C-552-SRCM Date 26.10.1967

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैंने इरादा (विचार) जुनूबी (दक्षिण) हिंद पहुँचनेका यकुम (एक) डिसेंबर 1967 से किया है, मगर कामयाबी (सफलता) मुश्किल (कठीन) मालूम होती है । इसलिये के Babu Umashankar की बीवी एक माहसे बीमार हैं । उनकी सेहत (स्वास्थ्य) होनेपर ही मुमकिन (संभव) हो सकेगा और कोई आदमी साथ के लिये मिल नहीं रहा है । हालाँके (यद्यपि) मैंने Shri. Ishwar Sahai के लडके नारायण सहाय को लिखा है अगर उनको छुट्टी मिल गयी, तो आ सकूँगा ।

श्रीकंठय्या की सफ़ाई मैंने हत्तुलवसा (यथासंभव) कर दी है और रास्ता बहुत कुछ साफ़ कर दिया है। बाक़ी जैसी ज़रुरत होगी, आँ अज़ीज़ (आप) करते ही रहेंगे। मेरे दामाद राजेंद्रकुमार, तूले उमरहू (दीर्घायु हो), सीतापुर, मय (साथ) लडकी छाया के यहाँ आ गये । उनकी आँखों की हालत अच्छी नहीं है Eales' disease है । आँखो

में haemorrhage होते रहते हैं और बायें आँख में retinal haemorrhage का शुबहा (संदेह) है । जिसका मुमकिन (संभव) है के operation करना पडे । ईश्वर रहम (दया) करे और आप सब उनकी सेहत (स्वास्थ्य) की दुआ (प्रार्थना) करें । Rajgopalachari जो मदरास से Delhi आये हुए हैं, ओ उनको देखने गए । उन्होंने लिखा है के सिर्फ दुआ (प्रार्थना) ही ऐसे मरज़ (बीमारी) मे काम कर सकती है । यह बडी तशवीश (चिंता) की बात है के छाया की रोटी देनेवाला बस राजेंद्र ही है और कोई source of income नहीं है । ईश्वर सेहत कुल्लिया (पूर्ण स्वास्थ्य) अता करे (दे) । आमीन (ऐसा ही हो।)।

श्री. किशनराव का ख़त आया है । उसको आपके पास भेजता हूँ । एक ख़त इसके पहले आया था उसको फ़ाड कर फेंक दिया। मेरे पास इस वक्त और सतसंगी भी आ रहे हैं और मैं 4 नवम्बर 67 तक सीतापुर भी नहीं जा सकूँगा । अब किशनराव आना चाहते है जिनको मैं सतसंग में लेना ही नहीं चाहता, जब तक के ओ राहेरास्त (सही रास्ते) पर न आ जावे और आपको यक़ीन (विश्वास) हो जावे के ओ अब ठीक हैं। अलावा (सिवाय) उसके, मैंने आपसे उनके बारेमें पहले कहा था के उनका दिमाग़ खराब हो रहा है । ओ बात इस ख़त में भी है, जो ख़राबी दिमाग़ की, साबित करती है। मैं उनको नहीं चाहता के ओ यहाँ आवें। इसलिये के मैं उनको फ़ायदा मौजूदा (विद्यमान) सूरत (स्थिति) में नहीं पहुँचा सकता। दूसरे, उनका दिमाग़ ख़राब हो रहा है। इसका मेरे पास कोई इलाज नहीं। मैं 4 नवम्बर 67 तक लोगों को वक्त दे चुका हूँ। इसके बाद एक मिनट भी यहाँ नहीं रुक सकता। Sitapur जाऊँगा। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 171 शाहजहाँपुर
No.-C-581-SRCM Date 19.11.1967

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मेरी तंदुरूस्ती (स्वास्थ्य) पहले से अच्छी है । इस वक्त में हमारे टायपिस्ट गंगास्नान गये हैं । और कुछ पहले से भी छुट्टी पर चल रहे थे, programme अब तक type न हो सके । सिर्फ़ Vijayawada, Hyderabad और Raichur के लिए तैयार है। सो भेज रहा हूँ। वाक़ई (सच भी) मास्टर साहब के कूच करने (चले जाने) के बाद अब तक मैं संभल न सका, और जो दिलचस्पी (रुची) मिशन के काम से उनकी थी ओ अभी तक पैदा न हो सकी । मुझे अफ़सोस (दुःख) है के मैं Bidar और Gulbarga आप के कहने पर भी न जा सका और ये ख़ियाल मुझे अक्सर (प्रायः) आ जाता है । मजबूरी (विवशता) यह थी के नारायण सहाय जो ईश्वर सहाय के लड़के हैं, मेरे साथ आ रहे हैं, उनको ज़ियादा छुट्टी मिलना मुश्किल (कठीन) है । और उमाशंकर की बीवी सख़्त अलील (बीमार) हो गई थी, जो पहले से बहुत अच्छी हैं । मगर दवा की अभी ज़रुरत (आवश्यकता) है । इसलिए छोड दिया । Raizada बरायनाम (नाम मात्र) तो मेरे साथ आ ही रहे हैं और उनके लिए जो आपने सिफ़ारीश की है, उनके लिए वहीं discuss करूँगा । और Shri Vithalrao के बारे में जो कहा है उसके बारे में भी वहीं तय (निश्चित) होगा, discuss के साथ। आप क़रीब (आसपास) के लोगों को भी इत्तला (सूचना) दे देवें । और श्री गुंडेराव को और Gopalrao को भी Raichur इत्तल्लाह (सूचित) कर दें । मैंने अब की, नए centre एक एक दिन के लिये Madura और Salem ले लिये हैं । यह चूँके (क्योंकि) नए centre हैं, उनको लेना लाज़िमी (ज़रुरी) समझा । Gulbarga और Bidar में ज़ियादा ज़रुरत नहीं थी क्यूँके आप भी वहाँ पहुँचते रहते हैं । उन लोगोंको नागवार (नापसंद) ज़रुर होगा मगर Mission और उसके काम का अगर लिहाज़ (विचार) है तो ये ख़ियाल (विचार) नहीं पैदा होना चाहिए । बच्चोंको मेरी आमद (आने) की ख़बर ज़रुर कर देना। तुम सब को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः Rajendra Kumar मय (साथ) छाया के, सीतापुर Eye Hospital में है। उनको काफ़ी अरसे (बहुत समय) वहाँ रहना पडेगा । बायें आँख में retinal haemorrhage हुआ है । और vision बहुत कम है और दाहिनी आँख में भी कई haemorrhage हो चुके हैं । ईश्वर रहम (दया) करे और सेहत कुल्लिया (पूर्ण स्वास्थ्य) अता करे । छाया की रोटी देनेवाला वही है । और कोई जायदाद (संपत्ती) नहीं । मैं दो दिन के लिए Sitapur गया था। आज आया हूँ । Doctor, retinal operation अगर electric treatment कामयाब (सफल) न हुआ, तो करना चाहते हैं । दुआ (प्रार्थना) करना चाहिए। साबिक (निवृत्त) principal दावणगिरी से ख़त आया है। और मुझको बुलाया है। और Mission के काम करने की उम्मीद (आशा) दिलाई है। मैंने जबाब दे दिया है। आप उनको अपने यहाँ मदऊ (आमंत्रित) करें, Hassan जिन तारीखों में वहाँ हूँ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 172 शाहजहाँपुर
No.-C-627-SRCM Date 29.11.1967

My Dear Raghavendra Rao,

Received your affectionate letter. I have already sent the programme to Banglore. I have sent the copies of the programme to all the centres of the mission in South. I am sending one to Shri. Gunderao today. St. Kasturi will come with me if reservation is carried out. I have arranged for railway passes this year but they have not yet been received. That is why we have not yet applied for reservation & did not purchase the tickets. Love to children. With blessings.

Yours affectionately
Ram Chandra

पुनश्चः कस्तूरी मेरे साथ आ रही है। रायचुर तक तो ज़रुर ले आऊंगा। आगे इसको Madras भेज देने का इरादा (विचार) है। इसलिए कि कस्तूरी की तंदुरुस्ती इस क़ाबिल (योग्य) नहीं है कि सफर की तकलीफ़ (कष्ट) इतने स्टेशनों की गँवारा (सहन) कर सके। बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 173 शाहजहाँपुर
No.-C-72-SRCM Date 17.02.1968

मेरे राघवेंद्रावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। Shri. Raghavendra Rao व Shri. Ramakrishna Chetty बडी मुहब्बत और अक़ीदत (श्रद्धालु) के आदमी हैं। मेरे दिलमें उन्होंने काफ़ी (पर्याप्त) गुंजाईश (जगह) पैदा करली है, ईश्वर उनका भला करे और रोज़ बरोज़ (दिन ब दिन) तरक्की (उन्नति) देवें। भाई Ramakrishna Rao ने मुझको, काफ़ी दिन ठहरकर, ख़िदमत (सेवा) का अच्छा मौक़ा (अवसर) दिया। उनकी हालत लिखता हूँ। बडी grossness थी जिसको मैं दूर कर लाया हूँ। मगर एक चीज़ ऐसी मिली है जिस पर मैं ज़ियादा (अधिक) क़ाबू (नियंत्रण) अभी तक नहीं पा रहा हूँ। कई रोज़ बाद उस हालत को समझनेके लिये एक लफ़्ज़ (शब्द) मिला है के दिलपर जमिनी असर (प्रभाव) है। जिसको देखने से दिलका रंग मटियाला (मिट्टी ऐसा) मालूम होता है। यानी जो खेत का रंग colour होता है। उसकी वजह यह मालूम होती है के सिर्फ़ खेत का ख़ियाल और automatic meditation मालूम होता है। और दिल का रंग और मिट्टीका रंग मिलकर शीर (दूध) और शक्कर (बिल्कुल एक) हो गये हैं। ध्यान से ताकत (शक्ति) बढ़ती है और initiation से और ज़ियादा। उनकी ताकत सिर्फ़ खेत ही पर काफ़ी मसरुफियत (संलग्नता) के साथ इस्तेमाल (उपयोग) की गयी और मेरी समझ में नहीं आ रहा के मैं कैसे इन्हे ठीक करुँ । आपके पास जावें तो आप इसका ख़ियाल (ध्यान) रखें और उस वक्त तक जितना मैं ठीक कर सका, करुँगा । यह ख़ियाल (विचार) आपका सही है के सतसंगियों में उतनी तेजी नहीं है, जितनी के होना चाहिये। इसकी असली (मुख्य) वजह (कारण) co-operation का न होना है । मादूदे चंद (इने-गिने) में मिलेगा। दूसरी वजह (कारण), ओ आम है, के ध्यान में ज़ियादा (अधिक) वक्त (समय) नहीं देते । तीसरी वजह (कारण) यह है के ध्यान के बाद पूजा व ध्यान से कुछ ताल्लुक (संबंध) नहीं रखते । मुहब्बत (प्रेम) का दम ज़रुर भरते हैं । इसको मोहब्बत (प्रेम) सिर्फ़ इसी मानेमे कह सकते हैं के उनको अपने अच्छे होने का व बुज़ूर्ग (आदरणीय) होने का दिलमें सिक्का जमा हुआ है । असली मुहब्बत ओ है जिसमें दरद हो ।

Bidar में जलसा (उत्सव) होना अच्छा है। और जहाँ भी ऐसा मौक़ा (अवसर) मिले छोड़ना नहीं चाहिये । आपको पता होगा के मैंने मिशनका France में एक centre खोल दिया है और Mr.

A. Porey उसके preceptor हैं। किताब (पुस्तक) Reality at Dawn का French में ओ तरजुमा (अनुवाद) चाहता था। उसने Aurobindo Ashram के एक फ्रान्सीसी के पास भेज दिया है। उसने Rs. 900/- तरजुमा (अनुवाद) करनेवाले के लिये जमा कर दिये है। Peace ओ चाहता था। उसको मिली। मगर फिर भी उसे इतमिनान (संतोष) नहीं होता था। ये गुरु महाराज की कृपा और अज़मत (महत्ता) थी के 1/2 मिनीटमें satisfy हो गया। और ओ चलता था, फिरता था मगर होश नहीं । उसने मुझसे कहा के मुझे होश नहीं है, ऐसा न हो के मैं किसी कार से दब जाऊँ ।

Income tax exemption certificate भेज रहा हूँ। मेरा ख़ियाल (विचार) था के Raizada ने दे दिया होगा। Dr. K.C.V. Trichy और Madurai का दौरा (यात्रा) कर चुके हैं और अब 23 February 68 को Vijaywada जा रहे हैं। अपने centre को नक़ल भेज देता अगर न मिली हो। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः मैंने तिरुपती से अगर एक नक़ल तरीके (पध्दति) की भी How to Make One Dynamic अगर आप के पास भेजी हो तो type करके उसकी एक copy भेज दीजिएगा। इसमें चंद (कुछ) line और diagram भी है।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 174 शाहजहाँपुर
C-135-SRCM Date 07.03.1968

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त आया। मैंने अज़ीज़म (प्रिय) रामकिशन के लिए जो कुछ कर सका ओ किया मगर वक्तन-फ-वक्तन (समय-समय पर) आपको निगाह डालने की जरूरत है और ओ मेहनत तलब (परिश्रमकारक) भी है । Shri. Kumarswamy को समझाना

चाहिए, ये उनका वहम (भ्रम) है । दूसरे, ये बात भी है के उनकी कुछ आदतें भी वहमी (भ्रमित) बन गई हैं । उन्होंने मुझे भी कुछ वहमी (भ्रामक) बातें लिखी हैं । उनको मैं समझाते हुए जवाब दूँगा । बच्चे सब खुश व खुर्रम (प्रसन्न) होंगे । आप सब को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 175 शाहजहाँपुर
No.-C-221-SRCM Date 12.05.1968

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। जिस रोशनी (प्रकाश) के लोग पीछे पड़े हैं उसकी हमें ज़रुरत (आवश्यकता) नहीं रहती और एक वक्त (समय) ऐसा आ जाता है के यह अच्छी मालूम नहीं होती। वहाँ तो न रोशनी (प्रकाश) है और न अंधेरा। वहाँ सत्य भी कुछ और ही शक़ल (रूप) इख़्तियार (धारण) करता है। सच तो ये है, जब तक हम अंधे हैं हमें रोशनी (प्रकाश)) की ज़रुरत है और जब हम sight recover कर लेते हैं, तो रोशनी (प्रकाश) की ज़रुरत नहीं।

Shri. Ramkrishna Chetty, Hyderabad से और Shri. Kamalanathan, Tirupati से कल एक हफ्ते (सप्ताह) के लिए आ रहे हैं । Shri. Ramkrishna तो Meher Baba के पुजारी थे और उनको खुदा (ईश्वर) समझकर उसका तसव्वुर (ध्यान) करते थे जिसका नतीजा (परिणाम) ये हुआ के उनके जितनी grossness थी सब उनमें उतर आई और रुहानियत (आध्यात्मिकता) Baba जी के पास रही और हमारे लिए ये बहुत मेहनत तलब (परिश्रमकारक) बन गये । ताज्जूब (आश्चर्य) है के पढ़े लिखे आदमी कैसे धोखे में आ जाते है । Meher Baba अपने आपको special personality कहते, और कहते हैं के दुनिया का तबादिला

(परिवर्तन) ओ कर रहे है और मौन (Silence) अब मई की किसी तारीख में तोडेंगे और उस रोज़ दुनिया में नया तबादिला (परिवर्तन) होगा । तारीख Feb. से May हुई और मुमकिन (संभव) है के मई से और कोई तारीख हो जावे । ख़ुदा उनको hallucination से बचाये और उनके मुरीदों (शिष्यों) को विवेक शक्ती (discrimination) अता करे (दे) । ये वक्त (समय) की बात है, Meher Baba का कहना अकलमंद आदमी ख़ूब पढ़े हुए मानते हैं और जो कुछ ओ अपने लिए कहते हैं उसको सही मानते हैं । और मेरा कहना बेवकुफ़ भी नहीं मानता और सच भी है, मेरे पास जहालत (अज्ञानता) का सबक कौन सीखने आए ? Mr. Sundara जो Delhi में preceptor हैं, Australia, Govt. के काम से गये थे । वहाँ लोग दिलचस्पी रखते हैं। उनके पास वक्त बहुत कम था। इसलिए काम ज़ियादा (अधिक) न कर सके। फिर भी Sydney में दो आदमियों ने शुरुआत की है और New Zealand और Indonesia वगैरा में भी कुछ चर्चा हुई है। Assam में भी अब जागृती पैदा हो गई है। वहाँ नंबर बढ़ने लगा। मुझे बहुत बुला रहे हैं। और मैं समझता हूँ के मुझे June के दूसरे हफ्ते (सप्ताह) में जाना पडेगा।

मैं आपके पास Commentary on Ten Commandments of Sahaj Marg भेज रहा हूँ । आप Urdu की किताब रखकर, अंग्रेजी का तरजुमा (अनुवाद) बगौर (ध्यान से) मिला लीजिए के कुछ English translation में छूट तो नहीं गया । एक जगह छूटा हुआ था, जैसा के आँ अज़ीज़ (आप) ने Bellary में बतलाया था । वहाँ काग़ज़ typed paper लगा दिया। अब यह जल्द छपेगी । इसलिये आँ अज़ीज़ (आप) उसको जल्द (शीघ्र) मुतालअ: (परिशीलन) करके भेजिये । Revised list, initiation की भेज रहा हूँ। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) । जो मर चुके उनके नाम निकाल दिये गये । Reality at Dawn मई तक तयार हो जावेगी । आपको कितनी कॉपीयोंकी ज़रुरत होगी ? बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 176

शाहजहाँपुर
Date 14.5.1968

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं जब पार्सल बना चुका था तब ख़ियाल (विचार) आया के किताब Towards Infinity में कुछ गलतियाँ हैं । उनको Sarnadji की मदद से सही कर दिया गया । उसकी एक किताब भेज रहा हूँ । आप के पास जो किताबें हों आप भी सही कर लेवें । Shri. Ramkrishna Chetty, Hyderabad से आ गये । Shri. Kamalnathan भी Tirupati से आ रहे हैं ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः Initiation की List जो मैं भेज रहा हूँ, उसमें देख लेना के कोई नाम छूट तो नहीं गया है ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 177
C-357-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 28.08.1968

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आपका) का मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। मुझे खुशी है के आप आ रहे हैं और मैं आपको घर ही मिलूँगा । बाहर कहीं नहीं जा रहा हूँ। मेरे पास बडे मज़ेदार ख़त आ जाते हैं । एक-दो साहिबान ने एक-दो महिने पहले मुझसे पूछा है के आप कहीं फलां तारीख से फलां तारीख तक जायेंगे तो नहीं ? Kumarswamy, Mohanrao मेरे पास ठहरे हुए हैं । पहली तारीख को चले जायेंगे । लिंगोजी राव भी Bidar से आ गये हैं । पता नहीं के ओ संभलने के लिए आये हैं या मुझे बिगाड़ने के लिए । जितनी मेहनत की उन पर ज़रूरी है, इसके लिए मुमकिन (संभव) है के मैं कोशिश करूँ । हालांके (यद्यपि) इसके करनेसे जी घबराता है। ओ आप को भी मिलेंगे जब आप यहाँ आयेंगे । Dr. Varadachari आये थे । 4 रोज़ रहकर चले गये । उनकी speeches Delhi, Shahjahanpur, Lucknow, Allahabad और Calcutta हुई । अब ओ ख़ैरियत (सकुशल) से घर पहुँच गये हैं । उनके लडके नारायण भी थे ।

आप ने वैराग (वैराग्य) के बारे में और उसकी किस्में सत दर्शन में पढी होगी । मसलन दृढ वैराग, कच्चा वैराग, स्मशान वैराग । अब मैं नई तरह की किस्में आपको देता हूँ जिससे आप हर शख्स (व्यक्ति) को पहचान सकते है के ओ कितने पानी में है । अब सुनीए । वैराग कुछ लोग दुनिया से करते हैं । और यह ठीक भी है । और कुछ लोग ईश्वर से वैराग्य करते हैं और कुछ अपने दिमाग़ से । जो ईश्वर से वैराग करते हैं ओ आदमी clever हैं । जो दुनियासे वैराग करते हैं ओ wise होते हैं । और जो दिमाग़ से वैराग करते हैं ओ fool होते हैं । अब इसके नताईज़ (परिणाम) सुनिए । ईश्वर के वैराग से अशांती और दुनिया के वैराग से शांती और दिमाग़ के वैराग से खतरनाक इमराज (बीमारियाँ) मसलन paralysis, brain tumor वगैरा ।

एक बात तो यह हो गई। दूसरी बात और सुनिए। मैं आपको बतलाता हूँ के संत कितने तरह के होते है। सत दर्शन में आपने इसकी

किस्में (प्रकार) भी पढी होगीं । मैं आपको definition बतलाता हूँ । मैं तीन किस्में (प्रकार) लेकर चलता हूँ। संत, परमसंत, सदगुरू। 1) संत ओ है जो अपने original state में आ गया हो। 2) परम संत ओ है जिसको अपनी original state में रहने का एहसास (अनुभव) व ख़ियाल न रहे 3) सदगुरू का काम ये है जो faculties हमें ईश्वर से मिली हैं उसका इस्तेमाल, (उपयोग) हम जान लें और उनका सही इस्तेमाल (उपयोग) करें, ईश्वर के कामों में ।

Dr. Varadachari जी की speeches जो Sahaj Marg पर हुई है ओ Madras में छपेंगी। मेरे पास जितनी भी थी, ओ मैंने भेज दी। मुझे खुशी है के मकान आप का जल्द ही ईश्वर करे तयार हो जावे, ताके मैं भी उसमें Raichur आनेपर आराम उठा सकूँ । जिस बच्चे में खून की खराबी आप पाते हैं, बच्चे को आधे कप गरम पानी में आधा नींबू निचोड कर और उसमें थोडा नमक मिलाकर आप नहार (सवेरे बिना कुछ खाए हुअे) मूँह पिला दें, तो खून जल्द साफ हो जायेगा । और बजाय नमक के अगर आप उसमें शहद मिलायें तो और भी मुफ़ीद (लाभकारी) होगा। बच्चोंको दुआ (आशिर्वाद) ।

एक नई बात मैं लिखता हूँ । Shri. Narayan Rao Gulbarga से 27 या 28 को आने वाले थे मगर किसी वजह से ओ न आ सके । अब 8 से 10 तक आनेवाले हैं । उन्होंने लिखा था के आप अगर मौजूद (उपस्थित) मिलें तो इत्तला (सूचना) दें, मैंने लिख दिया था के मैं मौजूद (उपस्थित) मिलूँगा । आगे मैंने एक sentence यह लिखा था your condition warrants you to be here. इसके जवाब में उन्होने लिखा था This sentence has shocked me very much इसको मैंने बुरा नहीं माना । Shock लगना अच्छा ही हुआ मगर अभी तक मेरा ख़याल ये था के मैं अंग्रेजी बहुत कम जानता हूँ । अब मुझे मालूम हुआ के मेरे साथीयोंमें भी बहुतसे ऐसे है के अंग्रेजी बहुत कम जानते है । इसलिए अब मुझे यह गिला (शिकायत) नहीं रहा के मैं अंग्रेजी बहुत कम जानता हूँ । और यह बहुत ज़ियादा (अधिक) मेहनत तलब (परिश्रमदायक) हो गये हैं । मैं जब Raichur था, तो मैंने उसके बारे में कहा था। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 178 शाहजहाँपुर
No.-C-384-SRCM Date 25.09.1968

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला, पढ़कर ख़ुशी हुई । Peace centre जो Hyderabad के आश्रम की छतपर बनवाने के लिए संन्यासी साहब दरख़्वास्त (निवेदन) किये हैं उसके कतई (बिल्कुल) मैं मुवाफ़िक़ (सहमत) नहीं हूँ । बिलकुल इन्कार (अस्वीकार) कर दीजिये । हमारे आश्रम में peace काफ़ी (पर्याप्त) तौरपर (रूपमें) मौजूद (विद्यमान) है इसलिए हमें peace centre क़ायम (स्थापित) करानेकी ज़रुरत (आवश्यकता) नहीं । यह peace centre वहाँ खोलें, जहाँ peace की ज़रुरत (आवश्यकता) हों । उसके यहाँ खोलने से हमारे आश्रम की peace disturb होगी | अपने आश्रम में सिवाय (अतिरिक्त) Shri Ramchandra Mission के और कोई चीज़ function नहीं कर सकती । आप बिलकुल इन्कार (मनाही) कर दीजिए । मेरी यह final राय (मत) है । Kumarswamy को आप फ़ौरन (तुरंत) लिख दीजिये के हरगीज (कदापि) peace centre अपनी खोपड़ी (Head) पर क़ायम (स्थापित) न होने दें और न उसकी किसी तरह इजाज़त (अनुमति) देवें । मुझे ताज्जूब (आश्चर्य) है के आप peace centre क़ायम (स्थापित) होने के लिए कैसे राज़ी (सहमत) हो गये । इसमें कानूनी नुक्स (खराबियाँ) भी पड सकते हैं और आगे चल कर मुकद्दमेदारी (अदालती झगडे) की भी नौबत (बारी) आ सकती है जिससे हम लोग कोसों दूर भागते हैं ।

आप की मौजूदा (विद्यमान) हालत vision of the absolute की है, या सूफियों की इस्तेलाह (शब्दावली) में वस्ल (मिलन) की हालत कह लीजिये । मगर भाई, अभी जाने क्या क्या और है उसके आगे बढ़ाना ईश्वर के हाथ है।

मैं दावणगिरी (Davangiri) नहीं जा सकूँगा । मेरी ऐवज (बदले), आप को जब मौक़ा (अवसर) मिले तो आप चले जावें । जागिरदार का ख़त आया था। उसमें लिखा था के complimentary

passes के लिए 1 1/2 माह पहले programme भेजना चाहिए। मगर मजबूरी (विवशता) ये है के नया Time Table अभी नहीं आया है। मैं Delhi महाजन को आज फिर लिख रहा हूँ। मैं Delhi Dy. Minister Railway से भी ज़िकर (बात) कर दिया था के नया Time Table आने पर मैं भेज सकूँगा। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः Ayal Reddy और Shivlingappa मेरे पास ठहरे हुए हैं। उनमें grossness इस तरह की पाई के मैं अबतक दूर नहीं कर सका । और मुझे क़रीब क़रीब हर case में यही करना होता है मगर चंद (कुछ) दिनों बाद ओ फिर ज्यों का त्यों हो जाते हैं । फिर आगे कैसा बढाया जावे ? Cleaning का तरीक़ा (अभ्यास) रोज़ करते हैं, मगर उसका कोई फ़ायदा नज़र नहीं आता | आप ही सोचिए के क्या गलती ये लोग करते हैं, फिर वैसी instructions दीजिये ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 179 शाहजहाँपुर
No.-C-529-SRCM Date 07.11.1968

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। आश्रम तो अबके यहाँ बन ही के रहेगा। जब ईश्वरने ज़मीन दी है तो बनवा भी ओ देगा। मुझे 1st class railway passes मिल चुके हैं । और आ भी गये हैं। कस्तुरी मेरे साथ आ रही है। मैं उन्हे Hyderabad से Raichur भेजना चाहता हूँ। बीदर व Gulbarga के सफ़र (यात्रा) में नहीं रखता। आप Hyderabad से अगर रायचुर वापस हुए तो आपही के साथ रवाना करुँगा । और ओ आपही के यहाँ रहेगी। वहाँ उसको ज़ियादा (अधिक) आराम मिलेगा। इधर वतीरा (ढंग / दस्तूर) रहनेका, वही रहेगा जो के पारसाल (पिछले वर्ष) था। दिन में विठ्ठलराव के और रात को आपके यहाँ।

उमेश का इम्तहान (परीक्षा) आज ख़तम (समाप्त) हो गया। ये chartered course का आख़री chance है। अब तक दो या तीन नंबरोंसे किसी भी subject में रहा है। आप उसकी कामयाबीकी (सफलता) दुआ करें। ईश्वर मकबूल (स्वीकार) करेगा।

कुमारस्वामी आजकल रुख़सत (छुट्टी) पर है (preparatory to retirement) | उन्होंने मुझे पूछा है के "मुझे अगर मदरास जाना है तो मुझे लिखा जावे ताके मैं थोडा थोडा सामान भेजना शुरु करुँ और अगर हैदराबाद रहना है तो मुझे लिख दिया जावे।" पेन्शन के बाद ओ मकान का किराया नहीं दे सकते । मैं समझता हूँ के उनको आश्रम के ऊपर जो इमारत बन रही है, उस में ठहरा दिया जाय और वहाँ मिशन का काम करें । एक आदमी जो हर वक्त आश्रम में रहेगा तो जनता (public) को ज़ियादा (अधिक) फ़ायदा (लाभ) मिलेगा । और ओ बहुत अच्छे preceptor हैं और उनकी approach अब central region में हैं । उनका रहना हर तरह अच्छा रहेगा और मिशन का काम ओ बहुत तनदेहीसे (तन्मयतासे) करेंगे । मैंने उनको एक ख़त भी लिख दिया है । जिसकी नक़ल आपके पास भेजी जा रही है । मैं C. Raghvendrarao को भी इत्तला (सूचना) दे दूँगा के ऐसा चाहता हूँ और उनको वहाँ रखा जाए ।

आपने जो मियाँ बीवी की हम आहंगी (एकमत) के बारेमें लिखा है, ओ एक ऐसा मसला (प्रश्न) है जिसको सुक़रात व बुक़रात भी हल न कर सके। सुक़रात की बीवी इंतहाई (अत्यंत) तेज़ मिज़ाज़ (क्रोधी) थी और उसने शादी ख़सदन (जान बुझकर) ऐसी ही औरत से करना चाही । जब उनके शागिर्दोंने (अनुयायियों) पूछा के आपने ऐसा क्यूँ किया ? बोले, ऐसा इसलिये किया के ज़ब्त (सहन करने) की आदत पड जाए । ज़ियादा (अधिक) तर पढा भी कहीं कहीं पर है और देखा भी कहीं कहीं से के जितने ऊँचे दर्जेका (स्तर का) बुज़ुर्ग (फ़कीर) हुआ इतनाही ज़ियादा उसकी बीवी तेज़ मिज़ाज़ हुई । ये कायद-ए-कुलिया (व्यापक नियम) नहीं है । मगर देखनेमें ऐसा ही आया है । इसकी मिसाल (उदाहरण) मैं ख़ुद हूँ और हमारे लालाजी साहब भी। और कुछ हमारे गुरुभाई हैं के जिनकी यह शिकायत थी | यह चीज़ समझानेवाली हुई और अब असल मतलबपर आता हूँ । पहले ये बताईए के गो (यद्यपि) आप बहुत अच्छे थे, आपको अपने transformation में कितनी देर लगी ? जब के, मैंने भी जल्दी चाही। अगर आपको बुरे आदमियोंकी ज़रुरत हो तो अच्छोंमें तलाश कीजिए (ढुँढिए)। और अगर आपको बेवकूफोंकी फेहरिस्त (सूची) बनाना हो तो अकलमंदो में ढुँढिए ।

पुरुष अगर अपनी हैसियत (स्तर) पर रहे तो बीवी अपनी हैसियत (स्तर) पर रहेगी ! यह पुरुष से मतलब, आदमीसे है । शास्त्री ज़बानमें नहीं इस्तेमाल (उपयोग) किया गया । मगर हाल यह है के पुरुष ने अपनी हैसियत (स्तर) प्रकृतीकी कर ली । Balance बराबर करनेके लिए लाज़िमी (ज़रुरी) है के प्रकृति (औरत) पुरुष की हैसियत (स्तर) ले लेगी और फिर आप जानते ही हैं के जब उसकी (औरतकी) हैसियत पुरुषकी है तो ओ वही खेल खेलेगी जो पुरुष को खेलना चाहिए । यानी प्रकृतीपर अपना हरतरह से इख़्तियार (अधिकार) ज़माना, ख़्वाह (चाहे) ओ डांट डपट से हो ख़्वाह किसी तरह से हो । अब ये ज़रुर है के मैंने असल बात आपसे कह दी, मगर बुज़ूर्ग और फक़ीर इस तरफ ज़ियादा तवज्जह (ध्यान) नहीं करते ओर ओ एक तरहसे चिकने घडे बनकर बेहयाईकी (निर्लज्जता) ज़िंदगी व्यतीत करना चाहते हैं । ओ बात जो मैंने इससे पहले लिखी है आम दुनियादारोंके लिये थी और यह ऊपरका जुमला (वाक्य) फ़कीरोंकी हैसियत (अवस्था) बता रहा है । आपके लिए तो मैं यह कहुँगा के रफ़्ता रफ़्ता (धीरे-धीरे) बहूका transformation क्यों नहीं कर देते ताके ओ अपनी हैसियत (स्तर) पहचान जाए ।

ज़माना आपके साथ साथ नहीं चलता तो आप उसके साथ चलने की कोशिश करें ताके तकलीफ़ (कष्ट) से छुटकारा मिले । बासरीके जब सुराख, जिनसे ओ स्वर निकलते हैं, बंद कर दिये जाए तो ओ एकही आवाज़ देगी । अब मैं तो आ ही रहा हूँ । मुख़्तसर (संक्षिप्त) ख़त लिख दिया । कुछ आगे बताना चाहोगे या पूछना चाहोगे तो मैं आ ही रहा हूँ। Vithalrao का तसफ़िया (फैसला) आपही करें । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

Change in Programme

Bangalore	a-Sat 14-12-68	13-00	Island Express
	d-Wed 18-12-68	18-10	
Salem	a-Thurs19-12-68	0-45	
Nagpur	a-Friday3-1-69	10-40	Trichy
	d-Sat 4-1-69	10-55	Dakshin Exp.
Shahjahanpur	a-Sun 5-1-69	18-36	5 UP Mail

****

ॐ तत् सत

Serial No. 180 शाहजहाँपुर
No.-C-89-SRCM Date 24.02.1969

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला। बडी देरसे जवाब देना न हुआ वजह है, सुस्ती और इस दौरान में क्लर्क के न होना। जितना ख़तमें देर लगानेसे आपको कायदन (रिवाज के लिहाज़ से) नाराज़ किया है, उससे ज़ियादा आपको खुश कर दूँ। **पहिले तो आपको मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ, इस बात की, के 11-2-69 बवक्त 8.25 A.M. आपकी लयअवस्था ब्रह्म में शुरु हो गई। ये सब लालाजीसाहब की बरकत (कृपा) है, वरना ऐसी हालत का फकीर कहीं सैंकडो बरसोंमें मिलता है।** और

यह उन्ही की तालीम (प्रशिक्षण) की ख़ूबी (विशेषता) है के एक वक्त (समय) में कई आदमी हो सकते हैं । अगर कहीं, दो दरजन आदमी इस हालत के पहुँचे हुए मिल जायें और ओ Hindustan के मुख़्तलिफ (अलग-अलग) मुक़ामातपर (जगहों) तालीम (प्रशिक्षण) और प्रचार करें, तो 20 सालमें Hindustan में हर जगह रुहानियत (आध्यात्मिकता) पैदा हो जायेगी ।

मगर भाई, हिम्मत तो मैं रखता हूँ के मैं millions लालाजी साहब की ताक़त से व मेहरबानी से बना सकता हूँ। मगर आदमी नहीं मिलते। कोई राम नाम की रट लगा रहा है । कोई मन्त्र के जाप में मसरूफ (व्यस्त) है । कोई चलते फिरते माला सटकाते हैं, और समझते ये हैं के मैं बड़ी पूजा करता हूँ । यह ओ नहीं समझते की सही अमल (अभ्यास) न करने से ग़लत रास्ता बन जाता है । मंदिर में जाना मना नहीं। मगर लोग मंदिर जाकर ईश्वर को वहीं छोड आते हैं । और घरपर कोरे के कोरे आते हैं । हम लोग यहाँ तक गिर गये के मैंने एक को परनाले (मोरी / पनाला) पूजते अपनी आँख से देखा है। हर शख़्स (व्यक्ति) जो दो घंटे किसी तरह की पूजा करता है, ओ समझता है हम बडे भगत हैं ओ ऐसे ख़ुदा को पूजना चाहते हैं जो अपनी ही तरह का हो। कोई काश्तकार (किसान) अगर शाही महल में जावे तो जवाहिरात को ओ पसंद नहीं करेगा। मगर उसके यहाँ हल अगर रखा हुआ है, तो ओ उसीको देखेगा और तारीफ़ भी करेगा ।

एक बात मैं तुमको बडी अच्छी बताता हूँ। उसको आप जानते भी होंगे और मैंने भी कई बार कहा होगा के जितनी ये बाहरी पूजायें हैं या अमल (अभ्यास) हैं, उनके करनेवाले अहंकारसे शुरु करते हैं । उसकी बुनियाद अहंकार हैं, और ओ समझते हैं के हमने आज खूब पूजा की। गरज़के (संक्षेप में) ऐसे लोग अहंकार को साथ लेकर चलते हैं। और Shri. Ram Chandra Mission, divinity को साथ लेकर चलता है। और उसी की ताक़त से realization करता है। ख़ैर (अस्तु), यह तो मैं ख़ूब बक़ बक़ कर चुका; अब नफ्स मतलब (मुख्य विषय) पर आता हूँ। मगर उससे पहले एक वाजबी (उचित) बात कहता हूँ, के अब मैं आपसे गुरुदक्षिणा का हक़दार हूँ। ये नहीं के आप जो चाहे भेज दें बल्की मैं जो माँगू ओ देना चाहिये। अच्छा, इसके लिये मैं फिर लिखूँगा और आप अगर उसे सोचें तो आप पता चला लेंगे के मैं क्या चाहता हूँ। ख़ैर (अस्तु), मैं जो चाहूंगा फिर लिख दूँगा। मौजूदा (विद्यमान) हालत, जो भी एहसास में आवे, मुझे लिख दें। और ये शुबहा (संदेह) पहलेसे ही न कर लीजिये के जाने मैं ठीक

बता सकूँगा या नहीं। Vibrations कहाँपर है और मध्यम हैं या तेज़ हैं, ये मैं अपने तजरुबे (अनुभव) के लिये पूछ रहा हूँ। क्यों के ये मेरी खुशकिस्मती (सौभाग्य) है के एक दो आदमी तो ऐसे आ ही गये जिन्होंने ये तजरुबा किया।

एक और ख़ुशख़बरी (शुभसमाचार) ये है के आपने Sarnadji में co-operation पैदा कर दिया और मैंने उनको इस खास तालीम (प्रशिक्षण) में ले लिया है। जागीरदार ने भी कुछ signs दिये हैं के जिससे आला तरक्की (ऊँची उन्नति) करने का एहसास (अनुभव) होता है। मगर आजकल ओ signs कुछ मांद (क्षीण हो गये) पड गये हैं। वजह मालूम नहीं है के क्या है।

Shri. Ramchandra Vineet का ख़त Dharwad से आया है के साईबाबा से उन्हे कोई रुहानी (आध्यात्मिक) फ़ायदा नहीं पहुँचा और ओ मिशन में फिर आना चाहते हैं। इस ख़तको आए हुए एक माहसे ज़ियादा (अधिक) हुआ । मैंने उनको अभी तक कोई जवाब नहीं दिया। सुबहका भूला शाम को आ जावे तो भूला नहीं कहलाता। आप उनको लिख दीजिये, मेरी तरफसे, के ओ फिर join हो सकते हैं। और उनको क़रीब से क़रीब preceptor से जल्द (शीघ्र) ही मिलना चाहिये और सबसे अच्छा तो ये है के ओ आँ अज़ीज़से (आप) मिलें।

ये आपने जो S. Ramkrishenrao को इज़ाजत शर्तिया (प्रतिबंधित / सशर्त अनुमति) देने के लिये कहा है क्या ये वही साहब हैं जो अपने (आपके) घरपर initiate हुए हैं। इनकी कुछ तसबीर (रूप / चेहरा) निगाह (दृष्टी) में नहीं आ रही है। अगर ये वही साहब हैं तो जहाँ तक मेरा ख़ियाल है मैंने गलतीसे किसी और के धोके Raichur में थोडासा तयार कर दिया था। बडा अच्छा है के आपने एक किताब लिखना शुरु कर दी और आप अच्छा ही लिखेंगे। अच्छा हुआ के आश्रम की तामीर (इमारत बनना) शुरु हो गई। ईश्वर काम में बरकत (बढ़ोत्री) दें।

मेरे पास इस वक्त कोई typist कई महिनेसे नहीं है। जब मिल गया तो resolution की कापी भिजवा दूँगा।

मैं 70 बरसका ज़रुर हो गया, और मुझे भी यह मालूम नहीं था के मैं 70 बरसका हो गया । मैं अपने आप 69 बरसका समझता था, आप इसकी फ़िकर (चिंता) न करें । **मैं जिंदा आया हूँ और जिंदा ही जाऊँगा। मरनेका कोई सवाल ही नहीं ।** आपको मालूम है के मैं दूसरे की ज़िंदगी जो मुझको Transfer हुई है उसी में चल रहा हूँ। इसलिये मुझे यह पता नहीं के मुझे कितना और जीना है । Allahabad का वाक़या

(घटना) याद होगा के मैंने अपनी कुल (पूर्ण) ज़िंदगी (जीवन) 6 माह छोडकर, transfer की थी ।

लोग मेरे यहाँ आते है और कुछ भूल जाते हैं । चुनांचे (जैसा कि) इस मरतबा (बार) भी ऐसा ही हुआ। और किसीने मुझे लिखा भी नहीं। एक pant जिसमें Raichur लिखा है कोई साहब भूल गये है | क्या यह Shrikanthayya का तो नहीं है ? जिसका हो, अगर आप मालूम कर सकें, लिखिये ताके मैं भेज दूँ। बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 181 शाहजहाँपुर
No.-C-221-SRCM Date 05.04.1969

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बाद दुवा (आशीर्वाद) के वाज़े (विदित) हो के मैंने हसबुलराय आँ अज़ीज़ (आपके मतानुसार) Shri. Ramkishan Rao को 3-4-69 को इज़ाज़त शर्तिया (सशर्त अनुमति) दे दी है। आप उनको लिख देवें के ओ अपना काम सतसंगका शुरु करें और जो ज़रुरी हिदायात (सूचना) होवे, उनको आप लिख देवें। मैं कल इतवार को Lucknow जा रहा हूँ। मेरी छोटी बहनने मुझको कुछ ज़रुरी काम से बुलाया है। ग़ालिबन (संभवत:) 3 यूम (दिन) लगेंगे। आनेके बाद आपके ख़त का जवाब भी दूँगा और रामकिशनराव को certificate भी issue कर के आपके पास भेज दूँगा। Kumarswamy को मैं central region में भेज चुका। अब उन्होंने इल्तिजा (प्रार्थना) की है के ब्रह्म में लय अवस्था पैदा करने के लिये मैं कोशिश करुँ, जो बिलकुल ईश्वर के हाथ में है। अभी rings पार करना है। जिस में अगर natural तरीके में पार करायें जावें और अभ्यासी काफ़ी (पर्याप्त) मोहब्बत (प्रेम / अनुराग) रखता हो, 21 years लगेंगे । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 182 शाहजहाँपुर
No.-C-435-SRCM Date 14.05.1969

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैं एक कामसे मदरास आज जा रहा हूँ। 17-5-69 की सुबह को G.T. से पहुँचूँगा और एक हफ़्ता (सप्ताह) क़ियाम (वास्तव्य) रहेगा।

मैंने एक ख़त भेजा था। उसमें लिखा था कि मैंने 3-4-69 को Shri. Ramkishanrao को इज़ाज़त शर्तिया (सशर्त अनुमति) दी है। उसका जवाब नहीं आया। पता नहीं ओ आप को मिला या नहीं। Certificate बाद को भेजूँगा। वापसी के बाद 6 जून 69 को आसाम जा रहा हूँ और 21 June 69 को वापसी होगी। अब की complimentary pass आसाम के लिये नहीं मिले। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 183 शाहजहाँपुर
No.-C-867-SRCM Date 17.09.1969

मेरे राघवेंद्रराव्जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

ख़ुतूत (पत्र) सब मिल गये। मैं 17 Oct 69 से 28 Oct 69 तक दो ज़िले (जनपद) नेपाल और तीन ज़िले उसके क़रीबके (पास) बहिरायच वगैरा में दौरा (यात्रा) करुँगा । इसलिये आप इससे काफ़ी (पर्याप्त) पेश्तर (पहले) आवें या बाद को । इन दिनों दो हफ्ते से पेट का दरद बहुत बढ़ा हुआ है। Local doctor का इलाज है । मगर अभी दवा ने कोई खास (विशेष) फ़ायदा नहीं किया । अगर ज़ब्त (सहन) के अंदर रहा तो मैं जाऊँगा वरना (नहीं तो) सफ़र (यात्रा) मुलतवी (स्थगित) कर दूँगा । उम्मीद (आशा) है के मैं उस वक्तसे पहले अच्छा हो जाऊँगा ।

किताबें जो कानडी ज़बान में छप रही हैं, मेरे पास भेजने की ज़रुरत (आवश्यकता) नहीं है। उनका review जहाँ तक हुआ अखबारोंमे करा देना चाहिये ताके sale बढ़े और विचार फैलें। आप जो किताब लिखना चाहते हैं, आप शुरु करें। ईश्वर मदद करेगा। मैं मिशन में

इतना literature चाहता हूँ के एक ज़िंदगी में कोई पढ़ न सके। मगर literature सब first class हो और Sahaj Marg पर हो। इसमें Sarnadji भी अच्छी मदद देंगे।

मैंने Sarnadji को और Kumarswamy को Central Region में भेज दिया । इसके आगे की तालीम (प्रशिक्षण) आँ अज़ीज़ (आप) के सुपूर्द (सौंपा हुआ) है। यह मैं इन दोंनो को कह दिया है और आप को भी बता चुका हूँ। इस तरह से आपकी हिम्मत higher तालीम के लिये बढेगी । इस में जब तवज्जह (प्राणाहुति) दी जाय तो region को concentrate करके read करते चलना चाहिए । और एक दो मिनिट की तवज्जह (प्राणाहुति) काफ़ी (पर्याप्त) होती है। तवज्जह (प्राणाहुति) बहुत हल्की होनी चाहिये। ताके कोई ring excited न हो जावे। मैं चाहता हूँ यहाँ की तालीम (प्रशिक्षण) के लिये बहुतसी बातें लिखूँ और उसे Part II में add कर दूँ। मगर मैं इतना काहिल (आलसी) और सुस्त हो गया हूँ के किसी काम करने की तबीयत (मन) ही नहीं चाहती। मगर जो काम के मेरे ताल्लुक (संबंधित) है उसमें बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) कोताही (आलस) नहीं होती | जब Central Region में आप काम करना शुरु करें तो मुझे आप लिखते भी चलें। आपको बताता रहूँगा।

मुझे उम्मीद (आशा) है के Bidar में meeting अच्छी रही होगी, और Sahaj Marg System पर लोगोंने गौर (ध्यान दिया) किया होगा। Shri. Gopalraoji आये थे। 4-5 दिन रह कर चले गये। अबकी जुनूबी (दक्षिण) हिंदका दौरा मौसम (ऋतु) गरमा में हो सकेगा। इसलिये के Robert Koch, Germany से और Porey, France से जाडोंके मौसम में आ रहे हैं। और क़रीब क़रीब दो दो हफ्ते रहेंगे।

Complimentary passes अब नहीं मिलेंगे। Railway minister ने सब बंद कर दिये हैं। लिहाज़ा (इसलिए) मुमकिन (संभव) है के दक्कन मेरे साथ दो ही आदमी हों। मुझे सफ़र में कमज़ोरी (दुर्बलता) की हालत की वज़ह (कारण) से बहुत तकलीफ़ (कष्ट) होती है। खासकर III Class में, इसलिये के एक position में बैठने की वजह (कारण) से थक भी जाता हूँ। और अक्सर (प्रायः) दर्द शुरु हो जाता है। ख़ैर (अस्तु), किसी तरीके से इस ज़िसम से काम लेना ही है। ख्वाह (चाहे) यह तकलीफ़ (कष्ट) से कर लें या आराम से। Sahaj Marg Philosophy अपने press से छप चुकी है। पंधरा रोज़में binding होकर बहुत सी ज़िल्दें (कापियाँ)

मिल जायेंगी। इसका index बहुत बडा हो गया। क़रीब क़रीब 24 Page हो जायेंगे। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): यह के अबकी Chetty साहब और उसकी बीवीने क़रीब 15 रोज़ (दिन) क़ियाम (वास्तव्य) किया। उन दोनोंको पूरी (पूर्ण) इज़ाज़त (अनुमति) दे दी और अलाहाबाद के जज साहब एक हफ़्ता रहे। उनको बमुश्किल तमाम (बहुत कठिनाई से) Central Region में डाल दिया।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 184
No.-C-884-SRCM Date 24.09.1969

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला । इससे पहले एक ख़त C-867 मो. 17-9-69 रवाना (भेज) कर चुका हूँ, मिल गया होगा । दरद कुछ कम हो गया है । 17 Oct नेपाल जाने का मुक़र्रर (निश्चित) है। मैं इस वक्त नेपालगंज तक ही जा सकूँगा जो नेपाल में है । Kathmandu नहीं जा सकूँगा। इसलिए के बरसातके वजह (कारण) से हवाई जहाज का रास्ता 15 Nov 69 तक बंद रहेगा। Aerodrome कुछ बना हुआ है जिसमें पानी भरा हुआ है । इधर Bahraich और दीगर मुक़ामात (और जगहों) का दौरा (यात्रा) रहेगा और मैं 24 Oct तक अब वापस आ जाऊँगा। उस वक्त आप आ सकते हैं। बडी ख़ुशी होगी ।

मैं आपकी meeting में, जहाँ सब preceptors जमा थे, एक बात लिखना भूल गया । अब आईंदा (आगे) कोई meeting हो तो ख़ियाल रखियेगा । ओ ये के मिशन को कैसे फैलाये और कौन volunteer (स्वयंसेवक) बनकर इस काम को हाथमें ले सकता है और preceptor को क्या करना चाहिये । दूसरी, organisation

इसमें जो करना है ओ सब guidance के लिये तहरीर (लिखित) में आ जावे और workers को हिदायतें (सूचनाएँ) जारी (भेजते) होते रहे । और ओ अपने काम की report, incharge को देते रहें । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 185 शाहजहाँपुर
No.-C-949-SRCM Date 04.10.1969

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला । खुशी हुई के आप 24 Oct को यहाँ आ रहे हैं । अगर तारीख और वक्त मालूम हो जाए तो मुमकिन (संभव) है के मैं उसी गाडीसे Lucknow से आप के साथ Shahjahanpur पहुँचूँ। आपने 50 किताबें Sahaj Marg Philosophy की मँगाई है । ओ मैंने railway parcel से भेज दिये है और उसमें 10 किताबें Shri. Vithalrao के लिये रख दिये हैं । इसकी pre publication price, Vithalrao भेज भी चुके हैं । मैंने railway receipt Vithalrao जी के नाम बनवाई है । इसलिये के मुमकिन (संभव) है आप parcel पहुँचने तक Raichur से कहीं और हों । Railway receipt number मुंदरिजा जैल (निम्नलिखित) है । 864573 dated 1-10-69 | रसीद आपके पतेसे भेजी जाती है। उनको दे देना ताके ओ station से लानेका इन्तज़ाम (व्यवस्था) करें ।

कल शाम श्री. आयल रेड्डी मय (साथ) 3 सतसंगी के आये और Shri. Narayenswamy मय (साथ) बीवी और लड़की के मदरास से आये हुए हैं । बच्चोंको दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 186
No.-C-969-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 14.10.1969

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला । श्रीकंठय्या का भी ख़त मिला । आप लोग 24 Oct 69 को मेरा इन्तज़ार (प्रतीक्षा) Lucknow Station पर न करें । मैं 23 Oct 69 को डाकगाडीसे जो शामको पहुँचती है Shahjahanpur आ जाऊँगा । अगर कोई मजबूरी (विवशता) हुई तो शाम को 24 Oct 69 आ जाऊँगा । यहाँ भी आप सबके आराम के लिये इन्तज़ाम (व्यवस्था) करना है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 187 शाहजहाँपुर
No.-C-1123-SRCM Date 10.12.1969

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आपके) के दो ख़त मिले। पहिले ख़तका जवाब यह है के Shri. Ramchandra Reddy ने जो कुछ दिया है उसको काम के लिए रख लीजिये, नहीं तो उनको बुरा लगेगा। मैंने उनसे बिरादराना (भाईचारेके) तरीके (ढंग) में कहा था के लड़केवाले दस दस हजार माँगते है। इतना Raghvendrarao कहाँ दे सकते हैं ? और मनशा (अभिप्राय) कहनेका यही था जो सामने आया । ईश्वर उनको रोज़ बरोज़ (दिन ब दिन) तरक्की (उन्नति) देवे । इतना रुपिया जो इस कार - ए - ख़ैर (शुभ कार्य) के लिये दिया है उससे ज़ियादा बफ़ज़लहू (ईश्वर कृपा से) इसी साल उनको मिलेगा ।

दुनियासे उठा लेनेका ख़ियाल (विचार)जो पैदा हुआ यह एक तरह की कमज़ोरी (दुर्बलता) ही है । और ये एक तरह का जनाना (स्त्रियोचित) ख़ियाल (विचार) हैं । जब औरतें (स्त्री) मरदसे (पतिसे) ज़ियादा (अधिक) ख़ुश होती हैं, तो ज़बान (मुँहसे) और दिलसे (हृदय) अक्सर (प्रायः) यही कहती हैं । उसकी कोई importance नहीं है ।

अब दुसरे ख़त में आता हूँ। एक शेर सुनाने के बाद और ओ आपको खुश करने के लिए |

जलके अपनी आग में ख़ुद, सूरते (समान) परवाना हम
बन गये हमरिश्ता (बराबर) ए खाक़ (मिट्टी) दर (दरवाज़ा) जाना
न हम ।

(अपनी ही आग मे पतिंगे की तरह जलकर,
कब हम `उस' के दरवाजे पर राख बनकर रह गये यह हमे पता
भी न चला |)

ईश्वरसे फ़ौरन (तुरंत) रिश्ता क़ायम (स्थापित) करने के लिए यही initiation एक तरीक़ा (उपाय) है। इसे बहुत वक्त लगता है। मैं क्या कहूँ के लोग इसकी importance नहीं समझते और

initiation के बाद इस तरफ़ ख़ियाल (ध्यान) भी नहीं करते। मेरी इतनी ज़िम्मेदारी आ जाती है के मैं उसको छोड नहीं सकता। जब ओ गड़बड़ (उपद्रवी) हो जाता है तो मेरी हालत मछली बिला पानी के सी हो जाती है। एक case में मुझे एक साल तड़पने के बाद दीक्षा शिकस्त (खंडित / तोड़ने) करने की इजाज़त (अनुमति) मिली थी। और गुरु महाराज की फटकार यह नफ़ा में मिली और ठीक मिली। मैं चाहता हूँ, बवज़ह (इस कारण) मज्कूरए बाला (उपरोक्त) मज़बूर (विवश) हो जाता हूँ। कम अज़कम (कम से कम) हर trainer तो initiate होना ही चाहिये। इसलिये के ताक़त ड़बल हो जाती है। आदमी बहुत जांचा (परखा) हुआ होना चाहिये और मिशनपर दिलदादा (समर्पित)। इसको आप ही तय (निश्चित) कर सकते हैं ।

Rajgopalachari इस वक्त Bagdad में घूम फिर कर पहुँच गये। उन्होंने बहुत अच्छा काम किया। कुछ European यहाँ आना चाहते हैं। मगर Mr. Andre Poray उनको मद्रास बुलाना चाहते हैं | और मैं भी वहाँ पहुँच जाऊँ ।

नकले ख़त (पत्र की प्रतिलिपी) जो शेट्टी को लिखी है ओ भेज रहा हूँ ताके दोबारा (पुनः) सब बातें लिखना न पडे। Revised list of initiation भेज रहा हूँ। उसकी copy आप initiated मेंबरो को भेज दीजिये। आगे जो होते जायेंगे, मैं नाम भेजता जाऊँगा। मैंने कहीं कहीं भेजी भी है। शायद Sedam और Gulbarga भेजी है। अपने centre के लोगोंको भेज दीजिये। बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: मदरास पहुँचने के बाद मैं लिख सकूँगा के मैं कहाँ कहाँ जा सकूँगा और वहीं programme बनेगा ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 188 शाहजहाँपुर
No.-C-403-SRCM Date 23.04.1970

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मेरा Vijaywada जाना मुलतवी (स्थगित) रहा। Shri. Jagirdar 29-4-70 को यहाँ आ रहे हैं। बरखुर्दार (बेटा) उमेश की शादी (ब्याह) बमुक़ाम मुरादाबाद तय (निश्चित) हो गई है। और तारीख शादी 23-5-70 है। लडकी अच्छी है और घर भी अच्छा है। यह जान के खुशी हुई के नुरचश्मी (बेटी) Vasanti की तारीख शादी 21-5-70 है। ईश्वर इस कार – ए - ख़ैर (शुभ कार्य) को खुश उस्लुबी (भद्रता) से अंजाम (संपन्न) दे। Mission की registration की एक मुसद्दिका (प्रमाणित) नक़ल (प्रतिलिपी) आप को कल रवाना कर दी गई है। उम्मीद (आशा) है के मिल गई होगी। आश्रम नक्शा अभी तक नहीं आया है। Gulbarga के engineer Chavan ने ग़ालिबन (संभवत:) अब तक सेठजी के पास बंबई भेज दिया होगा। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 189 शाहजहाँपुर
No.-C-17-SRCM Date 07.01.1971

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आपका) का ख़त मिल गया । मैं चाहता था के कुछ दिन आप हमारे साथ रहें । आप यहाँ अपने आनेका programme क़ायम (पूर्ववत्) रखें। मैं अगर Madras गया तो 12 या 14 Feb. को आ जाँऊगा । उसमें भी यह शर्त है (प्रतिबंध) के अगर Mr. A. Porey इन तारीखों में Madras हुए | ओ 19-

1-71 यहाँ आ रहे हैं और 24 Jan. तक रहेंगे । फिर Banaras जाकर 31 Jan या एक्कम (एक) Feb. को फिर आ जायेंगे। उस वक्त यह तय (निश्चित) होगा के मैं Madras कब जाऊँगा, और जाऊँगा भी या नहीं ? आप अपनी मुक़र्रर (निश्चित) तारीख पर आराम से चले आइये । मैं मिलूँगा । मुझे Hyderabad वाले बुला रहे हैं। मगर भाई, अब बुढ़ापे के वजह (कारण) से चलने फिरने के लिए तबीयत कुछ सुस्त हो जाती है । इसलिए कहीं ख़ियाल में हवाई जहाज के चक्कर लगाता हूँ, और कहीं 1st Class के ख़्वाब (स्वप्न) देखता हूँ । यानी सोच सोच कर कुरसी पर धरा रह जाता हूँ। हिलने की तबीयत (मन) नहीं चाहती। आप अगर वक्त (समय) से इत्तला (सूचना) दें तो मैं किसी को station भेजूँ ताके आपको आसानी हो जावे और अगर न भी कर सकें, तो मकान तो आप दोनों जानते ही हैं । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 190 शाहजहाँपुर
No.-C-94-SRCM Date 10.01.1971

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

ख़त मिल गया। मैंने जो काम आँ अज़ीज़ (आपको) को सुपुर्द किया है, उसके limitation भी आपको मालूम है के तोड़ दिया है। इसलिए आप सब से अच्छा काम कर सकते हैं। आँ अज़ीज़ (आप) ढीलेपन को छोड दें। अगर सुस्ती (आलस) आ जाती है तो चाय पी लिया करें । मैंने आप का वक्त (समय) जो आप ध्यान में लगाते थे बचाकर यह काम दिया है। आपको ध्यान में कभी कभी ज़रूर बैठ जाना चाहिए। इससे तबियत में हल्कापन पैदा हो जाता है। और सुस्ती भी कम हो जाती है। मैंने, आपको मालुम है कि एप्रिल आखिर या मई शुरू में यूरोप के मुमालिक (देशोंमे) में जाने का इरादा किया है

और जाना मुझे अमेरिका भी पड़ेगा क्योंकि कुछ सत्संगी वहाँपर पैदा हो गये हैं। डॉक्टर साहब के लड़के नारायण Rotarian की तरफ से अमेरिका गये थे और उन्होंने वहाँ अच्छा काम किया है।

एक Greek जिसने काहिरा में (कैरो) रहना शुरु किया था, मुझसे क़रीब एक साल हुए, Madras में मिला था और बहुत ही satisfied हो गया। ओ अब Australia में पहुँच गया, जहाँ ओ अब सुकूनत अख़्तीयार (निवासी पद प्राप्त) करेगा और उसने Mission का काम करने का वायदा (वादा) किया है । और यक़ीन (विश्वास) है के दिल से काम करेगा। उसको provisional permission दे दी गई है । आँ अज़ीज़ (आप) जिसको मुनासिब (उचित) समझें Mission के काम के लिए organiser बना सकते हैं । जगह-जगह meeting रखने से मिशन जल्दी (शीघ्र) फैलेगा ।

आपने लिखा है के देहातियों में सैकडों भाई है, जो सतसंग में शामिल होना चाहते हैं । मैंने instructions भी जारी (लागू) किये हैं, जो छपी हुई है, जो आप के पास होंगे, उन्हें पढ़ लेना। पढ़े लिखे लोग होना चाहिए जो काफ़ी (पर्याप्त) समझदार हो । देहातीयों को यह तरीक़ा (पद्धति) समझमें नहीं आता और ओ मेहनत (परिश्रम) ज़ियादा (अधिक) लेते हैं और अपनी आदतें, जो देहात में आम हैं, नहीं छोडते । ऐसा न हो उन्हीमे से कोई बदनामी (अपकीर्ति) का बाइस (कारण) बने । देहातीयों से हर ऐसी बात की उम्मीद की जाती है । हाँ, अगर किसी को burning desire हो, तो लेने में कोई हरज़ (हानि) नहीं ।

अब लालाजी की कृपा से Mission इस हालत पर है के आपको quality पर निगाह (दृष्टी) ज़ियादा (अधिक) रखना चाहिए ; और उसके बाद quantity। इसके यह माने नहीं के सतसंग न बढ़ाया जाए। मगर लोग अच्छे और पढ़े लिखे लिये जायें। आप को quality वाले लोग भी अब ज़ियादा (अधिक) मिलेंगे। ज़माना (समय) हम लोगों के मुआफिक (अनुरूप), अब करवट (बदल) ले रहा है। ज़ियादा (अधिक) तर हम लोगों को publicity की ज़रुरत (आवश्यकता) है के इस Mission की तालीम (प्रशिक्षण) ये और उद्देश ये हैं।

एक बात मैं लिखने से भूल गया के आप कभी कभी 10-20 मिनिट अपनी सफ़ाई कर लिया करें । इसलिए के जब आप कालिमा में

काम करते हैं, तो ओ आप को भी लग सकती है । और ये हर preceptor के लिए ज़रुरी है ।

November में मेरे पास कुछ Italians, कुछ Danish और एकाध दूसरे मुल्कों (देशों) के आ रहे हैं । मैं अपनी भतीजी की शादी में शरीक होना चाहता था जो ज़रुरी ही है । मगर अब शरीक (शामिल) नहीं हो सकता, हालाँके (यद्यपि) उनको मेरी बहुत ज़रुरत (आवश्यकता) है । सब बच्चों को और बहुको मैं भेज रहा हूँ ।

मेरे पास जो सतसंगी आते हैं, उनमें बहुत grossness पाता हूँ। ख़ता (दोष) सतसंगियोंकी भी है। मगर preceptor इस इल्ज़ाम (दोष) से बरि (मुक्त) नहीं हो सकते। मेरा ये भी ख़ियाल (विचार) है के बहुत से सतसंगी method of cleaning समझे ही नहीं और ग़लत कर रहे हैं। मैंने क़रीब क़रीब हर centre पर तरीक़ा (पद्धति) बतलाया है। आप भी कहते रहें, जहाँ ज़रुरत (आवश्यकता) हो। मैंने इस बारे में उनकी रियाज़त (अभ्यास) का ज़ियादा (अधिक) तर कोई असर (प्रभाव) नहीं देखा। अफ़सोस (दुःख) की बात ये है के इतना आसान तरीक़ा है और पढ़े लिखे भी नहीं समझते। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 191 शाहजहाँपुर
No.-C-326-SRCM Date 24.06.1971

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

बडी खुशी का मुक़ाम (अवसर) है के बरखुर्दार (बेटा) उमेश को 20 June को लडका पैदा हुआ है। जच्चा (माँ) व बच्चा बख़ैरियत (सकुशल) हैं। यहाँ सब ख़ैरियत (कुशल) है। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)

रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 192 शाहजहाँपुर
No.-C-353-SRCM Date 02.07.1971

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। आज जागिरदार का ख़त Madras से आया। ओ अब चन्नपटना वापस चले गये होंगे। वहाँ जच्चा बच्चा बख़ैरियत (सकुशल) हैं। बच्चे को कुछ नज़र लग जाना, उन्होंने लिखा है। ओ अब ठीक हो गया होगा। नूरचश्मी (बेटी) Vasanti का हाल सुनकर परेशानी (व्याकुलता) पैदा हुई। मैं जो कुछ कर सकता हूँ दुआ (प्रार्थना) वगैरा ओ मैंने शुरु कर दिया है। ईश्वर उसे जल्द सेहत (स्वास्थ्य लाभ) दे। और उसका हाल (स्थिति) दूसरे ख़त (पत्र) में लिख देना।

लालाजी साहब का शुक्रिया (धन्यवाद)। यह सब उन्हीका काम है के सब को अच्छा फ़ायदा होता है। और भाई, merit मुझे मिलती है। हक़ीक़त (सत्य) तो ये है के मेरी निगाह (दृष्टी) ही नहीं रही। सब उन्हीकी निगाह (दृष्टी) है। ओ तो मैंने उनके हवाले (सौंप) कर दी। तीर कमान से छूटता है और तारीफ़ (प्रशंसा) तीर चलानेवाले की होती है।

यह सुनकर सबको खुशी होगी के पंडित प्रेमसागर साकिन (निवासी) Lakhimpur Kheri ने जो thesis, Sahaj Marg पर दाखल (प्रस्तुत) की थी ओ मंजूर (स्वीकार) हो गई और उनको Doctorate की degree मिल गई। अब Sahaj Marg, Philosophy establish हो गई। अपनी जमात (लोगों) में भी इसकी ख़बर (सूचित) कर देना। उन लोगों को खुशी होगी।

आपने जो sensuous (इन्द्रियासक्ति) के बारे में लिखा है यह एक राज़ (रहस्य) हक़ीक़त (परम सत्ता का) है जिसको मैंने खोला नहीं। बस hint दे रहा हूँ। फिर भी कुछ बेहेतर (अच्छी) सूरत (स्थिति) इसकी पैदा करने की कोशिश करुँगा ताके आपको खटके नहीं (बुरा न लगे)।

कुछ हमारी बद परहेज़ी (वर्जित आहार खाने) से किसी वक्त कुछ पेट का दरद बढ़ जाता है और pressure of work तो रहता ही है। लोग आते हैं इतना खर्च करके, फिर मुझे कैसा रहा जा सकता है के मैं work न करुँ ? हाँ इतनी बात ज़रुर है के लोग मुझको आराम देना बिलकुल नहीं चाहते । हालाँके secretary ने पत्रिका में निकाल दिया है के हर महिने की 11 तारीख से 20 तक हमारे लिए, आराम के लिए, खाली रहेगी। भाई, एक बात अब मेरे कहने की तबीयत ज़रुर चाहती है के कुछ लोग अपनी selfishness को मुहब्बत में ज़ाहीर करते (बताते) हैं । और यह शिकायत मुझे North Indian से ज़ियादा (अधिक) है ।

बरखुरदार (बेटा) सर्वेश B.Sc में फेल हो गया है । उसका बड़ा अफ़सोस (दुःख) है । ईश्वर उसे आइंदा (अगली बार) कामयाब (सफलता प्रदान) करे । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 193 शाहजहाँपुर
No.C-63-SRCM Date 28.10.1971

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मुहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला । Solapur के कुछ लोग मुझे Bijapur में, जब मैं वहाँ था, मिले थे । ओ अच्छे लोग हैं । वहाँ सतसंग फैलाना आपका होगा । आपने Yadgir में जो मीटिंग की थी ओ वाक़ई बडी कामयाब (सफल) रही । जब आप मीटिंग करते हैं तो public को ही आप बुला लेते होंगे ताके आपके विचार फैले और लोग Mission को जाने ।

मुझे दो-तीन घंटेसे ज़ियादा (अधिक) एक साथ में काम नहीं कर मिलता है । और ख़त और क़िताबत foreign की भी, बहुत बढ़ गई है। शुरू नवंबर से यरोपियन्स की आमद (आना) शुरू है। और उन्होंने पहिले से ही तारीखें मुक़र्रर (निश्चित) कर दी हैं । मेरे चचेरे भाई की लडकी की शादी की

तारीख 21- Nov-71 है, जो मैनपुरी में है। और मैं घरमें अब सबसे बडा हूँ इसलिए वहाँ जाना लाज़िमी (अनिवार्य) था। मगर मगरीबी (पश्चिम के) लोगों के आने की तारीखों की वजह (कारण) से मैं उसमें नहीं जा सकूँगा । बच्चे ज़रुर (अवश्य) जायेंगे ।

Dr. Varadachari के लडके नारायण, America से वापीस हुए हैं । उन्होंने वहाँ अच्छा काम कर लिया है । कुछ members भी वहाँपर बढ़े है । Rajgopalachari, Jaundice हो जाने के वजह (कारण) से नहीं जा सके। उनके लडके Parthasarathy कंपनीके कामसे गये थे। उन्होंने बहुत अच्छा काम किया है। Australia में centre क़रीब क़रीब खुल ही गया। एक Greek वहाँ settle होने जा रहे हैं, जो अपने Mission का अभ्यासी बाइजाज़त (प्राप्ताधिकार) है। मैं भी एक passport के लिए apply कर रहा हूँ।

आँ अज़ीज़ (आप) का काम जो West का सुपुर्द (सौपा) किया था बहुत ही ढीला (सुस्त) चल रहा है । मैंने कस्तूरीको भी यही काम दिया। उसने अच्छा काम किया है । आपको भी चाहिए के काम अच्छी तरह से करें । आपको मैंने कुल (पूरे) World का दिया है । उसको सिर्फ पच्छिम का दिया है । बच्चों को दुआ ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 194 शाहजहाँपुर
No.-C-114-SRCM Date 16.11.1971

मेरे राघवेंद्रराव़जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मसर्रतनामा (हर्षपूर्ण पत्र) मिला। राजाराम के पास आपके पार्सल करदा (किया हुआ) हार पहुँच गया। तारीख शादी 21 Nov 71 है। बरखुरदार (बेटे) सर्वेश व प्रकाश बुखार में मुब्तला (ग्रस्त) थे। आज बुखार उतर गया है। मैं बरखुरदार (बेटा) प्रकाश को मय (साथ) उनकी बीवी और बच्चों के शिरकत (शामील) शादी के लिए 18 Nov. को मैनपुरी भेज रहा हूँ। मेरा जाना नहीं हो सकता हालाँ के

(यद्यपि) मेरा जाना निहायत (बहुत) ज़रुरी (आवश्यक) था, इसलिए के सिवाय मेरे उनका कोई बुज़ूर्ग (बड़ा) नहीं है और उन्होंने मुझे दो हफ्ते पहले बुलाया था। वजह (कारण) यह है के 17 Nov. की सुबह, 4 Danish जिनमें एक लडकी भी है, यहाँ आ रहे हैं और 3 हफ्ते यहाँ रहने के लिए लिखा है । मिशन का काम सबसे ज़रुरी (आवश्यक) है। लिहाज़ा (इसलिए) निजी (अपने) काम पर Mission के काम को तरज़ी (वरीयता) दी गई। Rs. 1000/- का draft मौसूल (प्राप्त) हो गया है, जिसकी रसीद हमरिश्ता (साथ) इरसाल (भेजी) है। Dr. Varadachari की लडकी गायत्री की शादी 21 Nov. को है। ईश्वर हंसी खुशी से अंजाम (संपन्न करे) दे। यह तो आप को मालूम ही है के मैं April आखिर या May 72 शुरु में, मगरबी (पश्चिमी) मुमालिक (देशों) को जा रहा हूँ। Passport के लिए apply कर रहा हूँ। Application में बहुतसी बातें ऐसी है जिनकी ख़ानापूरी (जानकारी भरने) में कुछ देर है ।

इस वक्त अमेरीका में 3 Hindustani अभ्यासी हैं । ओ मुझे America आने के लिए बहुत ज़ोर दे रहे हैं । इरादा (विचार) कर लिया हूँ । ईश्वर मेरी तंदुरुस्ती (स्वास्थ्य) ठीक रखे । Dr. Varadachari के लडके Narayan, Rotary club की तरफ से America गये और काम अच्छा किया । क़रीब 6 सतसंगी भी बने हैं । उनमें से एक औरत जो किसी University की Vice - Chancellor है । ओ बिलकुल Mission की तरफ रुजू (प्रवृत्त / झुकाव) हो गई और ओ काम अच्छा कर रही हैं । यहाँ भी आना चाहती हैं । मैंने एक Hindustani अभ्यासी को जो Meerut का बाशिंदा (निवासी) है वहाँ काम करने की इजाज़त (अनुमति) भी दे दी है | दूसरे अभ्यासी जो South Indian है, उसको भी provisional permission (सशर्त अनुमति) जल्द ही दे दूँगा । मेरा ख़ियाल (विचार) है के America में अब काम चलेगा । Australia में भी centre खुल ही गया । आदमी तैयार कर दिया गया है जो Australia में रहेगा। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 195 शाहजहाँपुर
No.-C-243-SRCM Date 21.12.1971

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मैंने passport के लिये दरख़्वास्त (अर्जी) दे दी है। जल्द (शीघ्र) ही आनेवाला है। America में visa नहीं है बल्के permission मिल जाती है । उसमें वहाँ के सतसंगियोंको apply करना पडेगा के ओ ख़ुद बुला रहे हैं । और local खर्चा बरदाश्त (वहन) करेंगे । London में क़रीब क़रीब (लगभग) यही दिक्क़त (अड़चनें) है । काम तो ख़ैर (अस्तु), हो ही जायेगा ये मुझे यक़ीन (विश्वास) है । Burning desire वाले अभ्यासी कम मिलेंगे ।

इतना तो सब preceptor देख ही लेते होंगे के अभ्यासी ईश्वरको जानना चाहता है और ये काफ़ी (पर्याप्त) है । उनको जब मज़ा आ जाता है तो फिर छोडनेके लिये तयार नहीं होते, यह ईश्वर की कृपा है । जहाँ तक हो सके समझकर आदमी लेना चाहिये । तालीम याफ्ता (सुशिक्षित) को हमेशा तरजीह (प्राधान्य) रहेगी बशर्ते (इस शर्तपर) के ओ ईश्वर को जानना चाहता हो । मौजूदा (विद्यमान) उमर (आयु) में ज्यादा (अधिक) sensitive हो गया हूँ । इसलिये हर छोटी छोटीसी बात जो etiquette (शिष्टता) के ख़िलाफ (विरुद्ध) है मुझे खलती (बुरी लगती) है ।

मिशन में पैर छूने वालोंकी तो कमी नहीं है, मगर अख़्लाक (शिष्टता) की कमी ज़रुर (अवश्य) है। और सबसे बडी कमी जो है ज़ियादा (अधिक) तर पाता हूँ, ओ ये है के Mission को अपना नहीं समझते और न इस हक़ीर (अदना / नगण्य) के घर को अपना घर समझते हैं। बडी आसान बात मैं बताता हूँ अगर लोग इस पर अमल (ऐसा व्यवहार) करें तो बहुत कुछ सही हो जाए । अगर आदमी ये देखें के हमारे फ़ेल (कार्य) से किसी को तकलीफ़ (कष्ट) तो नहीं होती और उसके जवाब पर अमल करें (कार्यान्वित हो) तो सब बातें दुरुस्त (ठीक) हो जावे । आप ये अच्छा कर रहे है के जगह जगह meetings कर रहे हैं । इसमें Mission जल्दी फैलेगा । आप काम अच्छा कर रहे हैं और उसका असर (प्रभाव) हो रहा है । मैंने आपका limitation, आपको मालूम है, के तोड़ दिया है। अलावा

(अतिरिक्त) इसके आपमें निहायत (बहुत) ज़ियादा (अधिक) ताक़त (शक्ति) है, इसका मैं यक़ीन (विश्वास) दिलाता हूँ। फिर ये कमज़ोर (दुर्बल) ख़ियाल (विचार) आपको क्यों कर आया जो आपने लिखा है, " ग़ालिबन मेरे करने और होनी के होने में जो ताल्लुक (सबंध) है, ओ नहीं के बराबर है। " इस ख़ियाल को फ़ौरन (तुरंत) दूर कर दीजिये ।

इस साल बसंत पंचमी उत्सव 20 से 22 जनवरी 72 की सुबह तक रहेगा । आप अपने मातहत (अधीन) centre और जहाँ जहाँ और भाई हो उनको इसकी इत्तलाह (सूचित) कर दीजिये ताके शरीक (शामील) हों। मुझे खुशी है के आप शरीक़ (शामील) होंगे और आप की इस वक्त organisation committee में सख़्त (अत्यंत) ज़रुरत (आवश्यकता) है, क्यों के ये पहली meeting है, जिसमें आप लोग आइंदा के लिए कामका programme तय (निश्चित) कर लेंगे। मुझे Shri. Vithalraoji की याद अक्सर (प्रायः) आ जाती है, क्या ओ भी आयेंगे? बडी खुशी होगी के ओ भी आयें अगर उनका काम उन्हे इजाज़त (अनुमति) दे।

एक American, एक अंग्रेज और एक Denmark की lady इस वक्त मेरे यहाँ ठहरे हुए हैं। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 196 शाहजहाँपुर
No.-C-585-SRCM Date 11.04.1972

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आप का एक ख़त आया था । पता नहीं के इसमें क्या लिखा था । ख़ैर (अस्तु), जो कुछ भी था ओ ठीक ही था । इसमें कुछ मीटींग के बारे में भी लिखा था । Meeting का होना वाक़ई (सचमुच) लाज़िमी (ज़रुरी) है और publicity भी जितनी हो सके । सोने की क़दर (प्रतिष्ठा / आदर) उस वक्त होती है जब ओ ख़ान

से बाहर आता है । लाल क़ीमत को पहुँचता था बदख़्शाँ (अफगानिस्तान का एक शहर) होकर ।

हमारे यहाँ foreign countries के लोग ज़ियादा (अधिक) नहीं, चार छह, 10 नवम्बर 71 से बने ही रहे और आख़री आदमी कल गया। यहाँ तो सब satisfied हो कर जाते हैं और अक्सर (प्रायः) मोहब्बत (प्रेम) में रो आये भी । अब देखिये वहाँ क्या हो, मगर गुरु महाराज की रहमत (कृपा) जब मौजज़न (प्रवाहित) है तो वहाँ भी अच्छा ही रहेगा। London में एक दो आदमीयोंने सवालात (प्रश्न) भी ख़त में लिखकर भेजे हैं। और मुझे खुश ख़बरी दी है के कुछ सवालात वहाँ के लिये भी reserve कर रखे हैं । यहाँ जितने सवालात हुए उनका जवाब दिया गया। जवाब वह scientific चाहते है । सायन्स मैं पढ़ा नहीं, दूसरी दिक्कत (अड़चन) ये हुई के philosophy को मैंने surrender नहीं किया। Surrender अगर मैंने किया है तो उसी को किया है जहाँ के बाद science का आग़ाज़ (शुरुआत) होता है । ख़ुदा (ईश्वर) जाने ये कैसी science की इजादें (अविष्कार) हैं के अगर इनमें उँगली भी दब जाए तो हाथ न सही उतनी उँगली ज़रुर ख़तम (नष्ट) हो जायेगी । और लोग मुझे मजबूर (विवश) करतें है के इनके सवालात के जवाब science से दिये जाए । हमारे thought को एकाध जगह contradict भी किया है । मगर जो अब गुरु महाराज की कृपासे अच्छा ही दिया गया है । और ओ satisfied हुए बगैर रह ही नहीं सकता । एक बात मैंने और पायी के लोग अपने मामूली (सामान्य) ख़ुतूत (पत्रों) पर भी personal या confidential लिख देते है । इसलिये मैंने ओ खुतूत out नहीं किये। लेकिन मेरा जवाब confidential नहीं, सबके मतलब का है । उसको (पत्र को) नाम उडाकर पत्रिकामें दाखल (छापने में) कराने के लिये किसी हॅट वाले से पूछना पडेगा ?

अब मतलब (मुख्य आशय) पर आता हूँ । आपको मैंने कुछ duty सुपूर्द (सौंप दी) की है । Programme tour का, आपके पास पहुँच ही चुका होगा । मैं चाहता हूँ के जितना busy मैं वहाँ रहूँ इससे कम busy आप न रहें। आपके confidence के लिये मैं फिर लिखता हूँ के मैंने ओ limitation जो ज़रुरी था, तोड़ दिया है । और आपने अबतक जो काम किया है उसका असर (प्रभाव) भी है ये मैं देखता हूँ। और आगे और अच्छे असर (प्रभाव) होने की उम्मीद (आशा) है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये है के मैंने इरादा यह किया है के मैं पच्छिम के वापसी के वक्त सीधा Madras आऊँ और मैं ज़रुरी centres ले लूँ । जिसमें आप भी शामील हैं ।

Sd/- Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 197 शाहजहाँपुर
No.-C-789-SRCM Date 29.08.1972

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

गुंडेराव की बीवी का स्वर्गवास हो जाने की ख़बर सुनकर बहुत अफ़सोस (दुःख) हुआ। मैंने उनको condolence का ख़त भी लिख दिया है। ईश्वर की मर्ज़ीमें कोई चारा (उपाय) नहीं है। Dr. Shyam Rao को अपनी duty ठीक अदा करनी (देनी) चाहिये और ओ करते भी होंगे। मगर MLA का बिला (बिना) वजह (कारण) ख़िलाफ (विरुद्ध) हो जाना कुछ अच्छा नहीं लगा । खासकर उन्हें ऐसा remark के Shahjahanpur क्यूँ गये थे और group meditation क्यों करते हैं, यह बात और भी खराब (बुरी) थी। मगर खैर (अस्तु) जो दुनियाका मुनसिफ (न्यायाधीश) है, ओ उसका ख़ुद (स्वतः) इन्तज़ाम (व्यवस्था) करेगा । हम लोगोंको doctor साहब की भलाई के लिये दुआ (प्रार्थना) करनी चाहिये । इन्सान (मनुष्य) अपने नशेमें इतना चूर (मग्न) रहता है के उसको यह तक पता नहीं चल पाता के ओ अपने लिये क्या कर रहा है । दफ्तर (कार्यालय) की डाँट दफ्तर (कार्यालय) तक रहना चाहिये । मतलब (अर्थ) यही है के दफ्तर में काम ठीक होता रहे।

वसंती का बच्चा होना और उसका मर जाना बहुत अफ़सोस (दुःख) की बात है ।

Madras में centenary के लिये 25-2-73 मुक़र्रर (निश्चित) है । आप सब लोगोंको वहाँ पहुँचना चाहिये । 7-2-73 को

यहाँ बसंत है। जो दो जगह आनेका खर्चा बरदाश्त (उठा) नहीं कर सकते उनको Madras ज़रूर पहुँचना चाहिये । Welcome यहाँ भी है और सतसंग यहाँ जिस तरह तीन दिन होता है उस तरह वहाँ भी होगा । उसको कामयाब (सफल) बनाने के लिये हमें हर तौर (प्रकार से) पर मदद करना चाहिये ।

दरद अब भी मुझे तकलीफ़ (कष्ट) दे रहा है। State organisers सिर्फ नाम लिये हुए बैठे है। कोई suggestion एक दूसरेका नहीं है के उन्हें क्या करना चाहिये और कुछ करना शुरू भी नहीं किया। Organisation की तरफ ध्यान दीजिए। काम मैंने जो सुपुर्द (सौंपा) किया है ओ आप कर रहे हैं, कमज़ोर (ढीला) काम ज़रूर है । इसलिये आप खुद सोचिये के आपमें क्या कमी है ? अपनी सफाई का अमल (अभ्यास) फिर शुरू कर दीजिये । इसको कभी कभी मैं भी कर लेता हूँ । आप काम किये जाइए दिलचस्पी (रूचि) के साथ और ये ज़रूरी (आवश्यक) और लाज़िमी (अनिवार्य) है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 198 शाहजहाँपुर
No.-C-762-SRCM Date 03.05.1973
Registered

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।
मोहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला और ये खुशखबरी के दोनो लडकीयोंकी शादी एकसाथ तय (निश्चित) हो गई । इसने मुझे बहुत खुशी बख्शी (दी) और साथ उपनयन भी है । मैं निहायत (बहुत) क़लील (छोटी) रकम Rs 200/- रूपयेकी भेज रहा हूँ । जिसको लडकीयोंकी हक़में जिस तरह आप मुनासिब (उचित) समझें खर्च करें । और ग्यारह रूपये उपनयन के लिये हैं । ईश्वर इन शादीयोंको खुश उस्लुबीसे (भद्रता) अंजाम (संपन्न करे) दे और लडके और

लडकीयाँ खुश व खुर्रम (प्रसन्न) रहे । मुमकिन (संभव) था के मैं इन शादियोंमे शरीक (शामील) होने की कोशिश करता मगर चुँके (क्योंकि) विदेशी मेहमान (अतिथी) ठहरे हुए हैं, जो अभी रहेंगे । और दूसरे यह के 19 April से मैंने आश्रम की तामीर (निर्माण) का काम ईश्वर का नाम लेकर शुरु किया है जिसमें बहुत सी तरह तरह की मुश्किलात (कठिनाई) सामने आती हैं । जो बफ़जलहू (ईश्वर कृपा से) सब ठीक हो जायेंगी ।

एक bank draft तेदादी (संख्या) Rs. 211 इस ख़तके साथ भेज रहा हूँ । जिसका No-S-606160 मो. 2-5-73 है। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 199 शाहजहाँपुर
No.-C-1109-SRCM Date 08.08.1973

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बत नामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला। आपने सतसंग का जो भी काम किया है, ठीक है। मेरा इरादा (विचार) Calcutta 7-9-73 को पहुंचनेका था। अब चूंके (क्योंकि) आप आ रहे हैं लिहाज़ा (इसलिए) मैंने अब 14 या 15 Sept. रखी है और Calcutta वालोंको भी मैंने लिख दिया है। लिहाज़ा (अतः) आप सब, ब-आसानी (आसानीसे) आ सकते हैं, और मेरे पास ठहर सकते हैं । यहाँ भी आश्रम लंगडा लंगडा चल रहा है, तखमीनन (अनुमानित खर्च) इसका अब बढ़कर 3 लाख से कुछ ऊंचा जायेगा। मुझे यह पता नहीं था के उसमें इतने पैसे लगेंगे। सामान सब गिराँ (मँहगा) हो रहा है। Cement मुझे factory से सीधा मिल गया है। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्चः अपने आने की तारीख की इत्तला (सूचना) दीजियेगा |

Sd/Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 200 शाहजहाँपुर
No.-C-1185-SRCM Date 21.08.1973

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

मोहब्बतनामा (प्रेमपूर्ण पत्र) मिला । ख़ुशी हुई के आप लोग आ रहे हैं । आप चाहते हैं के Bangalore में आश्रम बन जाए । Executive committee का resolution है के जब तक Shahjahanpur का आश्रम न बन जाएँ तब तक कोई नया आश्रम नहीं बनेगा । इसकी पाबंदी (वचनबद्धता) हम सबको लाज़िमी (अनिवार्य) है । आप रुपये फ़राहम (इकठ्ठा) कर सकते हैं क्यों की जिसमें भी बहुत देर लगेगी । मुझे इसमें 10 बरस लगे थे । फिर भी पैसे की ज़रुरत (आवश्यकता) है | अगर ख़ुदा दो होते, तो कोई realizaiton नहीं कर सकता था। इसी तरह से दो आश्रम, इसमें अभी पैसे की ज़रुरत है, बनना शुरु हुए तो ख़ियाल divert हो जायेगा। जिसका नतीजा (परिणाम) ये होगा के दोनों अधूरे रह जायेंगे। बच्चों को दुआ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 201 शाहजहाँपुर
No.-C-45-SRCM Date 09.01.1974

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

इस साल बसंत पंचमी उत्सव 27 से 29 जाने. 74 तक रहेगा। आप सब लोग शरीक (शामील) हों और अपने zone में सबको इत्तलाह (सूचना) दे दीजिएगा के ओ उत्सव में शिरकत (शामील हों) करें। मैंने Sarnadji को भी लिख दिया है। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 202 शाहजहाँपुर
No.-C-513-SRCM Date 01.03.1976

मेरे राघवेंद्रावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

Bidar से गुंडेराव पटवारी/शिवाडे का एक तार आया है। जिसकी नक़ल मैं आँ अज़ीज़ (आप) के पास भेज रहा हूँ और जिसका जवाब मैंने श्री. राम शास्त्री को लिखा है और उसकी (जवाब की) नक़ल भी भेज रहा हूँ । तार से बहुत पहले श्री गुंडेराव पटवारी / शिवाडे का ख़त मिल आया था। जिसमें उन्होंने दमा की शिकायत बतलाई थी । कुछ और इससे मिलती जुलती तकलीफ़ (कष्ट) यही उनकी problem है । हमें अफ़सोस (दुःख) ये है के लोग हमारे और आपके पास ब्रह्म विद्या सीखने आते है और मज़बूर (विवश) करनेकी कोशिश (प्रयत्न) करते हैं के उनके मरज़ (बीमारी) और दुनियादारी के काम ठीक हो जावें । हमारी सब की क्या असल है ? जब के अवतार भी तकलीफ़ (कष्टों) से खाली न रहे। उनको ये चाहिए के कहीं ऐसे जगह जायें जहाँ तकलीफ़ (कष्ट) से उनको नजात

(मुक्ति, छुटकारा) मिल जाए और तंदुरुस्त (स्वास्थ लाभ) हो जावे। यह तजरुबे (अनुभव) आपको, हमको और सबको हो रहे हैं ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 203 शाहजहाँपुर
No.-C-1008-SRCM Date 17.08.1976

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आपका ख़त आया। और Vithalrao का भी ख़त आया | तुम दोनों को एक ही मज़मून (विषय) लिख रहा हूँ। अब आप लोग परेशान (व्यथित) न हों। मैंने exemption के लिये दरख़्वास्त Lucknow भेज दी है। उम्मीद (आशा) क़वी (काफ़ी) है के ये काम हो जायेगा। आप लोगोंको अब इसमें कोई कार्रवाई करनेकी ज़रुरत (आवश्यकता) नहीं। अगर कोई बात हुई और आप लोगों की मदद की ज़रुरत पडी तो फ़ौरन (तुरंत) इत्तलाह (सूचित) कर दूँगा। यहाँ statement भी दाखल होता है, ओ Mission से ही दाखल (प्रस्तुत) हो जायेगा । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

मुकर्रर (पुनश्च): ये के मैं ordinance की एक कॉपी Lucknow से मँगवाकर, बाद को भेज दूँगा। Madras से Parthasarathy का ख़त dt. 13.8.76 आया है । जिसकी कॉपी आपको भेजी है । उसको गौर (ध्यान) से पढ़कर अपनी राय (मत) Madras और यहाँ भेज दें ।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 204 शाहजहाँपुर
Date 23.03.1977

मेरे राघवेंद्रराव जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

France के सतसंगी एक meeting माह मई के दूसरे या तीसरे हफ्तेमें करना चाहते हैं। जिसमें European countries के preceptors शामिल हो जाना चाहते हैं। इसमें Kasturi Chaturvedi को भी India से बुलाया गया है। दो आदमियोंका कुल खर्चा मय (साथ) टिकट वगैरा वहाँ के सतसंगी लोग बरदाश्त (वहन) करेंगे।

मैं 28 March को by car, Delhi जाऊँगा और Delhi से Madras 30 March की शाम को पहुँच जाऊँगा और वहाँ से 6 April को मलेशिया और दो एक जगह से लिये रवाना हो जाऊँगा। 23rd April 77, Madras वापस आ जाऊँगा। इसके बाद लोगों ने मुझको 30 April को Madurai जाने को मज़बूर (विवश) किया है। वहाँसे दूसरी या तीसरी मई को Shahjahanpur के लिये रवाना हो जाऊँगा।

कस्तुरी के साथ एक शख़्स (व्यक्ति) ज़रुर होना चाहिये, जो English से उर्दूमें तरजुमा (अनुवाद) कर सकें। और कस्तूरी उसका हिंदी में जवाब दे सकें। क्या आँ अज़ीज़ (आप) को छुट्टी मिल सकेगी। वहाँ सिर्फ एक हफ़्ता (सप्ताह) लगेगा। और आमद व रफ़्त (आना-जाना) 14 घंटे। Parthasarthy मेरे साथ जा रहे हैं, लिहाज़ा (इसलिए) ओ नहीं जा सकते। मैं चाहता हूँ के कस्तूरी के साथ एक अच्छी calibre का आदमी भेजें, ताके उनसे भी ओ लोग अच्छा impression लें। इसलिये आप ज़ियादा (अधिक) मौज़ूँ (सुयोग्य) है। इसका जवाब (उत्तर) आप जल्दी (शीघ्र) मुझे Madras के पते पर भेज दें। बच्चों को दुआ (आशिर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 205 शाहजहाँपुर
No.-528-SRCM Date 17.12.1977

मेरे राघवेंद्रराव़जी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

आँ अज़ीज़ (आप) का ख़त (पत्र) मिला । उसे पढ़कर तसल्ली (संतोष) हुई । काम तो सबको मिलकर बाँटकर करना ही है और होगा। मगर मेरे यहाँ जो चोटी (शीर्ष) के अभ्यासी हैं, उनमेंसे मैंने 5 आदमी निकाल लिए है। उनके नाम हसब जैल (निम्नलिखित) हैं।

1) Shri. Raghavendra Rao - Gulbarga
2) Shri. P. Rajgopalachari - Madras
3) Shri. S. A. Sarnad- Gulbarga
4) Shri. Devaram H. Chavda - Navsari
5) Dr. S. P. Srivastava - Lakhimpur

Power उनके पास काम करने की मौजूद (विद्यमान) है और ज़रुरत (आवश्यकता) पर मिलती भी रहेगी । बस ये ख़ियाल (विचार) उनके दिलमें रहे के हमें ये काम करना है । तो ख़ियाल (विचार) से भी उनके काममें मदद मिलेगी। काम का enthusiasm (उत्साह) बढ़ता है, guidance (मार्गदर्शन) भी सबको मिलती रहेगी । और एक दिल होकर काम करने की ज़रुरत है । पत्रिका में Working Committee के members के जो नाम आप देने की ज़रुरत (आवश्यकता) समझते हैं, ओ राय (मत) अच्छी मालूम होती है । मैंने भाई Parthasarathy Madras के President's Council के बारेमे एक मसौदा (प्रारूप) तयार करने के लिये लिखा है ।

आप और Sarnadji दोनों मिलकर एक मसौदा (प्रारूप) तयार करें ताके Basant Utsav में उसके बारेंमे बहस (चर्चा) हो सके ।

Dr. Suraj Prasad ने council के बारेमें outlines लिखकर भेजे हैं, उसकी एक नक़ल (प्रतिलिपी) भेज रहा हूँ ।

हमें खुशी है के Chetty साहब हम सबको अपना समझते हैं । बा मोहब्बत तो ओ है, उसमें कोई शक (संदेह) नहीं ।

इस साल Basant Panchami का उत्सव 11-2-78 सुबह 6.1/2 बजे से 13-2-78 सुबह 7.1/2 बजे तक होगा। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद)।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

The President's Council, nominated by Shri. Babuji, is expected to serve as a compact body,

enshrining the whole spirit of Sahaj Marg. Its main function is to lighten the President's burden of cares and responsibilities on both the organisational and spiritual scores. This is possible only when the members of this body, like Revered Shri. Babuji himself, become totally oblivious of privilige functions and serve as living flames, embodying and reflecting the spirit of service and sacrifice through the grace of the Master. This can come by way of natural surrender (Sahaj Samarpan) perfectly exemplified in Shri. Babuji's routine of living and functioning.

The members, like various limbs of a body, may be distinguished but never seperated from one another. They are automatically harmonized, so as to be characterised as 'one in all' and ' all in one'. The limbs are of the body, while body is for the soul and the soul is in the Master supreme. Reversely, the body is nothing but the limbs in union; the soul is not a part of, nor apart from the body and the Master supreme is reflected in but not exhausted by the individual soul which devoid of its individual-soul-hood, is in-distinguishable from the Master supreme. This, in a nutshell outlines the status and constitution of the President's Council.

Sd/-S.P.

Srivastava

****

ॐ तत् सत

Serial No. 206 शाहजहाँपुर

Date 16.11.1978

मेरे राघवेंद्रावजी

तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

तुम्हारे दोनों ख़ुतूत (पत्र) मिल गये । ये जान कर बडी ख़ुशी हुई के तुम बहुत अच्छा काम कर रहे हो । और अच्छाही करोगे । मुझे भी आँ अज़ीज़का (आप) ख़ियाल बना ही रहता है । लोग वहाँ के बहुत अच्छे हैं। और उनमें मोहब्बत (प्रेम) करनेवाले भी है ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

पुनश्च: Give my love to all the abhyasis and blessings to all of you.

Sd/Ramchandra

****

ॐ तत् सत

Serial No. 207 शाहजहाँपुर
No.-1168-SRCM Date 11.04.1979

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो)।

भाई जागीरदारका 7 April को लिखा हुआ ख़त (पत्र) मिला। इन्सान (मनुष्य) को तरह तरह की मुसीबतें (कष्ट) झेलनी पडती हैं । यह भी एक तजरुबा (अनुभव) है जो आगे दुनियाके काम में मदद देता है।

Ulcer का मैं भी मरीज़ (रोगी) हूँ । आपका operation कामयाबी (सफलता) के साथ हुआ होगा । ईश्वर जल्द (शीघ्र) शफ़ा (स्वास्थ्य लाभ) बख़्शे (दे) । जल्द (शीघ्र) आराम होने के लिये मैं भी दुआ (प्रार्थना) करुँगा । परेशानी (चिंता) की कोई बात नहीं है । ईश्वर मालिक है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

ॐ तत् सत

Serial No. 208
No.3230-SRCM

शाहजहाँपुर
Date 07.07.1980

बिरादरे अज़ीज़म (प्रिय भाई)
दुआ (आशीर्वाद)।

यहाँ सब ख़ैरियतसे (सकुशल) है । उम्मीद (आशा) है के आप सब लोग भी बहुत अच्छी तरह होंगे । मुझे आपकी और Sarnadji की एक हफ्तेसे बहुत याद आ रही है । बडा अच्छा हुआ के आप यहाँ आ रहे हैं। जिससे हम बहुत खुश हैं । अगर Sarnadji को फ़ुरसत (अवकाश / समय) हो तो ओ भी चले आवें ।

कुछ बातें ज़रुरी (आवश्यक) मिशनके मुताल्लीक (बारेमें) होंगी, करना है । बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

P.S. Germany में मेरी जाँच हुई। सब चीज़ें normal निकली। कभी कभी पेट में दरद होता है । अब हम बिला (बिना) दवा के अच्छे हो रहे हैं । वहाँ के डॉक्टरोंकी राय (मत) ये है के दवा खाना छोड दिया जाए और गिज़ा (खाना) बढ़ाया जाए।

****

ॐ तत् सत

Serial No. 209 शाहजहाँपुर
No. 4061-SRCM Date 13.09.1980

मेरे राघवेंद्ररावजी
तूले उमरहू (दीर्घायु हो) ।

ख़त (पत्र) मिला । हालात (समाचार) से आगाही (जानकारी) हुई। अच्छा है जिस चीज़ को हम लोगोंने शुरुआत की है, ओ बढ़ती ही रहे। अगर हम तनदेही (तन्मयता) से लग जावें तो पत्थर भी मोम बन सकता है ।

इजाज़त (अनुमति) का सबसे सहल (आसान) तरीक़ा (पद्धति) ये है के उस तरफ भी ख़ियाल रखे । सबसे पहले discipline क़ायम (स्थापित) रखने के लिए और उससे फ़ायदा उठाने के लिये तैयार रहें। और discipline जो होना चाहिए ओ क़ायम रहे । इसका लिहाज़ (ध्यान रखते हुए) करते हुए उसके बारे में भाई Parthasarthy से दरयाफ़्त (मालूमात) कर लें । आप और ओ मिलकर scheme chalk out कर लें और उस पर अमल (कार्यान्वित हो) करें ।

ये ख़ियाल (विचार) अच्छा है के कुछ meetings होती रहें । इससे फ़ायदा (लाभ) ज़ियादा (अधिक) पहुँचेगा । इसका ख़ियाल रखते हुए मैं आपको Tinsukia जाने की इजाज़त देता हूँ । आप अपना programme भेज दीजिये। बच्चों को दुआ (आशीर्वाद) ।

दुआगो (शुभचिन्तक)
रामचंद्र

****

श्री राघवेंद्र राव जी की अध्यात्मिक यात्रा
(पू. श्री. बाबूजी महाराज के पत्रों से)

03.03.1955 प्रथम पत्र – पू. बाबूजी महाराज का अध्यात्मिक साधना में मदद देने का आश्वासन |

12.10.1955 श्री राघवेंद्र राव ध्यान का अभ्यास शुरू करते है |

अक्तूबर 1955 श्री राघवेंद्र राव पू. बाबूजी से शाहजहाँपुर में प्रथम बार मिलते है |

मई 1956 शाहजहाँपुर में बाबूजी से दूसरी मुलाकात | प्रिसेप्टर के नाते मिशन का काम करने की अनुमति तथा जिम्मेदारी |

दक्षिण भारत की मिशन की पहली ब्रांच गुलबर्गा में श्री राघवेंद्र राव जी की निगरानी में खोलने का निर्णय |

27.06.1956 मैंने आपके कुल मुक़ामात पिंड के, उस हद तक मुक़म्मल सैर (पूर्ण यात्रा) कराई है जो बरसोंमे भी मुमकीन (संभव) न था । इस वक्त आपकी सैर गाह (यात्रा स्थान) ब्रह्मांड मंडल (आलमें कुबरा) है।

28.01.1957 आपकी ब्रह्मांड मंडल की सैर बफ़ज़लहू तक़रीबन (क़रीब) आधीसे ज़ियादा ख़तम हो चुकी है।

28.07.1957 बडी ख़ुशीकी बात है के आप लतीफ़तर (सूक्ष्मतर) हालात (स्थितियोंका) का एहसास (अनुभव) कर रहे हैं |

यह पारब्रह्ममंडलका characteristic (विशेषत:) है।

13.03.1958 एक ख़ुश खबरी आपके लिए यह है के आपने एक region जिसको मैंने फ़ारसी नाम माबूद (प्रभू), आबिद (प्रपन्न) दे रखा था, पार कर के अब्दल माबद (प्रपन्न प्रभू) में आ गये।

10.04.1959 मैं ज़बान थाम के लिखता हूँ के रमण महर्षी से आप बढ़ चुके है ।

25.05.1959 आज का, हजरत क़िबला (गुरु महाराज) इरशाद फरमाते (बताते) है के आप point G पर थे | और इस ख़तके पहुँचने तक आप point H पर आ जायेंगे |

02.06.1959 मैं आपके points ले रहा हूँ और जल्दी जल्दी लूँगा। चाहता यही हूँ के जब तक आप उत्सव में आवे, तब तक central region तक पहुँचा दूँ ।

09.02.1960 आप को जब मैंने यहाँ तवज्ज़ह दी थी तो कुछ हलका अंदाज, central region में पहुँचने का हुआ था । 5 तारीख की रात में, सब मुक़ामात चीर फाडकर आप पहुँच ही गये और वाक़ई यह आप की ही क़ाबिलियत (क्षमता) थी और मैं मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ ।

$\frac{16}{18}$.07.1961 आप पहली ring of splendour में घुसने की कोशिश कर रहे हैं |

09.08.1961 मैंने बफ़ज़लहू (ईश्वरकृपासे) आपको 6 August की 11.30 बजे रात को पहली ring of splendour पर रख दिया ।

04.01.1962 बडी ख़ुशीकी बात है के आप एक्कुम (एक) January 62 में क़रीब 11 बजे रात को गुरु महाराज की कृपासे दूसरी ring पर पहुँच गये । रुजहान (झुकाव) आप का दूसरी ring पर जानेका हो चला था । मुबारक (बधाई) !

10.10.1963 अब मैं आप को मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ, के आपने

13 Sep 63 को 4 बजकर 58 मिनिटपर बवक्ते (समय)
शाम central region की चौथी ring पर क़दम रख दिया है । आप को अब न meditation की ज़रुरत है न किसी पूजाकी।

25.09.1968 (शब्दावली)
आप की मौजूदा (विद्यमान) हालत vision of the absolute की है, या सूफीयों की इस्तेलाह में वस्ल (मिलन) की हालत कह लीजिये।

24.02.1969 लालाजीसाहब कहीं
पहिले तो आपको मुबारकबाद (बधाई) देता हूँ, इस बात की के 11-2-69 बवक्त 8.25 A.M. आपकी लयअवस्था ब्रह्म में शुरु हो गई । ये सब की बरकत (कृपा) है वरना ऐसी हालत का फकीर सैंकडो बरसोंमें मिलता है।

****